Barcode : 99999990295656
Title - Shudwadet Ane Bhakti Martand Varsh -6 Ank -6 Thi 12
Author - Shastri, Nathashankar
Language -
Pages - 270
Publication Year - 1931
Barcode EAN.UCC-13
9 999999 029565

॥ श्रीमद्वल्लभाधीश्वरा विजयन्तान्तमाम् ॥
જગતના તારણહાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના
વિશ્વધર્મરૂપ મહાન્ આદર્શોનો પ્રચાર કરનાર

સચિત્ર માસિક.

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

દેવદીપોત્સવાંક

: વર્ષ ૬ :
આશ્વિન
સં. ૧૯૮૭

અંક ૬-૭
કાર્તિક
સં. ૧૯૮૮

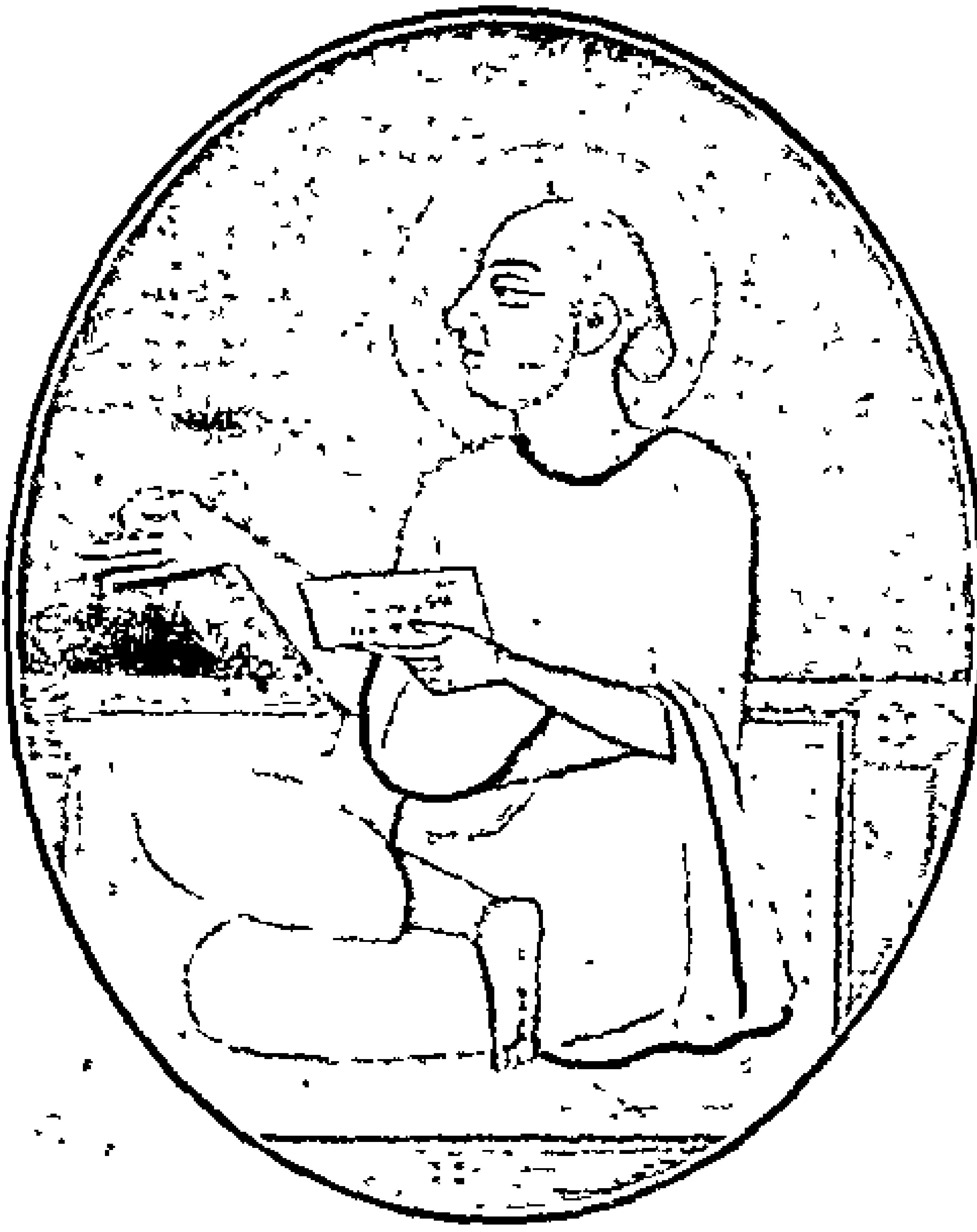

જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી.

તંત્રી અને પ્રકાશક:
વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.
૧૭૪૮, રાજા મહેતાની પોળ: અમદાવાદ.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૬.] આશ્વિન, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩. [અંક ૭.

सर्वोत्तमहेतुनिरूपणम् ॥

श्रीकृष्णाय नमः। आस्यरूपेणानन्द। परमानन्द। आस्यस्य कृष्णरूपत्वेन वह्निरूपत्वेनोभयरूपत्वात्। कथमुभयरूपत्वं ? श्रीकृष्णास्यमिति। ईदृशस्य कथं प्राकट्यं ? कृपानिधिरिति। किमर्थं ? दैवोद्धारप्रयत्नात्मेति। अदर्शनदशायामुद्धारार्थं स्मृतिमात्रेति। क प्रयत्न ? श्रीभागवतेति। को गूढार्थ ? साकारेति। तस्यैव वेदार्थत्वाय वेदपारगेति। मतान्तरसत्तया संशयनिराकरणाय मायावादेति। अतिरिक्तमतकृतसंशयाभावाय सर्वेति। साकारब्रह्मप्राप्त्युपायनिरूपणे भक्तिमार्गेति। मार्गाधिक्यबोधाय स्त्रीशूद्रेति। भगवतो ब्राह्मणप्रियत्वात् उद्धाराभावमाशङ्क्य अंगीकृत्यैवेति॥ अंगीकृति समार्गा। अन्यथा मार्गवैयर्थ्यमतः अंगीकृताविति। अंगीकृते मार्गत्वसंपादनेन महाकारुणिक इति। करुणासार्वकत्वाय विभुरिति। भगवतोधिकसामर्थ्यवत्त्वाय अदेयेति॥ अदेयं भगवतोऽलौकिकसामर्थ्यं, दक्षता, तथोपाय इति। स्वसर्वस्वदातृत्वबोधाय स्वादेयदातृत्वबोधाय वा महोदारेति। इष्टेऽपि सर्वप्रवृत्त्यभावाय प्राकृतेति। स्वीयजनमोहाभावाय वैश्वानरेति। सुखसेव्यत्वाय वल्लभेति। विषयत्वेनापि प्रियतायै सद्रूपेति। धर्मतोपि प्रियतायै हितकृदिति। न वाङ्मात्रेणैव किंतु कृत्या हितकृत्त्वबोधनाय जनेति। फलदानपर्यंत तथात्वबोधार्थं निखिलेति। स्वत स्वपरत्वसिद्ध्यापि तथात्वाय सर्वेति। भक्तिशिक्षकत्वेन तथात्वमुक्तं, ज्ञानदानेनापि तथात्वबोधाय श्रीकृष्णज्ञानद इति। वाचापि तथात्वबोधाय गुरुरिति। एतेन सर्वथा तथात्वमुक्तं, देयसंपत्ति स्वानन्देति। कृपादृक्त्वाय पद्मेति। हर्षान्तदातृत्वाय कृपेति॥ प्रियत्वं दानोत्तरमपि न दत्तमिति प्रतीत्या आवश्यकत्वाय पतिः। प्रतिबन्धनिराकृत्यै रोषदृक् इति। भक्तेषु तदभावाय भक्तेति। सेवायां सुकरत्वाय सुखेति। पूजाविषयत्वाभावाय दुराराध्येति॥ सेवायां माहात्म्यज्ञानसिद्ध्यर्थं दुर्लभेति। सर्वेषां स्वरूपाज्ञानात् सूर्यस्येव उग्रेति। स्वीयानां बोधकत्वाय वागिति। स्वपक्षपातित्वाय श्रीभागवतेति। स्वस्यैव तदमृतयोग्यतायै तत्सारेति। अन्येषु दानमिति सान्निध्येति। देयस्यासाधारणत्वाय विमुक्तिद इति॥ [illegible]कपदार्थमाहुः रासलीलेति। योग्यतया दानमाहुः कृपयेति। परमफलदातृत्वमाहुः विरहेति। तत पूर्वं स्थितिहेतुमाहुः भक्त्येति। वेदसार्थकत्वाय कर्ममार्गेति। तदङ्गत्वेनेत्यर्थः। तथापि मार्गांतरनिरूपणाय यागादाविति। निःसाधनफलदानाय पूर्णानन्द इति॥ तथापि स्वस्य पूर्णानन्दत्वाय पूर्णकाम इति। फलरूपत्वाय वाक्पतिरिति। असाधारणेश्वरत्वाय विबुधेश्वर इति॥ असा-

धनसाधनबोधनाय कृष्णनामेति । स्वमात्रकृतित्वाय भक्तपरायण इति ॥ विश्वासोत्पादनाय भक्त्याचारेति । सर्वथा निरपेक्षत्वाय स्वार्थेति ॥ तादृक्प्रियत्वाय तादृशेति ॥ परमकृपालुत्वाय स्वदासेति । समर्थकृपालुत्वाय सर्वशक्तिशृगिति । परोक्षेपि तथात्वाय भुवीति । सर्वथा पालकत्वाय पितेति । स्नेहेन स्वधर्मस्थापनाय स्ववशेति ॥ असाधारणधर्मवैलक्षण्येन गर्वाभावाय स्मयेति ॥ भगवत्त्वाय पतिव्रतेति । सर्वथोपास्यत्वाय पारलौकिकेति । गूढाशयत्वेनापि भगवत्त्वाय निगूढेति । अंगीकृतेषु ज्ञापनेनापि तथात्वाय अनन्येति । मोहनिवारकत्वेनापि तथात्वाय उपासनादीति भगवत्त्वेपि पुष्टिपुरुषोत्तमत्वाय भक्तिमार्ग इति । भक्तिमार्गस्थित्ययोग्येपि फलदानाय पृथगिति सर्वधर्मानितिवस्तुहार्दज्ञानाय श्रीकृष्णेति । उत्तरलीलारसानुभावकत्वाय प्रतिक्षणेति । बहिःस्फूर्ति दशामाहुः तत्कथेति । कथानिरोधार्थं तद्विस्मृतेति । स्वामिनीवद्व्रजमात्रप्रियत्वाय व्रजेति । अन्यगत्यभावाय प्रियेति । भावात्मकस्य लीलारसानुभावाय । पुष्टीति । तदनुभवयोग्यतायै रह प्रिय इति एतादृशत्वेपि भक्तनिकटस्थितिसंपादकत्वाय भक्तेति । आंतरत्वेनाविदितचेष्टत्वाय सर्वेति । कदाचित्प्रतीतावपि मोहनमोहनतथात्वाय अतिमोहन इति । एकप्रयोजनत्वाय भक्तेति । असाधारणप्रयोजनार्थं पतितपावन इति । तत्प्रकारार्थं स्वयश इति । रसांतरनिवर्तनाय यश इति । गुप्त्यर्थं पर इति परं दृष्ट्वा निवर्तत इतिलीलासहितस्वस्थितिज्ञापनाय लीलेति । लीलामात्रपरत्वाय गोवर्द्धनेति । तन्मयत्वाय तल्लीलेति । हृदये स्वस्थितभगवद्भोगाय यज्ञभोक्तेति । स्वाविष्टत्वेनैव तथात्वज्ञापनाय यज्ञकर्तेति । तेनैव चतुर्विधभक्तिमार्गीयतत्साधकत्वाय चतुर्वर्गेति । अंगीकृत्यन्यथाकृत्यभावाय सत्येति । गुणक्षोभनिवर्त्तकत्वाय त्रिगुणातीत इति । मर्यादया बहिर्मुख्याभावाय नयेति । सर्वथा दोषाभावोपायाय स्वकीर्तीति । तद्वर्द्धनप्रकारनिरूपणार्थं तत्त्वेति । मायेति । ब्रह्मेति । स्वरूपोत्कर्षेणापि तद्वर्द्धनाय अप्राकृतेति । एतादृशेऽप्यनुसरणीयत्वाय सहजेति । लौकिकोत्कर्षेणापि तथात्वाय निर्लोकीति । भूमौ विशेषतस्तथात्वाय भूमीति । विषयप्रकारेणापि तथात्वाय सहजेति । तादृशे कर्तव्यबोधनाय अशेषेति । इति श्रीहरिरायजीविरचित सर्वोत्तमहेतुनिरूपणं सम्पूर्णम् ॥

[आ प्रकीर्ण लेख डभोईवाळा भगवदीय गोविंदलाल छगनलाल परीखे प्राचीन ग्रंथपरथी लईने प्रकट करवा मोकलेलो, पण ते अशुद्ध जणायाथी त्रण वर्षथी प्रकट करी शकायो नहि. थोडाज समय पहेलां तेनी एक शुद्ध प्रति प्राप्त थतां आ अंकमां मुद्रित थयो छे. तंत्री.]

प्राचीन कीर्तन.

राग मलहार ॥—लाल माइ सोभत हैं रंगभीने ॥ सीस सोहे कामरी ओढ़ी लाल लकुट र लीने ॥१॥ कुंदन कीच घाटबनचौं मोहन चकित चहुंदिस हेरे ॥ कबहु दिस भ्रम होत विक राधे राधे श्रीमुख टेरे ॥२॥ तिहिं छिन तडित उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोखे ॥ रसिक प्रीतम पग धरत उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोखे ॥ ३॥

राग केदारो ।।—कौन लई कौन दई इँडुरियाँ गोपाल मेरी, ग्वाल बाल सखनमाँझ तुमही हँसत हो. पाय गहि सूधी रहो कौन लई कासो कहो ? लेत कौन देख्यो सखी कहा बास बसत हो ? लेवो दुराय धरि बोसमें कहा चोर परत ? हँसो जाय ऐसी होय हमपर कहा हँसत हो। नंददास बसत बास ब्रजमें गिरिराज पास टेडो फेंटा आडबंद कौनपे कसत हो ?

राग गोरी ।।—सुनहु सखा मनभामते हो, रसिक रसीली बात, एक समय निस नवनिकुंजमें बैठे प्यारी संग, भई बात वे रतिरसकी हों कहा दुराऊं अंग ? प्रगट चिन्ह एक देख्यो उरमें अद्भुतही सोभा देत । तिल प्रसून राजत है कुचबिच मेरो मन हरि लेत हो ।।२।। कमलबीच रुक्यो मधुकर सुत तहा ते उडयो न जाय । सोभा अधिक देखि मेरे द्रग तहा रहे अरझाय हो ।।३।। तब में हास्य कीयो प्यारीसों तर्क वितर्ककी वातें, प्यावत हो अतिरस तुम इनकों सदा रहत मदमाते ।।४।। प्यारी कहे तुम सुनों प्राण प्रति मुरलीको रस देत, अधरसुधा सर्वसु जु हमारो तेहि क्षण हरि लेत हो ।।५।। तब एक वचन कह्यो उन हमसों सुनों स्याम चित लाय, रतिसग्राम गुप्त जे बातें कहत सखनसों जाय ।।६।। उनसों कहा दुराउं प्यारी वेहे हमारे संग, निसवासर वे रहत हृदयमें वसत दाहिने अंग ।।७।। बांये अंग तुम रहत हो निसादिन इतनो अंतर जानं, इत उत मध्य बेठ्यो यह मधुकर उनसों कहा रहे छांनहो ।।८।। यह रस उनसों कहा दुरत है तुम हम तरु वे वेलि, जेसें अष्ट सखी तुम प्रिय अति तैसें हम संग खेल्हो ।। ९ ।। तब हँसि मुसकि विसाखा बोली लालनके ढिंग आय, वा दिनकी बातें सब भूली खायी छाक छिनाय हो ।।१०।। नदी सुर ढिंग नवनिकुंजमें पूरणमासी गेह, प्रथम सनेह भयोही ता दिन हम जानत सब नेह।।११।। तब गलबांह छांडि मोर मुख चितयो नयननकोर। मांनों चंदनसुधारससयुत मेरे नेंनचकोर।।१२।। मुसकि सकुचि गये नवनिकुंजमें ललिताकों दै सेंन, हमहु तब उनही ढिंग आये अंग संग भेट्यो मेंनहो ।।१२।। यह सब बात कहत हे ता दिन सुनों सखा रस ख्याल, कुंभनदास आस इतनीही श्रीगोवरधनधर लाल हो ।। १४ ।।

[प्राचीन ग्रंथस् संगृहीत.]

राग भैरव ।।—तू दयालु दीन हों तू दानी हों भिखारी ।। हों प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी ।। १ ।। नाथ तू अनाथको अनाथ कोन मोंसों ? मोसमान आरत नहीं आरतहर तोसों ।। २ ।। ब्रह्म तू जीव हों तू ठाकुर हों चेरो, तात मात गुरु सखा तू सब विध हित मेरो ।। ३ ।। तोहिं मोहि नातो अनेक मानीये जो भावे ।। ज्यो त्यों तुलसी कृपालु, चरन सरन पावे ।। ४ ।। पद

पूतना विष दे अमृत पायो ।। जो कछु दैयत सो फल पैयत नाहक वेदने गायो ।। १ ।। सतयज्ञ राजा बलि कीनो बांध पाताल पठायो ।। लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ।। २ ।। रंक जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम बनायो ।। सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कहि गायो ।। ३ ।।

राग रेखतो ॥—मै तो हू पतित आप पावन पतित नाथ पावन पतित हो तो पातक हरोईगे ॥ मे तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जिसमे धरोईगे ॥ मैतो हु गरीब आप तारक गरीबनके, तारक गरीब होतो निरद बरोईगे ॥ मेरी करनीपे कछु सुकर न कीजे धान्द करुनानिधान हो तो करुना करोईगे ॥

राग भैरव ॥—कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें ॥ ताके पद पकजकी रेनुकी वलिमें ॥१॥ सोई सुकृत सोई पुनित सोई कुलवता ॥ जाको निसबासर रहे कृष्णनाम चिंता ॥२॥ योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्णनाम माही ॥ बिना कृष्णनाम कलि उद्धार ओर नाही ॥३॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहु न बिसरीये ॥ कृष्णनाम ले ले भवसागरको तरिये ॥४॥ श्रीगोवर्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी ॥ ऊधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५ ॥

तुलसी या जग आयके पांच रत्न हे सार ॥ सत मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार

(समाहक–अधिकारीजी देवरामभाई झीणाभाई)

अष्टसिद्धिनिरूपनको पद.

राग यथारुचि ॥—श्री यमुना को नमन करीए, हरखि सकल सिद्धि अष्टही पैये ॥ लौकिक देह यही सेवाको, एक अलौकिक रुपही पैये. ॥१॥ लीलादर्शन दूसरी सिद्धि कालिंदी रतिवर्धनी कहीए, सो रस अनुभवरूप तीसरी, भुवनपावनी तातें कहीए. ॥२॥ सर्वात्मभावसिद्धि हें चोथी, अनतगुणभूषण पैये, सो सेवा आधीन प्रानपति, मनमें सुखभावन करी लैये. ॥३॥ आदिपदतें चरणपद्मजा, मुररिपुकी प्रियभानुक कहीए, विप्रयोगमें अंतर प्रागटय, कृष्णभावन सिद्धि पंचमी कहीए. ॥४॥ सिद्धि छट्ठी हे लीलादर्शन, अंतरदृष्टि करी पैये, नमन करतही सदा यमुनाको, गोपिकावत् प्रियही पैये. ॥५॥ सिद्धि सातमी भावरूप करि रस अनुभवही पैये, सानिध्य तिहारे स्तुतिको गान करी, भाव दृढ करी लैये. ॥६॥ सिद्धि अष्टमी प्रागट्य हरिको, अंतर अनुभव करिये, हरि सेवा फिर अनुभव करिकें, मोक्ष लों सर्व सुख पैये. वही कथा श्रीयमुनाकी सकल गोपिका संगम कहीये, मदनश्रमजलकनन करिके, सकल अंग रस पैये. ॥८॥ यह अष्टक हरिरूप कथनमें, सेवाफललों पैये, मुररिपु प्रसन्न व्हे हें, स्वभाव जय कर लैये. ॥ ९ ॥ भावबृद्धि प्रभु विरह देकें करे हें यमुना, स्वामिस्मरन तें, श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल सुरतरु ब्रह्मसंबंध करावन तें. ॥१०॥ कही कथा यह श्रीहरिरायही, श्रीमुखकमल मकरंद तें, सोही जश मकरंदकों ले जीवें मधुप रस गुनगान तें. ॥११॥

अथ श्रीदेवकीनन्दनकुमारचरणैकशरण–सोभाचन्दकृत–

भक्तिविधान ॥

(संशोधक.—श्रीयुत शास्त्री काशीराम करशनजी मांगरोल.

[ભગવદીય વાલજીભાઈના ગ્રંથ પરથી આમના દુહા ૧૧ થી ૬૪ સુધી અમે ઉતારી ગત દીપોત્સવાંકમાં છપાવ્યા હતા. તેજ ગ્રંથપરથી શાસ્ત્રીજી કાશીરામભાઈએ એક પ્રતિ ઉતારી અમને મોકલી છે તે અહીં પ્રકટ કરીએ છીએ.]

मगन रहत मन रातदिन, जानत भोर न सांझ. ।७। बन्दो श्रीव्रजभूमिरज व्रजवासिनके चरन, अरु व्रजके तरु तृण लता, शोभा तिनके शरन. ।८। शोभा मन बच कर्म करी, इनहीकी गति आही, इन बिनु और न इष्ट मम, इहे जान मनमाहे. ।९। श्री स्वामिनी गिरिधरन बिनु मोरे गति नहि आन, श्रीदेवकीनन्दनजीकी कृपा, करहु भक्तिविधान. ।१०। देवकीनन्दनकी कृपा, भइ मोहि जिहि भांत, अरु प्रभुकी वंशावलि, कहुं जगत विख्यात. ।११। दक्षिन देश तिलंगमे, श्रीलक्ष्मण द्विजराज, ताके गृह प्रकटे अग्नि, सब जीवन हितकाज. ।१२। अति वल्लभ गिरिधरनके, तातें वल्लभ नाम, छांडि देश व्रज आयके, बसे श्रीगोकुल गाम. ।१३। पारंगत आगम निगम, सबै शास्त्र व्याकरन, मायावाद निराकरन, सब विधि संशय हरन. ।१४। .१५ ...१६ ...१७. ..१८.. .१९ . .२०—२१....२२. ..अति पंडित अरु अति चतुर, भक्तनको सुख देत. ।२३। अति पंडित तातें अनुज श्रीमद् गोविन्दराय, सेवत विट्ठलरायको दिन प्रति अति चित लाय. ।२४। श्रीबालकृष्ण तातें अनुज सेवत नित्य....२५....२६....तातें अनुज प्रवीन अति करुना निधि रघुनाथ, सेवा गोकुलचन्दरति, परम सुखद प्रभु हाथ ।२७। महाराज यदुनाथजी, तातें अनुज सुशील, सेवा गोपीनाथरति, दरश उधारे भील। तातें अनुज दयाल अति, सुन्दर श्रीघनश्याम. ।२९।...३०

[दुहा ११ सूं ६४ तक गत दीपोत्सवांकमें छप गये हैं.]

नाम पाय गुरु भेट नही, है न भक्त को संग । ध्यान नही गुरु ग्रन्थमें, चित न भिगावत रंग ॥६५॥ तिनके हितसों भाषा करि, दोहा करे रसाल । सब संसे चितमें मिटे, उपजे प्रीत गोपाल ॥६६॥ जो सन्देहमें प्रश्न कीय, मेट्यो सो प्रभु आपु । तेई सब मैं कहत हों, जो मेटे संतापु ॥६७॥

अथ प्रश्न—सब जीवनको कोन प्रभु, जीव लहे सुख कोय । लाह बडो काहा निदर को, कहो बिलछन सोय ॥६८॥

अथ उत्तर—प्रभुसो जाकी सृष्टि सब सुख ताहीके सेव । लाहो बडो ताकी भगत निदर सरन तिहि देव ॥६९॥

अथ प्रश्न—सो प्रभु कोन कोन हे, ताको केसो रूप ? नाम कहो क्यो पाईये, ताकि भगत अनूप ॥७०॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, मच्छ कच्छ वाराह । नरहर वामन राम हे बुद्ध कल्की ताह ॥७१॥ प्रभुके रूप अनेक हे, कला अंश गुनभेद । अंशी पुरुषोत्तम रहे, नेति कहत जिहि वेद ॥७२॥

अथ प्रश्न—कला अंश आवेश गुन, ताके रूप हे कोन ? सो मोहे कहो बिलठकें उत्तम अधम गौन ॥७३॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, ते तीनों गुन रूप । रज सत्त्व तम प्रकृति, कारण सृष्ट अनूप ॥७४॥

रजगुन ब्रह्मा सृष्टि कर, सत्त्व विष्णु प्रतिपाल । तमोविष्ट सब सृष्टिको काल होत शशि भाल ॥७५॥ नरहरि वामन राम हे यहे अंश अवतार । आवेश–अवतार श्रीफरशराम मुनि सार ॥७६॥ मच्छ कच्छ वाराह पुनि, बुद्ध कल्की–अवतार । अरु चोदह अवतार भये, कला पाच हरिसार ॥७७॥ वेदमर्यादाके लिये, अरु भगतन–सुख–हेत । कला अंशी प्रकट युदुमि (?) नाम रूप चित चेत ॥७८॥ वेद कहे ताही बतें, अनन्त रूप अरु नाम । तब तब रूप धर्यो हरि जब जब भक्तही काम ॥७९॥ अद्भुत क–आदि देव करी, आतमके नेरूप । ए श्रीहरि कीने तबही, गीता कह्यो अनूप ॥८०॥ सकल भूत क्षर रूप हे, अक्षर व्यापक पाय । अक्षरतें जो अधिक हे, सो पुरुषोत्तमराय ॥८१॥ सत ओ चेतनता अरु, अरु आनन्द निधान । यह तृतयो जाहा व्याकूल हे, पुरुषोत्तम भगवान ॥८२॥ क्षरमें सत प्रकट हे, अक्षर सत–चैतन्य । पुरुषोत्तममे सब प्रकट, यहे भजन अति धन्य ॥८३॥ सो पुरुषोत्तम भक्तहित, श्रीस्वामिनी–अनुराग । श्रीव्रजमें प्रगटे प्रगट, नन्दयशोदा भाग ॥८४॥ ओर सकल अवतार जे, कला अंश गुन पाये । पूरन पुरुषोत्तम प्रगटे, प्रगटे सो मन आये ॥८५॥ कृष्णचन्द्रको रूप गुन, जान्यो निश्चे गौं व । वेदे तत्त्व शुकदेवजी, कहे परीक्षित सोन ॥८६॥ यहे वात गीता विषे, पारथ सो कही आपु । विश्वरूप दिखाय के, मेट्यो सब संतापु ॥ ८७ ॥ यह वात जयदेवजी कही गीतसे गाए । दश आकृत कृत कृष्णजी, कौं प्रनाम कर पाय ॥ ८८ ॥ ताते सब परिकार कर, सबके प्रभु गोपाल । उनही की सेवा सुखद, ओर सबै जजाल ॥ ८९ ॥ बडो लाभ हरिकी भगत, अति दुर्लभ सो आय (हि) । जाको हे हरिकी कृपा, सोहि पावे ताय (हि) ॥९०॥ जहा जायहे टर तहा, ठाडे कहु न काल । निश्चेके नर जानियो, बिना सरन गोपाल ॥९१॥ सुख नाहि तिहु लोकमें, सबै काल बस जाहि । बिना श्रीगिरिधर दुःखहरन, ओर न दूनो आहि ॥९२॥ श्रुति आगम इतिहास स्मृति सोधे सबै पुरान । श्रीपुरुषोत्तमभजन बिनु, जीयही सुख न निदान ॥९३॥ कोउ कहे ब्रह्मा बडो, कोउ सूर महेश । कोउ गणेश देवी कहत, तिनको ज्ञान न लेश ॥९४॥ या बिधि कहत ते नारकी, श्रुतिमार्गमृगवधिक । हरिसम कोऊ नाहिन, कोउ न इनसो अधिक ॥९५॥ शिवता शिवको तब भई, जब सेये हरिचरन । ब्रह्मा हू भ्रम्यो नालमें, सुख पाम्यो नहीं

शरन ॥९६॥ पचवक्त्र पाचो मुखन, कहत हो जानत नाहि । सो हरि पूरन प्रकट, रहत सदा व्रजमाहि ॥९७॥ चतुरानन चहों वेद करि, फिर फिर कहत हे नेत । सो हरि प्रगट भक्तहित, अङ्क यशोदा लेत ॥९८॥ व्यास कही जाने गुनन, शेषहि कहत अनन्त । सहस जीभ नित नये गुनन, तिनहु न पायो अन्त ॥९९॥ वेदहु करि नहि पाइयो, नहीं यज्ञ नहि दान । नहि ज्ञान पैइये न क्रम, पईये भक्तविधान ॥१००॥ भक्तहेत विषपान किय, भक्तहेत सकटार । भक्तहेत तृणावर्त हयो, बधवाए करि आर (') ॥१०१

दर्दीशतक.

दामोदरलीला—धन्याश्री राग ॥ तुम तो अतिनिठुर नन्दरानी ॥ चौद लोककी स्वामी ताकी कछुक न राखी कानी ॥१॥ तनक दधिके कारन हरिको ऊखल बधन कीनो ॥ अतिहि बिलखानो ढोटा रोवत अंसुवन वागो भीन्यो ॥२॥ बडी वेपर्तें लालन पायो व्रजको जीवन प्रान ॥ दर्दीदास प्रभु भक्तके वश हे ताकी यह पहेचान ॥३॥

उराहनेके पद—राग धनाश्री यशुमति केसो सुत तें जायो ॥ चोरी करतो फिरे लगारया ढूंढे भवन परायो ॥१॥ छीकेपर दधि धर्या अछूतो माट फोरके खायो ॥ घरमें बदर वहोत घुसाये माखन सबे लुटायो ॥२॥ तु वरजत नहीं अपनो बालक केसे सहे निन हान ॥ हरि बोले यह ग्वालन झुठी वाको कह्यो न मान ॥३॥ मोय पकर ले गई घर अपने तुमपें होत अयान ॥ दपनी मन मुसकाय रहे तब दर्दीदासके प्रान ॥४॥

घर भोजनके पद—राग धनाश्री जेमत श्याम राम एक साथ ॥ खात खवावत करि परस्पर ले ले अपने हाथ ॥१॥ व्यजन मीठे खाटे खारे सीखरन मेवा मात ॥ रोटी पुरी छीटी लुचइ जेंवत मनन अघात ॥२॥ दु मिरचको मुखमें आयो नेनन जलभर जात ॥ मीठो दूध ले मात पिवावत हँसके कठ लगात ॥३॥ यह सुख देखत नद मुदित मन कहि न जात कछु बात ॥ दर्दीदास आस झुठनकी दीजे गोकुलनाथ ॥४॥

छाकके पद—राग सारग ॥ गहवर बन छाक आई चद्रभगा सखी लाई पठइ जसोदा मात प्रेमसों सँवारी ॥ देख श्याम गये दोर नेहसो करी निहोर रूखतर धर्यां डला कहत लाउ वारी ॥१॥ सखाको बुलाय पास सबन सों करत हास आन सब लेहो छाक परम रुचिकारी ॥ बाटत हरि अपने हाथ सुखकी कछु कहि न जात दर्दीदास झुठन पाय जाय बलिहारी ॥२॥

राग मलार ॥ व्रजपर श्याम घटा जुरि आई ॥ छाक पठाई जसोदा मैया लेहो कुवर कन्हाई ॥१॥ ग्वाल मडली कर तहा बेठे अतिही सघन तर छाही ॥ बाटत श्याम सबनको हितसों जेंवत रुचि उपजाई ॥ न्हेनी न्हेनी बूंदन बरखन लाग्यो पवन चलत सुखदाई ॥ गाय बुलाय कीनी इक ठोरी दर्दीदास मन भाई ॥२॥

अचवन बीरीके पद—राग धनाश्री ॥ भोजन कीनो श्रीगोपाल ॥ यमुना जलसों
अचवन कीनो बीरी देत व्रजबाल ॥१॥ करत आरती जसोदा मैया वारत मुक्तामाल ॥ दर्दीदास
गिरिधरको श्रीमुख देखत भयो निहाल ॥२॥

राग सारंग ॥ भोजन कर उठे व्रज नाथ ॥ अचवनको यमुनाजल लीनो श्याम पखारे
हाथ ॥१॥ व्रजनारी बीरी ले आई फूली अंग न मात ॥ हरि बांटत सब ग्वाल बालको आपही खात
अघात ॥२॥ मात रोहिणी आरती वारत होत प्रफुल्लित गात ॥ दर्दीदास यह शोभा निरखत
तत्क्षण भयो सनाथ ॥३॥ पद ॥ गिरिधर बनमें करत विहार ॥ छाक आरोगे अचवन कीनो बीरी
ल्याई व्रजनार ॥१॥ पके पान सुपारी काथो लोंग ओरं घनसार ॥ बांट खात लाल अपने कर
दर्दीदास बलिहार ॥२॥

पनघटके पद—राग धनाश्री ॥ पनघट ठाडो हे नंदलाल ॥ कोन जतन कर भरुं मथ
निया संग लायो व्रजबाल ॥१॥ माल तोरत बांह मरोरत और बजावे गाल ॥ मार लकुटिया
गागर फोरत करी देत बेहाल ॥२॥ एक गामको वास सखीरी करिये कोन उपाय ॥ दर्दीदास
यह बात बूझिये देउ उराहनो माय ॥३॥

हिलगके पद—राग आसावरी ॥ जा दिनतें यह ढोटा निरख्यो तबतें कछु न सुहायरी ॥
चित चोर्यो घर काज न भावे देखन जिय अकुलायरी ॥१॥ भई बावरी गुरुजन टोकत ओर
सतावे मायरी ॥ लोक लाज कुल कान छोडके मिलुं श्यामकुं धायरी ॥२॥ अब तो जिय एसी
बनि आई सीस रहेके जायरी ॥ दर्दीदासके स्वामी मिलें तें तनके ताप नसायरी ॥२॥

अनुभवमञ्जरी.

[भक्तरत्नकवि श्रीदयारामभाईकृत.]

(ગત વર્ષના નવમા અંકના પૃ ૨૪૮ થી.

इकदा श्रीनवनीतप्रियाजी मो उर लपटाने; झांखी भोजन करत दइ करुना रस साने
॥४१॥ इकदा श्रीवल्लभाधीश महाप्रभु करुना कर, मोको दीनो दरस सरस तब में माग्यो वर
॥४२॥ नाथ बसो मो हृदय निरंतर अपनो जानो, तब अपनो पदपद्म सद्य मो उर परसानो
॥४३॥ श्रीमुख बोले बसे सदा हम तेरे हियमें, मेरो है तू सतत धरे चिंता जिन जियमें ॥४४॥
तेरे सब कुलको उद्धार सु हमहि करेंगे, अब तोको नहि जन्म बहुरि सब दुःख हरेंगे ॥४५॥
श्रीगोस्वामी विठ्ठलेश मोहि दरसन दीनो, दूर करि माया जाल ऐंच अपने ढिंग लीनो ॥४६॥
श्रीजी सहित दइ झांखी मोय बहुरि गुसांइ, मेरी पक्ष करि प्राननाथपे कृपा कराइ ॥४७॥ एक
बेर मो संग चले हरि मित्रकी नाँइ, अंगसों अंग छुवाय परस्पर दे गलबांही ॥४८॥ दयो दयाको
रूप कोइ कीर्तन अस गायो, सुनि कहि गोकुलनाथ न गायक समझन पायो ॥४९॥ दयो कृपाको

रूप आहि यों श्रीमुख बोले, को जाने को कारन सो यह बायक खोले ॥५०॥ इकदा श्रीकर सों मोकर गहि कमलनयन हरि, मो सह बैठे सयन मोहि बूझी समझ न परि ॥५१॥ यह काको अधिकार होइ तब मैं कहि जानी, भयो परम आनंद आप करुना सब मानी ॥५२॥ कछु दूरहीतें पद माग्यो मैं देन बधार्यो, इकदा मेरी पीठ थापि कहि जा भव तार्यो ॥५३॥ इकदा कहि रघुनाथ सु हम तू आहि नरमदा, इकदा भेटि कह्यो जाय मन नयन करमदा ॥५४॥ इकदा मो उपर बैठे महाप्रभु करुना कर, सबे हमारो कियो होत कहि तू दुःख मन धर ॥५५॥ तिलक अपने भालहिं तें ले भाल मोय दिय, बहु हित करि अपनाय रीति पद परस सिखे पिय ॥५६॥ इकदा श्रीगोवर्धनधर मोपें पय माग्यो, कनक कटोरा भर प्यायो मैं अति अनुराग्यो ॥५७॥ इकदा श्रीप्रभु रसिकराय रसना मोय दाखी, एक बेर श्रीकृष्णताप कर यों मोय भाखी ॥५८॥ इकदा श्रीरणछोडराय मंजुल दे झांखी, मोसुं करि करपल्लवी प्रसन्न मित्रता दाखी ॥५९॥ कहत कहत अभि बचन पधारे मो ढिंग स्वामी, आवो नंदनंदनकी सखी कहि अंतर्यामी ॥६०॥ इकदा श्रीगिरिधरन चरन मोपें परसाये, करि करुना निज जानि, नाथ मम कनियां आये ॥६१॥ लपटे दे गल बांही प्यार प्रीतम मोय कीनो, अब तुम बहुत भये चोखे श्रीमुख बर दीनो ॥६२॥ इकदा श्रीराधा चंद्रावली पोढे पेखे, चरन जुगल चंपत मैं श्रीजीको देखे ॥६३॥ अपने ओर प्रिया जुग पद संग संग मिलाये, अति हित उपज्यो मेरे हैं कहि वदन छुवाये ॥६४॥ एसी महा रसरूप झांखी मोको प्रभु दीनी, सो सब श्रीगुरुदेव आपको सेवक चीनी ॥६५॥ इकदा श्रीवल्लभनंदन मम उर पद थाप्यो, जुगल पाय परसाये प्रिय वच प्रिया अलाप्यों ॥६६॥ इकदा दरसन दिये कृपा करि श्रीवल्लभवर, अति हित करि कहि सदा सुखी रहे पीठ थापि कर ॥६७॥ एक समे श्रीगोपीनाथ प्रभु दरस दिखायो, अति मृदु अरुन चरन पावन हों परसन पायो ॥६८॥ ओर पुरुष यों कही तुमारे गुरु ए आही, तामें कहि हां हां यामें कछु संसय नाही ॥६९॥ हैं गुरु तब हम भेट बचाइ आप यों बोले, मैं कहि कैतक कौन बचाये अंतक गोले ॥७०॥ आप कहें तुव भाग्य कही मैं यों क्यों कहिये ? सबें रावरी कृपा जीय बल कछुहु न चहिये ॥७१॥ मैं कही मो बलसें भलो सबबल तुम जानुं, यह करुना मोहि करो कृतिबल कबहु न मानूं ॥७२॥ तब प्रसन्न हँसि कही आप भल रहस्य जानी, बहुत कृपा फिर करी हरि कही मनहर बानी ॥७३॥ इकदा श्रीगुरु लाल मंत्र उपदेसही कीनो, अष्टाक्षर फलभूत होयगो यह बर दीनो ॥७४॥ इकदा श्रीरनछोडराय मोय दरसन दाखे, हियकर धरि तू मेरो है श्रीमुख यों भाखे ॥७५॥ इकदा श्रीजी अति सुंदर मोय दरसन दीने, सिंहासन तें मो सन्मुख अति हितभीने ॥७६॥ निजपद नूपुर निकसि गयो प्रभु मो कर दीनो, दे पहिराय दइ आय समें समझ लीनो ॥७७॥ गायो कछु इक ख्याल आप अस्तार सुनाइ, बहुर कही मोय बृज में तुक नद बनाइ ॥७८॥ प्यारसु प्यारे लालजु मेरी कनियां आये, हँसि हंसि बातें करी नाथ मैं कंठ लगाये

॥७९॥ जलपान सहित भोजनकों हरि में पधराये, श्रीअंग परसत भये सुख सो जाय न गाये
॥८०॥ इकदा संकट जानि लालजी दरस दिखाये, कनियां आये गल लपटाये पद परसाये
॥८१॥ इकदा श्रीशेषशायी प्रभु दरसन दीने. मेरी सन्मुख देख्यो अति करुनारस भीने ॥८२॥
जय जय करि हू समीप गयो श्रीकर सिर धार्यो, तू हे हमारो श्रीमुख कहि यो ताप निवार्यो
॥८३॥ दीनो बर हम अति प्रसन्न श्रीमुख भाख हें, अब तू देखि समयपर पर चोकस दाखत हें॥८४॥

[આજ ગ્રંથની એક બીજી પ્રતિ ડભોઇવાળા ભગવદીય નારાયણદાસ પરમાનંદદાસ શાહે પણ આપી, તેમા ૪૦ મો તુક આ પ્રમાણે વધારે છે.—नन्ददासहो नाम तिहारो यों श्रीमुख बोले, एही नाम द्वे चार भगवदीयों हे खोले ॥४०॥ વળી ૪૭ મી કડી વધારે છેઃ—इकदा श्रीमहाप्रभुजी निजजन लहि दिये दरसन, हितसों लियो लगाय हृदे मोको व्हे परसन ॥४७॥

उत्तमोत्तम साधन.

[वक्ता—आयुष्मान् गा. श्रीदीक्षित भगवान् मुंबाइ.]

श्रीमदाचार्यचरणसरोरुहाश्रयी भाग्यवान् वैष्णववृन्द ।

आज मैं आप लोगोंके समक्ष पूज्य पितृचरणोंके पादपद्मोमें प्रणाम करके " भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधनभक्ति है " इस विषयपर कुछ कहना चाहता हूं। श्रीमदभागवत एकादश-स्कंधमें लिखा है कि:—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव। न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥
भक्त्याहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम्। भक्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपि सम्भवात् ॥

अर्थात्—हे उद्धव! मुजे योग भी साध्य नहि कर सक्ता; और न सांख्य, और न धर्म, और स्वाध्याय भी नही, न तप, न त्याग, किन्तु मेरी अतितीव्र भक्ति जिस रीतसे मुझे साध्य कर सक्ती है.

सत्पुरुषों का प्रिय आत्मा ऐसा मैं एक भक्तिसेंही ग्राह्य होता हूं। और मेरेमें है निष्ठा, जाकी वैसी जो भक्ति हे सो भक्ति श्वपचको भी जन्मत पवित्र कर सक्ती है, अर्थात् भगवन्निष्ठा भक्ति जन्मतः चाण्डालकोभी पवित्र कर सक्ती है।

श्रीअम्बरीष के यहां एक दिन दुर्वासा ऋषि आये। तब राजाने ऋषिको आदरसत्कार करके भोजनके लिये निमन्त्रण दीया। द्वादशीका दिन था। शास्त्रका नियम है कि एकादशीका व्रत करके द्वादशीके दिन जो पारणा न करे तो व्रत निष्फल हो जाय। द्वादशीकी सवा दो घडी मात्रही अवशिष्ट थी, राजा बडे विचारमें पड गये। बहुत विचार करते करते उनके मनमें यह आई कि केवल जलसे ही पारणा कर लुं, क्यों जो ब्राह्मणोंने जलका पान अनशनके बरोबर माना है। इस लिये जलके भक्षणमें कुछ दोष नहीं। यह बात जब निश्चय हुई तब राजाने तुलसी चरणामृत लेकर पारणा किया।

तो वे ऋषिही ठहरें। उनको रस्तामें ही खबर पड गइ। अत्यत ही क्रोधान्वित हो करके राजाके पास गये। लोग भी कहते है कि इनका क्रोध क्या है जाने दुर्वासा? जो कोई बहुत क्रोधी उसको सब लोग मस्करीमें दुर्वासा कहके ही बुलाते हैं। तो यह तो साक्षात् दुर्वासा ठहरे। एकदम क्रोधित होकर अपनी शिखासें कृत्तिका नामकी शक्ति निकालके भक्त राजर्षि श्रीअम्बरीष पर फेंकी। इधर कृतिकाको फेंकी और उसी वख्त श्रीसुदर्शन चक्रने आ कर कृतिकाको भस्म कर दी, और दुर्वासा ऋषिके पीछे जाने लगे। ब्राह्मणदेव घबराये कि यह आपत्ति क्या गले लगी? दुर्वासा ऋषि भी दोडे और सुदर्शनजी भी दोडे। ऋषि दोडते दोडते ब्रह्माजीके पास गये, और हाथ जोड कर कहने लगे कि, महाराज! इस आपत्तिसे तो आप मुझे मुक्त करो! ब्रह्माजीने कहा कि भाई, इस आपत्तिसे बचानेकी मेरी सामर्थ्य नही है। वहासे भगके महादेवजी के पास गये, ब्रह्माजीका उत्तर था वही महादेवजीका उत्तर मिला। अब तो श्रीकृष्ण के पास दुर्वासा गये। श्रीकृष्णने भी यही उत्तर दीया। वह यह है। यद्यपि उसके बहुत श्लोक है, परन्तु उसमें "भगवत्-प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है" इस विषयका एक श्लोक है सो यह है कि—

मयि निर्बद्धहृदया. साधव॰ समदर्शिन॰। वशीकुर्वन्ति मा भक्त्या सत् स्त्रिय सत्पति यथा ॥

अर्थात्—मुझमें जिसका हृदय गुह गया है एसे जो समदर्शी सत्पुरुष, भक्तिसे मुझे वश कर लेते है जेसे भली स्त्री भली पतिको वशमें कर लेती है, तब फिर भगवानने आज्ञा की कि, तुमने जिसका अपराध किया है, उसीसे क्षमा मागो। तब दुर्वासाने अम्बरीषके पास जाकर पांव पकड लिये, तब राजाने भी सुदर्शन की स्तुति करके ब्राह्मणका चक्रसे छूटकारा करवाया।

वैष्णव वृन्द! इस श्लोकसे भी आप लोगोंको मालुम हुआ होगा कि भगवत्प्राप्तिमें भक्तिही उत्तमोत्तम और एकदम सरल साधन है। भागवत सप्तमस्कधमें भक्ताग्रणी प्रह्लादजीने भी दैत्य पुत्रोंको उपदेश दिया है कि.—

नालं द्विजत्व देवत्वं ऋषित्वं वा सुरात्मजाः। प्रीणनाय मुकुन्दस्य न वृत्त न बहुज्ञता ॥
न दानं न तपो नेज्या न शौचं न व्रतानि च। प्रीयतेऽमलया भक्त्या हरिरन्यद्विडम्बनम ॥

अर्थात्—हे दैत्यपुत्रों, श्रीमुकुन्द भगवानको प्रसन्न करनेमें ब्राह्मणत्व नही चाहिये, देवत्व नही चाहिये, ऋषित्व नही चाहिये, चारित्र्य नही चाहिये और कोई महामहोपाध्याय हो, उसकी बहुज्ञतासें प्रभु प्रसन्न हो यह भी नही. और अमुक कुलके हो उसीपर श्रीकृष्ण प्रसन्न होते है यह भी नही, और यह कहते हो कि इनने हजारो बरस तपस्या की है इनके उपर भगवान प्रसन्न होगे यह भी नही, ये सब व्रत करते है, भाई! बडे धर्मात्मा है, इनके उपर, तो भगवान कहते है यह भी नही, वस कहते है कि, शुद्ध भक्ति है उसीसे भगवान प्रसन्न होते है और सब तो फजीता केवल विडम्बन मात्र है।

वैष्णववृन्द ! इन श्लोकोंसें मालूम हुवा होगा कि 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम सरल; तथा अच्छा साधन जो हो तो भक्ति ही है.'

दैत्य कण्टकवनचन्दनद्रुम परमभक्ताग्रणी श्रीप्रल्हादजीने भी स्तुतिमें कहा है कि "मैं मानता हू कि परम पुरुषोत्तम भगवानको धन, अभिजन, नाम, सत्कुलरूप, तप, शास्त्रका श्रवण वर्चस तेज प्रताप सामर्थ्य शौर्य पुंस्त्व ज्ञान, योग यह समग्र मिलके श्रीपुरुषोत्तमको प्रसन्न नहीं कर सकते । दृष्टान्तमें जेसे गजेन्द्रको सिर्फ भक्तिसे खुश हुए ।

वैष्णववृन्द ! इस लिये भगवान् भक्तिद्वाराही प्रसन्न होते है अन्य साधनोंसे नहीं । इस लिये 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम और सरल साधन भक्ति है' ।

परम भक्त उद्धवको उपदेश देते हुए एकादश स्कन्धमें भगवानने कहा है कि मेरे कहे हुए भक्तियोगसे मेरा नित्य जो भजन करा करे तो उसके सब काम नष्ट हो जाय । क्योंकि मे. उसके हृदयमें आया हू इस लिये । इस श्लोकका जो यदि तात्पर्य विचारे तो 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है' यही तात्पर्य निकलेगा । इस जगह एक शंका होती है कि एकादश स्कन्धमें भगवानने आज्ञा की है कि "योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्सया ।" अर्थात्— मनुष्योंके श्रेयके लिये मेने कर्म, ज्ञान और भक्ति ये तीन मार्ग प्रकट किये है तो अब तो तुम एक भक्तिहीको भगवत्प्राप्तिमें साधन बताते हो उसका उत्तर यही है कि अपन जो यदि कर्मका विचार करे तो कर्मके छ अंग है देश, काल, द्रव्य, कर्ता, मंत्र और कर्मका प्रकार, यह शुद्ध होना चाहीये. अब पहले देशकाही विचार करे तो कुवा बंध हो रहे है, ऐसा देश है । काल तो कलि है उसकी तो बलिहारी ही है । द्रव्य में तो वेजीटेबल घी आ रहा है, कर्त्ताका तो पूछो ही कया ? बहुत थोडेही मन्त्रको स्वरसहित जानते हो और यज्ञका प्रकार जानते होगे के नहि यही मुझे शंका है । अब कर्मकी बात हो गइ अब लो ज्ञान । ज्ञानमें तो पहलेही ब्रह्मचर्य चाहीये, एक कविका श्लोक है कि जो लोग खाली वायु और पानीही पीकर रहते थे ऐसे जो विश्वामित्र और पराशर वे भी स्त्रीका मुख देखके मोहित हो गये तो जो लोग दालभात और पेहु, इत्यादि रसोइयोको खाते है उनसे जो इन्द्रियनिग्रह हुवा तो विन्ध्याचल पर्वत समुद्रको तर जायगा. इस प्रकारका पाखंड जगतमें फैल रहा है । तब ज्ञान कर्म बडा ही मुश्कील है । भक्तिके लिये तो प्रभुही श्रीमुखसे आज्ञा करते हैं कि चाहे जैसा भी क्यो न दुराचारी हो वह यदि सब दुराचारोंको छोडके यदि मेरा अनन्य भजन करे तो वह सत्पुरुषही गीना जाय. इस लिये भक्तियोगका दरवाजा तो सदा सर्वदा खुलाही है । यह भक्ति शुद्ध अनन्य अन्याश्रयरहित होनी चाहीये. मनमें तो रुइका फिगर आ रहे हो कया दस तेजी के दस मन्दी, और हाथमें गौमुखी । तो कैसे भगवत्प्राप्ति होगी ? यदि शुद्ध भक्ति होगी तो जरूर भगवत्प्राप्ति निश्चयात्मक

अर्थात्—निष्काम होके अथवा सर्व कामना रखके अथवा मोक्षकी कामना रखके जो पर पुरुष है उसका तीव्र भक्तियोगसे यजन करे. इस जगह जो यदि भक्तियोगसे भगवत्प्राप्ति न होती तो—'तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ।' यह अक्षर न कहते. इस लिये कलियुगमें कर्म और ज्ञान दुर्लभ है, इससे भगवत्प्राप्तिमें केवल भक्तिही सरल तथा निष्कण्टक उपाय है।

सब प्रमाणान्तरसे यह निश्चय किया कि—'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम तथा सरल साधन जो कोई हो तो भक्ति ही है.'

अब मै अपने विषयको ज्यादह न बढाके गीताके चार, पांच श्लोक और श्रीमद्भागवतके एक, दो श्लोक देके इस विषयको सम्पूर्ण कर दूंगा. गीताके एकादशाध्यायमे अर्जुन प्रति भगवानने कहा है कि:—

अर्थात्—हे अर्जुन ! जिस रीतसे तुमने मुझे देखा उस रीतसे मै न वेदसे न तपस्यासे न दानसे न यज्ञयागादिकसे किन्तु केवल अनन्य भक्तिसे ही मुझे जान सकता है, और मुझे देख सकता है। और मुझमें प्रवेश कर सकता है। इस श्लोकसे आप लोगोंको बराबर मालुम हुवा होगा कि जो कोई भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन जगतमें हो तो भक्ति ही है।

नाहं वेदेन तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥
भक्त्यात्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ॥

श्रीमद्भगवद्गीताके अठारह अध्यायमें भगवदाज्ञा है कि:—

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्वत । ततो मां तत्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

अर्थात्—हे अर्जुन ! मैं जो हुं मैं जितना हू वह भक्तिसें यथार्थ रीतसे जानके फिर मेरेमें प्रवेश करता है। वैष्णवगण ! इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है भक्ति विना प्रवेशात्मकमुक्ति नहि मिलती। श्रीभगवद्गीताके चौदहमें अध्यायमें लिखा है कि:—

अर्थात्—जो मनुष्य अव्यभिचार—अनन्य भक्तियोगमे मेरी एकेलेकी ही सेवा करता है वह गुणोको तैरके मुझमें ही प्राप्त होता है, अर्थात्—ब्रह्मरूप होनेके योग्य है। वैष्णववृन्द ! इस श्लोकका भी तात्पर्य देखेंगे तो यही नीकलेगा. श्रीमद्भगवद्गीताके अठारहमे अध्यायमें कहा है कि—यह परम गुह्य मेरे भक्तोंमे जो कोई कहेगा वह मेरी उत्तम भक्ति करके निश्चय मुझे प्राप्त करेगा। यह श्लोककी ध्वनि यह ही नीकलती है। भक्तशिरोमणि श्रीनारदजीने भी सप्तमस्कन्धमें कहा है कि—उस समय मनुष्य सब बन्धनोसे मुक्त हो जाता है; और उस भावकी भावनासें आशयकी और आकृतिकी अनुकृति करने लगता है। महान् भक्ति योगसे हृदयके बीज दग्ध हो जाता है और अधोक्षज भगवान्को अच्छी तरह प्राप्त होता है। इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है कि यदि 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन हो तो भक्ति ही है' श्रीकपिलदेवजीने भी अपनी माता देवहूतिसे कहा है कि—वह ही आत्यन्तिक भक्तियोग मैंने कहा है जिससे तीनो गुणोको तैरके

सुखको प्राप्त करते हैं इस श्लोकका भी आशय यही है, प्रिय वैष्णवगण ! श्रीभागवतके एकादश स्कन्धमें जनकप्रति नवयोगेश्वरने कहा है कि–हे राजन् ! जो लोग गुणग्राही है और सारभागी है वे मनुष्य कलिकी प्रशंसा करते हैं क्यों कि जिसमें कीर्तन भक्तिसे ही सब काम सिद्ध होता है। भगवद्वृन्द ! कीर्तन भी एक प्रकारकी भक्ति है। नवधाभक्तिमें इसकी गणना भी की है इस लिये कलिमें तो भगवत्प्राप्तिके लिये निष्कण्टक उत्तमोत्तम तथा सरल जो कोई मार्ग है, केवल भक्तिमार्ग ही है।

पागल.

(लेखक—श्रीयुत पं. रत्नलाल शर्मा इन्खवाला, नाथद्वारा.)

(१)

अर्धनिशाकी निस्तब्धताको तोडता हुवा यह अपूर्व श्रुत शब्द कहांसे श्रवणगोचर हुवा ? अहा ! इस वेणुनादने तो हृदयतन्त्रीको भी निनादित कर दिया। आह ! ये नूपुरोंकी ध्वनि रवमें मिश्रित हो दिगन्तको कहाँसे व्याप्त कर रही है ? यहां पर कोई दृष्टिगोचर तो होता नहीं है, फिर ये मनोहारिणी मधुर संगीतलहरी कौन कहाँसे कर रहा है ? कहीं मैं सोया तो नहीं हूं ? नहीं, नहीं, ये देखो, दोनो हथियापोलके हाथी मेरे सामने हैं, ये कमलचौकका स्फटिकनिर्मित कमल भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। सामने सँमेटी हुई ध्वजा–अपने आधार दण्डसे लिपटी हुई है। ये मेरे दोनो हाथ स्वप्न की शंकाको दूर करनेको शून्यमें संचार कर ही रहे हैं। यह तो निश्चय है कि मैं न तो स्वप्नावस्थामें हूं, और न सुषुप्तिमें। मैं प्रत्यक्ष अपने बिस्तरपर बैठा हुआ हूं। अरे, यह क्या ? कहां गया वह संगीतालाप ? किधर गई वह मुरलीकी मधुरध्वनि ? निश्चय ही यह कौतुक उसी रसराज, श्यामसुन्दर, नटनागरका है ! अरे ! वो गया ? जाता कहां है ? ठहर ! ठहर ! मैं आता हूं।

(२)

बिहारी बीस बाईस वर्षका बलिष्ठ युवा है। अपने कुलधर्मानुसार वह पूर्ण धर्मज्ञ और कर्मशील है। उसे न किसीसे रागद्वेष है और न किसीसे दिखाऊ प्रेम। वह प्रेम करता है तो प्राणी मात्रसे, और उदासीन है तो अपने कुटुम्बियों तक से। वह डरता है तो सिर्फ एक सर्वेश से और किसीका उसको तनिक भी भय नहीं है। अहर्निश उसके होठ हिलतेही रहते है, पर किसी से विना कारण बोलता नहीं। उसकी उदासीनता और मौनको देखकर जन साधारण उसे अर्धविक्षिप्त कहते है, पर उसमें कोई स्पष्ट चित्तभ्रम के चिह्न नहीं दीखते। उसे जो काम दिया जाता है उसे वह पूर्णतया प्रवीणतापूर्वक पूरा करता है।

(३)

एक दिन सन्ध्याको जहाँ वार्ता हो रही थी, बिहारी भी हमेशाके नियमानुसार वहाँ जा पहुंचा। एक पण्डितजीका प्रवचन पुष्टिमार्गके ऊपर हो रहा था। पण्डितजीने खेद प्रकट करते

हुवे कहा कि यदि कहीं भाडोंका तमाशा हो, या वेश्याका गाना हो, तो लोग उसमें इतने शरीक होते है कि बैठनेको जगह नही मिलती, पर जहा धर्म के विषयमें कहीं विचार होता है तो वहा कोइ नही जाता । खास कर हमारे पुष्टिमार्गीय भाई और आचार्यतक इधरसे उदासीन है । तब ही तो विधर्मीयोंको हमारे अति उत्तम और सर्वश्रेष्ठ सम्प्रदायको मौज शोखका धर्म व इन्द्रियोंकी तृप्तिसे अनाचार बढानेवाला मार्ग कह कर हमारी हँसी करनेका अवसर मिलता है । हमारा धर्म हमे दूसरोंके धर्मोंके छिद्रान्वेषण करनेका उपदेश नही देता और न मैं किसी के धर्मपर आघात करना चाहता हू वैसे तो क्या ? हमारे ऐसे उत्तम मार्ग के सभी अनुयायी मार्गके सिद्धान्तानुसार चलनेवाले है ? । कभी नहीं, हमारे वैष्णव समाजमें ही ऐसी कई व्यक्ति है कि जिनके आचरण शुद्ध नहीं है और वह अनाचार करते हैं फिर भी बगुलाभक्त बने फिरते है । ऐसे ही कतिपय व्यक्तियोंको देखकर लोगोंको हमारे ऊपर लान्छन लगानेका साहस होता है । जिसने निर्गुण भक्तिका रहस्य हृदयगम कर लिया है वह तो अपनेको सबसे बचाता ही है, क्योंकि यदि वह अपनेको सर्व साधारणके सपर्कसे न बचावे तो उसे अपने साधनमें व्याघात सहना पडे और दैवयोगसे उसकी कहीं प्रसिद्धि हो जाय तो वह अवश्य प्रपचमें पडे बगैर नहीं रह सकता । जहा प्रपचमें साधक पडा कि उसको प्रभुका जो अनुग्रह प्राप्त हो रहा है वह प्राप्त होना बद हो जाता है । ऐसे साधक अपने उत्कर्षके मार्गसे गिरकर पतनके मार्गपर लग जाता है । इसीसे जो सच्चे वैष्णव है वो कभी अपनेको प्रकट नहीं होने देते । जो दम्भी है वही लोगोंको ठगनेके लिये बगुलाभक्त बने फिरते है । वे अपना तो (यह लोक भले न बिगडे) परलोक अवश्य बिगाडते ही है और साथही इस मार्गको भी बदनाम करनेके साधन हो जाते हैं । निर्गुण भक्तिकी व्याख्या करना सहज नहीं है, और न वह सहज साध्यही है । यह जबही सिद्ध होती है कि जब उस सतचित् आनन्दघनका अनुग्रह हो । वह सच्चिदानन्द पूर्ण दयालु है और अपने जनोंपर दया करनेके लिये हमेशा उद्यत है, पर होना चाहिये पात्र । बगैर पात्रकी पूर्ण परीक्षा किये वह कभी द्रवित नही होता । उसकी परीक्षाके साधन भी बडे कडे है । काम, क्रोध, लोभ, मोहादि अनेक भट्ठियाँ है, इनमें तपनेके बाद जो पात्र पास होता है उसीमें उस घनकी अनुग्रहबिन्दु गिरती है । जब वह अलभ्य अमृत उस पात्रमें पडता है तो उसमें छेद करनेके लिये अनेक सिद्धियाँ उकता उठती है, और जैसे बनता है वैसे वह सिद्धियाँ उस पात्रमें प्राप्त अमृतकी जगह ग्रहणकर उसको उस अमृतसे वंचित रखना चाहती है। यही समय उस पात्रके लिये पूर्ण परीक्षाका है । यदि इस समय पात्र पक्का रहा तो बेडा पार है । वरना फिर उसकी उसी अन्धवाली हालत होती है कि जो द्वारसे निकलनेके लिये हाथोंसे दिवालको टोलता चला जानेपर जब द्वार निकटमें आने तक देह खुजलाने लगा और द्वारसे आगे चलकर फिर दिवालपर हाथ मारे । सबसे उत्तम और स्वल्प साध्य सरल मार्ग श्रीमदाचार्यमहाप्रभुजीने बनाया है । यदि दृढ निश्चय रखकर जीव इस मार्गसे चला जाय

और चलित न हो तो बेडा पार है । अहर्निश प्रभुका ध्यान रखते हुवे बिना आसक्ति ससारका कार्य करना, हरेक कार्य कृष्णार्पण ही करना । अपने लिये हुवे कार्यही बन्धनके कार होते है । इस लिये जो भी कुछ किया जाय वह कृष्णार्पण ही । किसी वस्तुमें ममत्व नहीं रख आदि सिद्धान्तोंपर ही यह मार्ग स्थित है ।

जिस व्यक्तिको आप लोग पागल समझते है, मेरी समझमें वही इन सिद्धान्तोंपर चलने वाला महात्मा है । यह कहकर उन्होंने विहारी की तरफ सकेत कर दिया ।

(४)

चहु ओर आज यही चर्चा हो रही है कि विहारी आज पूर्ण पागल हो गया है । व भूचारीके नीचे पडा हुवा है और भूवारीके सामने ही टिकटिकी लगा रहा है । उससे चाहे कोई भ कुछ कहेपर जवाब नहीं देता । खाना पीना कुछ भी सुहाता नहीं है । वह सिर्फ रोताही रहता है ।

प्राचीन कीर्तन.

(૧)

પ્યાસે હમારે નયના, દરસ બિન પ્યાસે હમારે નયના (૧)
જા દિન તે મોહન ગયે મથુરા, તા દિનતે નહિ ચૈના–દરસ.
વૃંદાવનકી કુંજ ગલનમેં, રાધેસોં કર રહે સેના–દરસ. (૨)
દિન દિન પ્રતિ ભોજન નહિ ભાવત
નિંદ બિન બીતી રેન રૈના–દરસ. (૩)
જમુનાકે નીર તીર ધેનુ ચરાવે, મોહન બજાવત બીના–દરસ. (૪)
સૂરદાસ પ્રભુ આન મિલાવે, શરદ રૈના સુખ દૈના–દરસ. (૫)

(૨)

આંખડી કામણગારી હો વહાલા તારી આંખડી કામણગારી.
એ આંખડીએ સર્વ વ્રજ મોહ્યું, મોહી સકળ વ્રજ નારી—હો. (૧)
મોર મુકુટ પીતાંબર સોહીએ, કુંડળકી છબી ન્યારી—હો. (૨)
જમુનાકે નીર તીર ધેનુ ચરાવે, બંસી બજાવે રંગ પ્યારી—હો. (૩)
સોલ સહસ્ર ગોપીઓમાં એકએક કાનો તોએ કહેવાયા બ્રહ્મચારી—હો. (૪)
પુરુષોત્તમ પ્રભુકી છબી નિરખત, ચરણકમલ બલિહારી—હો. (૫)

(સંગ્રહકર્તા-શા. ડાહ્યાભાઈ હીરાલાલ, વીરપુર.)

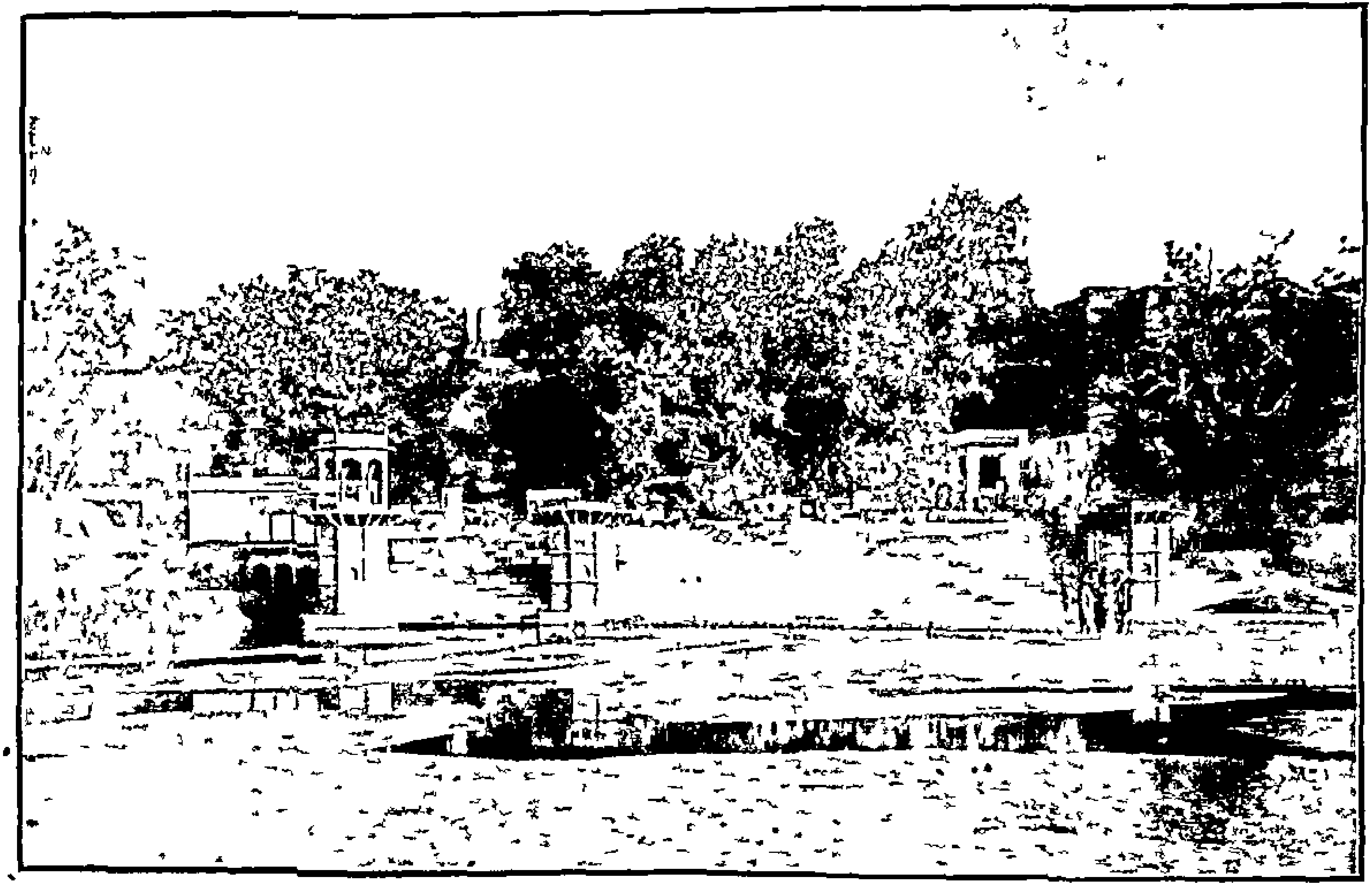

श्रीगोकुलेशवचनसुधा.

૧. એક વૈષ્ણવને ત્યાં સંન્યાસી આવ્યો. વૈષ્ણવે ભોગ સરાવી સંન્યાસીને કહ્યું કે, " ભિક્ષા લો." ત્યારે સંન્યાસી બોલ્યો, કે હું બ્રાહ્મણ છું, તારા ઘરમાં અહીરનો છોકરો ખાતો હતો, તે ભિક્ષા હું બ્રાહ્મણ નહિ લઉં.

(ભાવ) અલૌકિકમાં લૌકિક બુદ્ધિ થાય તો તે ફલથી દૂર કરે. ભાગ્યમાં ખામી હોય તો પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને પણ સમજી ન શકે. સર્વ કોઇને દેહઅભિમાન, જાતિઅભિમાન પ્રબલ હોવાથી અલૈકિકમાં સમ્બધ બની શકેજ નહિ. અમૃતવસ્તુ અછુતીજ છે જ્યાં જ્યાં અમૃતનો આવિર્ભાવ હોય, ત્યાં ત્યાંનો સમ્બધ છોવાતો નથી, જેમકે મધપુડો કોઈ હલકી જાતિના માણસ લાવે છે પણ તેને ગ્રહણ કરવા સર્વ કોઇ બાધ ગણતા નથી. વળી સંન્યાસીનો અર્થ એ કે, સં-નિ-અસ. આવાં ત્રણ પદ નિઃસરે છે. ભગવત્સમ્બંધ સિવાયનું બધું જેના હૃદયમાંથી જતું રહ્યું છે, તેજ સાચો સંન્યાસી, કે જેને પ્રભુસ્વરૂપમાંજ સ્નેહ હોય, આહિરનો છોકરો તો સાક્ષાદ્ બ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ છે. તેમાં આહીરનો ભાવ એ આસુર ભાવ ગણાય.

૨. એક ગામમાં ભવૈયો આવ્યો, ને વૈષ્ણવનો વેશ કાઢીને પરમાનંદદાસનું પદ ગાયું. " મે મેરો મન હરિસો જોર્યો ઔર સબન સો તોર્યો." એ રીતે ચાર વખત ગાવાથી દેહ પડી ગઈ.

(ભાવ) શરણ આવેલો વૈષ્ણવ ભલે સેવા સ્મરણ ન કરી શકતો હોય તો પણ પ્રભુ ફલ આપવા વિચારે તો એક ક્ષણમા આપી દે છે. વેશધારીને પણ પરમાનંદદાસજીની વાણી પ્રત્યક્ષ ફલ આપનારી નીવડી, તો અહર્નિંશ તે વાણીનું સ્મરણ કેટલે દરજ્જે ફલરૂપ થાય ? પરંતુ તે વાણીનું સ્વરૂપ જાણવું જોઇએ. પ્રભુ તો પોતાના પ્યારા વૈષ્ણવના વેશથી કેમ ન રીઝે ?

૩. એક દિવસે કહ્યું કે ભગવદીયતે કરીને ભગવદીય કહીએ, ઘી ભરી કસેંડી ઘીની કહી જાય, પણ ધાતુની ન કહી જાય. જલનો ઘડો જલનો કહ્યો જાય, માટીનો ન કહ્યો જાય. તાસુ વસ્તુ ભરી હોય તાકી પ્રબલ નહિ, મૂલ વસ્તુકો નામ કોઇ નહી લેય.

(ભાવ) વસ્તુની કીંમત છે પાત્રની કીંમત નથી. વસ્તુંભરી પાત્રની કીંમત છે. તેમ વૈષ્ણવમા જો ભગવદ્ભાવરૂપી ઘી (સ્નેહ) ન હોય તો વૈષ્ણવના કોરીજ ગણાય. સ્નેહ હોય તોં બધી અપ્રાપ્ય વસ્તુ પણ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. સ્નેહ પરાધીન કરવાનું સાધન છે. સ્નેહમા વળી અવર સ્નેહ મળીને કાર્ય થાય તો તો અલૌકિક ફળસમ્બંધ તુરત પ્રાપ્ત થાય છે. સ્વતઃ સ્નેહ જરા ભયવાળો રહે છે. તે જ શુદ્ધ ભક્તિમાર્ગની સૂક્ષ્મતા છે.

૪. યહ માર્ગમેં કાયર અપ્રયોજક હે. દો ભાઈ પૈંડે જાત હને. વાકુ વાઘ મિલ્યો. તબ એક ભાઇને હાથ સાહે. દૂજાને કુહાડીસો વાકે પગ કાપવેકી કહી, પરંતુ હાથ ધ્રૂજે ! તેને કહી કે વાકે હાથ તો મેરે હાથ મેં હે તાસુ કપાય નહીં.

(ભાવ) હીંમત વગેર એકે કામ થઇ શઇ શકેજ નહિ. પોતાને મારવાનો ભય તો હતો નહિં, કેમકે જે હાથથી મારે તે તો તેણે ઝાલી રાખ્યા હતા, ને ભય ઉત્પન્ન થયો તે શા માટે ? આ માર્ગમાં ભયવાળી વસ્તુ ધનગ્રહાદિક તો પ્રભુને અર્પણ કરી દીધું છે, છતાં તે વાત પર ધ્યાન ન આપે તો ચિન્તારૂપ દુઃખ પ્રાપ્ત થાય છે. પણ સર્વસ્વ શ્રીકૃષ્ણને સમર્પ્યાના અનુસંધાન સાથે નિવેદન કરતોજ રહે તો તો તેને કશાની ચિંતાજ ન રહે.

૫. રાજા પૃથુએ નવાણું યજ્ઞ કર્યો ને સોમો ન કર્યો, જો સોમો કરે તો ઇંદ્રાસન લેવું પડે. છતે સામર્થ્યે ઇંદ્રાસન ન લીધું. ને ઘણું પ્રસન્ન થયા.

(ભાવ) ગમે તેટલું અલૌકિક કાર્ય ભાવનાથી કર્યું હોય પરંતુ અધિકાર (યોગ્યતા) ના વિચારે પોતાનું હીનપણુંજ રાખે. ઇંદ્રાસન ગ્રહણ કરે તો પાછુ પડવું પડે. જેથી અધિકાર

અથવા અહંભાવ છેવટને પગથીએથી પણ નીચે પાડે છે. હાથી મોટો છતાં રાજા તરફથી મળતો ઉચ્ચો ખોરાક ખાતાં મોઢું મરડે, ને જાણે જે આપણે તો જંગલનાં ઝાડ પાલાના ખાનાર છીએ, તેથી શ્રીમહાપ્રભુજી આજ્ઞા કરે છે કે प्राप्तं सेवेत निर्ममः। ભગવદિચ્છાએ પ્રાપ્ત થાય તે મમતારહિત ભોગવવી.

૬. એક જણે દેવીની માનતા કરી કે મારે ત્યાં દીકરો આવે તો તને જીભનું પકવાન્ન જમાડું. દેવીએ જાણ્યું કે બીજાં બધા પકવાન્ન તો ખાધાં છે પણ જીભનું પકવાન કોઈ વાર ખાવામાં આવ્યું નથી. પછી બેટો આવ્યો ને કહ્યું કે પકવાન્ન લાવ, ત્યારે તેણે જીભથી કહેવા માંડ્યું કે લીયો લાડુ, લીયો જલેબી, લીયો ઘેબર. બધાં મેં જીભથી બનાવેલાં છે માટે ખાઓ એમ કહી ચુપટી વગાડી.

(ભાવ) આપણે પ્રભુને શરણે ગયા ને આપણો ઉદ્ધાર પણ કર્યો, પણ પેલાની પેઠે જીભનુંજ સમર્પ્યું. આ ઘર, દારા, પુત્ર, કુટુંબ, પૈસો, આ લોક પરલોક બધું જીભથીજ નિવેદન કર્યું તેમ પાછું સમર્પણ કરવામાય મીસરીનો ટુંક સરખોએ ન સમરપીયે તો જીભનાં ભોજન બરાબરજ કહેવાય.

૭ એકવાર આપ પાલખીમાં બિરાજી પર્વત પર પધારતા હતા ત્યારે પચોલીએ પુછયું જે રાજ, વૈષ્ણવને સાધન તે શું ને ફલ તે શું? ત્યારે આજ્ઞા કરી કે સાક્ષાત્ સમ્બંધ તે ફલ. ને તે વિનાનાં બધા સાધન.

(ભાવ) સાક્ષાત્ સમ્બંધ તો શ્રીવ્રજસુંદરીને થયો હતો. તેનેજ ફલ કહ્યું છે પણ તે ભાવથી. પણ જો કોઈ તે ફળ પ્રાપ્ત કરવા ધારે તો તેના ભાવનો પણ પ્રભુ સાક્ષાત્ અંગીકાર કરી સંગ ફળ પ્રાપ્ત કરાવે, આ દશાનું દાન જ્યાં સુધી જીવને પ્રાપ્ત ન થયું હોય ત્યાં સુધી સાધનમાં મચ્યાજ રહેવું, છોડવું નહિ.

૮. એક સમે સારંગી વાગતી હતી તે વારે ઓર હાથસુ તાલી દીધી, ત્યારે પંચોલીએ પુછું જે રાજ, કોઈ રાગ નથી જાણતા તેને શો દંડ! ત્યારે શ્રીજીએ કહ્યુ કે જેઓ નથી જાણતા એજ દંડ, એણે પ્રકારે વસ્તુમાત્રનું જણાવ્યું જે સદ્‌વસ્તુને ન જાણે તેને તેજ દંડ.

(ભાવ) હંમેશાં ઉત્તમ પદાર્થ પરજ પ્રસન્નતા હોય. રાગની સાથેજ તાલનો સમ્બંધ હોય જ્યા રાગ નથી ત્યા તાલેય નથી તાલ આનંદનું સ્વરૂપ છે. આનંદ, આનંદરૂપ પદાર્થથીજ શીરે, આનંદ વર્યા સિવાય આનંદરૂપ કેમ થવાય! તેથીજ આ માર્ગમા બ્રહ્મસંબંધ હેતુ છે, આનંદરૂપ પ્રભુથી કોઇ જીવ અળગો રહે તે દંડ કઈ ઓછો ન ગણાય. છે તો એજ દંડ

૯. એક વાર એક નામ પાઇવેંકું આઈ તબ પેર પેર કહે! જે હું રાંક છું હું રાંક છું. તે વારે શ્રીમુખે કહ્યું કે. કહા! લટત તો નહિ.

(ભાવ) જીવ શરણ આવે ત્યારે વિવાહિત જેટલો આનંદ થવો જોઇએ, લૌકિક વિવાહે પણ રાજી રાજી રહે છે. તો પ્રભુશરણપ્રાપ્તિ વખતેજ પ્રથમજ દીનતા ન ભાખવી જોઇએ પણ શરણ થઈ બધા પ્રકારની સેવા કરતાં છતાંય એમ વિચારે જે હે પ્રભુ! હું સેવા શું કરી જાણું? હું તો આપને શ્રમ દઉં છું આ પ્રકારની દીનતાજ ફલરૂપ છે.

૧૦. એક કે ઘરમેં વરસ દિન કો અનાજ હતો. તામેં અધિક માસ આયો તબ ધનીને કહી કે એક માસ લંઘન કરીએ, સ્ત્રી કહે લંઘન કી જાત હે, ના, ખાય જે મરીએ, પહેલે લંઘન કાએકુ કરીએ, પીછે કોન ખાય!

(ભાવ) પ્રાપ્ત થાય તે મમતા રહિત ભોગવવું. લોભ પાપનું મૂળ છે. આગળ પાછળ માટે પ્રભુજ વિચારી રાખે છે. જીવનું વિચાર્યું કશું થતુ નથી જેથી આવેલ પદાર્થનો વિનિયોગ ન લઇ પ્રભુને 'સમર્પીને દેહ 'નિર્વાહ શા માટે કરવો? તેમાં વિલંબ કરે એજ ભૂલ ગણાય.

विश्वधर्म भक्तिमार्ग.

(ઉપદેષ્ટા—ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવલ્લભલાલજી બાવાસાહેબ, પોરબંદર.)

મહામહોત્સવપ્રસંગ—શ્રીવલ્લભાચાર્યમહાપ્રભુચરણકમલમધુપાયમાન પરમ ભાગ્યવાન વૈષ્ણવ વૃંદ ! આજે આપણે દુનીયાના એક મોટામાં મોટા તત્ત્વવેત્તા જગદ્‌ગુરુ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યશ્રીનો પ્રાકટ્યમહોત્સવ ઉજવવા અત્રે શ્રીમદનમોહનલાલજીના સાનિધ્યમાં એકત્ર થયા છીએ. તે પ્રસંગે તેઓશ્રીની જીવનલીલાનું આલેખન થાય, તેઓશ્રીએ પ્રકટ કરેલા વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાતોનો વિચાર કરાય, તેમજ તેઓશ્રીએ ઉપદેશેલાં બોધવચનો પોતાના જીવનમા ઉતારી પોતાના કલ્યાણનો માર્ગ ઘડાય તે બાબત દરેક વૈષ્ણવની અભિલાષા હોય એ સ્વાભાવિક છે. આ બધામાથી આજે અમો 'ભગવત્સેવા' એ વિષય ઉપર કે જે વિષય દૈવ જીવને ઉપદેશ કરવા માટેજ આજના જયન્તીનાયકનું પ્રાકટ્ય થયું હતું. તે ઉપર કંઇક કહેવા ઇચ્છીએ છીએ.

ઉદ્ધારાર્થ ત્રણ માર્ગો—દૈવી જીવોના કલ્યાણ માટે શ્રુતિ સ્મૃતિ, પુરાણ આદિ શાસ્ત્રો ભગવાને તેમજ ભગવદાજ્ઞાથી ઋષિ મહર્ષિઓએ પ્રકટ કરેલાં છે. તેમાં કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ અને ભક્તિમાર્ગ એમ ત્રણ માર્ગો ઉદ્ધારને માટે વર્ણન કરવામા આવેલા છે. તે બાબત શ્રીમદ્‌ભાગવતના એકાદશ સ્કંધમાં ઉદ્ધવજીના પ્રતિ શ્રીમુખેથી આજ્ઞા કરેલી છે કે "યોગાસ્ત્રયો મયા પ્રોક્તા નૃણાં શ્રેયોવિધિત્સયા ॥ જ્ઞાનં કર્મ ચ ભક્તિશ્ચ નોપાયોન્યોસ્તિ કર્હિચિત્" હે ઉદ્ધવ ! મનુષ્યોને પોતાનું શ્રેય સાધવા માટે મેં ત્રણ ઉપાયો શાસ્ત્રોમા કહેલા છે અને તે જ્ઞાન, કર્મ અને ભક્તિ છે. આ સિવાય અન્ય કોઇ ઉપાય શ્રેય સાધવા માટે નથી

ઉદ્ધાર કયા માર્ગથી ?—પરંતુ આ ત્રણ માર્ગમાથી પણ "ભક્ત્યાહમેકયા ગ્રાહ્યઃ અહમેવંવિધોર્જુન ! જેવું તેં મારા સ્વરૂપનું દર્શન કર્યું તેવું તો માત્ર એક ભક્તિથીજ મારા સ્વરૂપનું દર્શન થઇ શકે છે. આ ગીતાવાક્યમાંજ ભક્તિથીજ જીવને ભગવત્પ્રાપ્તિ થઇ શકે છે એમ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રે અર્જુનના પ્રતિ આજ્ઞા કરેલી છે. તેમજ "નાયમાત્મા પ્રવચનેન લભ્યો ન મેધયા ન બહુના શ્રુતેન । યમેવૈષ વૃણુતે તેન લભ્યઃ તસ્યૈષ આત્મા વિવૃણુતે તનૂં સ્વામ્" આ પ્રભુ પ્રવચન કરવાથી, બુદ્ધિથી અથવા બહુ શ્રવણ કરવાથી મળતા નથી, પરંતુ જેનુ વરણ કરે છે, તેજ જીવને તેની પ્રાપ્તિ થાય છે. ગીતામા પણ "નાહં વેદૈર્ન તપસા ન દાનેન ચેજ્યયા" હે અર્જુન, વેદથી તપથી દાનથી કિંવા યજ્ઞોથી મારી પ્રાપ્તિ થઇ શકતી નથી." તેમજ ભાગવતમાં પણ "ન રોધયતિ માં યોગો ન સાંખ્યં ધર્મ ઉદ્ધવ ! યોગ, સાંખ્ય આદિ કોઇ પણ મને વશ કરી શકતું નથી પણ માત્ર ભક્તિથીજ વશ થાઉં છું. ઇત્યાદિ વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્‌ભાગવતનાં વચનોમાં હે ઉદ્ધવ ! વેદાધ્યયન, બલ, દાનાદિ, તથા બુદ્ધિબળ, તપો, બધામાથી કોઇથી પણ 'રસો વૈ સઃ' ઇત્યાદિશ્રુતિપ્રતિપાદિત રસસ્વરૂપ પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકતી નથી, પણ કેવળ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિથીજ તેની પ્રાપ્તિ થઇ શકે છે એમ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. પ્રેમલક્ષણા ભક્તિજ ભગવત્પ્રાપ્તિનું સાધન છે એ વાત ઉપર ભાર મુકતાં શ્રીમદાચાર્યચરણ તત્ત્વાર્થદીપના સર્વનિર્ણય પ્રકરણમાં આજ્ઞા કરે છે કે એવો કોઇ જીવ જોયો નથી તેમ સાંભળવામાંએ આવ્યો નથી કે જે જીવ ગુણાતીત શ્રીકૃષ્ણનું સેવન કરતો સર્વથા મુક્તિને પ્રાપ્ત ન થયો હોય; કારણ કે, સાક્ષાત ભગવાન ભાગવતમાં આજ્ઞા કરે છે કે "બ્રહ્મ માં પરમં પ્રાપુઃ" અર્થાત્ ગોપી, ગાય; પક્ષી સુદ્ધાં પણ પરબ્રહ્મ એવા મને પ્રાપ્ત થયાં. આટલા સંદર્ભ ઉપરથી સિદ્ધ થાય

છે કે આ કલિયુગમાં જીવમાત્રને પછી તે સ્ત્રી હોય, શૂદ્ર હોય કે ગમે તે હોય, દરેકને પોતાના ઉદ્ધારનું એક માત્ર સાધન ભગવત્સેવાજ છે.

વિશ્વોદ્ધારક જગદ્‌ગુરુ—આવો વિશ્વોદ્ધારક માર્ગ પ્રવર્તાવવા માટેજ શ્રીમદ્‌વલ્લભાધીશ્વરનું પ્રાકટ્ય આજથી સાડાચારસો વર્ષ પૂર્વે રાયપુર પાસેના ચંપારણ્યમાં થયું હતું. તેથીજ મહાનુભાવોએ પણ ગાન કર્યું છે કે ‘પ્રકટ વ્હે માર્ગ રીતિ બતાઇ, સેવારીત પ્રીત વ્રજજનકી, જનહિત જગ પ્રકટાઇ” એ શબ્દથી આ માર્ગ અમુક જનો માટેજ હોય એમ નથી, પણ પ્રાણી માત્રના ઉદ્ધારને માટે આ માર્ગ છે, માટેજ તે પદમાં ‘જન’ એવો સામાન્ય શબ્દ મૂક્યો. જો આચાર્યશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ થયો ન હતે તો વેદમાં જેનો અધિકાર નથી, એવાં સ્ત્રીશૂદ્રને કલ્યાણનો માર્ગ કોણ બતાવત ? તેથી કરીને આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રીશૂદ્રો માટેજ છે એમ સમજવાનું નથી. કારણ કે “સ્ત્રીઓ વૈશ્યાસ્તથા શૂદ્રાસ્તેપિ યાંતિ પરાં ગતિમ્ । કિં પુનઃ બ્રાહ્મણાઃ પુણ્યા ભક્તા રાજર્ષયસ્તથા ’ હે અર્જુન, સ્ત્રીઓ, વૈશ્યો અને શૂદ્ર પણ મારૂં શરણ સ્વીકારીને પરાગતિને પ્રાપ્ત થાય છે તો પવિત્ર બ્રાહ્મણો અને રાજર્ષિઓ મારી શરણાગતિનું અવલંબન કરીને પરા ગતિને પ્રાપ્ત થાય તેમાં તો કહેવુંજ શું ? આથી સિદ્ધ થાય છે કે આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રી શૂદ્રાદિક માટેજ નથી, પણ સ્ત્રીશૂદ્રાદિક જેવા વેદાનધિકારી જીવોનો પણ આ માર્ગમાં ઉદ્ધાર સમાયેલો છે, એટલે કે અન્ય માર્ગો કરતાં આમાં સ્ત્રીશૂદ્રાદિકનો પણ ઉદ્ધાર કરવાની વિશિષ્ટતા સમાયેલી છે. શ્રીગુંસાઇજીએ પણ ‘સ્ફુરત્કૃષ્ણપ્રેમામૃત’માં આજ્ઞા કરી છે કે “રાધાવલ્લભસેવયા તદુચિતપ્રેમ્ણોપદેશૈરપિ શ્રીમદ્‌વલ્લભનામધેયસદૃશો ભાવી ન ભૂતોઽસ્ત્યપિ ॥” રાધાવલ્લભ શ્રીકૃષ્ણની સેવા શી રીતે કરવી એ ઉપદેશ કરીને તેમજ શ્રીકૃષ્ણને વિષે પ્રેમ કેમ સાધવો, તે વિષયના ઉપદેશો આપીને તો આપશ્રીએ હદજ કરી છે. તેથી એમ સ્હેજેજ બોલાઈ જવાય છે કે “આ ભૂતલ ઉપર શ્રીમદ્‌વલ્લભનામ સમાન કોઇ થયો નથી તેમ થશે નહી, ખરેખર સૂરદાસજીએ પણ ઉચિતજ ગાન કર્યું છે કે ‘શ્રીવલ્લભનખચન્દ્ર છટા બિન સબ જુગમેંજુ અંધેરો.’ અસ્તુ.

નિઃસાધનોદ્ધાર—જ્યારે જ્યારે જગત્ નિઃસાધન બને છે એટલે કે કાલના બલે કરીને સાધનો પોતાના ફલ સાધવાને શક્તિમાન રહેતા નથી, ત્યારે ત્યારે સાધનોના શાસ્ત્રોદ્વારા ઉપદેશકર્તા પ્રભુ પોતેજ જગત ઉપર પ્રકટ થાય છે. જેને બીજા શબ્દમાં કહી શકીએ કે અવતાર ધરે છે, અને પોતાના સ્વરૂપબલથી જીવોનો ઉદ્ધાર કરે છે. જેમકે સારસ્વત કલ્પમા કર્યું હતું. તે વખતે પણ “અહ્નયાપ્લુતં નિશિ શયાનમતિશ્રમેણ લોકે વિકુંઠમુપનેષ્યતિ ગોકુલંસ્મ ॥” ઇત્યાદિ વાક્યોમાં વર્ણવ્યા પ્રમાણે આખું વ્રજ પણ નિઃસાધન હતું. એટલે પ્રભુએ તેવા નિઃસાધન વ્રજનો ઉદ્ધાર કરવા પોતેજ પ્રાકટ્ય લીધું હતું અને તમામ વ્રજનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો. તેજ પ્રમાણે આચાર્યશ્રી પ્રકટ થયા તે પહેલાની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ પણ ઇતિહાસ જોતાં માલુમ પડે છે કે ઘણીજ અસ્થિર બની ગઇ હતી અને લોકો પોતાનું કલ્યાણ સાધવા માટે કયા માર્ગનું અવલંબન કરવું તે વિષયમાં ઘણા ઉચાટવાળા રહેતા હતા. તે બાબત શ્રીમહાપ્રભુજીએ પણ તે સમયના ધાર્મિક વાતાવરણનો ઉલ્લેખ કરતાં પોતાનાં ‘કૃષ્ણાશ્રય’ ગ્રંથમાં આજ્ઞા કરેલી છે. “સર્વમાર્ગેષુ નષ્ટેષુ કલૌ ચ ખલધર્મિણી, પાષણ્ડપ્રચુરે લોકે કૃષ્ણ એવ ગતિર્મમ.” અર્થાત્ ખલધર્મી કલિકાલને લઇને દુનીયા પાખંડમાંજ ડુબી ગયેલી છે અને કર્મ, જ્ઞાન આદિ માર્ગો પોતાનાં ફલસાધક રહ્યા નથી, તેવા સમયમાં જીવે પોતાના ઉદ્ધારનો આધાર કૃષ્ણના આશ્રય ઉપરજ રાખવો જોઇએ, અને તેથીજ આપશ્રીએ પણ આખા જગતને ભગવચ્છરણાગતિ જેવા, જેમાં સર્વથા પાતંભય નથી તેવા માર્ગનો બોધ આપ્યો. માટેજ આ માર્ગમાં પ્રવેશ કરતાં જીવને પ્રથમ ભગવતશરણા-

ગતિનોજ બોધ આપવામા આવે છે. જેમ ભગવાને સારસ્વત કલ્પમાં ઇંદ્રાદિકની પૂજા વગેરેથી અન્યાશ્રયી બનેલ વ્રજને શ્રીગોવર્ધનને ધારણ કરીને સમજાવ્યું કે તમે એક મારા ઉપરજ વિશ્વાસ રાખો. વ્રજે તેમ કર્યું તો તે ઉદ્ધારને પ્રાપ્ત થયું. તેજ પ્રમાણે આ શ્વેતવારાહ કલ્પમા જ્યારે જગત્ નિ:સાધન બન્યુ હતું તેવા સમયમા પુષ્ટિ જીવો પણ મર્યાદા અને પ્રવાહના જીવો સાથે અથડાતા હતા. શ્રીમહાપ્રભુજીએ પ્રાકટ્ય લઇને જગતને વિદિત કર્યું કે જો તમે મારે માર્ગે ચાલ્યા આવશો તો હું આ જગતમાંજ અને આ જીવનમાંજ તમોને પ્રભુપ્રાપ્તિ કરાવી આપીશ એટલુંજ નહી પણ પોતાને માર્ગે ચાલનાર ૮૪ વૈષ્ણવોને આ જીવનમાજ પ્રભુ પ્રાપ્તિ કરાવી આપી છે

પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીમહાપ્રભુજી—આવું કહીને તે પ્રમાણે કરી બતાવવાની તાકાત લૌકિક પુરુષમાં કોઇ પણ પ્રકારે ઘટી શકતી નથી. તેથી આપણને માનવાને કારણ છે કે શ્રીવલ્લભમહાપ્રભુજીનું પ્રાકટ્ય એ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમનુંજ પ્રાકટ્ય છે, એટલુંજ નહી પણ ભક્તરાજ કૃષ્ણદાસ આદિને એ વાતનો સાક્ષાત્ અનુભવ થયેલો છે, અને અત્યારે પણ તેનોજ અનન્યાશ્રય રાખનારને થઇ શકે છે. કૃષ્ણદાસ મેઘન અનન્ય થઇને શ્રીમહાપ્રભુજીની સેવા બહુ પ્રેમપૂર્વક કરતા હતા. તેથી આપશ્રી તેના ઉપર પ્રસન્ન થયા અને કાંઇક માગવાનું કહ્યુ ત્યારે તેણે ત્રણ ચીજો માંગી. (૧) સંપૂર્ણ પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતોનું જ્ઞાન થાય. (૨) મારામાથી મુખરતાનો દોષ જાય. (૩) આપની શરણે આવતા પહેલાં જેણે મને વૈષ્ણવ મંત્ર આપ્યો હતો તે ગુરુને ઘેર આપ પધારો. શ્રીમહાપ્રભુજીએ ત્રણે વરદાન આપ્યા. બાદ શ્રીમહાપ્રભુજી તેમના ગુરુને ઘેર પધારે તે પહેલાં એક દિવસ કૃષ્ણદાસ પોતાના ગુરુને ઘેર ગયા ત્યારે ગુરુએ પુછ્યુ કે મને છોડીને બીજા ગુરુ શા માટે કર્યા ? કૃષ્ણદાસે જવાબ આપ્યો કે મેં બીજા ગુરુ કર્યા નથી, ગુરુની કૃપાથી પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય છે. તે નિયમ મુજબ આપની કૃપાથી મને શ્રીપુરુષોત્તમનીજ પ્રાપ્તિ થઇ છે શ્રીમહાપ્રભુજી છે તે પુરુષોત્તમ છે. ત્યારે તેના ગુરુએ કૃષ્ણદાસને પુછ્યુ કે શ્રીમહાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તેમાં પ્રમાણ શું ' આ સાભળતાંજ કૃષ્ણદાસ સળગતા અંગારા પોતાના હાથમા લઇને બોલ્યા કે શ્રીમહાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ હોય તો આ અગ્નિ મને ના બાળે અને ન હોય તો બાળે. આમ બોલીને એક મુહૂર્ત સુધી અગ્નિના સળગતા અંગારા પોતાના હાથમાં રાખ્યા પણ દાઝયા નહિ. આ ઉપરથી તેમના ગુરુએ તે વાત સાચી માની હતી. તાત્પર્ય એ કે શ્રીમહાપ્રભુજી સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તે વાતનો અનુભવ કૃષ્ણદાસ મહાનુભાવને થયો હતો એટલે કે આપશ્રીનું પુરુષોત્તમત્વ નિ:સંદિગ્ધ છે. તેમજ નિ:સાધન જગતનો ઉદ્ધાર કરવાનું સામર્થ્ય પૂર્ણ પુરુષોત્તમ સિવાય અન્યમા ઘટી શકે નહીં અને આપશ્રીએ નિ:સાધન જગતનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો તેથી પણ આપનું પૂર્ણ પુરુષોત્તમત્વ સિદ્ધ બને છે. અને શ્રીગુસાંઇજીએ પણ 'વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ' ઇત્યાદિ વાક્યથી તેજ આજ્ઞા કરી અને તેઓ શ્રીએ ઉપદેશ કરેલી ભગવત્સેવાથીજ જીવને ભગવત્પ્રાપ્તિ થઇ શકે છે તેમા અમો દૃષ્ટાંત આપીશુ.

શાહુકારના ૭ પુત્રો!

એક શાહુકારને ૭ પુત્ર હતા. તેમાનો એક દીકરો બાપનું ધન મેળવવા માટે પોતાની કાયાને કષ્ટ આપતો હતો અને માનતો હતો કે જો હું મારી સ્થિતિ દુ:ખી બનાવું તો માત પિતા દયા ખાઇને મને ધન આપે, બીજો પુત્ર બાપની દોલત લેવા માટે તેનું ધ્યાન ધરતો હતો. ત્રીજો બાપની વસ્તુને તુચ્છ કરીને માનતો હતો. ચોથો માનતો હતો કે 'આત્મા વૈ પુત્રનામાસિ' એ વાક્ય અનુસાર હુંજ બાપ છું.' પાંચમો ધનને માટે પિતાના પક્ષ વર્ણવતો હતો, અને છઠ્ઠો પિતાની સેવા કરવી એ પોતાનો ધર્મ સમજી પિતાની સેવા કરતો હતો. આ

છોકરાઓમાંથી બાપની પ્રસન્નતા કોના ઉપર ઉતરી આવે એ આપણે સમજી શકીએ એમ છીએ. ધર્મ સમજી સેવા કરનાર પુત્ર ઉપરજ, કારણ કે સેવા કરનાર સિવાયના પાંચે છોકરાઓ તો માત્ર સ્વાર્થનાજ સગા ગણાય. નિઃસ્વાર્થ પ્રેમ તો ધર્મ સમજીને સેવા કરનારનોજ કહી શકાય. તો તેવા પુત્રને પિતા પણ પ્રાણ થકી પ્યારો ગણે અને તેની પિતૃભક્તિને વશ થઇને રહે તો તેમા કંઇ આશ્ચર્ય નજ ગણાય. ખરેખર એ રીતેજ ભગવાનને પ્રસન્ન કરવાના ભગવત્સેવા સિવાયના સાધનો વિષે પણ સમજવું, એટલે કે પોતાની સેવા કરનારનેજ ભગવાનરૂપ નિધિની પ્રાપ્તિ થઇ શકે છે; અને તેવા પ્રેમપૂર્વક સેવા કરનાર ઉપર ભગવાન પ્રસન્ન પણ થાય છે એટલુંજ નહિ પણ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિરૂપી સુત્રમાં બદ્ધ થઇને ગોપીઓની માફક તેમના વશમા પણ રહે છે.

શ્રેયના છ અભિલાષીઓ !

તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની તથા મર્યાદા ભક્ત આ પાચને દૃષ્ટાંતમા બતાવેલાં સેવા કરનાર સિવાયના પાચ પુત્રોની સમાન ગણવા જોઇએ. એટલે કે તપસ્વી યોગી, આ બધાનું સાધન કરી શકાય છે. તેથી આ બધામાથી કોઇને પણ ભગવતપ્રાપ્તિ થઇ શકતી નથી. જેમ કે તપસ્વી તપશ્ચર્યા કરે છે અને કાયાને કષ્ટ આપે છે. તે માત્ર રાજ્ય સુખને માટે અથવા તો પોતાનો મોક્ષ થાય એટલા માટે, પણ તેમા પ્રભુના સુખનો વિચાર નથી; તો ભગવાન પણ તેને રાજ્ય અથવા મોક્ષ આપી પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ યોગી પણ પોતાના મોક્ષની ઇચ્છા રાખી ભગવાનનું ધ્યાન ધરે છે. પણ ભગવાનનું સુખ કંઇ વિચારતો નથી તેથી તેને પણ અણિમા મહિમા આદિ સિદ્ધિઓ આપીને અથવા તેને પોતાના સ્વરૂપમાં અવસ્થિતિ થવારૂપ મોક્ષ આપી તેને પણ પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ વૈરાગ્યવાન પણ ભગવાને ઉત્પન્ન કરેલી વસ્તુઓને તુચ્છ ગણીને મોક્ષની ઇચ્છા રાખે છે એટલે તેને પણ ભગવાનના સુખનો તો વિચાર નથીજ, તેમ જ્ઞાની તો જેમ દૃષ્ટાંતમા એક છોકરો પોતાનેજ બાપ સ્વરૂપ માને છે તેમ પોતાનેજ ભગવાન માને છે એટલે તેને તો સેવ્ય કોણ ? અને સેવક કોણ ? એટલે એને તો ભગવાનના સાચા સ્વરૂપનીયે ખબર નથી. તો પછી તેને ભગવાનની પ્રાપ્તિ શી રીતે થાય ? પાચમો મર્યાદા ભક્ત ભગવાનની સ્તુતિ કરે છે. એટલે કે ભગવાનનું યશોગાન કરે છે પણ પ્રેમપૂર્વક સેવા કરતો નથી માટે તેને પણ ભગવાન હાડકાનો હરામ કરીને માને છે, અને કદાચિત મર્યાદાભક્ત સેવા કરે તો તે પણ પોતાને મોક્ષ મળે તેટલા સારૂજ કરે છે. માટે તે પણ સ્વાર્થી કહેવાય. આ પ્રકારે તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની, મર્યાદાભક્ત એ પાચે જણ કોઇને કોઇ રીતે જો કે ભગવદારાધના કરે છે પણ સ્વાર્થને માટે.

ઉત્તમોત્તમ માર્ગ—ઉપરનાં સર્વ કારણો ધ્યાનમાં લઇને જગદ્ગુરુ ભગવાન વલ્લભાચાર્યશ્રીએ આજ દિવસ સુધી જગત ઉપર પ્રકટ થયેલા કર્મજ્ઞાનાદિ માર્ગોથી એકદમ વિલક્ષણ એવો પુષ્ટિમાર્ગ પ્રવર્તાવ્યો અને તેમાં બતાવ્યું કે ભક્તિની નેમ પોતાના મોક્ષ માટે ન હોવી જોઇએ એ તો એક અવશ્ય થનારી બાબત છે. પણ જીવમાત્રનો ધર્મજ છે કે તેણે દેહ ધરીને ભગવત્સેવા કરવીજ જોઇએ. આ બાબત આપશ્રીએ 'ભગવત્રૂપસેવાર્થં તત્સૃષ્ટિર્નાન્યથા ભવેત્' આ વચનામૃતદ્વારા ઉપદેશેલી છે, અને સાથે સાથે વેદ, ગીતા, ભાગવત આદિમાં ગુપ્ત રીતે રહેલો એવો એ સિદ્ધાત પણ પ્રકાશિત કરી બતાવ્યો કે સેવા કરવી એટલુંજ નહિ પણ માત્ર ક્રિયાઓનું પર્યવસાન ભગવાનમાંજ હોવું જોઇએ. બીજા માર્ગો કરતાં પુષ્ટિમાર્ગની એજ વિલક્ષણતા છે કે આ માર્ગમા માત્ર પ્રભુનુંજ સુખ વિચારાય છે અને તે સિવાયની બાબતોને ગૌણ માનવામાં આવે છે અને આજ સિદ્ધાંત વેદમાં પણ કહેલો છે કે 'આત્મનસ્તુ કામાય સર્વં

પ્રિયં ભવતિ" એટલે કે પરમાત્માને માટેજ આ બધું હોવાથી તેને લઇનેજ બધું પ્રિય હોવું જોઇએ. જ્યારે કે બીજા માર્ગોમાં પોતાનો ઉદ્ધાર આગળ મુકવામાં આવે છે અને તેના સાધન તરીકે જ્ઞાન ઉપાસના આદિ કરવામાં આવે છે, આવો અન્ય માર્ગ અને પુષ્ટિમાર્ગ વચ્ચેનો સૂક્ષ્મભેદ વૈષ્ણવોએ ભૂલવો ન જોઇએ. અત એવ શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુએ પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ બતાવતાં આજ્ઞા કરી છે કે 'સાપેક્ષતા સ્વામિસુખે પુષ્ટિમાર્ગઃ સ કથ્યતે!' અર્થાત જે માર્ગમાં માત્ર સ્વામીનુંજ—પ્રભુનુંજ સુખ વિચારાતું હોય તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ છે એટલુંજ નહિ પણ શાસ્ત્રોમાં જેને નિષ્કામ ભક્તિયોગ તથા નિર્ગુણ ભક્તિયોગ કહેવામાં આવે છે તે પણ ખરી રીતે પુષ્ટિભક્તિનેજ લાગુ પડે છે, માટે વૈષ્ણવો! હું ભગવાનનો અંશ છું અને મારો મુખ્ય ધર્મ મારા અંશી શ્રીઠાકોરજીની સેવા કરવી એજ છે એમ સમજીને દરેકે ભગવત્સેવામાં પ્રવૃત્ત થવું જોઇએ.

સેવામય જીવનની આવશ્યકતા.

આચાર્યચરણ 'ગૃહે સ્થિત્વા સ્વધર્મતઃ અવ્યાવૃત્તે ભજેત્ કૃષ્ણમ્." આ પ્રકારે ભક્તિવર્ધિનીમાં આજ્ઞા કરે છે તદનુસાર આ માર્ગ સાધુ કે વિરાગી થવાનો ઉપદેશ આપતો નથી. આમાં તો જીવને સદા સૌભાગ્યયુક્ત રહેવાનો ઉપદેશ આપે છે. આચાર્યચરણોએ પોતે તમને પુરુષોત્તમ સાથે સંબંધ કરાવી આપ્યો છે તો પછી તમારે ચિંતા કરવાની કશી જરૂર નથી. તમારે તો કાલથી પણ જરાએ ડરવાનું નથી. કારણ કે તમે જે પ્રભુની સેવા કરો છો, તે પ્રભુ કાલથી પણ પર છે એટલુંજ નહિ પણ કાલ, કર્મ અને સ્વભાવ એ ત્રણેને નિયમમાં રાખનારા છે કે જે ત્રણ આખી દુનીયાને વશમાં રાખે છે. તેના પણ આપ નિયામક છે. માટે તમારે તો આચાર્યચરણોએ આસુરવ્યામોહલીલા કરતી સમયે પણ કાશીમાં હનુમાન ઘાટ ઉપર આજ્ઞા કરી કે—સેવ્યરસ એવ ગોપીશઃ અર્થાત આપણે તો તે ગોપીજનવલ્લભનું સેવનજ કરવાનું છે અને તેજ આપણા માટે જે કંઇ પણ કરવાનું છે તે બધુંય કરી લેશે. આ મૌલિક આજ્ઞા કરેલી છે તે મુજબ ભગવત્સેવા કરવી તેથીજ તમોને ભગવત્પ્રાપ્તિ થશે. અને છેવટમાં અમો વ્યાખ્યાનનો ઉપસંહાર કરતાં જણાવીશું કે સાંનિધ્યમાં ભગવત્સેવા અને વિયોગમાં ભગવત્કથા તમો બધા કર્યે જાઓ અને તેમ કરતાં ગમે તેવાં દુઃખ આવે તે તેને સહન કરો. કારણ કે 'ત્રિદુઃખસહનં ધૈર્યમ્' એ આજ્ઞા પ્રમાણે ધૈર્ય પણ રક્ષણીય છે. આ પ્રકારે જીવન પર્યંત અવિચ્છિન્નપણે સેવા અને કથાનો પ્રવાહ ચાલુ રાખી શ્રીમદાચાર્યોક્ત્યનુસાર શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાથી તમને અલૌકિક સામર્થ્યાદિમાંથી યથાધિકાર ફલ મળશે એ ખચિતજ છે.

સર્વાત્મભાવનાં વધામણાં.

(લેખકઃ—ભગવદીય મીસ્ત્રી વેલજી નથુભાઇ, રાજકોટ.)

(રાગ લાવણી.)

નિજ આત્માના સર્વ ભાવ, સર્વ ભવનમાં દહી દેવા,
સ્થાયીપણું જો પ્રભુ વિષે થઇ, આત્મ વિષે એ લહી લેવા. ૧
સર્વ પદેથી એક સમાસે, કામ ભાવમાં એ જાણો;
અનેક ઇંદ્રિય અનેક રૂપમાં, દાતા ભોક્તા મન આણો. ૨
નિત્ય નવીને સર્વ ભાવમય, ભક્તોના એ છે સ્વામી;
અનિત્યને જન અન્ય ગણીને, તજતાં નવ લાવે ખામી. ૩

અલૌકિકતા . દેહાદિકમાં, શૃંગાર રસ આધારે એ;
આધારે આધેય રહે એ, વિકલ્પતા નિવારે એ, ૪
કામથી પૂરણ કામ થાય તે, લોક મતિએ જાણો એહ;
નિષ્કામીથી કામ થાય તે, એ વિલક્ષણતા માની લેહ. ૫
કામ સમ્બંધે કામી થાએ, નિષ્કામે નિષ્કામી થાય;
સર્વ ભાવ પરિપૂરણ ભકતો, નિષ્કામે વિરામી જાય. ૬
રસાત્મા એ, ફલાત્મા એ, ભાવાત્મા રસરૂપે એ;
અતિ આનંદે એજ આત્મા, અદ્ભુત રૂપ અનૂપે એ. ૭
કામ ભાવની મતિએ ભજતાં, પ્રાકૃત કામો નાસે છે;
નિષ્કામીમાં નિષ્કામે થઈ, વિચરતાં નહિ ત્રાસે એ. ૮
સર્વ શૃંગારો પ્રભુપણાંમાં, પતિ ભાવ સમ્બોધે જે;
શંગાર રસની ભાવે ભક્તિ, પતિવ્રત પ્રેમે શોધે એ. ૯
દોષનિવૃત્તિ જ્ઞાન ભક્તિથી, જરૂર જોતાં જાએ એ,
આ નિષ્કામી કમનીય માર્ગે, જગત કામની સૂગ જાએ. ૧૦
ઉત્તમ ભાવે ભાવન કરતાં, સ્વરૂપ સંગમવાળો થાય;
લોક વિષય નહિ રસપણા એ, રસાભાસ કારણ કહેવાય; ૧૧
જેમ રસ આગમ રસનું સ્મરણ, તદ્વત કારણ આને જાણ;
દિવ્ય શૃંગારના દિવ્ય રસગાને, મુક્ત થયાનું મનમાં આણ; ૧૨
ભજનાનંદ રસ રસિક પુષ્ટો, દેવ શિરોમણિ એ સંજોગી;
સ્વરૂપાનંદના આનંદ માંહે, મસ્ત રહે છે એ ભોગી. ૧૩
દિવ્ય સામગ્રી રસ પરિપૂરણ, એ ભોકતા પણ દિવ્યજ હોય;
અપ્રાકૃત એ વશીકરણત્વે, સ્થાયીપણું ન અવેરે કોય. ૧૪
અણુ જીવોમાં અબુદ્ધ મતિએ, રસ લેવાને દોડે એ;
એ રસ તો છે 'રસો વૈ સઃ' માં, નાહક મનડા જોડે એ. ૧૫
એ રસ ભોગી એ સંજોગી, અંગે અંગી જો હોએ;
પ્રવાહ પંથે પામે ન પ્રાપ્તિ, પ્રીતમ પ્રીતું હોયે જો. ૧૬
ઉત્તમ જનની ઉત્તમ કૃતિઓ, સર્વ ભાવ માંહે ભાવી;
પ્રતિબન્ધ ના હોએ તેને, મહત્કૃપાએ જો પામી. ૧૭
પૂર્ણાનંદની પ્રાપ્તિ અર્થે, રસાત્માને રસ તરવું;
મર્યાદાના જ્ઞાન અભાવે, અનુરાગમાં જઈ ગળવું; ૧૮
પ્રણવ ઉચ્ચારો નથી પુષ્ટિમાં, નાથ, નાથ, હે હરિ;
ભેદક વચનો ભર્યા ભાવથી, એજ જાયે તરી તરી. ૧૯
મનુ મતિ તો મંદ ઘણી છે, નહિ અધિકારી એકે અંગ;
શ્રીદ્વારિકેશની પરમ કૃપાનું, કારણ મતિએ ચાલ્યું સંગ. ૨૦

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૬.]　　　કાર્તિક, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩.　　　[અંક ૮.

श्रीकृष्णः ।

“ नूतन-आशा. ”

અભિનન્દન અર્પતી, અરુણાંબરધારિણી, વિશ્વને નવલા વર્ષે કોડીલી નવલી ઉષા. ૧
છે ભાવમાં મધુર अङ्कुरता ભરેલી, ને પ્રેમમાં મૃદુલ कन्दलता દિસંતી;
शास्वात्व છે प्रणयમાં शुचि-स्नेहમાં તો, શોભી રહી રસિક पल्लवता અહોહો ! ૨
रागએ कलिका रूपे अनुराग प्रसूनने, फलता व्यसने આવા भावात्मक रसेश છે. ૩
એ ભાવના-પ્રચુરને ઉર-મધ્ય પૂરી, વ્હાલા ! વિતાડ નવ-વર્ષ સુખે નિરોગી,
શ્રીકૃષ્ણની ચરણ-પંકજ-રેણુ, પામ, श्यामेन्दुનાં “शरण दुर्ग” મહીં પ્રમોદ. ૪

(શા. શ્રીવ્રજનાથલાલજીમહોદયપ્રણીત.)

फलं वेदान्तानां भवति परमेतत्सुखमयं विनिर्णीतं गीताशुकवचनसारोऽपि तदिदम् ॥
इदं जीवातुः श्रीव्रजवरवधूनां गिरिधर त्वदीयं लावण्यं नयनयुगले मे विलसतु ॥

नवली-प्रभात.

નવલી પ્રભાત આજે આનન્દ પૂર્ણ કરજે, ચારિત્ર્ય બુદ્ધિ-બળને, વિકસાવતો રહેજે.
અર્પું સખે ! હૃદયનાં, “પ્રેમાભિનન્દનો” ને, આ ધન્ય નવ્ય દિવસે ત્હેનો સ્વીકાર કરજે.
સેવા સ્વધર્મની ને વ્હાલા સ્વરાષ્ટ્રની એ, કરજે સમાજની એ આ પુણ્ય નવ્ય-વર્ષે.
મિત્રત્વ-ભાવનાને સુદૃઢ પ્રબદ્ધ કરજે, સત્યાગ્રહી બનીને નવ-વર્ષને દીપવજે.

ગિરિધરલાલ જ. શાહ.

अभिनंदन.

સવૈયા છંદ.

અભિ-નંદન હો ઇષ્ટ-મિત્રને, નવલવર્ષને વ્હાણે આજ,
આપ આપ્તસહ ઇચ્છિત વરજો, આહ્લાદક ટાણું આ આજ;
વિશુદ્ધિ વાસિત સંકલ્પોથી, લાખ ગણી સોહાવજો લાજ,
પ્રસન્ન હોજો પૂર્ણ તમો પર, વિશ્વવિહારી શ્રી વ્રજરાજ. ૧
પળ પળમાંથી પ્રહર બની જ્યમ, પ્રહરે. પ્રગટાય,
દિવસોથી મહિના, મહિનાથી, સંવત્સરનાં સ્વરૂપ ઘડાય;
એ રીતે ક્રમવાર કદમથી, ધર્મ તરફ હમ્મેશાં ધાવ,
નવલવર્ષનાં નવનીત પ્રાશી, અજરામર તત્ત્વે ઉભરાવ. ૨
ષડ્રિપુઓનો સાથ તજીને, પ્રભુના ઉપર પ્રીતિ ધરો,
દ્વેષાત્મક દુરિતો દૂર રાખી, જ્ઞાનસુધારસ પાન કરો;
ક્ષમા-શાંતિ-શીળ-સદ્વર્ત્તનથી, કાયાના કોઠાર ભરો,
અનુભવસિદ્ધિ અહર્નિશ વરતા, તૃષ્ણા વ્હેણુ તમામ તરો. ૩
વિકસિત પદ્મ સમા વદનેથી, કલ્યાણપ્રદ કલરવ થાવ,
વૃત્તિ વૃત્તમાં વૈદિક ધ્યેયે, અદ્ભુત સુંદરતા ઉભરાવ;
શાસ્ત્રપ્રતિપાદિત શ્રેણી પર, થનગનતા મનગમ્ય સુહાવ,
સચરાચર વ્યાપકને શરણે, પ્રભુતાઓ પ્રત્યેક કમાવ. ૪
જીંદગી સાથ જકડતા રે'જો, પૂર્વજની પદ્ધતિના પાસ,
વર્ણોચ્છેદક વલણ ગ્રહીને, રખે થતા દાનવના દાસ;
પ્રમુદિત દૃગથી પોષ્યા જાજો, કુલાચારન કોમળ અંગ,
પુણ્યોદક વ્હેતી પ્રગટાવો, સ્થળે સ્થળે ગોમતી ને ગંગ. ૫
પ્રથા પ્રતિષ્ઠિત પ્રેર્યા જાજો, સંતતિમાં સંસ્કારો લાઇ,
સમયરંગી શોભે વણ વણશ્યા, બધી રીતેથી હજો બલિઇ;
ભગવદ્ પ્રતિ યાચે ને ઉચરે, ભાઇશંકરજી ભવ્ય ભલાઇ,
સંવત્ ઓગણીસેં ઇકયાસી, સૌ જનને નિવડો સુખદાઇ. ૬

કવિ ભાઇશંકરજી વિદ્યારામ પંડિત.

અભિનંદનો—નવીનવર્ષના સુમંગલદિનોમાં જે જે ભગવદીયોએ અમારા ઉપર પોતાની શુભ હાર્દિક લાગણી બતાવનારા પત્રો લખ્યા છે, તેને માટે અમે તેમનો અંતઃકરણપૂર્વક ઉપકાર માનીએ છીએ:–૧ ભગવત્સેવાપરાયણ પરમ ભગવદીય રાયબહાદુર શેઠ હરિશંકરજી ઓનરરિ મેજીસ્ટ્રેટ, હરદા, ૨. શ્રીયુત શેઠ ધરમસી માધવજી ઠાકરશી, ૩. શેઠ લક્ષ્મીદાસ ભીમજી મટાણી, ૪. રા. રા. નારાયણદાસ પરમાનંદદાસ ડભોઇવાળા. ૫. પટેલ મનજી દેવજી, ૬. બક્ષીજી મગનલાલ હરિલાલ,

૭. શ્રીયુત ક્ષેત્રપાલ શર્મા, માલીક સુખસંચારક કું. મથુરા, ૮. રા. રા. છોટાલાલ મનસુખલાલ શાહ તલાટી, ૯. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ. પરમ ભગવદીય શેઠ રણછોડદાસ વરજીવનદાસ પેટલાદીએ તો શ્રીજીની પ્રસાદી તુલસી કવરમાં મોકલી તેને માટે તો અમે જેટલો ઉપકાર માનીએ તેટલો થોડો છે. પણ તેજ કવરમાં સુદર્શનજી અને સ્તોત્ર મલ્યાં. આમાં "અન્યાશ્રય નજ થાય" એવું જે શેઠજીએ છપાવ્યું છે તે તો સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતથી તદ્દન વિરુદ્ધજ છે. વૈષ્ણવો કદી ગમે તેવી સ્થિતિમાં પણ પોતાના પ્રાણપ્રેષ્ઠ વિના અન્યનો આશ્રય ન જ કરે તો શ્રીસુદર્શનજીની વાત જ ક્યાં રહી ? અહીં તો શ્રીગોપાલોપાસના પણ ગૌણ છે ત્યાં શ્રીસુદર્શનજીનાં સ્તોત્રનું સ્થાન જ શું હોય ? શ્રીજીના મંદિરના શિખર પરના સુદર્શનજીનો ભાવ જ અલગ છે એટલે ત્યાં અન્યાશ્રય નથી. બાકી શેઠજીએ મોકલેલા સ્તોત્રથી સ્પષ્ટ અન્યાશ્રય થાય જ. પ્રેમમગ્ન મરજાદી શેઠજીને આ વર્ષે આ લપ કોણે વળગાડી ?

पंद्र तिथि.

(લે:—શ્રીશુકદેવ.)

સખી પડવે પૂરણ પ્રીત, બાંધી નાથેરે, અલબેલે રમવા રાસ, રાખી સાથેરે. (૧)
સખી બીજે બાળક રૂપ મનડું મોહ્યુંરે; રસઘેલો રમાડે રાસ, ચિત્તડું મોહ્યુંરે. (૨)
સખી ત્રીજે ત્રિભુવનનાથ, આવી ઉભારે, ગઇતી જળ ભરવા કાજ, રસ્તે થોભ્યારે. (૩)
સખી ચોથે ચંચળ ચિત્ત, લાગ્યું ભમવારે; શામળીયો પકડી હાથ, લાગ્યા રમવારે. (૪)
સખી પાંચમે પૂર્ણાનંદ, પ્રેમે બાંધીરે; જળક્રીડા કરી ગયા નાથ, મનોરથ સાધીરે. (૫)
સખી છઠ્ઠે છબીલો પ્રાણ, હરી ગયા મારારે; મને ઘેલી બનાવી નાથ, પોતે ન્યારાંરે. (૬)
સખી સાતમે શ્રીઘનશ્યામ, રૂપ નિહાળ્યુંરે; નિરખી મંદ હાસ્ય મુકુંદ, વિશ્વરૂપ ભાળ્યું. (૭)
સખી આઠમે આનંદકંદ, બંસી બજાવેરે; જડચેતન સૌને પ્રાણ, અર્પી સુણાવેરે. (૮)
સખી નવમીએ નંદ કિશોર, ગયાતા મેલીરે; સૌ સખીયો શોધે નાથ, હતી રસઘેલીરે. (૯)
સખી દશમે દ્વારિકાધીશ, મહેલમાં માણ્યુંરે, રુકિમણી સત્યભામા સાથ ઉભય કર તાણ્યુંરે.(૧૦)
સખી એકાદશી અપવાસ, આવ્યો ભારીરે; સૌ સખીયો હળી મળી સાથ, ભજ્યા મુરારીરે (૧૧)
સખી બારશે બળભદ્રસાથ, રમતા ભાળ્યારે; શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર ગોપ સાથ, પ્રેમે નિહાળ્યારે. (૧૨)
સખી તેરશે તારણહાર, કંસને મારીરે; છોડ્યાં બંધન પિતુમાત, તણાં મુરારીરે. (૧૩)
સખી ચૌદશે ચતુર્ભુજ રૂપ, દર્શન દીધાંરે; કૃતાર્થ કરી સૌ સાથ, પાવન કીધાંરે. (૧૪)
સખી પૂનમે પ્રાણ જીવન, પ્રીતમ પામ્યાંરે, મળીયા શ્રીનંદ કુમાર, દુઃખડાં વામ્યાંરે. (૧૫)
પંદર તિથિ પૂર્ણાનંદ તણી, કોઇ ગાશેરે; તે કુટુંબ કબીલા સાથ, પાવન થાશેરે. (૧૬)
શુકદેવ જે એ નાથ, શ્રીકૃષ્ણ મુરારિરે; યાચું દીનતાથી એક, દૈન્ય વિહારીરે. (૧૭)

तवतवडी.

તવતવડી સખિયોને સાથે લઈ, રમવા નિસર્યાં રાધા વ્રજની માંહ્યજો,
જાતાં જાતાં નંદ કુંવર સ્હામા મળ્યા, પાસે આવી ઝટપટ ઝાલી બાંહ્યજો.—તવતવડી ૧.
મલકાતે મુખડે મોહનને રાધા કહે, આ તે કેવી લાલ તમારી રીતજો;
આ સખિયો સહુ કહેશે જઇને માતને, શાને રાખો અમ શું આવડી પ્રીતજો.—તવતવડી ૨.
કૃષ્ણ કહે સુણ રાધા કહું છું કાનમાં, તત્ત્વ એક પણ જુજવા બેના દેહજો;
ગોલોકેથી ક્રીડા કરવા ઉતર્યાં. મુખ્ય સ્વરૂપને લઇને છે આ સ્નેહજો.—તવતવડી ૩.
સુણતાં રાધા સમજ્યા એકજ સાનમાં, રાધા માધવ કહેવાના બે નામજો;
મનમોહન માધવ છે રાધા રૂપને, રાધા જીતે છે છે સુંદર શ્યામજો.—તવતવડી ૪.
જે સખિયોએ "ગોષ્ટમગોષ્ટી" સાંભળી, તે સખિયો થઈ રાધા માધવ રૂપજો;
રાધાવલ્લભ રસિક શિરોમણિ શ્રીહરિ, વિઠ્ઠલ તેને નમતાં રહે છે ચૂપજો.—તવતવડી. ૫

વિઠ્ઠલદાસ લાલદાસ રોહાવાળા.

श्रीकृष्णनामप्रभाव.

(માઢની ધૂનમાં.)

રૂડું પતિતપાવન, અધમ ઉદ્ધારણ, ભવજલ તારણહાર શ્રીકૃષ્ણનું છે નામ;
સહુ પાપવિનાશક, સંપતિદાયક શ્યામ. (ટેક.)
ભાવ ધરી જે જન શુદ્ધ મનથી કરશે હરિનું સ્મરણ;
દુઃખ ટળે સુખ સર્વ મળે વળી ટળશે જન્મ ને મરણ. (૧)
મનહર મોહનની મૂરતિ, નીરખી નેત્ર ઠરે જોઇ સ્વરૂપ;
થઇ કૃતાર્થ તે પ્રભુદર્શનથી, પડે નહી ભવકૂપ. (૨)
પરમકૃપાળુ ભક્ત શ્રીહરિનાં, ભજે ભજાવે શ્રીશ્યામ;
નામસ્મરણની ગંગા વહે તેમાં ભક્તો પામે છે વિરામ. (૩)
નામ તણો મહિમા છે મોટો, મુખે કહ્યો નવ જાય;
બ્રહ્મા નારદ શારદ જેના, ગુણ અહર્નિશ ગાય. (૪)
તો પણ તેનો પાર ન પામે, ત્યાં હું શું કહું મતિમંદ;
ભક્ત કૃપા અને ગુરુકૃપાથી, ગુણ વર્ણવું ગોવિંદ. (૫)
સેવા સ્મરણ ને કૃષ્ણ કીર્તનમાં, માનો અતિ આનંદ;
'ગિરિધર' કેરી ભક્તિ કરીને, ટાળો ભવનો ફંદ. (૬)

(પ્રયોજકઃ—ગિરધરલાલ જ. શાહ.)

श्रीलालबावा श्रीगोविन्दरायजीनां मंगलमय प्राकट्यनो गरवो.

રાગ—(પુનમ ચાંદનીનો.)

આજે વૈષ્ણવ જનનો ભાગ્યભાનુ નભ શોભતો રે, ભુમિ વ્રજમંડળની મંગલમય દેખાય.
શ્રીયમુનાજી સુંદર તરંગથી ગાજી રહ્યાં રે, શોભે રોમાંચિત હરિદાસ વર્ય ગિરિરાજ,
પ્રાકટ્ય લાલ કૃપાલ શ્રીવલ્લભવરને બારણે રે. ૧.

સાખી–શ્રીગોકુલના ચન્દ્રમા, શ્રીગોકુલના રાજ, પ્રસન્ન મુખ દર્શાવતાં વિરાજતા વ્રજરાજ,
ધારી કુલહ ચન્દ્રિકા સાથ દિવ્ય શૃંગારનેરે નિરખે પૂર્ણ નયનથી શોભા વ્રજની આજ,
ગોકુલપતિની દૃષ્ટિ અમૃત વૃષ્ટિ અનુભવેરે, દૈવીજનના મનને અપૂર્વ આનંદ થાય. ૨.

સાખી–શ્રીગિરિવર પૂજન તણો સુખકર કાર્તિક માસ,
ધન્ય સુદી તેરસદીને પૂરી નિજજન આસ,
સોહે ધન્ય વાર ગુરુનો દૈવી શુભ યોગ છે રે શોભે ધરતી ઘટિકા સર્વ રીત કલ્યાણ,
દેવો પુષ્પ તણી વૃષ્ટિ કરતા આકાશથીરે, ગાતા ગુણીજન ઉભા મંગલયશને દ્વાર. ૩.

સાખી—દેવ દુંદુભિ વાજતાં, ગગન ગંડકે નાદ,
નૃત્ય કરે ત્યાં અપ્સરા મનધારી આહ્લાદ,
ત્યાં તો ગાન કરે છે ગન્ધર્વ અતિ હર્ષથી રે, ઋષિવર મુનિવર આશિષ દે છે વારંવાર,
વિપ્રો વેદ મંત્ર ઉચ્ચારે અતિ આનંદમાંરે, કરતા વ્રજવાસી સૌ મંગલ જયજયકાર ૪.

સાખી—ઘર ઘર આનંદ ઉલટયો તોરણ બાંધ્યાં દ્વાર,
વૈષ્ણવ મન અતિ મોદમાં હર્ષ ભર્યાં નરનાર,
ગોકુલની ગલિયોમાં માનવ સાગર ઉલટયોરે, ઉગ્યો ગોકુલેશ સૃષ્ટિનો પૂરણ ચન્દ્ર,
હરખે ગાન દાન ને માન ભર્યાં સૌ માનવીરે, આવ્યાં ચંદ બાવાને દ્વાર ભર્યાં આનંદ. ૫.

સાખી—વ્રજ વનિતા સિરપર ધરી મંગલ કલશો આજ,
કર શ્રીફળ કુંકુમ અને દૂર્વા મંગલ સાજ,
આવ્યાં હર્ષ ઉમંગે વલ્લભવરને આંગણેરે, દેતાં દિવ્ય વધાઇ શ્રીમાજી મહારાજ,
ગાતાં મંગલ ગીતો જન્મ વધાઇ લાલનીરે, છાયો ભૂમંડળમાં સુવર્ણનો રવિ આજ. ૬.

સાખી—ચતુર્થ પંચમ પીઠના વૈષ્ણવ બહુ હરખાય,
અમૃતવાણી સાંભળી દર્શન કરવા જાય,
ઉલટયો આનંદ ઉદધિ શ્રીગોકુલના બારણેરે, જેની દિવ્ય લહરીયો કામવને ઉભરાય,
શોભે આનંદાદ્રિ સત્ય નામ આજે કરીરે, આખું વ્રજમંડલ આ આનંદે મલકાય. ૭.

સાખી—વેદ મંત્રને બ્રાહ્મણો, મંગલગીતો નાર,
યશ ગાતા ગુણીજન ઘણા, વૈષ્ણવ જયજયકાર,
ગાયો મંગલ શબ્દે હર્ષ નાદને આદરેરે. શોભે વત્સ અને ગાગારેલા ગોવાળરે,

दिव्या परित्यागिनी !

(૧)

તે એક મુગ્ધા હતી.

તેનામાં અપૂર્વ સૌંદર્ય હતું. તેના કોમળ પ્રત્યઙ્ગમાં મૃણાલનું માર્દવ હતું. કિંતુ તેનો પતિ અતિદુર્વ્યસની હોઈ, સર્વસદ્‌ગુણાલંકૃત આ સાધ્વી પત્નીનો ત્યાગ કરી, આજે કેટલાએ દિવસોથી અદૃશ્ય થઇ ગયો હતો. ત્યહારથી એ મુગ્ધા લૌકિક કુટુમ્બીજંજાળને પરિત્યજી કાલિંદીનાં પ્રભુસેવામય ત્યાગિજીવન વિતાડતી હતી.

એ પ્રભુપ્રેમ-ઉન્મત્તા ત્યાગ-અવસ્થામાંએ દિવ્ય ષોડશ શૃંગાર રચતી. નવનવાં વસનો પરિધાન કરતી. નિતમ્બ-સ્પર્શી સ્વકીય કેશાવલિમાં બકુલ માલતીનાં સુરભિત સુમનો ખોસતી! ત્હોયે એ સંન્યાસિની હતી!

એના ત્યાગનું અન્ય ત્યાગોથી આ જ વૈચિત્ર્ય હતું. એનો ત્યાગ પ્રાકૃત સાધુ સંન્યાસીઓથી અનેરો હતો. અપ્રાકૃત હતો. યદ્યપિ એણે લૌકિક સર્વસ્વનો ત્યાગ કર્યો હતો, ત્હોયે તેની ત્યાગબુદ્ધિમાં ભગવત્પ્રાપ્તિનું ફળ નહોતું પરન્તુ ભગવદ્‌ભિલષિતત્વે ત્યાગ હતો એ મેધાવતી બાળાએ આત્માનોએ પરિત્યાગ કર્યો હતો! ક્ય્હારે ક્ય્હારે કેલિસાલલાનાં શ્યામલામન્દ વહન્તા નીરને એકી દૃષ્ટિએ નિરખી રહેતી, તેમાં તેને ઘનશ્યામનાં દર્શન થતાં. સહસા એ પ્રેમવિહ્વલ થઇ જઈ કોમળ પુલિન્દ ઉપરજ મૂર્છિત થઇ ઢળી પડતી આત્માનુસંધાનજ વિસરી જતી.

શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શનની એને આર્તિ હતી. એ સ્વરૂપસેવા કરતી કરતી આનન્દકન્દના વિપ્રયોગનો અનુભવ અનુભવતી આના માટેજ એણે ત્યાગની આવી અલૌકિક સાધના સાધી હતી સંયોગમાંએ વિપ્રયોગ પ્રાપ્ત કરવો એ જ એને અભીષ્ટ હતું. શાસ્ત્રકારોએ સંયોગશૃંગારથી વિપ્રલમ્ભને શ્રેષ્ઠ માન્યો છે અત એવ એ તરુણીએ રસશાસ્ત્રજ્ઞ તરુણીએ વિપ્રયોગશૃંગારસ્વરૂપ શ્રીવૃષભાનુજા-કાન્તાને આરાધ્યા હતા.

જ્યહારે એ શ્રીકૃષ્ણનો સાક્ષાત્કાર અનુભવતી ત્યહારે એના હૃદયમાં નવોલ્લાસનાં તરંગો ઉછળવા લાગતા. સમ્ભ્રમે ભાવભર્યા શૃંગારોથી સર્વાંગ અલંકૃત કરતી અને શરદોત્ફુલ્લિત ચન્દ્ર-યામિનીમાં એ કરમાં વીણા ગ્રહી શ્રીકૃષ્ણની અલૌકિક લીલાનાં રસ માધુર્ય-નિર્ઝરતા પદો આલાપતી કિન્તુ પુનઃ પ્રભુપરોક્ષમાં શ્રીકૃષ્ણની અમિલનદશામાં સર્વ શૃંગાર-પરિધાનોનો ત્યાગ કરી પરમ સંન્યાસિની થઇ જતી.

(૨)

એનું આત્મામાં પ્રિયત્વ કેવળ પ્રભુપ્રીત્યર્થજ હતું.

પ્રભુચરણે એણે સર્વસ્વનાં સમર્પણ કર્યાં હતાં: ગૃહસ્થિત આત્મબન્ધુજનથી નિવૃત્ત થવા એણે કાષાય-વસનની કલ્પના કરી હતી. શ્રીમહાપ્રભુની આજ્ઞાનું એને સંપૂર્ણ ભાન હતું. એણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણનાં ગ્રંથોમાં અવગાહન કર્યું હતું. અતઃ વિશ્વ-વિભ્રમણ કરતા જ્ઞાનમાર્ગીય શુદ્ધ ત્યાગીઓને સંન્યાસીઓને

પોતાના કાષાય વસ્ત્રનું તેમનાં ભગવાં વસ્ત્રોથી પાર્થક્ય સગર્વ દર્શાવતી શ્રીમહાપ્રભુની નિમ્ન આજ્ઞા ઉચારતી કેઃ—

स्वीयबन्धनिवृत्त्यर्थं वेषः सोऽत्र न चान्यथा ।

કોઈ ધૃષ્ટ એ આદર્શ સંન્યાસિનીને પ્રશ્ન કરતો કે તમારા ત્યાગનો ઉદ્દેશ શો! ત્ય્હારે એ શાંત મૃદુ-વચનોથી એટલુંજ કહી દેતી કેઃ—

विरहानुभवार्थं तु परित्यागः सुखावहः ।

એને મુખરતા દોષની મહાશંકા રહેતી, અતએવ એકાંત કાલિંદીનું નિર્જન તટ તેણે પ્રભુ-ધ્યાન, સ્મરણ સેવા માટે શોધ્યું હતું, તે અષ્ટપ્રહર પ્રભુવિયોગની આર્ત્તિ અનુભવતી હતી.

એનો ત્યાગ શાસ્ત્રાજ્ઞાથી પર હતો. એના ત્યાગમાં કાષાય વસ્ત્રનું શાસ્ત્રીયત્વે વિધાન ન્હોતું! એના ત્યાગની અસ્મિતા અનિંદ્યા હતી.

ખચિતજ એ લલના પૂર્ણ પુરુષોત્તમના પ્રેમની ઉન્માદિની હતી.

(૩)

એને વ્યસનના ચરમફલ-સ્વરૂપે શૃંગારકલ્પદ્રુમરસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની અપ્રાકૃત નિત્ય-લીલાઓના અનુભવો પ્રાપ્ત થયા હતા. જ્ય્હારે એ આવા અકથનીય સૌંદર્યપૂર્ણ અનુભવો અનુભવતી ત્ય્હારે તેનું શરીર નિર્જીવસમ બની જતું. દેહ ભૂમિએ પડી રહેતો અને એનો આત્મા શ્રીકૃષ્ણની લીલામાં વિચરવા લાગતો. એ રમણીનો પરિત્યાગ આવું અગમ્ય ફળ પ્રાપ્ત કરવા અને વિભુ-વિરહને અનુભવવા જ હતો.

લૌકિકવિષય-વિકારવિહીના બાલામાં પ્રભુ-પ્રસાદનું અનિર્વચનીય પાવિત્ર્ય હતું. એની કુટી પાસે કોઇ પણ વિષયાક્રાન્ત દેહ આવીજ ન્હોતો શકતો. દુષ્ટો એની દૃષ્ટિથીજ થર થર કંપતા. કિંતુ બાળામાં ક્રોધનો સર્વથા અભાવજ હતો. પ્રાણી માત્રને તે શ્રદ્ધાથીજ જોતી. પોતાના પ્રાણ-ધનશ્રીકૃષ્ણમય એ વિશ્વને નિરખતી. અતઃ એને વિશ્વના કોઈ પણ પદાર્થ તરફ ઘૃણા ન્હોતી. જ્ય્હારે પરબ્રહ્મ મધુર સૌંદર્યપૂર્ણ અને અલૌકિક આકારવાન છે ત્ય્હારે તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલી સૃષ્ટિમાં માધુર્ય સૌંદર્ય અલૌકિકતા કેમ ન સંભવે? એનું વેદાન્ત આવુંજ અદ્વૈત, શુદ્ધ અદ્વૈતનું હતું. બ્રહ્મની નિરાકારતા એને ખુંચતી, એ નિર્ગુણ આનન્દમગ્ન સાકાર પ્રભુની ઉપાસિકા હતી. તેમજ વિરહથી આર્ત્ત હતી. તોએ તેનું સ્વરૂપ ગંભીર હતું. અદ્ભુત હતું. ખરેખર એ દિવ્ય પરિત્યાગિની હતી. આનન્દકન્દનાં તીવ્રતર વિરહની વિરહિણી હતી. એ વિરહદશામાં પ્રભુગુણાનુવાદનુંજ અવલંબન કરતી હતી. અન્યથા એનું જીવન અસ્તિત્વ અશક્ય હતું. અતઃ એના ત્યાગ-સંગીતમાં વિયોગવ્યાધિવિદીર્ણહૃદયનાં આક્રંદ સંભળાતાં! તે અપૂર્વ (પુષ્ટિ) પરિત્યાગિની હતી. दुर्लभोयं परित्यागः प्रेम्णा सिध्यति नान्यथा ॥

“પરાગ”

नि. ली. श्रीगोवर्धनलालजी
महाराज

नित्यलीलास्थ गोस्वामी
श्रीगिरिधरलालजी महाराज.

श्रीसुबोधिनीजी.

(લેખાઙ્ક ૧ લો.)

(લેખકઃ—રા. રા. હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી, મીમાંસાશાસ્ત્રી, વેદાન્તવિશારદ, M. R. A. S.

પુરાણશબ્દનો અર્થ.

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः ।)

સમ્પૂર્ણ સંસ્કૃત વાઙ્મયમાં શ્રીમદ્ભાગવત અદ્વિતીય ગ્રન્થરત્ન છે. શ્રીમદ્ભાગવતની પુરાણમાં ગણના થાય છે. સામાન્ય રીતે પુરાણશબ્દ ઉપરથી સૃષ્ટિક્રમ, મન્વન્તરકથા, વંશવર્ણન, ભગવચ્ચરિત્રો વગેરેથી યુક્ત ગ્રન્થનોજ બોધ થાય છે. વાસ્તવિક રીતે પુરાણશબ્દ આવા સંકુચિત અર્થવાળો નથી. इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् । विभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति ઇત્યાદિ વાક્યોથી વેદાર્થનું ઉપબૃંહણ (વિસ્તાર) કરવા માટે જ પુરાણો છે. વેદાર્થનો વિસ્તાર આ એક જ પ્રયોજન હોવાથી પુરાણોની મહત્તા વેદાર્થને સમજાવવામાં જ છે. પ્રાચીન સભ્યતા અને રાજાઓ તથા ભક્તોના ચરિત્રનું વર્ણન કરનારા પુરાણો છે, આટલું જ જે લોકો માને છે, તેઓ મ્હોટી ભૂલ કરે છે.

પુરાણો શાસ્ત્ર છે.

શ્રીમહાપ્રભુજી તત્ત્વાર્થદીપનિબન્ધના શાસ્ત્રાર્થપ્રકરણની સમાપ્તિમાં આજ્ઞા કરે છે કેઃ—

अर्थोऽयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यै रामायणैः सहितभारतपञ्चरात्रैः ।
अन्यैश्च शास्त्रवचनैः सह तत्त्वसूत्रैर्निर्णीयते सहृदयं हरिणा सदैव ॥

આ સ્થળે अन्यैश्च शास्त्रवचनैः શબ્દોનો અર્થ[1] પુરાણ કરવામાં આવ્યો છે. શાસ્ત્ર એટલે ધર્મનું શાસન કરનાર, અર્થાત્ ધર્માધર્મનો વિવેક કરનાર. વેદનો અર્થ અત્યન્ત ગમ્ભીર હોવાથી વેદાર્થ કેવલશબ્દોની ખેંચતાણથી થઇ શકતો નથી. નિરુક્ત, કલ્પસૂત્રો, [2]ષોડશલક્ષણી (પૂર્વોત્તરમીમાંસા) ભગવદ્ગીતા અને [3]સમાધિભાષાને અનુસરતોજ વેદાર્થ કરવાનો છે. વેદનો પૂર્વકાણ્ડ અને ઉત્તરકાણ્ડ ધર્મ અને જ્ઞાનનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે, તેથી વેદનો સ્વતંત્ર અર્થ કરીને કાલનિર્ણય, ઇતિહાસ કે સભ્યતાના સમ્બન્ધમાં વેદની શ્રુતિઓ ટાંકવામાં આવે છે, તે સર્વથા અયોગ્ય છે, એટલુંજ નહિ, પણ વેદનું [4]પ્રયોજન અને મર્મ સમજ્યા વિનાજ

---

[1] अन्यानि शास्त्राणि पुराणरूपाणि । પ્રકાશ. [2] આપણા સમ્પ્રદાયમાં પૂર્વોત્તરમીમાંસાનું ઐકશાસ્ત્ર્ય સ્વીકાર્યું નથી, અન્યથા व्याससूत्राविरोधेनैव तदङ्गीकरणम् ઇત્યાદિ પંક્તિઓની વૈયર્થ્યાપત્તિ પ્રાપ્ત થાય. ષોડશલક્ષણી શબ્દ આ સ્થળે શાસ્ત્રદ્વયના અર્થમાંજ લેવો. [3] સમાધિભાષા શબ્દ પુરાણાન્તરનુંએ ઉપલક્ષણ છે. અન્યથા अन्यैश्च शास्त्रवचनैः ઇત્યાદિ વાક્યો વ્યર્થ થાય. [4] સંબંધ, વિષય, અધિકારી અને પ્રયોજન એ ચારે સમજવા.

અકાણ્ડતાણ્ડવ જેવું છે. વેદનો અર્થ શાબ્દિક મારામારીને લીધે અન્યથા ન થાય તે માટેજ ભગવાન્ વેદવ્યાસે વેદનો વ્યાસ, તદુપબૃંહણાર્થે પુરાણો અને તત્ત્વસૂત્રોની રચના કરી અને સ્વશિષ્ય જૈમિનિદ્વારા ધર્મસૂત્રો રચાવ્યાં. વેદનો અર્થ કરતાં પહેલાં જો આટલું ધ્યાનમાં હોય તોજ પુરાણોના સમ્બન્ધમાં અત્યારે જે અત્યન્ત ગર્હ્ય કલ્પનાઓ કરવામાં આવે છે, તેની [1]અયોગ્યતા બરાબર સમજી શકાય સર્વજ પુરાણો પ્રભુના તે તે સ્વરૂપનું વર્ણન કરે છે. જેમ જ્ઞાનના અંગરૂપે સૂર્યાદિરૂપને ધારણ કરનારા પ્રભુનું વર્ણન ઉપનિષદોમાં મલે છે, તેમજ પ્રભુના જુદાં જુદાં સ્વરૂપોનું વર્ણન જુદાં જુદાં પુરાણો કરે છે. पुराणेष्वपि सर्वेषु तत्तद्रूपो हरिस्तथा એમ શ્રીમહાપ્રભુજી પણ આજ્ઞા કરે છે. સર્વજ પુરાણો પ્રભુના માહાત્મ્યનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે. અને દુર્ગા, ગણપતિ પ્રભૃતિનું મહત્ત્વ જણાવતાં પુરાણો પણ આવરણદેવતારૂપે હોવાથી વિશિષ્ટ (શ્રીકૃષ્ણ)ના શેષત્વે (અંગત્વે) છે. અથવા સર્વજ રૂપો પ્રભુનાંજ સ્વરૂપો છે. સાધનરૂપે અને ફળરૂપે પ્રભુ પોતેજ છે. આ રીતે પુરાણો **કેવલ ધર્માધર્મનોજ નિર્ણય વેદને અનુસરીને કરતા હોવાથી શાસ્ત્રોજ છે.**

શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ.

शास (सु) ધાતુ ઉપરથી શાસ્ત્રશબ્દ સિદ્ધ થાય છે. આ ધાતુનો અર્થ અનુશિષ્ટિ થાય છે અનુશિષ્ટિ આજ્ઞા. અર્થાત્ ધર્માધર્મનું શિક્ષણ આપે તે શાસ્ત્ર શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ (૧૬–૨૪) કર્તવ્યાકર્તવ્યની વ્યવસ્થા સમજાવનારૂં સાધન શાસ્ત્રશબ્દથી વ્યવહૃત થયું છે. સર્વ વિદ્વાનો "શાસ્ત્ર" શબ્દનો અર્થ અને વેદ તદુપજીવી સ્મૃતિ પુરાણાદિ કરે છે. જ્યારે કેટલાક પાશ્ચાત્ય મતને અનુસરનારા શાસ્ત્રશબ્દની શક્તિને સંકુચિત કરીને Systematics cience વ્યવસ્થિત વિજ્ઞાન, વ્યવસ્થિતકલા કે વ્યવસ્થિત વિદ્યા ઇત્યાદિ અર્થ કરે છે. આ પ્રકારનો અર્થ અત્યંત સંકુચિત થઈ જાય છે. વાસ્તવિક રીતે તો Scriptures શબ્દથીજ શાસ્ત્રો ઓળખાય છે. પરંતુ તેમાંયે કેવલ ધર્મગ્રન્થોનોજ બોધ થતો હોવાથી વિવેકનો સમાવેશ થતો નથી તેથી કર્તવ્યાકર્તવ્યવિવેકજ્ઞાનજ શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ થઈ શકે.

યદ્યપિ, આ સિવાય શાસ્ત્રશબ્દ, આજ્ઞા (મ. ભા. ૫–૧૪૮–૨૦), જ્ઞાન (શિશુ. ૫–૪૭), વિદ્યાની શાખા (રઘુ. ૧–૧૯) ઇત્યાદિ અર્થમાં પણ વપરાય છે.

---

[1] શાસ્ત્રોનો ઉંડો અભ્યાસ કરનારા વિદ્વાનો સારી પેઠે જાણે છે, કે આજકાલ વેદ અને પુરાણોના સમ્બન્ધમાં જે શંકાઓ આસ્તિક જનતાની લાગણીને દુઃખ દેવા માટે કરવામાં આવે છે, તે સર્વજ શંકાઓનું સમાધાન હજારો વર્ષ પૂર્વે જૈમિન્યાદિ મહર્ષિઓએ શંકરાદિ આચાર્યોએ અને અન્યાન્ય શાસ્ત્રકારોએ કરેલું છે. અત્યારે તો તેની તેજ (જેમનું સમાધાન થઇ ચુક્યું છે) શંકાઓ આગળ ધરીને કેવલ જલમન્થનજ કરવામાં આવે છે. ઉંડો અભ્યાસ કર્યાનો કેવલ દમ્ભજ છે. જો શાસ્ત્રોનો ઉંડો અભ્યાસજ આ લોકોએ કર્યો હોય તો સમાહિત શંકાઓજ સામે ન ધરે. અખણ્ડિત અને શાસ્ત્રોના પ્રયોજનને અનુસરતીજ શંકાઓ થાય. કિન્તુ તેમ થતું નથી.

તથાપિ, મુખ્ય અર્થ તો અનુશિષ્ટિ જ છે. અને તેની પરિભાષા ગીતામાં જણાવ્યા મુજબ કાર્યાકાર્યની વ્યવસ્થાનું સાધન શાસ્ત્રશબ્દવાચ્ય છે, એમજ સ્વીકારવી. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે, કે [1]શાસ્ત્ર રાજાની પેઠે આજ્ઞા કરે છે. તેથી જો તેનો (શાસ્ત્રનો) વિરોધ પ્રાપ્ત થતો હોય તો અપરાધ પણ બોધિત થાય છે.

રાજાજ્ઞામાટે પણ વિચારવાનું હોય છે જ. રાજા પણ અયોગ્ય આજ્ઞા કરે તો તેને પણ બાધપ્રસક્તિ થાય છે, એમ શાસ્ત્રોનો ઉદ્ઘોષ છે. અર્થાત્ જ વિવેક પુરઃસરજ રાજાજ્ઞા પણ હોવી જ જોઈએ. અન્યથા अदण्ड्यान् दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन् ઇત્યાદિ વાક્યો વ્યર્થ થાય. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શાસ્ત્રને રાજાજ્ઞાવત્ કહે છે, તેનું તાત્પર્ય તેના પાલનમાં આવશ્યકત્વનો બોધ કરાવવામાંજ છે, નહિ કે તદ્વિષયક વિચારની અકર્તવ્યતામાં. જેમ રાજાજ્ઞાનું પાલન ન થાય તો દંડ થવાનો ભય રહે, તેમજ શાસ્ત્રાજ્ઞાનું યે પાલન ન થાય તો પ્રત્યવાયનો ભય રાખવો. આ રીતે વિચારી જોતાં શાસ્ત્રશબ્દ વિવેકપુરઃસર ધર્માધર્મનું શિક્ષણ આપવાના અર્થમાં છે. પુરાણો પણ તાદૃશ વિવેક કરે છે, તેથી તે પણ શાસ્ત્રશબ્દવાચ્ય હોઈ શકે.

પુરાણોનું પ્રામાણ્ય.

શ્રીમહાપ્રભુજી બ્રહ્મપ્રકરણને પણ પુરાણમૂલક કહે છે. તત્ત્વાર્થદીપનિબન્ધના સર્વનિર્ણય પ્રકરણમાં આજ્ઞા કરે છે કે—[2]पुराणमूलकं चापि ह्याश्रमाचारतोदितम् । અને [3]पुराणं वेदवत्पूर्वसिद्धं सर्वोपयोगि तत् । सर्वोपकरणानीव धर्मस्य नरगेहयोः ॥ तदज्ञाने सर्वमौढ्यं तेन तद्धृदय स्मृतम् । भावयुक्तस्य धर्मस्य प्रमितौ तत्प्रयुज्यते ॥ આ રીતે પુરાણોનું પ્રામાણ્ય સિદ્ધ થતું હોવાથી લોકવ્યવહાર પણ ધર્મને ઉપકારક કેમ થાય, એ જાણવા માટે પુરાણ જ સાધનરૂપ છે, પ્રમાણરૂપ છે તેથી કહેવામાં આવ્યું છે કે— श्रुतिस्मृती उभे नेत्र पुराण हृदय स्मृतम् પ્રભુના નેત્રો શ્રુતિ અને સ્મૃતિ છે. પુરાણ હૃદય છે. જેમ વ્યાસજીએ વેદનો વ્યાસ કર્યો તેમ કલ્પભેદે પુરાણોનોયે વિભાગ કર્યો છે. તેમાં કેટલાક સાત્વિક, કેટલાક રાજસ અને તામસ છે. વિશેષ વિસ્તાર સર્વનિર્ણયપ્રકરણના આવરણભંગમાં આપ્યો છે, તેથી અહિંઆં તેનો વિચાર કર્યો નથી. પુરાણોમાં નાના પ્રકારની સૃષ્ટિના ભેદો, વિવિધ પ્રકારના ધર્મો કહેલા છે. છતાં તે તે સ્વરૂપે સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણજ [4]વર્ણવાય છે.

---

[1] शास्तीति, राजवदाज्ञापयति । एतेन तद्विरोधेऽपराधोऽपि बोधितः । ભાષ્યપ્રકાશ.

[2] બ્રહ્મપ્રકરણ પણ પુરાણમૂલક છે, અને આશ્રમાચાર વડે કહેલું છે

[3] જેમ વેદ પૂર્વસિદ્ધ છે, નિત્ય છે, પૂર્વકલ્પોક્ત વેદનું દર્શન કરીને તે તે ઋષિઓએ વેદ કહ્યો તેથી ઋષિ મન્ત્રદ્રષ્ટા છે. તેમજ પુરાણ પણ પૂર્વસિદ્ધ જ છે. પુરાણકારે તેનું દર્શન કરીને પુનરુદ્ધાર જ કર્યો છે. જુઓ બૃહદારણ્યકની अस्य निश्वसितमेतदृग्वेदो० ઇત્યાદિ શ્રુતિ તે પુરાણ સર્વોપયોગિ છે. શ્રૌત અને સ્માર્તનું ઉપકરણ છે. પુરાણનું જ્ઞાન ન હોય તો મૂઢતા આવે. તેથી પુરાણ પ્રભુનું હૃદય છે. ભાવયુક્ત ધર્મના જ્ઞાનમાં તેનો ઉપયોગ છે.

[4] આ લેખમાળામાં ક્રમશઃ શ્રીસુબોધિનીજીના ચર્ચાયેલા વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવશે. "શ્રીસુબોધિનીગ્રંથમાળા"માં સંપૂર્ણ સુબોધિની પ્રકટ થાય છે. નામ નોંધાવો.

યોજના.

પ્રભુના કૃપાપાત્ર દાનવીર વૈષ્ણવો તરફથી મળેલી મદદ માટે નિયમો.

શ્રીવલ્લભચરણાનુરાગી, ભગવદ્ધર્મપરાયણ ________________

આપે “ શ્રીસુબોધિની ગ્રન્થમાલા ” ની યોજના વાંચીને ઉદારતાપૂર્વક મોકલાવેલી મદદ અમે નીચે જણાવેલી શરતો મુજબ સહર્ષ આભાર સાથે સ્વીકારીશું.

(૧) શ્રીસુબોધિનીગ્રન્થમાલાકાર્યાલયમાં સંપૂર્ણ (યાવત્પ્રાપ્ય) શ્રીસુબોધિનીજીનું ગુજરાતી ભાષાન્તર પ્રકટ કરવામાં આવશે. યોગ્ય મદદ મલેથી હિન્દીમાં પણ પ્રકટ કરી શકાશે.

(૨) જો કોઇ ઉદાર વૈષ્ણવ શ્રીસુબોધિનીજી માટે મદદ આપીને સામ્પ્રદાયિક અન્ય (સંસ્કૃત, ગુજરાતી કે હિન્દી) ગ્રન્થોનું મુદ્રણ કરાવવા ઇચ્છા ધરાવશે, તો તેમની ઇચ્છા મુજબ આ કાર્યાલયમાંથી પ્રત્યક્ષમાં કે પત્રદ્વારા નક્કી થયેલી શરત મુજબ તે કાર્ય પણ પૂર્ણ કરવા આ કાર્યાલય યોજના કરશે. તેના બદલામાં શાસ્ત્રીજીને કે આ કાર્યાલયના કોઈ પણ કાર્યકરને પારિતોષિક કે મહેનતાણું આપવાનું નથી. છપાએલા પુસ્તકની નક્કી થયેલી પ્રતો આપવી પડશે.

(૩) શ્રીસુબોધિનીજીનું ભાષાન્તર અમારા તરફથી પ્રકટ થયેલી યોજનામાં જે નમુનો આપ્યો છે, તે મુજબ છપાશે. તેમાં કોઈ પણ વ્યક્તિની ભલામણથી ફેરફાર થશે નહિ પરંતુ જો કોઇ વિદ્વાન્, પ્રામાણિક ભૂલ બતાવશે, તો તેનો સુધારો કરીને સૂચના કરનાર વ્યક્તિનો આભાર માનીશું.

(૪) આ કાર્યાલયમાં કાર્ય કરનાર વ્યક્તિઓને કોઈ પણ જાતનું પારિતોષિક વેતન આપવામાં આવતું નથી. આવશ્યકતાનુસાર એક પગારદાર મહેતાજીને [illegible] શકાશે. પરંતુ, તે નક્કી થયલા કાર્યકરો પૈકી ન હોવો જોઇએ.

(૫) કાર્યાલયના નિયમ મુજબ નક્કી કરેલી પ્રતોજ પૂજ્ય શ્રીગોસ્વામી બાલકોને, યોગ્ય વિદ્વાનોને તથા કાર્યકરોને દરેક પુસ્તક ભેટ તરીકે મોકલી આપવામાં આવશે. નક્કી કરેલી પ્રતો ઉપરાંત જો કાર્યકરો એકમતથી ઠરાવ કરશે તો વિક્રેય પુસ્તકોમાંથી પણ ભેટ આપી શકાશે.

(૬) આ કાર્યાલયને આર્થિક મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને કાર્યાલયના લગભગ બધા પુસ્તકો તેમણે આપેલી મદદ લક્ષમાં રાખીને ભેટ આપવામાં આવશે.

(૭) મદદ કરનાર વ્યક્તિની ઈચ્છા હશે, તો તેમણે કરેલી મદદના જેટલાં પુસ્તકો થતાં હશે તેટલાં પુસ્તકો તેમને પહોંચાડવામાં આવશે. પુસ્તકનું ન્યોછાવર ૫ ટકા વળતર કાપીને ગણવામાં આવશે. (તેમને ઘેર પુસ્તકો પહોંચાડવાનું ખર્ચ મને શિર રહેશે.)

(૮) આર્થિક મદદ કરનાર વ્યક્તિનો, જે પુસ્તક માટે મદદ કરી હશે, તે પુસ્તકના ઉપોદ્ઘાતમાં સાભાર સ્વીકારવામાં આવશે.

(૯) જો મદદ કરનાર વ્યક્તિને, પોતાનું કે જેના સ્મારક માટે મદદ કરી છે, તેનું ચિત્ર મૂકવાની ઇચ્છા હશે, તો તેમના ખર્ચે મૂકી શકાશે. તેમજ જો સમ્પૂર્ણ ભાગ માટે મદદ કરશે તો મુખપૃષ્ઠ ઉપર પણ તેમનું નામ છાપી શકાશે.

(૧૦) દરેક મદદ કરનાર વ્યક્તિને દર વર્ષે હિસાબ છપાવીને મોકલી અપાશે.

(૧૧) મળેલી મદદના નાણાં ઉપર દેખરેખ કરવા માટે વૈષ્ણવોની કમીટી નીમી છે.

(૧૨) નાણાં, નડિયાદ અને જામનગરમાં કમીટીના વિશ્વાસપાત્ર વૈષ્ણવોની પેઢીમાં કે બેંકમાં રાખવામાં આવે છે.

(૧૩) પ્રત્યેક વૈષ્ણવ આ કાર્યમાં બનતી મદદ કરી શકે, તે માટે ઓછામાં ઓછી કેટલી મદદ સ્વીકારવી તે નક્કી કર્યું નથી. પ્રભુની નામસેવાનો લાભ પ્રત્યેક વૈષ્ણવ લઇ શકે છે.

(૧૪) જો નાણાં પાછા લેવાની શરતે કોઇ સાધારણ સ્થિતિના વૈષ્ણવને મદદ કરવાની ઇચ્છા થાય તો પત્રવ્યવહારથી કે પ્રત્યક્ષમાં ખુલાસો કરી શકાશે.

(૧૫) મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને તેની સાથે નક્કી થયેલી શરતોની કોપી સાથે પાકી પહોંચ આપવામાં આવશે.

નડિઆદ, મોટું મંદિર.
જામનગર.

વૈષ્ણવોનો દાસાનુદાસ,
હરિશંકર શાસ્ત્રી,
વ્યવસ્થાપક.

॥ श्रीवल्लभो जयति ॥

વિદ્વત્કેસરી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજશ્રીનું

આજ્ઞાપત્ર.

॥ श्रीमदनमोहनो जयति ॥

॥ श्रीवालकृष्णो जयति ॥

પુષ્ટિમાર્ગીય વિદ્વન્મંડળીમાં ઉચ્ચતા પ્રાપ્ત કરનાર; વિદ્યા માટે અનન્યજન સાધારણ સ્વાર્થ ત્યાગ કરનાર, અત્યંત ઉત્સાહી અને દૃઢનિશ્ચયી તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, શ્રીમદ્વલ્લભચરણકમલના અનન્ય સેવક, ભગવચ્છાસ્ત્રનિષ્ણાત શાસ્ત્રી હરિશંકર ઓંકારજી (મીમાંસાશાસ્ત્રી, વેદાન્તવિશારદ M. R. A. S.) એ શ્રીસુબોધિનીજીનું અત્યંત શુદ્ધ અને સરલ ભાષાન્તર કર્યું છે. અમે ભાષાન્તર વાંચ્યું છે. આ ભાષાન્તર ઘણુંજ શુદ્ધ અને સર્વજનોપયોગિ છે. ભાષા અત્યંત સરલ છે, જેથી સ્ત્રીઓ અને બાલકો પણ સમજી શકે. વિવેચન અને ફુટનોટદ્વારા ઉચ્ચ કક્ષાના પંડિતો પણ આનન્દ મેળવી શકે પંડિત અને અલ્પજ્ઞ એ ઉભયને જો સમાન રીતે

કોઇ ભાષાન્તર ઉપયોગી હોય તો તે માત્ર આ એકજ છે. આ ભાષાન્તરજ શાસ્ત્રીજીના પાંડિત્યની કસોટી છે. **શ્રીસુબોધિની ગ્રંથમાલામાં** સંપૂર્ણ સુબોધિનીજીનું ભાષાન્તર (દશમસ્કંધ) પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે.

આ કાર્ય શાસ્ત્રીજીના ઉત્સાહમાત્રથી શરૂ થાય છે. શાસ્ત્રીજીનું દ્રવ્ય પુસ્તક સંગ્રહમાંજ ઘસડાઇ જતું હોવાથી, તેઓ આ મહાકાર્યને પહોંચી શકે તેવી ધનસંપત્તિવાળા નથી માટે અમારી સર્વ વૈષ્ણવોને ખાસ સૂચના છે, કે પ્રત્યેક વૈષ્ણવે ગ્રાહક થઇને તેમજ ધનિકોએ છપાવવામાં ધનની મદદ કરીને પ્રભુની આ નામસેવામાં પણ દ્રવ્યનો વિનિયોગ કરવો. નામસેવાની આવી સુંદર તક વારંવાર મલતી નથી. એજ માર્ગશીર્ષ સુદી ૭ ને ગુરૂવાર; સં. ૧૯૮૭.

जगत् ते मिथ्या होय ?

(લેખકઃ—શાહ હીંમતલાલ ભોગીલાલ મુ. સાવલી,)

સુંદર શ્રીયમુનાતટ—કૃષ્ણપુર ગામની પૂર્વ દિશાએ અર્ધો માઇલ દૂર શ્રીયમુનાજીનું શ્યામસલિલ, સુંદર નાદ કરતું, વિરહની ઊર્મિઓ ઉત્પન્ન કરતું, ગંભીર શાન્તિ બતાવતું, મંદમંદ વહન કરી રહેલું છે. તે વહન ગતિમાં ઉડતા તરંગરૂપી પોતાના શ્રીહસ્તકમળ ઊંચા કરી, નિજભક્તોને પ્રભુસંયોગ કરાવી આપવાનું અભય જાણે ન આપતાં હોય ! આવાં અનેક આનંદમય વિચારો ભક્તના હૃદયમા દર્શનમાત્રથી ઉત્પન્ન થતા હતા. તેમ તીર પ્રાન્તમાં બીછાવેલી મંદમંદ ચળકતી રત્નમય કોમળ વાલુકા શ્રીમહારાણીજીના શ્યામસ્વરૂપમા અલૌકિકતાની વૃદ્ધિ કરી ભક્તના હૃદય હરણ કરી તેમાં લોટવાની ભક્તના હૃદયમાં ભાવના ઉદ્દભવ પમાડતી હતી. તેમા વળી બન્ને બાજુના સામસામા તટો ઉપર સુંદર ઘટાદાર કદમ્બના વૃક્ષો, બોરસલી, આમ્રવૃક્ષ, આસોપાલવ તેમ ઇતર અનેક પ્રકારના નાના નાજુક સુંદર નવપલ્લવિત વૃક્ષો પોતાની લતાઓથી ઝુમી રહ્યાં હતાં. તેમ ગુલાબ, મોગરો, રાયચંપો, બટમોગરા, જુઇ કેવડો તથા શ્રીયમુનાજીના જળમા ખીલી રહેલાં અનેક પ્રકારના કુમુદ વગેરે વનફુલો મંદમંદ હલન—ચલનયુક્ત પવનની લહેરો સાથે પોતાનો પરિમલ પ્રસરાવીને આનંદ વધારતા હતા. સામાતટે ગૌમાતાઓ, વાછરડાં કુણાં કુણાં લીલાં નાજુક કુંપરો આનંદથી ચરતા માલુમ પડતાં હતા. નજીક હરણોનાં બચ્ચાની કુદાકુદ તથા સારસ, મયૂર, શુક, મેના, કોયલ વગેરે પક્ષીઓ પોતાનાં સુંદર સ્વરોના આલાપ કાઢી જ્યાં ત્યાં કલ્લોલ કરી રહેલા નજરે પડતાં હતા. આવી શ્રીયમુનાજીના તટની લીલી હરીયાળી રસસામગ્રીયુક્ત વ્રજભૂમિ જોતા પ્રભુની લીલાનો સાક્ષાત્કાર દરેકના હૃદયમાં સ્વાભાવિક જ થતો હતો. સદર શ્રીયમુનાતટ ઉપર શ્રીમહાપ્રભુજીની નિધિસ્વરૂપ બેઠક હતી. તેમાં વૈષ્ણવવૃન્દ ઉત્થાપન સમયનાં દર્શન કરી ઉષ્ણકાળ હોવાથી જ્યા ત્યા વિચરતા હતા. ઉક્તવૃન્દ પૈકી બે યુવકો ઘાટના એક છેડે શાન્તિથી કંઇ ગહન વિચારમા બેઠેલા જણાતા હતા. તે બંને યુવકોનાં નામો કૃષ્ણદાસ અને હરિપ્રસાદ હતાં. કૃષ્ણદાસ આ પ્રભુલીલારૂપ સુંદર વાટિકા જોવામા તદ્રૂપ બનેલો હતો. એના હૃદયરૂપ સમુદ્રમા કંઇ અવનવા આનંદતરંગો ઉઠી રહેલા હતા. અહો પ્રભુ ! તારી આ લીલા જોતાં આ હૃદય પુલકિત બની જાય છે. પ્રભુ શ્રીબાલકૃષ્ણે કદમ્બ ઉપર બેસી સ્નાન કરતાં વ્રજભક્તોને નગ્ન સ્નાન નહિ કરવા આજ્ઞા આપવી; વ્રજભક્તો સાથે શ્રીયમુનાજીના પરિમલયુક્ત

જલમાં જલક્રીડા કરવી, "કમલન માર મચાઈ." આ અષ્ટસખાના કીર્તનમાં રહેલી ભાવના અનુભવતા દરોસ પ્રભુ કૃષ્ણના રાસદર્શનની ઉત્કંઠા, ભક્તાધીન થઈ વ્રજભક્તો કહે તે કાર્ય કરીને ભક્તની ઇચ્છા પૂરી કરવી, યમુનાતટ ઉપર ગૌચારણલીલા તે વખતનું લલિતત્રિભંગી સ્વરૂપ, દર્શનના વમળે આવતાં હૃદયની વિહ્વલતા, પશુપક્ષીઓની બોલીના સામા ટહુકા પાડવા, કાનમાં સંભળાતો અનુભવ સુરો, આવા અનેક પ્રકારના પ્રભુસંબંધી બાલલીલાના વિવિધ વિચારમાં કૃષ્ણદાસ પોતાના હૃદયમાં કંઈ અનેરો આનંદ અનુભવી રહેરો હતો, અને તે લીલારસ આનંદમાં ઘડીભર આ સૃષ્ટિનું ભાન ભૂલી તેનું હૃદય તન્મય લીન હતું, અને નયનમાં આનંદઅશ્રુ વહેતાં હતાં. ખરે, **"સર્વના અંતરમાં રહેલો આ શુદ્ધ આનંદ તેજ સર્વથી પર છે"** અને તે રસાનંદમા કૃષ્ણદાસ તદ્રૂપતા અનુભવી રહેલો હતો, ત્યારે હરિપ્રસાદ આ પ્રભુની સૃષ્ટિલીલાને માયાબજાર સમજીને તે સંબંધી પોતાના મગજમાં વિચાર અનુભવતો હતો.

હરિપ્રસાદ—કૃષ્ણદાસ! શા વિચારમાં ગરકાવ થયા છો ? અરે ભાઈ, આપની આંખોમાં આજે અશ્રુ ક્યાંથી ? કંઈ ગૃહસંસારનો કલેશ સાંભળી આવ્યો કે શું ?

કૃષ્ણદાસ—ક્ષણમાં સાવચેત થયો, પોતાના હૃદયનો રસાભાસ થઈ જતો જોઈ થોડી પળમાં તુરત જવાબ દીધો:—"નારે, મારા મિત્ર! એવું કંઈ નથી. આ તો સ્વાભાવિક પ્રભુલીલા હું જોઈ રહ્યો હતો. આ રમણીય સ્થળ જોતાં તમને કંઈ ઊંડું રહસ્ય સમજાય છે ?"

હરિપ્રસાદ—હા, આ માયાના બજારરૂપી બગીચો જોતાં હું પણ ક્યારનો વિચાર કરતો હતો કે અહા! માયાએ આ કેવી રચના કરી છે ? આ દેખાતું જગત્ જ્યારે ત્યારે નાશવંતજ છે; છતાં કેવો ભાવ ધરે છે !

કૃષ્ણદાસ—અરે ભાઈ! તમે આ શું બોલો છો ? આ તમે જે બોલો છો તે માયાવાદનોજ પ્રતાપ છે. બાકી તમારા પિતાશ્રી તો ઘણા ભગવદીય છે. તેઓના ગુણ તમારામાં કેમ ન આવ્યા ? તે વિચારવા જેવું છે. ખરે, નાની વયમાં પોતાના સ્વમાર્ગીય ધર્મનું જ્ઞાન બાળકોને આપવાની માબાપની નિષ્કાળજીથી છેવટે આવું પરિણામ આવે છે. મેં તમને પહેલાં ઘણા વિષય સ્વમાર્ગીય સંબંધી સમજાવ્યા હતા, પણ તમે હજુ કંઈ રહસ્ય સમજતા જ નથી. હું આજે તમારા માટે ઘણો જ દીલગીર થયો છું.

હરિપ્રસાદ—તમે મને સેવા, પ્રેમભક્તિ સંબંધી ઘણું રહસ્ય સમજાવ્યું છે. પણ આ સંબંધી મને કંઈ સમજાવ્યું નથી. હા, પ્રભુ એ આપણા સ્વામી ખરા, પણ આ જગત માયાકૃત છે, એમ હું માનું છું, તે સંબંધી મને સમજાવી મારી શંકા નિર્મૂળ કરશો.

કૃષ્ણદાસ—ભાઈ, તમને આ પ્રત્યક્ષ લીલાનો કંઈ ખ્યાલેય આવતો નથી ? આ જગતરૂપી બગીચાને તમે માયાકૃત કહો છો તેમાં તમે ભૂલો છો. જગતની કોઈ પણ વસ્તુ-માયાકૃત નથી અને તે કાર્ય કરવા માયા સ્વતંત્ર નથી. માયા શું કરી શકે ? જગતને બનાવનાર જુદો છે. અને આ સર્વ દેખાય છે તે એ પ્રભુની લીલા છે.

હરિપ્રસાદ—જગત્ માયામય હોઈ મિથ્યા છે. કારણ આપણે આપણી આંખોએ વસ્તુ દેખાય છતાં તેનો નાશ થતો જોઈએ છીએ. તેનું કેમ ? જેમ મદારી અનેક રંગબેરંગી વસ્તુ બતાવે છે, ને આંખો વાળી તે ઉપર ફેરી દેખાડે છે. તે જેમ દેખ્યા છતાં અંતે નાશ પામે છે, અને નજરે જોયલું ખોટું પડે છે, તેમ આ દેખાતું સર્વ નાશવંત હોઈ માયામય છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે ઠીક પ્રશ્ન કર્યો, પણ સમજમાં ફેર છે. જે વસ્તુઓ આપણા જોવામાં આવે છે તે વસ્તુ (આંખો) ખોટી નથી. આપણી દૃષ્ટિમાંજ ફક્ત દોષ છે. જો વસ્તુ ખોટી હોય

તો પછી ખરી માનવા આપણું મન શાથી દોડે છે ? તે વિચારો. જે વસ્તુ મદારી બતાવે છે, તે ખરી છે. વસ્તુ માયાવી નથી, કારણ આંબા જેવી વસ્તુ જગતમાં છેજ. અને તે આંબાને પ્રથમ જોએલો હોવાથી તેને આંબા તરીકે ઓળખી તે ખરો કહો છો કે બીજું ! વસ્તુ તો ખરી છે પણ તે સમજવામાં આપણી ભૂલ થાય છે. મદારી પોતાની હાથચાલાકી કરી વસ્તુ હોવા છતા નહીં હોવાનો અને વસ્તુ નહિ હોવા છતા પોતાની પાસે હોવાના ખરાપણાનો ભાસ કરાવે છે, તે ભાસજ માયારૂપ છે. વસ્તુતઃ વસ્તુ મિથ્યા હોતી નથી, પણ તે ખરી છે. અને ચાલાકી તે મદારીની શક્તિરૂપ છે. તે મદારીને આધીન છે. તેવીજ રીતે પ્રભુ પોતાની ઇચ્છા થતાં પોતાની સ્વશક્તિથી આ જગતને રચે છે ને તે સ્વશકિતરૂપી માયા પ્રભુને આધીન હોઇ પોતે કંઇ કરવા સ્વતંત્ર નથી. એટલે આપ માયાએ રચેલુ કહો છો તે ખોટું છે પણ આ સર્વજગતનો કર્ત્તા પ્રભુ છે ને તે સત્ય છે

હરિપ્રસાદ—જ્યારે નજરે જોએલુ ખોટું પડે છે, તો આને ખરૂ શી રીતે કહી શકાય ? એ મારો ભ્રમ દૂર થતોજ નથી. જેવી રીતે છીપમા ચાદી, દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે. પણ વસ્તુને ખરા રૂપમા જોતા ભ્રાન્તિથી ખોટો થતો ભાસ જ્ઞાનથી નાશ પામે છે, ને ભ્રાન્તિ દૂર થના દેખેલી વસ્તુનો નાશ થઇ ફક્ત જ્ઞાન અવશેષ રહે છે, તેવીજ રીતે સર્વ વસ્તુ નાશવંત છે. ફક્ત જ્ઞાન એજ ખરૂં છે. જેમ રજ્જુ, છીપ, સિવાય બીજું મિથ્યા છે. એવીજ રીતે બ્રહ્મમા અવિદ્યાના ભ્રમને લીધે આ જગત દેખાય છે, ખરી રીતે તે સર્વ મિથ્યા છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે છીપ, ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ વિષે કહો છો તે અહીં ઘટે તેમ નથી. કારણ છીપમા ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે તે ભાસ થતી વસ્તુ પ્રથમ, તમે જોયલી હોવી જોઇએ, નહિ તો જે વસ્તુ જોઇ નથી તેની ભ્રાન્તિ થઈજ ન જોઇએ તમો બોલો છો સીધુ ને રસ્તો વાંકો તેવી તમારી પ્રકૃતિ છે. કારણ તમે કહ્યું કે જ્ઞાન થતા ભ્રમનો નાશ થાય છે, પણ જે વસ્તુજ ખોટી હોય તો પછી ખોટી વસ્તુનું જ્ઞાન હોય નહિ. પછી જ્ઞાન રહ્યું ક્યા ! વસ્તુ ખોટી હોવા છતા ખરાપણાનું જે ભાન થાય છે, એજ સંસાર, માયા, અવિદ્યા. જેમ મૃગજળ ખોટું હોવા છતા પાણી શોધનારને દૂરથી ખરૂં માલમ પડે છે. વસ્તુત જે જળ હોવાનો ભ્રમ થાય છે તેવું જળ પ્રથમ તેણે પૂર્વે દેખેલું હોવાથીજ તે દેખાતા મૃગજળને ખરૂં માની તે તરફ જાય છે, અને પાસે જઇ જોતાં પોતાના પ્રાણ આપવા જેવું થાય છે. એટલે મૃગજળ ખોટુ હોવા છતા જે ખરા જળનો ભાસ થાય છે તે પોતાની નજરનોજ પૂર્વ સંસ્કારનો દોષ છે, તેથી કરી તેને પૂર્વે જોએલા ખરા જળની સત્યતામાં બાધ આવતો નથી. આવો થતો આભાસ તે સ્વપ્ન અવસ્થામા પોતાનું માથું નહિ કપાયા છતા કપાઇ ગયાનો ભાસ થાય છે ને જાગૃત અવસ્થામા તે ભ્રાન્તિ દૂર થાય છે, આને માયા કહી શકાય. આનું નામ વ્યામોહિકા અવિદ્યા છે. જે ખોટું હોવા છતા ખરાપણાનો ભાસ થાય તેજ માયાજન્ય સૃષ્ટિ છે. જાગૃત અવસ્થામા ભ્રમ થાય છે, તે પ્રભુની આચ્છાદિકાશકિત છે, ને સ્વપ્નમાં જે ભ્રાન્તિ થાય છે તે વ્યામોહિકા શક્તિ અને ખોટી ભ્રાન્તિ દૂર થતા જે ખરાપણાનું ભાન થાય તે વિદ્યાશકિત છે. આ પ્રમાણે પ્રભુની વિદ્યા, અવિદ્યા બે શક્તિ છે, અવિદ્યાના બે ભેદ છે. આચ્છાદિકા અને વ્યામોહિકા. આ પ્રભુની શકિત છે અને આને બ્રહ્મની સર્વભવનશકિત કહેવાય છે તેનું નામ માયા છે. તે માયા બ્રહ્મઆધીન છે. એટલે તમે જગતને માયામય કહો છો પણ તે તેનું કાર્ય નથી. તે માયાજન્ય સૃષ્ટિ ઉપર પ્રમાણે અલગ હોઇ તે પ્રભુઆધીન રહી પોતે કાર્ય કરે છે. બ્રહ્મમા અવિદ્યાને લીધે તેમાં જગતનો ભાસ થાય એમ કહો છો તે ખોટું છે.

આચાર્યોએ ભગીરથ પ્રયત્નો કર્યા છે, તેની અંદર સંપૂર્ણપણે ફતેહ પામનાર જગદ્‌ગુરુ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીજ છે, અને તેથીજ વિદ્વાનો એકે અવાજે પોકાર કરે છે કે श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृशो भावी न भूतोऽस्त्यपि । આપશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર વદ ૧૧ ને દિવસે ચંપારણ્યમાં થયો હતો. આપના પિતાશ્રીનુ નામ શ્રીલક્ષ્મણભટ્ટજી અને માતુશ્રીનું નામ ઇલ્લમ્માગારુજી. ઉપનયન સંસ્કાર પછી આપશ્રીએ થોડા વખતમા વેદ, ઉપનિષદ્, દર્શન, શાસ્ત્ર વગેરેનો અભ્યાસ કરી પંડિત વર્ગને આપનુ ઐશ્વર્યપણું બતાવી દીધુ. વિદ્યાભ્યાસ કર્યા પછી આપશ્રી દુનિઆની ધાર્મિક સ્થિતિ જોવા નિકળ્યા. રામાનુજ, માધ્વ, નિમ્બાર્ક વગેરે મતોનુ નિરીક્ષણ કરવાને દક્ષિણ તરફ પ્રયાણ કર્યું દક્ષિણ તરફ જતા માલુમ પડ્યુ કે વિદ્યાનગરના કૃષ્ણદેવ રાજાએ વિદ્વત્પરિષદ્ બોલાવી છે અને સર્વવાદમા શ્રેષ્ઠ વાદ કયો તેની ચર્ચા ચાલે છે ત્યારે આપશ્રી ત્યાં પધાર્યા અને માયાવાદી પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરી શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદની શ્રેષ્ઠતા સાબીત કરી

આપશ્રી એક વખત વ્રજમા ચાતુર્માસ ગાળતા હતા ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને પ્રગટ થઈ દૈવી જીવોને બ્રહ્મસંબંધ આપી શરણે લેવાની આજ્ઞા કરી, આપશ્રી તેનું વર્ણન પણ સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથમા આપે છે.

ત્યારપછી આપશ્રીએ દૈવી જીવોને શરણે લેવાનું કાર્ય હાથ ધરી લીધું (જે કાર્ય આપના વંશજો દ્વારા હજી ચાલુ છે.) આપશ્રીએ દક્ષિણમાં કન્યાકુમારીથી ઉત્તરમા હિમાલય સુધી અને પૂર્વમા જગન્નાથથી પશ્ચિમમા દ્વારકા સુધી ત્રણ વખત પરિક્રમા કરી, અનેક વેદવિરુદ્ધ મતવાદીઓને હરાવી શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદના વજ્રમય પાયા જગદુપકારાર્થ ઠેકાણે ઠેકાણે સ્થાપી દીધા. પરિક્રમા કરતા આપશ્રીને જણાયું કે દુનિઆની અંદર દૂષિત વાતાવરણ ફેલાઇ ગયુ છે. દાંભિક લોકોએ પોતાથી બને તેટલી જાળ ફેલાવી દુનીઆને અર્ધદગ્ધ કરી મૂકી છે, વેદધર્મવિરુદ્ધ અનેક મતપંથો ફેલાયાથી મનુષ્યો જડબુદ્ધિના થઇ ગયા છે. ઉપર્યુક્ત વાતાવરણ આપને દુસહ લાગ્યું અને તેથીજ વેદાર્થદર્શી સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ સ્થાપવાની જરૂર જણાઇ અને તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ. ન્યાયના નિષ્પક્ષપાત ચશ્મા પહેરી જોનારને આ માર્ગની ઉત્તમતા જણાયા વગર નહિ રહે. પુષ્ટિમાર્ગ શેના ઉપર રચાયેલો છે? શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીએ वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि એ શ્લોકથી તેનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે.

પુષ્ટિમાર્ગને અવૈદિક કહેનારાઓ ઉપર્યુક્ત એકજ શ્લોકથી સમજી શકશે કે પુષ્ટિમાર્ગ એ કોઇ મનસ્વી કલ્પેલો માર્ગ નથી પણ વેદ, ગીતાજી, બ્રહ્મસૂત્ર અને સમાધિભાષાના પ્રબળ આધાર ઉપર રચાયેલો છે અને વેદધર્મનું સંપૂર્ણપણે રક્ષણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગજ છે. બાવન વર્ષની ઉમરે આપશ્રીએ ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો અને કાશીપુરી પધાર્યા ત્યાં એક માસ સુધી ઉપવાસ અને આઠ દિવસ મૌનવ્રત ધારણ કરી ૧૫૮૭ ના આષાઢ સુદિ ૨ ને દિવસે આસુરવ્યામોહલીલા કરી આપશ્રીએ આ પ્રમાણે મુખ્ય ગ્રંથો બનાવ્યા છે પૂર્વમીમાંસાભાષ્ય, બ્રહ્મસૂત્રભાષ્ય, તત્ત્વદીપનિબન્ધ, શ્રીમદ્‌ભાગવત ઉપર સૂક્ષ્મ ટીકા અને સુબોધિની ટીકા અને ષોડશગ્રંથ વગેરે, પણ આપણા દુર્ભાગ્યની વાત છે કે ઉપર્યુક્ત સાહિત્યમાંનું કેટલુંક સાહિત્ય પૂર્ણ સ્થિતિમા તેમજ મુદ્દલ જડતું નથી

આપશ્રીનો સ્થિતિકાલ અલૌકિક, આકર્ષક, બોધપ્રદ, આશ્ચર્યજનક વગેરે અનેકવિધ ઘટનાઓથી ભરપૂર છે આપશ્રીના અદ્વિતીય જીવનની સમાલોચના કરવા બેસીએ તો તેનું સંપૂર્ણ વર્ણન કરવા બેસતા અશક્યતા સ્વીકારવી પડશે. માત્ર તેની ઝાંખીજ પ્રતીત થાય. આપનું પવિત્ર માનસ, દૈવીકાર્યો, ભક્તિમય, પ્રેમમય તથા ઉપદેશમય જીવન, ભગવદ્‌ભક્તોને ઝેરી વાતાવરણમાંથી

ર રાખવાને તથા કૃષ્ણચંદ્ર પરમાત્માના ગુણગાનની અભિવૃદ્ધિ કરવાને વૈશ્વાનરરૂપે પ્રાગટ્ય શ્રીમદ્ભાગવતના હાર્દ સ્ફોટન માટે શ્રીસુબોધિનીજીનું દાન વગેરે મહાન્ ગુણો તથા કાર્યોનું દિગ્દર્શન આપની કૃપા વિના કિંચિત્ માત્ર થઇ શકે નહિં. આપશ્રીએ બતાવી આપ્યું કે પુષ્ટિમાર્ગ એ સંકુચિત દૃષ્ટિથી રચાયેલો નથી, તેનાં આદર્શો વિશાળ છે. તેની ભાવનાઓ બહુ ઉચ્ચ છે. તેના આશ્રય હેઠળ પ્રાણી માત્રને આવવાની છૂટ છે વેદાધ્યયનનો અધિકાર માત્ર ત્રિવર્ણનેજ છે. ત્યારે સ્ત્રી અને શૂદ્ર માટે કાંઈ ખરૂં? મહાપ્રભુજીએ એવો રસ્તો શોધી કાઢ્યો કે જેથી વૈદિક ધર્મનું સ્ખલન ન થાય અને વૈદિક મર્યાદાઓ સંપૂર્ણપણે જળવાય. આ મહાન્ જગદ્ગુરુના મહાન્ ઉપકારોનો બદલો જ્યારે તેમના કથિત માર્ગે સમસ્ત જગત્ દોરાશે, તેમના આદર્શો જ્યારે સંપૂર્ણપણે સમજાશે, અને જ્યારે શ્રીકૃષ્ણભક્તિનો ઠેકાણે ઠેકાણે પ્રચાર થશે ત્યારેજ વાળી શકાશે.

बालपाठमाला.

(લેખક—રા. રા. ભદ્રશંકર જયશંકર શાસ્ત્રી.)

પાઠ ૧૩—વિદ્યા.

ઉપરના સર્વ પાઠોમા આપણે નિત્યના કરવાના ખાસ કર્મો કેમ કરવા, તથા તેમા ભગવદ્ભાવ શી રીતે યોજવો ! એજ જણાવી ગયા, ભોજનથી પરવારીને શાળામા અભ્યાસ કરવા જવું જોઇએ, તેમ કરે તોજ વિદ્યા આવડે. વિદ્=જાણવું તે ઉપરથી વિદ્યા શબ્દ થયો, એટલે જાણી શકાય તેવું જ્ઞાન મેળવવું એ વિદ્યા. આ દુનિયામા જાણવાનું શું શું નથી હોતું ! તે મેળવે નહિ તે પશુસમાન છે. માટે માણસાઇ મેળવવાને પણ જાણવાની જરૂર છે. આખી જીંદગી ભણ્યા કરો, તોપણ જાણવાનો–વિદ્યાનો પાર તો આવેજ નહિ, એટલે પોતાની શક્તિ પ્રમાણે જાણવાની ઇચ્છા માણસોએ તો અવશ્ય કરવી રહી. વિદ્યામા અનેક ગુણો છે.

માતા સમી સરલ રક્ષણ એ કરે છે ને તાત તુલ્ય હિતકારક બોધ દે છે.
કાન્તા સમાન રસપૂર્ણ વિનોદ આપે ને મિત્ર તુલ્ય રહિ પાસ વિપત્તિ કાપે.

માતા સમાન રક્ષણ કરનારી પિતા સમાન હિત કરનારી, કાન્તા સમાન વિનોદ આપનારી અને મિત્ર સમાન વિપત્તિઓ–કષ્ટોને દૂર કરનારી વિદ્યાજ છે. નીતિશતકમાં ભર્તૃહરિ રાજા કહે છે કેઃ—

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥६॥

વિદ્યા એ મનુષ્યનું અત્યંત રૂપ છે, સારી રીતે છાનું રાખેલું ગુપ્ત ધન છે. વિદ્યા ભોગ આપનારી, યશ અને સુખ અર્પણ કરનારી છે. વિદ્યા ગુરુઓની પણ ગુરુ છે, વિદ્યા વિદેશ જતી વખતે બંધુ સમાન છે; વિદ્યા એ મોટી દેવતા છે; તેમ વિદ્યા રાજાઓમાં પૂજાય છે; ધન નહિ, માટે વિદ્યા વિનાનો મનુષ્ય પશુ છે.

આ વિદ્યાના લૌકિક ગુણો દર્શાવ્યા બીજા તેવા અલૌકિક ગુણો પણ તેમાજ રહેલા છે. પ્રભુનું જ્ઞાન આપનાર પણ વિદ્યાજ, એ મેળવવાથી પ્રભુસંબંધી જ્ઞાન થાય. એટલે તેમના

તરફ આપણો પ્રેમ પ્રકટે. વેદ, શાસ્ત્ર, પુરાણો વિગેરે આપણે વિદ્યા મેળવીએ તોજ જાણી શકીએ. તે બધી વિદ્યા સંસ્કૃત ભાષામાં છે. તેથી દરેક હિંદુએ અને તેમાં ખાસ ઉચ્ચ વર્ણોએ સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવું અતિ જરૂરનું છે. કેટલાક હાલના આપણા યુવકો સંસ્કૃત ભાષાથી બહુ કંટાળી જાય છે. સરકારે આપણને રાજકીય ભાષા સાથે સંસ્કૃત ભાષા મેળવવાની ખાસ સગવડ કરી આપી છતાં આપણા ઉચ્ચ કોમના વિદ્યાર્થીઓ પણ સંસ્કૃત ભાષા શીખવામાં ગભરાય એ કંઇ આપણા માટે ઓછું શરમાવા જેવું છે ! જે સંસ્કૃત ભાષા સર્વ દેશોની ભાષાના મૂલરૂપ છે, જેમાં ઘણું ઉંડું રહસ્ય સમાયેલું છે, જે ભાષાને જાણવા વિદેશી વિદ્વાનો પણ લલચાય છે તે ભાષા આપણે ન જાણીએ એ કેવું ! આપણા દેશની મોટા ભાગની ભાષાઓ તો સંસ્કૃત ભાષામાંથી ઉપજેલી છે એટલે સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવાથી સર્વ ભાષાઓ સરળ બની જાય છે. તો તેવી આપણી પોતાની મૂલ ભાષાને કેમ વિસારીએ !

વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ તો પ્રભુપ્રાપ્તિમાં કરવાનો છે. જેણે વિદ્યા મેળવી હોય અને પ્રભુ તરફ આસ્થા ન હોય તો તે વિદ્યાજ ન ગણાય. આત્મા શું ? પરમાત્મા શું ? આપણું કર્તવ્ય શું ? ઇત્યાદિ જ્ઞાન વિદ્યાથી ન થાય તો તે અવિદ્યા—અજ્ઞાન છે. મોટા મોટા ચોપડાઓ ઉથલાવી નાંખવા એનાથી કંઇ વિદ્યાની સમાપ્તિ થતી નથી, એ તો વૃથા ભાર ઉંચકવા જેવું છે. સાકરની ગુણને વહન કરનાર ગધેડો સાકરના સ્વાદને નથી જાણતો તેમ બહુ ભણેલો છતાં તેનું પરિણામ પ્રભુ પ્રેમ—ભગવત્જ્ઞાન ન થાય તો તે મિથ્યા છે. વિદ્યાનો ઉપયોગ માત્ર ધન મેળવવું એમ પણ ન હોવું જોઇએ. જગત્માં ઘણાએ વિદ્વાનો ધન વિનાના થઇ ગયા છે. માટે વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ ધન નહિ; પણ જ્ઞાન મેળવવું. પ્રભુનું સ્વરૂપ સમજવું, પોતાના સ્વરૂપને જાણી કર્તવ્યની દિશા તરફ વળવું એ છે. આજકાલ અપાતી વિદ્યા એ તો વિદ્યાજ નથી એમ કહીએ તોપણ ચાલે. કારણ કે ઘણું ખરૂં તેનું પરિણામ અવિદ્યામાંજ આવેલું જોવામાં આવે છે. ધન મેળવવા માટે અનેક પ્રપંચો, એકમેકનું નુકશાન કરવા તરફ વૃત્તિ, છેતરપીંડી. લાંચો, રૂશ્વતો વગેરે શું વિદ્યાનું પરિણામ હોય !! મોટા મોટા વિદ્વાન્ ગણાતા અધિકારીઓ, પંડિતો, ગૃહસ્થો વગેરેમાં શું શું જોવામાં આવે છે ! ત્યાં પ્રપંચો છે, લાંચો છે. એ વિદ્યા નથી પરંતુ ખરૂં જોતાં અવિદ્યાજ છે. વિદ્યાવાન્ એટલે —"आत्मवत् सर्वभूतेषु यो जानाति स पण्डित ।" પ્રાણી માત્રને આત્મવત્ સમજી દરેકનાં હિતમાં સર્વનાં સુખમાં જે પ્રયત્ન કર્યા કરે. પ્રભુનો પ્રેમ મેળવે, નિરંતર સર્વ ભાવથી પ્રભુનું—પરમાત્માનું ભજન—સેવન કર્યા કરે તે જ પંડિત, તે વિદ્વાન્ અને તેનીજ વિદ્યા સફલ થઇ એમ ગણાય.

બુદ્ધિમાને વિચાર કરીને કહ્યું કે, આ આખો ને આખો તણાઈ જાય છે એ તો સર્વનાશ થયો કહેવાય. માટે શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે કે "सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः" 'જ્યાં 'સર્વનાશ થતો હોય ત્યાં બચાવી શકાય તો અર્ધને બચાવી અર્ધને જતું કરવું જોઈએ. તો આ બધોએ તણાઈ જાય છે એ તો ઠીક થતું નથી, આ વાત સાભળીને એમાંના એક દોડીને પેલા તણાતાની ચોટલી પકડીને તેનું માથું તરવારથી કાપી નાખ્યું. એટલે અર્ધને જતુ કર્યું અને અર્ધને પોતે લીધું. બોલો: આ બુદ્ધિબલ કેવું! આમ અર્થનો અનર્થ કરવામાં કેવું પરિણામ આવે!! આનું નામ "ભણ્યા પણ ગણ્યા નહિ" કહેવાય. માટે ભણીને જાણવું-સમજવું. એટલા ભણ્યાથીજ કંઈ વિદ્વાન્ કહેવાય નહિ. માટે બુદ્ધિનો ઉપયોગ કરતાયે શીખવું જોઈએ. નીકર અર્થનો અનર્થ થઈ જાય; ઉંધું ઠોકી બેસાડે. જેથી અવિદ્યાનો નાશ કરનારી, લૌકિક અને અલૌકિક (પ્રભુસંબંધી કાર્ય) ને સુધારનારી, પ્રભુ તરફ પ્રેમ કરાવનારી શુભ વિદ્યા મેળવવાનો નિરંતર પ્રયત્ન કરવો એ સર્વ વિદ્યાર્થીઓનું મુખ્ય કર્તવ્ય છે.

પાઠ—૧૪ બ્રહ્મચર્ય.

વિદ્યાર્થીઓને ભણવામા, બુદ્ધિ ખીલવવામા અને મગજ શક્તિને તીવ્ર બનાવવામા વધારે ઉપયોગી બ્રહ્મચર્ય છે. શરીરરૂપી મોટી ઇમારતનો મૂળ પાયો બ્રહ્મચર્ય છે. તે બરાબર ન હોય તો ઇમારત-શરીર ટકી શકે નહિ. બ્રહ્મચર્ય એટલે વીર્યનું સારી રીતે રક્ષણ કરવું, બદ્ધવીર્ય થવું, તે. પ્રથમનાં ઋષિમુનિઓનાં સંતાનો જનોઈ પહેરીને બાર વર્ષ પર્યન્ત વનમાં મુનિના આશ્રમમાં અભ્યાસ કરવા માટે બ્રહ્મચર્ય અવસ્થામા રહેતા, ગુરુની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તતા, તેમની સેવા કરતા હતા. મોટા મોટા મહારાજાઓનાં બાળકો અને શ્રીકૃષ્ણ જેવા પણ વિદ્યાભ્યાસ કરવાને વનમાં ગુરુના આશ્રમમાં નિવાસ કરીને, બ્રહ્મચર્ય પાળીને, સામાન્ય વિદ્યાર્થી તરીકે રહ્યા હતા. તો બીજાઓ રહે તેમાં તો આશ્ચર્યજ શું? પણ હાલમાં તો એમાંનું કંઈજ નથી. સંસારી ભાવનાઓમાં ભણવાનું, તેવા ને તેવા વાતાવરણમાં-વાસનાઓમા ઉછરવાનું હોવાથી બ્રહ્મચર્ય પાળવું એ તો હાલના સમયમાં ઘણુંજ દુર્ઘટ થઈ પડ્યું છે. બાળકોને તેનું તો લક્ષ્યજ હોતું નથી. દસ દસ વરસનાં નાનાં બાળકોમા પણ કુસંસ્કાર પડી જાય એ ભારત વર્ષનું કેવું ભયંકર ભાવી!! બાળકોને બાલઅવસ્થાને લીધે તેનું ભાન નથી હોતું. પરંતુ કુસંસ્કારોને લીધે કુટેવો પડતા રોગના ભોગ થવાથી પાછળથી બહુજ પસ્તાવો થાય છે. પણ પડેલી ટેવો છૂટતી નથી. લગભગ આખા હિન્દુસ્થાનમાં તેમાંએ વિશેષે કરીને ગુજરાતમા તો તેની હદ થઈ ગઈ છે. લોકોના મન એવાં તો ચંચળ થઈ ગયા છે કે જરાએ સંયમ જાળવી શકતા નથી, દુરાચાર વધતો જાય છે. એનું કારણ માત્ર બ્રહ્મચર્યનો અભાવ છે. ભરયુવાવસ્થામાં પણ વૃદ્ધાવસ્થાનું પ્રદર્શન કરતાં સેંકડો પુરુષો આપણા ગુજરાતમા જોવામાં આવે છે એ બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ. ડરપોકપણું, મનની નિર્બળતા, નામર્દપણું, ઈર્ષ્યા, દ્વેષ, કુસંપ, એ સડો આપણને બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ લાગ્યો છે. બ્રહ્મચર્યવાન્ પરાક્રમી બને છે. તે પોતાના પરાક્રમ ઉપરજ નભી શકે છે. એટલે તેને રાગ, દ્વેષ, ઈર્ષ્યા, ભય વગેરે કાંઈ પણ હોતું નથી. જ્યારે આપણે બ્રહ્મચર્ય એ અમૂલ્ય રત્ન છે, પાછું નહિ મળી શકે તેવું અમૂલ્ય ધન છે, એમ સમજીશું. ત્યારેજ તેને સાચવી શકીશું નીકર નહિજ. બલનો-પરાક્રમનો મુખ્ય આધાર બ્રહ્મચર્ય છે. એમ નિશ્ચય થતાં સ્વપ્નમાં વીર્ય જશે તેનો પણ તમને ખેદ થશે. બાલબ્રહ્મચારી હનુમાન્ મોટા સમુદ્રને કૂદી ગયા હતા. એ પ્રતાપ

ભલા યુવાનોને થકાવતા હતા? અને યુવાનની પેઠે ઘૂમતા હતા એ પ્રતાપ કોનો ? બ્રહ્મચર્યનોજ. બ્રહ્મચર્યનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિ વધે, બલ વધે, શૌર્ય આવે, વીર્યવાન્, ધૈર્યવાન્ બને. પરંતુ તમે બાળકો એ બ્રહ્મચર્યને ભૂલી ગયા છો. એમા તમારો પણ દોષ છે, અને શિક્ષણનો પણ મોટો દોષ છે. તમે પોતે તે માટે બહુજ બેદરકાર બન્યા છો. આ શું સ્થિતિ સુધારવા જેવી નથી ! એનું પરિણામ ક્યા સુધી આવશે, એનો વિચાર કરત પણ કંપારી છૂટી આવે છે. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવાને જો બધુએ છોડીને એક બ્રહ્મચર્ય ઉપરજ ઉતરી પડીએ તોજ બહુ છે. બ્રહ્મચર્યના પ્રભાવથી શું શું ન થાય !! જેણે બ્રહ્મચર્ય સેવ્યું તેણે તો આખા જગતને પણ વશ કરી લીધુ. તે સદાએ સ્વતંત્રજ છે. અને કોઇની પણ અપેક્ષા રહેતી નથી તેના તેજપુંજમાં સર્વનો લય થઇ જાય છે. જ્યા સુધી બાળકો બ્રહ્મચર્ય પાળતા થયા નથી ત્યા સુધી ભારત સ્વતંત્ર નહિ બને. ત્યા સુધી પરતંત્રતાની બેડીઓ તૂટવાની નથી, ત્યા સુધી ભારતસંતાનોને પારકાના આપેલા ટૂકડાપરજ નીભવુ રહ્યું બાળલગ્નો પણ મુખ્ય કારણ છે. બાળલગ્નને લીધે આપણને બહુ મોટી હાનિ થઇ છે. પરંતુ એ બાળલગ્ન કરતા પણ આપણી ભાવનાઓ, આપણા વિચારો ખરાબ રસ્તે દોરાઈ ગયા છે, એ વિશેષ હાનિકારક છે. ઘણી ન્યાતોમા કન્યાના અભાવે નાનપણમાં લગ્ન થતા નથી. અને કેટલાક સુધારકો પણ મોટી ઉમ્મરે પુત્ર અને પુત્રીઓના લગ્ન કરે છે. પરંતુ તેનું પરિણામ બ્રહ્મચર્યમાં આવ્યું હોય એમ માની શકાતું નથી. હિન્દુસ્થાનમા ઘણાએ કુંવારાઓ ૨૫–૩૦ વરસના હોય છે. તે કંઇ દૃઢ વા બલસંપન્ન જોવામા નથી આવતા. અર્થાત્ જેવી રીતે બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ થવું જોઇએ તેવી રીતે થતું નથી, મનની દુર્બળતાને લીધે અનેક રીતે વીર્યનો ક્ષય થાય છે. કુટેવો પડે છે. તેના કરતા તો હજાર દરજ્જે બાળલગ્ન સારા. આથી કંઇ બાળલગ્ન યોગ્ય છે એમ કહેવા નથી માગતો; પરંતુ બાળલગ્નનો રીવાજ નાશ કરતા પહેલા ભાવનાઓ અને વિચારો સુધારવાની તથા શી રીતે બાળકોને બ્રહ્મચર્ય પાળવાનો શોખ થાય એવી ભાવના ઉત્પન્ન કરવાની ખાસ જરૂર છે. એટલે આપોઆપ બાળલગ્ન બંધ થઇ જશે. ગાયકવાડ મહારાજાએ બાળલગ્નપ્રતિબંધક કાયદો ઘડ્યો છે, તેથી કંઇ લોકને ફાયદો થયો હોય એમ નથીજ કેમકે લોકોની ભાવનાજ તે તરફ નથી એટલે બધા પ્રયત્નો નિષ્ફળ નીવડવાના. માટે તેમની ભાવનાઓ બદલાય અને બ્રહ્મચર્યને પોતાનો મુખ્ય શોખ માને ત્યારેજ કંઇ બની શકે.

વેદકાળમા જનોઇ દેતી વખતે બ્રહ્મચર્યદીક્ષા આપતા તે સમયે ગુરુ બાળકને પૂછે કે, "ब्रह्मचर्यमागाम्" તું બ્રહ્મચર્ય પાળીશ ! ત્યારે બાળક બોલે ઉપાધ્યાય ! ब्रह्मचर्यमागानि હું બ્રહ્મચર્ય પાળીશ. જુઓ વેદકાળની ભાવના કેવી છે ! જનોઇ વખતે હાલ પણ આવુ બોલાવાય છે ખરું, પણ માત્ર તે બોલવામાંજ હોય છે. કૃતિમા નથી હોતું. પૂર્વે શિષ્ય પોતેજ બ્રહ્મચર્યનું મહત્ત્વ સમજતો. નાનપણથી ઘરનું શિક્ષણજ તેવુ મળતું એટલે તેને પોતાનેજ બ્રહ્મચર્યનો શોખ થતો. હાલ તેમ નથી. હાલ નાનપણમા ન પરણાય તેની લજ્જા છે.

વિદ્યાર્થીઓએ બ્રહ્મચર્ય તરફ પોતાનો પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવો. મનની ભાવનાઓને તુચ્છ વિષયોમા નહિ દોરતા વિદ્યા તરફ, પ્રભુ તરફ દોરવી. વિષયોનો પ્રેમ–બ્રહ્મચર્યનો અભાવ એ ક્ષણિક સુખ છે. માટે અનંત સુખની ઇચ્છા કરનારાઓએ પોતાના વિચારો પ્રભુ તરફ પ્રેરીને ઉત્તમ વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવાનો પ્રયત્ન કરવો. આરંભમા જેમા સુખ છે, તે પરિણામે દુઃખ આપનાર થાય છે. અને આરંભમા જેમા દુઃખ દેખાય છે, એ પરિણામે બહુજ આનંદ આપે છે. માટે જેનો પરિણામ આનંદમય છે એનેજ સુજ્ઞ મનુષ્યો ઉત્તમ માને છે. જેના મૂળીયા જળ વિના

સુકાઈ ગયાં છે એવું ઝાડ પડી જાય તેમ વીર્યની રક્ષા કર્યા વિનાનું શરીર નિસ્તેજ બની પડી જાય છે. ગુજરાતના આદ્ય ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતા ગાય છે કે, “ વાચ કાછ મન નિર્મળ રાખે ધન્ય ધન્ય તેની જનનીરે ” જે લોકો વાણીને નિયમમા રાખે છે, સત્ય બોલે છે, અલ્પ અને મધુરું ભાષણ કરે છે, તથા કાછ–લંગોટ રાખે છે. અર્થાત્ બ્રહ્મચર્ય પાળે છે–પરસ્ત્રીનું સેવન કદાપિ કરતા નથી અને મનને નિયમમાં રાખે છે. તે લોકોને ધન્ય છે તેમને જન્મ આપનાર માતાઓને પણ ધન્ય છે. બ્રહ્મચર્યના અભાવથી મનુષ્યનું અધઃપતન થાય છે. માટે અભ્યાસી વિદ્યાર્થીઓએ શરીરનો પૂર્ણ વિકાસ થતાં સુધી બ્રહ્મચર્યનું સેવન કરવામાં અભિમાન માનવું જોઈએ તોજ આત્માની ઉન્નતિ થઈ શકે.

शरणसिद्धि.

(લેખકઃ—વેલજીભાઈ.)

ગોકુલદાસ—ભાઈ મથુરાદાસ, આજે શી પ્રવૃત્તિમાં છો ?

મથુરાદાસ—આજે તો સંસારની પ્રવૃત્તિમા છુ, કેમ ભાઈ? કાંઈ કામ છે ?

ગોકુલદાસ—ના રે, અમસ્તો પુછતો હોઈશ ! હું તો જ્યારે જોઉં છું ત્યારે તમારી ચિત્તવૃત્તિ ને દૃષ્ટિ સંસાર તરફજ ખેંચાયા કરે છે એ શું શરણસ્થનું કાર્ય ગણ્યો છે ! વળી તમો તો ભગવદીય કહેવાઓ છો. શ્રીઠાકોરજીની સેવાએ કરતા જણાઓ છો. તમો કાંઈ માયાના વર્યા જીવ તો નથી, છતાએ તમારૂં અંતઃકરણ માયા તરફ વળે છે, તેના કારણને તમો પોતે ન સમજી શકો! પોતાનું મુખ કોઈ પોતે ન જોઈ શકે, પણ સામોજ જોઈ શકે. આપણા માર્ગમા રાત્રે ભગવદ્વાર્તાઓ થાય છે. ત્યા શિક્ષાપત્ર વગેરે વાર્તાઓ વંચાય છે તે સાંભળવાનો હેતુ–માત્ર માર્ગમા આપણા મનનો નિરોધ થાય તેજ છે, તે છતા મનનો નિરોધ નથી થતો તેનું કારણ રુચિપૂર્વક શ્રવણ મનન નથી થતું, એટલું કરતા છતાં એ મનની વિહ્વળતા ને પ્રભુના દર્શન વખતે પણ મન તથા એમની નેત્રની સ્થિરતા ન હોય ત્યા પ્રભુમા મન ક્યાંથીજ જોડાય ?

મથુરાદાસ—અમારે તો સેવાએ કરવી ને સંસારની ખટપટ પણ પૂરેપૂરી કરવી જોઈએ. અમે કાંઈ વિરક્ત થયા નથી. અમારે બધુંય કરવુ જોઈએ. તમારી પેઠે આખો દિવસ પુસ્તકોજ વાંચ્યા કરવા ને ઉપદેશ દેવો તેવું અમારે પંડિત થઈ જવું નથી. ઝાઝા પુસ્તકો ને માસિકો વાંચવાથી, પ્રભુની સેવાને જાણે નહિ તો શૃંગાર વગેરે ત્યા ક્યાંથીજ આવડે? ને સામગ્રી કરવાની શી ખબર પડે !

ગોકુલદાસ—હા ભાઈ, તે તો સાચું. હું તમોને પ્રશ્ન પુછુ કે ઉત્થાપન એટલે શુ ? તેનો ભાવ કહેશો ! તેના જવાબમા તમો ઉત્થાપનના દર્શન એટલુંજ કહેશો. કારણ તમોને ગ્રંથનો અભ્યાસ નથી. જ્યાં ગ્રંથ ઉપર અરુચિ ત્યા સેવાના ભાવને ને માર્ગના સત્સિદ્ધાતને શું સમજી શકવાના હતા ? સેવા કરતાં ભાવનાના દર્શન તો નજ થાય. પણ સંસારી તરંગો આવે, સેવા તો ચિત્તનું પ્રવણ થવું એ કહેવાય ને પ્રવણ માટે ભાવને જાણવા ગ્રંથની જરૂર છે. નહિ તો “ મુખમેં રામ, બગલમેં છુરી ” જેવું થાય, ભાઈ ખરી સેવા તો એજ કે પ્રથમ વિશ્વપ્રેમ જોઈએ. સર્વત્ર પ્રભુની લીલા દેખાય. બધા કાર્યમા હરિઈચ્છાજ મનાય. હું તો ખરી સેવા એનેજ માનું છુ. પણ જ્યા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ગ્રંથોમાજ અરુચિ, તે માર્ગના સિદ્ધાતને ક્યાંથી જાણવાના ? કદી તમોને ભગવદાજ્ઞા થઈ હોય કે તમારે કદિ સાંપ્રદાયિ ગ્રંથો વાંચવા નહિ તો ખેર, તમે ભલે ગ્રંથોને સ્વપ્નમાએ હાથ ન લગાડતા, પણ તમે તમારા

સંતાનોને પણ ગ્રંથો વાચવાની ના કહીને, તેમને તમારા જેવા જડ શા માટે બનાવો છો ! વૈષ્ણવતાનો ડોળ જો રાખતા હોઈએ તો માત્ર નામનીજ વૈષ્ણવતા છે. અમે તો આપણે એમ જાણીએ છીએ કે આજ સુધી પુષ્ટિમાર્ગના ગ્રંથરત્નો તદ્દન પેટી-પટારાઓમાજ ભર્યા રહેતા લગભગ દશ બાર વરસમા જ કાંઇ ગ્રંથપ્રચાર થયો છે તેનો લાભ ભાગ્યવાન વૈષ્ણવોએજ પ્રાપ્ત કર્યો છે. આપણે ગ્રંથપ્રકાશક વૈષ્ણવમંડળનું સ્મરણ કરીએ તોપણ કૃતાર્થ થઇએ. પ્રથમ પ્રચાર શ્રીનૃસિંહલાલ પ્રભુ, ત્યાર પછી પંડિત ગટુલાલજી, ત્યાર પછી રા. રા. મગનલાલ શાસ્ત્રીજી ત્યાર પછી તેલાવાળા, રાવબહાદુર લલ્લુભાઇ, પરમ વૈષ્ણવ હરિદાસ ઝવેરદાસ, તે અરસામા ગોસ્વામી શ્રીવિઠ્ઠલેશરાયજી અમરેલીવાળા તથા દયાળભા શેઠ તથા વૈષ્ણવ ધીરજભાઈ સાંકળીઆ, તથા પટવારીજી રણછોડદાસભાઇ, જેમણે પણ ઘણો શ્રમ ઉઠાવ્યો છે. તથા શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇ તથા રા. રા. જેઠાલાલભાઇએ પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાનું પાન સહજ સારૂં કર્યું. ભાઈ દીનકિંકર જેમણે બાલશિક્ષાના ભાગ ૫ બહાર પાડયા તથા રસિકવિલાસ તથા શ્રીગોકુલનાથજીના હાસી વચનામૃતોનો અપૂર્વ લાભ વૈષ્ણવોને આપ્યો છે. તથા હાલ ચાલતું શુદ્ધાદ્વૈત માસિક પણ કોઈ અનેરી છાપ પાડે છે. છતા વૈષ્ણવો તેને નભાવી શકતા નથી. તે બહુ ખેદની વાત છે. આખા માર્ગમાં માત્ર એકજ માસિક છે. તે ભારતમાની સેવા કરી રહ્યું તેને સ્થાયી રાખવા ગૃહસ્થ વૈષ્ણવોએ લક્ષ ખેંચી સેવા બજાવવા વિનતિ કરી વિરમુ છું.

आपणो उद्यम.

(લેખક—સુથાર પ્રાગજી નાનજી, ધોરાજી, કાઠિયાવાડ.)

પ્રિય વાચકો, દરેક મનુષ્યને ભગવદ્ધર્મને અનુસરીને ઉદ્યમ કરવાનો હોય છે, કારણ જીવ ભગવાનનો અંશ છે ને ભગવાન અંશી છે. જેમ સેવકની ફરજ સ્વામીની સેવા બજાવવાની છે તેમ અંશે અંશીની સેવા કરવાની ફરજ છે, સેવકે સ્વામીની આજ્ઞાને અનુસરીનેજ વર્તન રાખવાની જરૂર છે. ભગવાન ગીતાજીમા અર્જુન પ્રતિ કહે છે કે “ તુ જે ખાય છે, તુ જે પીએ છે, ટુંકામા તું જે કરે છે તે મને અર્પણ કર, એ ભગવદ્વાક્ય મુજબ આપણે દરેક ઉદ્યમ ભગવત્સેવાનિમિત્તેજ કરવા જોઇએ છતા આપણી સ્થિતિ વાદી (મદારી) નો કંડીઓ કાપતા ઉંદરના જેવી છે. દૃષ્ટાંત કે કોઇ એક ઉંદર ખોરાકની શોધના ઉદ્યમ માટે નીકળ્યો તેને કોઇ વાદી (મદારી) નો કંડીઓ દૃષ્ટિગોચર થતા તેમા કંઇ ખોરાક હશે તેમ સમજી તેને કાપવા માંડયો. કંડીઓ કાપતા દરમ્યાન પોતેજ તેમા રહેલ કાળરૂપ સર્પના ખોરાક રૂપ થયો. પ્રિય વાચકો—આપણી પણ એજ સ્થિતિ છે. આપણે લૌકિક કાર્યોમાં એવા તો રચ્યાપચ્યા રહીએ છીએ કે અનેક જન્મોમા ભટકતાં ભટકતા મહામુશીબતે ભગવત્કૃપાથી પ્રાપ્ત થએલ દુર્લભ એવો મનુષ્યદેહ ગુમાવી કાળના ભક્ષણરૂપ બનીએ છીએ જેથી કાળના મુખમાંથી બચવા દરેકે પોતાની ફરજ સમજી ભગવત્સુખ વિચારી દરેક કાર્યો ભગવદ્અર્થેજ કરવા જોઇએ. પરમભક્ત ગોપાળદાસજી વલ્લભાખ્યાનમા ગાય છે કે—

ગિરિરાજને આશ્વાસ દીધો ધરી કોમલ ચરણ, હરખે તે સામા આવીયા, શ્રીગોવર્ધન ઉદ્ધરણ;

પ્રિય વાચકો, શ્રીગિરિરાજજીની ઉપર સાક્ષાત પ્રભુ બિરાજતા હતા છતાં એમને એવું શું દુઃખ હતું કે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પધારી સાંત્વના કરી ? જવાબમાં કહેવાનું એટલુંજ કે—શ્રીગિરિરાજ ઉપર સાક્ષાત પ્રભુ બિરાજતા હતા છતા અસેવ્ય બિરાજતા હોઈ શ્રીગિરિરાજજીને એ મહાદુઃખ હતુ જે દુ:ખ શ્રીમહાપ્રભુજીએ પધારી સેવાપ્રકાર બાંધી નિવૃત્ત કર્યું. જેથી શ્રીગિરિરાજને શાંતિ

થઈ. આ પ્રકારે ભગવત્સુખ વિચારવું એ પણ દરેક ભગવદીયોની ફરજ છે છતાં એ ફરજ બજાવવા માટે કેટલા બેદરકાર રહીએ છીએ? આપણા પર જે ફરજ પડેલી છે તે તુરતજ બજાવવાનો અમલ થવો જોઇએ. એક ભગવદીય કહી ગયા છે કે—

કાલ કરે સો આજ કર, આજ કરે સો અબ; અવસર બીત્યો જાત હે ફેર કરેગો કબ?

આ વાતને આપણે ભુલવી તો નજ જોઇએ. લૌકિક વૈદિક કાર્યો બધાને કરવાના હોય છે. પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની આજ્ઞા મુજબ કાપટ્યબુદ્ધિથીજ કરવાનાં હોય છે. દયારામભાઈ પણ ભક્તિપોષણમાં કહે છે કેઃ—

જગત જાણે છે જંજાળી રાખ હ્રદે ત્રીકમ શું તાળી,

તેમજ ગીતાજીના ધોળમાં પણ કહ્યું છે કે—

સંસારમા સરસો રહે, જેનું મન મારી પાસ; સંસારમા લેપે નહી તેને જાણું મારો દાસ–અર્જુન સુણો.

એવાં વાક્યો મુજબ ભગવદીયોએ સંસારમાં જળકમળવત કહેવું જોઇએ અને આખા દિવસમાં અમુક સમય તો ભગવદ્ધર્મમાંજ વીતાવવો જોઇએ. જેટલો સમય ભગવદ્ધર્મમા વીતે એટલો વખતજ જીવ્યા સમજવું. આ વાત ચોરાશી વૈષ્ણવોની વાર્તાઓ પૈકી મોહનદાસ તથા વલ્લભદાસની વાર્તા વાંચવાથી સ્પષ્ટ સમજાશે, છેવટે—

આજ કામ કાલ કામ પરસું કામ કરનો, પહેલે દિન બહોત કામ કામકે પીછે મરનો;
જાગત કામ સોવત કામ બહિર્મુખ હોય ચલનો, છોડ કામ સમર શ્યામ સૂર પકડ શરનો.

આ મહાનુભાવી સૂરદાસજીના પદને સમજી છેલી લીટી મુજબ દૃઢ શરણ પકડી સદા શ્રીમજાધીશનું સ્મરણ ભજન કરવા પ્રતિ પ્રિય વાચકો લક્ષ આપશે એમ ઇચ્છું છું.

સ્વદેશી.

(લેખકઃ—શ્રીપરાગ.)

રાષ્ટ્રના સ્વાતંત્ર્યના આંદોલનથી કોઇકજ ભારતીય અજ્ઞાત હશે. દેશના ખૂણે ખૂણે અસહયોગની ચળવળ પ્રસરતી જણાય છે. પરદેશીઓની અન્યાયી સલ્તનતનો નાશ કરવા અને માતૃભૂમિના પરતંત્રતાના બંધનોને છિન્ન ભિન્ન કરવા સંપ્રતિ બહિષ્કારની પ્રવૃત્તિ પણ પ્રગતિને પંથે દ્રુત ગતિથી પ્રધાવન કરી રહી છે. જે દેશમા મહારાણા પ્રતાપ, છત્રપતિ શિવાજી મહારાજ સમા નર-શાર્દૂલોનું રામરાજ્ય પ્રવર્ત્તતું હતું અને તે વખતની ભારતીય પ્રજા પણ ધીર, વીર, તેમજ ઉદારપણામા અજોડ કહેવાતી હતી તેવી ગર્વીલી પ્રજાની આધુનિક દયનીય દશા નિહાળી કયા હૃદયને આઘાત નહિ પહોચતો હોય વારૂ? ખરેખર! હવે ભારતીયોનાં ચક્ષુઓ ઉન્મીલિત થઇ ગયા છે. પોતાના પિતામહ, પ્રપિતામહના સમયનું આદર્શ શાસન સ્મૃતિ વડે તરવરવા લાગ્યું છે. હવે પુનઃ તેવું શાસન પ્રસ્થાપિત કરવા અને દેશની ગયેલી સમૃદ્ધિનો પુનઃ સંચય કરવા ભારતીયોએ કાયરતા મૂકી અહિંસાના ધ્યેયથી સામ્રાજ્યવાદની સાથે સ્વાતંત્ર્યનું યુદ્ધ છેડી દીધું છે. એનું નિરીક્ષણ કરી ભારતમાતા પોતાની શૂરવીર પ્રજાને હર્ષાશ્રુઓથી આજે વધાવી રહી છે. નિહાળો! નિહાળો!

આપણો પ્રાચીન રાષ્ટ્ર એક વખત અદ્વિતીય હતો. પ્રાચ્ય ભારતની ગુણગરિમા અને ઐશ્વર્યસમૃદ્ધિના વર્ણન, આર્યાવર્ત્તના પ્રાચ્ય કવિશ્રેષ્ઠોની કૃતિઓમાં અદ્યાવધિ ઝળકી રહ્યા છે. કવિકુલગુરુ કાલીદાસ, ભવભૂતિ સમા કવીન્દ્રોએ પોતાના કાવ્યોમાં તથા નાટકોમા તત્કાલીન

ભારતવર્ષના સૌંદર્યનું તેમજ પાવિત્ર્યનું ચિત્ર આજેય દોરેલું આપણે અવલોકી શકીએ છીએ. ગુર્જર કવિવરોએ પણ ભારતની ઐશ્વર્ય અને વિમળ સમૃદ્ધિમાં હિંચતી પ્રાચ્ય નગરીનું વર્ણન કરતાં કહ્યું છે કેઃ—

‘ કનક કોટ ચળકારા કરે, મણિમય રત્ન જડયાં ત્યાં કાંગરે. ’

મોગલ સલ્તનતમાં પણ આપણા ભારતવર્ષની આઝાદી ટકી રહી હતી. પ્રખ્યાત ઇતિહાસકાર થોર્નટન્સ પ્રાચ્ય ભારત વિષે પોતાના એક ગ્રન્થમાં ઉલ્લેખ કરે છે કે—

“ યુરોપીય સભ્યતાના ઉત્પાદક યુનાન અને ઇટાલી જ્યારે જંગલી અવસ્થામાં પડયાં હતાં તે સમયે ભારતવર્ષ વૈભવ અને સમૃદ્ધિનો કેન્દ્ર બની રહ્યો હતો. ભારતમાં ચારે બાજુએ મોટા મોટા ઉદ્યોગો પ્રચલિત દેખાતા હતા. ભારતીય પ્રજા અહર્નિશ કાર્યવ્યગ્ર જણાતી હતી. અવનિ પણ ઉર્વરા હતી. અતએવ ત્યાં પાક સારો પાકતો હતો. ખેડુતોને પણ તેનો લાભ સારોજ મળતો હતો. ધનધાન્યથી પરિતુષ્ટ વસતા હતા. તે સમયે ભારતમાં ઘણાજ બાહોશ કલાકારો રહેતા હતા. તેઓ ભારતના કાચા માલથી એવા નકશાકારક અને આકર્ષક માલ તૈયાર કરતા હતા કે તેવા માલની માગણી આખું વિશ્વ કરતું હતું. કેટલાયે પાશ્ચાત્ય અને પૌર્વાત્ય રાષ્ટ્રો તે માલને ઘણાજ આદરથી ખરીદતા હતા. ભારતનું સૂતર અને વસ્ત્ર એટલાં કોમળ અને સૌંદર્યવાન થતાં હતાં કે તેની તુલના થવી અશક્યજ છે. ”

ઉક્ત પ્રકારે એક નિષ્પક્ષ આંગ્લ ઇતિહાસજ્ઞે ભારતની વિપુલ સમૃદ્ધિની મુક્ત કંઠે પ્રશંસા કરી છે એટલુંજ નહિ પણ તે સમયના ભારતની આઝાદીનું નગ્ન ચિત્ર દોર્યું છે. યદિ આપણેજ ભારતને પ્રશંસીએ તો આપણા ઉપર કદાચ પક્ષપાતનો આરોપ આવવાનો સંભવ રહે પણ એક પાશ્ચાત્ય ઇતિહાસજ્ઞ લેખકનું ઉક્ત કથન કોઇ પણ રીતે પક્ષપાતિ નજ કહી શકાય. પ્રાચ્ય કાળમાં અનેક વિદેશી યાત્રીઓ ભારત ભ્રમણ કરવા આવેલા તે બધાઓએ પોતપોતાના ગ્રંથોમાં સ્થળે સ્થળે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ ગાઇ છે. મેગસ્થનીજ જે અહીં વિક્રમથી ૨૫૩ વર્ષ પૂર્વે આવેલો, તેણે પણ ભારતના યશોગાન લલકાર્યાં છે. અત્યારનો સામ્રાજ્યવાદ ખેડુતો પાસેથી અને અન્ય પ્રજાઓ પાસેથી કરો ઉઘરાવવા જે ત્રાસ વર્તાવે છે તેવું પ્રાચ્ય કાલના શાસનમાં નહોતુંજ. મેગસ્થનીજ લખે છે કે—

“ ભારતની પ્રજા સમૃદ્ધિવાળી હતી. કોઇ પણ પ્રકારનો કર તેમની પાસેથી લેવામાં આવતો નહોતો. કર્મચારીઓ તરફથી પણ કશીયે દખલગીરી કરવામાં નહોતી આવતી. જેઓ જમીન ખેડતા હતા તેઓને પોતાના લાભનો નજીવો અંશ રાજ્યને આપવો પડતો હતો. રાજાઓ કોઇને પણ શારીરિક દંડ નહોતા આપતા. ”

આવી સુવર્ણમયી ભારતભૂમિનું અધપતન ઇસ્ટ ઈંડીઆ કંપનીના આગમનથી પ્રારંભાયું. કંપનીએજ આપણા ભારતમાથી ધનધાન્યસમૃદ્ધિનું અપહરણ કરી ભારતને કંગાલ બનાવી દીધો. વ્યાપારી વેશે ભારતમાં આવી પોતાની અર્થલોલુપ રાક્ષસી મહત્વાકાંક્ષાને વશ થઇ કંપનીએ ભારતના સર્વ પ્રકારનો શોષણનો શ્રીગણેશ આદર્યો. કંપનીના ભૃત્યો કેવા કેવા અત્યાચારો કરી ભારતની સમૃદ્ધિને હરતા હતા તેનું વર્ણન કરતાં સર જોન વેગો ૨૬–૩–૧૭૬૨ના પત્રમાં ઉલ્લેખે છે કે—

“ કંપનીના ભૃત્યો પોતાને સમર્થ અને ઘણાજ શક્તિશાલી સમજે છે. કંપનીના માટે કોઇ પણ વસ્તુ ખરીદવી હોય યા વેચવી હોય તો ગામડે ગામડે જઇ ત્યાંના વતનીઓની વિરુદ્ધ માલ ખરીદવા અને વેચવા તેઓને વિવશ કરે છે. કોઇ ગામડીઓ તેની આજ્ઞાને માન્ય નથી

કરતો તો તેને સોટીઓથી સારી રીતે માર મારી જેલમાં ઠોસી દેવામાં આવે છે એટલુંજ નહિ તેઓ ઉપર અસહ્ય અત્યાચારો વર્ષાવી પાશ્ચાત્યો સિવાય અન્ય કોઇને પણ માલ ન વેચવા તથા અન્ય કોઇની પાસેથી માલ ન ખરીદવાની ફરજ પાડે છે. આથી આંતરિક કંપનીના ભૃત્યો જેઓ પોતાને માટે વેપાર કરવા અત્યાચાર કરી માલ ખરીદે છે તેની પૂરેપૂરી કિંમત દેશના વ્યાપારીઓને આપતા નથી. કયારેક કયારેક તો એક અર્ધી આપવાનું પણ સૌજન્ય દર્શાવતા નથી. આ પ્રકારના રાક્ષસી અત્યાચારોના કારણે શનૈઃ શનૈઃ બાકરગંજનો તાલુકો જનસમુદાયથી ખાલી થતો જાય છે. પાશ્ચાત્ય વ્યાપારીઓના ભૃત્યો સ્વચ્છંદતાથી ગરીબ લોકો ઉપર ઘણો ત્રાસ વર્તાવે છે. યદિ કોઇ જાગીરદાર તે લોકોની વહારે ધાય તો તેઓને પણ આફતની ધમકી આપવામા આવે છે. પ્રાચ્ય સમયમા તો ન્યાયાલયોમા ન્યાય થતા હતા પણ હવે તો પાશ્ચાત્યોના મહેતાઓજ ન્યાય કરે છે. પ્રત્યેક મહેતાના ઘેર ન્યાયાલય ખોલાય છે. મહેતાઓ પોતેજ ન્યાયાધીશ બની જમીનદારો વિરુદ્ધ દંડ દેવાના ફરમાનો કરતાયે અચકાતા નથી. જમીનદારોની નીતિ કુંપનીને નુકશાનકર્તા છે એવુ ખોટું બહાનું કરી તેઓ પાસેથી અકારણે રૂપીઆ વસુલ કરવામાં આવે છે. યદિ મહેતા વર્ગનાજ ભૃત્યો મહેતાઓની કોઇક વસ્તુની ચોરી કરે તો પણ જાગીરદારના નોકરો પરજ એ ચોરીનો કલ્પિત આરોપ મુકી તે ચોરીની ક્ષતિ વસુલ કરી લેવાય છે."

આવા અત્યાચારો માત્ર બાકરગંજમાંજ નહોતા થતા પણ આખા બંગાળમાં અરે સમસ્ત રાષ્ટ્રમાં પોતાની પરિસીમાએ પહોચ્યા હતા.

આ ભારત કેવા ઉસ્તાદ કલાકારોથી વિભૂષિત હતુ તે હું એક આગ્લ લેખકના શબ્દોમાં પૂર્વે કહી ચૂકયો છું. શ્રીમદ્વલ્લભરાજકુમાર શ્રીમદ્ગુસાંઇજીના વખતમાં પણ આપણા ભારત વર્ષની કળા જળવાઇ રહી હતી. એક વૈષ્ણવે ૪૫–૫૦ વારનો મલમલનો બારીક તાકો શ્રીનાથજીના વસ્ત્રો માટે માત્ર કાઇની નલિકાદ્વારા મોકલ્યો હતો. એટલુંજ નહિ પણ વર્તમાન સમયમાં જયાં જયાં શ્રીમહાપ્રભુજીના ખાસ ધરવાના પ્રાચીન ધોતી ઉપરણા બિરાજે છે તેના દર્શન કરતા આપણને જણાશે કે પૂર્વે આપણા રાષ્ટ્રમાં શુદ્ધ હાથવણાટ અને હાથકંતામણના બારીક વસ્ત્રો કેવાં અદ્વિતીય થતાં હતાં ? આપણા રાષ્ટ્રના વસ્ત્રોની તુલના અતુલનીય હતી. વિશુદ્ધતમ હાથવણાટનાજ વસ્ત્રો આપણી પ્રત્યેક ધાર્મિક ક્રિયાઓમાં વપરાતાં હતાં. અંગ્રેજી અક્ષરાંકિત રૂપ્ય મુદ્રિકાનો કિંવા સુવર્ણ મુદ્રિકાનો પ્રભુસેવામાં સ્પર્શ સુદ્ધાં થઇ શકતો નહતો. તે સમયે ભારતીયોમાં એટલું અધિક સ્વદેશાભિમાન હતું. આપણા પ્રાચીન કલાકારોના હાથે તૈયાર થએલું સૂક્ષ્મતમ વસ્ત્ર આજેય માન્ચેસ્ટર કિંવા તેના જેવા અન્ય વિદેશી ગયકોમાં પણ તૈયાર નથી થઇ શકતું. ઇનસાઇકલોપીડીઆ બ્રિટાનીયામા લખ્યું છે કે " રૂના સૌંદર્યસંપન્ન વસ્ત્રો ભારતમાં એવી દશાએ પહોચેલા હતા કે યુરોપની આધુનિક કલા બધી જાતના અદ્ભુત મશીનોની મદદ હોવા છતાં પણ ભારતના રેંટીયાથી બનેલા કાપડની જરાયે નકલ નથી કરી શકતી."

આ પ્રમાણે ઘણાયે પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ ભારતના કાપડની મુક્તકંઠે પ્રશંસા કરી છે. મી. બેને પોતાના ઇતિહાસમા લખ્યું છે કેઃ—

"ભારતના આવા બારીક મલમલના કાપડ માટે યુરોપની કેટલીક વ્યક્તિઓના એવા વિચારો થઇ ગયા છે કે ભારતના કાપડની વણાટ મનુષ્યકૃત નથી કિન્તુ ઝીણી ઝીણી કોડી મંકોડીકૃત હોવી જોઇએ."

કેવળ સુતરાઉ કાપડ તેવું નહોતું થતું પણ તે સમયે રેશમી, ગરમ, છીંટ વિ. બધો માલ ભારતનો અદ્વિતીય બનતો હતો. અત્યારે જેવી ભારતીઓને વિદેશી માલની મોહિની લાગેલી છે

અને સ્થળે સ્થળે, વિદેશી માલથી ભારતીઓ પોતાના ઘરોને તથા શરીરોને શણગારે છે તેનાથી નિતાન્ત પ્રતિકૂળ પરિસ્થિતિ ૧૬૫૬ માં યુરોપની થઇ રહી હતી. ભારતીય મલમલો અને રેશમી પડનો લંડનમાં અને તેવા પાશ્ચાત્ય દેશોમાં વિપુલ પ્રચાર પ્રચલિત હતો. આવી યુરોપની પરિસ્થિતિ પર ૧૭૦૮ માં ડેનીયલ ડેફો દુઃખ પ્રકટ કરતો પોતાના વર્તમાન પત્રમાં લખે છે કે:—

"યુરોપના વતનીઓની પ્રવૃત્તિ પૂર્વ તરફ વળી રહી છે. ભારતની છીંટો અને છાપેલ પડ જે પ્રથમ જમીન ઉપર પાથરવામાં આવતા હતા, કિન્તુ હવે આપણી મહિલાઓ પણ એ હેરવા લાગી ગઇ છે. અન્યની તો વાતજ શી? ખાસ લંડનની સામ્રાજ્ઞી ચિનાઇ શીલ્ક અને ારતીય છીંટો પહેરવી પસંદ કરે છે. આ સમયે ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો દૃષ્ટિગત થઇ યાં છે. આપણા બેસવાના ઓરડાઓમાં, આપણી ચેમ્બરોમાં, આપણા ગૃહમાં લાગેલ પડદાઓમાં, આપણી સુવાની પથારીમાં અને તકીઆમાં એટલુંજ નહિ પણ આપણી સ્ત્રીઓ અને ાકરોઓના વસ્ત્રોમાં કેવળ ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો નજરે પડે છે. પ્રાયઃ યુરોપમાં બધું પડ ભારતમાંથી આવે છે."

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે એક સમયે લંડન ઇત્યાદિ પાશ્ચાત્ય દેશોના બજારો ભારતીય ાકા માલથી ઉભરાતો હતાં. ભારતીય માલના વ્યાપારમાં કંપની યુરોપમાં સેંકડે પચાસ ટકા ફો કમાતી હતી. તોયે ભારતીય માલ યુરોપમાં સસ્તોજ વેચાતો રહ્યો. આવું વાતાવરણ યુરો-ીયોની આંખમાં ખુંચવા લાગ્યું તે સમયે યુરોપીઓ ભારતીય માલ પર એવા મુગ્ધ બન્યા હતા સામ્રાજ્યવાળા કઠોર દંડો ભરી જેલોના કષ્ટો વેઠીને પણ ભારતીય માલ વાપરવાની મોહિની હોતા ત્યાગી શકતા. આવી સ્થિતિ જોતાં આપણી સરકારે ભારતના તેવા મશહૂર કલાકારોનાં ાથ પગનાં કાંડાઓ કાપી ભારતીય હુન્નર ઉદ્યોગોનો તેમજ પાવિત્ર્યનો વિનાશ કર્યો છે. એનો તિહાસ આજે સાખ પૂરે છે.

પરદેશીઓના આગમન પૂર્વે, આપણો ભારત વર્ષ આટલો બધો ભ્રષ્ટ નહોતો થયો. ળે સ્થળે કૂવાઓ તથા તળાવો છલકાતાં હતાં. વિજન વનોમાં પણ યાત્રાળુઓની અનુકૂળતા ાટે ધર્મપ્રાણ ધનિકો કુવાઓ તથા તલાવો ખોદાવતા હતા. આજે પરદેશીઓના રાજ્યકાળમાં આપણા પવિત્ર જલાશયો, આપણા ધાર્મિકોની ધાર્મિક લાગણી દુખાતી હોવા છતાં રી દેવામાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ આપણા સનાતન સ્વતંત્ર સામાજિક રીતરિવાજોમાં ણ સરકાર હવે ડખલગીરી કરવા લાગી ગઇ છે. સરકાર વિદેશી ભ્રષ્ટ વસ્ત્રોનો તથા શિક્ષણોનો પ્રચાર કરી ભારતને ઓછું અપવિત્ર થયેલું સમજી, આવા આવા અનેક કુસાધનો વડે આપણા હકો ઉપર તરાપ મારી રહી છે. આપણને ભ્રષ્ટ કરી રહી છે, એટલુંજ નહિ પણ આપણને બલાત્કારે વિનાશને માર્ગે ઘસડી રહી છે છતાંયે કેટલાક ભારતીયો સમ્યક્ પ્રકારે જાગૃત ન થતાં સંપ્રતિ દેશોદ્ધારના આંદોલનમાં સહયોગ ન આપતાં તેને વખોડે છે. તેવાઓની મનોદશા ખરેખર દયનીયજ કહેવાય. હવે ઉંઘવાનો જમાનો જતો રહ્યો છે. કર્તવ્ય કરવાનો સમય આવી પહોંચ્યો છે. દેશની છીનવાઇ ગયેલી સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત કરવા આપણે હવે આ આરંભેલું યુદ્ધ પ્રાણના ભોગે ચાલુ રાખવુંજ જોઇશે. કારણ કે સ્વરાજ્ય એ તો આપણો જન્મસિદ્ધ હક્ક છે. સરકારની દમનનીતિથી આપણને ડરવાનું કાંઇ પ્રયોજન નથી. ભલેને સરકાર આપણી, જીવિત ત્વચાઓ ઉખેડીને ફેંકે, ભલેને આપણા ઉપર શિકારી શ્વાનોને છોડી મૂકે તો પણ અહિંસાના પવિત્ર ધ્યેયને મજબૂત વળગી રહી દેશોદ્ધારના યત્નમાં હસતે મુખડે પ્રાણની આહુતિ અર્પણ કરવાની આપણી દિવ્ય ફરજ આવી પહોંચી છે.

બ્હેનોની વીરતા પણ કંઇ ઓછી સન્માનનીય નથી જે બ્હેનો માતૃભૂમિના ઉદ્ધારના અર્થે ભીષણ અત્યાચારો સહે છે, તેઓને હજારો ધન્યવાદ ઘટે છે. સરકારને આવી મદોન્મત્ત કરવાનું ઉત્તરદાયિત્વ પણ આપણા ઉપરજ છે એ વિસરવાનું નથી. આપણે વિદેશી સ્ટીમરો ભરી ભરી માલો મંગાવીએ છીએ અને સરકારના ખીસ્સા ભરીયે છીએ તેથીજ તે આવી ઉદ્ધત બની ગઇ છે. ભારતને આઝાદ કરવા ખાતર વિદેશી માલનો બહિષ્કાર કરવો જોઇએ. એટલું કામ કરીને આપણને અટકવાનું નથી આપણને તો વિદેશી માલના બહિષ્કારના પ્રચાર સાથે સાથે રેંટીયાની પ્રવૃત્તિને પણ વ્યાપક કરવાની છે. ધારો કે અત્યારે આખો રાષ્ટ્ર ખાદી પહેરતો બની જાય તો શું આપણે તેટલી ખાદી પુરી પાડી શકીશું? નહિજ, કારણ કે આપણી પાસે તેટલી ખાદીની શિલક નથી. અતએવ ખાદીના વિસ્તાર માટે ઘેર ઘેર રેંટીયાના મધુર નાદો ગર્જવા જોઇએ, તકલીઓ કંતાવી જોઇએ. વૈષ્ણવ બન્ધુઓને તો આ આન્દોલનથી ડરવાની કિંવા સંકોચ કરવાની જરાયે આવશ્યકતા નથી કારણ કે વૈષ્ણવ ધર્મના સ્વચ્છતા તથા શુદ્ધતાના આદર્શ સિદ્ધાન્તો રેંટીયા અને ખાદીથી અતિરિક્ત નજ જળવાઇ શકે. પ્રભુની સેવાવિધિમા સ્વચ્છતા અને શુદ્ધતા વિના લેશ પણ ચાલી નથી શકતું વિદેશી વસ્ત્રોમા તો ખુલ્લું ભ્રષ્ટ થવાનુંજ છે. એ ભ્રષ્ટતામાથી બચવાના અહિંસાત્મક શસ્ત્રો માત્ર રેંટીઓ અને ખાદી છે. આ કથનમા હું અણુમાત્ર પણ અત્યુક્તિ નથી કરતો. મારે જાહેર કરવું જોઇએ કે વૈષ્ણવ સમાજે આ રાષ્ટ્રીય આન્દોલનમા ઔદાસીન્ય ન સેવતા' સક્રિય ભાગ લેવો જોઇએ. આપણા પૂર્વાચાર્યપાદોએ વિદેશી વસ્ત્રો નહોતા ધરતા કિન્તુ તેઓ સ્વદેશી વસ્ત્રો ધારણ કરતા હતા. પ્રભુની પવિત્રાદિ સેવાવિધિપ્રકારમા રેંટીયાદિ ફેરવતા હતા, એ નિર્વિવાદ છે કે ભારતની આઝાદી તેમજ ગુણગરિમા માત્ર રેંટીયા અને ખાદીનેજ આભારી છે. પૂર્વે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ એજ રેંટિયા અને ખાદીએ જાગતી રાખી હતી, એણેજ સમસ્ત યુરોપને ભારતવર્ષની સૌંદર્યસુધાનું પાન કરાવ્યું હતું અને એ બન્નેના વિનાશથીજ અત્યારે આપણો રાષ્ટ્ર કંગાલ, દીન, હીન અને ગર્તગામી બની ગયો છે. આપણા રાષ્ટ્રના પુનરુદ્ધાર માટે એ ગ્રામ્ય હુન્નર ઉદ્યોગોને સજીવ કરવા પડશે. ઘેર ઘેર રેંટીયા શાળાઓ અને તકલી શાળાઓનું ઉદ્ઘાટન કરવું પડશે. ગયેલી સ્વતંત્રતા પુન આપણે સુતરના તાતણેજ મેળવવાની છે "રેંટીઓ અને ખાદી" એ ઉભય આર્યાવર્તના પ્રાણસમા છે. ભવતુ !''*

आंतर–जीवनपर अभिप्राय.

જત ભાઇ દીનકિંકર મારફત "ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઇનું આંતરજીવન અથવા દિવ્ય અક્ષરદેહ" નામનું પુસ્તક મળ્યું, તે વાચી અત્યંત આનન્દ થયો. ભક્તકવિ દયારામભાઇએ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ જનતાપર જે ઉપકાર કર્યો છે તે અવર્ણનીય છે. પ્રભુ ગુણગાનદ્વારા ભક્તના હૃદયમાં પ્રવેશ કરે છે એ સત્ય મહાનુભાવીઓએ અનુભવ્યું છે, તેથીજ પોતે જે નામનૌકા વડે ભવસાગરને તરી ગયા તે નૌકા પોતાની પાછળ બીજાને માટે મૂકી નિજધામમા પધાર્યા. આ ન્યાયે દયારામભાઇના પદ, ગરબીઓ, તથા વિવિધ પ્રકારના પદ્યસાહિત્યથી લાખો અધિકારી હૃદયને પ્રેરણા મળી છે, જોઇતું ગુણગાનનું સાધન પ્રાપ્ત થયું છે, અને શુદ્ધપ્રેમાત્મક ભક્તિરસની ઉપલબ્ધિ પણ થઇ છે. એમના કાવ્યને પ્રસિદ્ધિમા લાવવાનો જે સ્તુત્ય પ્રયાસ તમે વર્ષો થયા આદરી રહ્યા છો, તેને માટે તમને જેટલો ધન્યવાદ આપીએ એટલો ઓછો છે. અનેક વિઘ્નો તથા મુશ્કેલીઓ સામે અડગ ધૈર્ય રાખી એ કાર્ય પાછળ મંડી રહ્યા છો તે જોતા પ્રભુએજ

---

* આ લેખમા શ્રીયુત સુખસંપત્તિરાય ભંડારી કૃત ભારતદર્શનની સહાયતા લીધી છે

કૃપા કરી એ કાર્ય માટે તમને નિર્મિત કરેલા છે, એવો મને તો નિશ્ચય થાય છે. હજી પણ એ દિશામાં કરવા જેવું બાકીનું કાર્ય પુરૂં કરવા પ્રભુ તમને સામર્થ્ય બક્ષે એવી મારી તીવ્ર અભિલાષા છે.

દુનીઆ દોરંગી છે, અને અનેક પ્રકૃતિના તથા અનેક સંસ્કારવાળા પુરુષો હોવાથી સર્વની અભિરુચિ ભિન્ન હોય છે; તેથી એક વસ્તુ પર સઘળાનો આદર સરખો હોય એ અસંભવિતજ છે; છતાં બહુરત્ના વસુંધરામાં સત્યશીલ અને ઉચ્ચ સંસ્કારવાળા પરીક્ષકો પણ અસ્તિત્વ ધરાવે છે એમાં સંશય નથી. પાશ્ચાત્ય જડવાદના આક્રમણનું પરિણામ કેવું ગંભીર આવ્યું છે તે સંસ્કારી પુરુષોથી હવે અજાણ્યું નથી. આર્યસંસ્કૃતિ ધીમે ધીમે લુપ્ત થતાં હવે એના નામના અસ્તિત્વ માટે પણ હૃદયમા શંકા થયા વિના રહેતી નથી. આવા કટોકટીના સમયમાં પણ ધીર પુરુષનું કર્તવ્ય તો, સમયના આક્રમણને વશ ન થતાં સત્યને વળગી રહેવાનું, તથા નીડર થઇને સત્યનું પ્રતિપાદન કરવાનુંજ છે, સદ્‌ભાગ્યે આવા પ્રયત્નને પરિણામે ભક્તકવિ દયારામભાઇના જીવન સંબંધમાં જે જે તર્કવિતર્કો કાળને પ્રભાવે ઉદ્‌ભવવા પામ્યા હતા, તેની નિષ્પક્ષપાત રહીને સમીક્ષા કરવાનું સજ્જનોને સાધન મળી ગયું છે, અને આ આન્તરજીવન એ કાર્યમાં ઘણીજ કિંમતી મદદ આપ્યા વગર રહેશે નહિ એવું મારૂં નમ્ર મન્તવ્ય છે. દયારામભાઇની કવિતા એમણે પોતે કેવા ઉદ્દેશથી, કેવા વિચારોથી, ને કેવી ભાવનાથી પ્રકટ કરી છે તે જાણવાની કોઇની ખરી ઉત્કંઠા હશે તો તેને આ તમારૂં પુસ્તક ખરેખર ગણું ઉપકારક થઇ પડશે. વિવિધ દૃષ્ટિબિંદુએ અપાએલા માર્ગીય અને તટસ્થ વિદ્વાનોનાં ભાષણોનો એકત્રિત કરવામાં આવેલો સંગ્રહ પણ તેવોજ ઉપયોગી લેખાશે. વિશેષ શું લખું ? દયારામભાઇ ઉપરના તમારા પ્રેમને અંગે જે ઉચ્ચ પ્રકારની સેવા તમે કરી રહ્યા છો, તે સેવાફળ તરફ દૃષ્ટિપાત કર્યા વગર એ સેવાજ ફળરૂપ છે એમ દૃઢ માની એ સેવાનું કાર્ય સતત્ ચાલુ રાખશો એવી અભિલાષા દર્શાવી વિરમીશ.

પંડોળની પોળ,
નાણાવટ–સુરત.
તા. ૪–૫–૩૧.

લી. સ્નેહાધીન,
મનમોહનદાસ દલપતરામ
ના ભગત્સ્મરણ.

[રા. રા. મનમોહનદાસભાઇ કેળવણી ખાતાના ડે. એ. ઇન્સ્પેક્ટર મોટા અમલદાર હતા, હાલમાં પેન્શન લઇ નિવૃત્ત થયા છે, બી. એ. થયલાઓમાં તેમના જેવા ભાવુક ભગવદીય સંપ્રદાયમા અતિવિરલ છે. તેમનો અભિપ્રાય અમે ઘણોજ કિંમતી માનીએ છીએ. પ્રકાશક.]

विद्वानूनां सन्मान.

સં. ૧૯૮૭ના આશ્વિન કૃષ્ણ પ્રતિપદા મંગલવારે સાંજે પૂનાના શ્રીમહાજનના વાડામાં મુંબઇથી ખાસ પધારેલા શ્રીમાન્ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજના પ્રમુખપણા નીચે પૂનાના સમસ્ત પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવો તરફથી પ્રો. મગનલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી એમ્. એ.ને (જેઓ સર્વીસમાંથી રિટાયર્ડ થાય છે) માનપત્ર અર્પણ કરવાના પ્રસંગે પૂનાના દે. ભ. નરસિંહ ચિન્તામણ કેળકર, પ્રો. કાપડિયા, પ્રો. સાઠે, પ્રો. ખરી, પ્રો. ચાપેકર, પ્રો. ચન્દ્રાત્રે પ્રો. કેળકર, વેદાન્તવાગીશ પાઠક શાસ્ત્રી, લેઇટ જજ વાસુદેવરાવ ભાંડારકર, રા. બ. હનુમંતરામ રામનાથ, રા. મ. ગ. હોનપ વકીલ, રા. નારાયણ કેશવ રાજગુરુ વકીલ, રા. બ. રામનારાયણ અમરચંદ, ઉપરાંત મુંબઇના દેવીદાસ માધવજી ઠાકરસી, રણછોડદાસ જગજીવન કાપડિયા, નટવરલાલ ધીરજલાલ સાંકલિયા, લખમીદાસ વૃન્દાવનદાસ, અહમદનગરના ગાંધી વલ્લભદાસ ભગવાનદાસ, નેવાસકર ગોપાલદાસ દામોદરદાસ ઇત્યાદિએ પણ હાજરી આપી શોભામાં વધારો કર્યો હતો.

પ્રારમ્ભમાં કીર્તન થયા બાદ શ્રીમાન્ પ્રમુખને તિલક, માલા ઇત્યાદિ શેઠ હરિગોવિન્દદાસ ઉગરચન્દ, મગનલાલ સાંકળચન્દ, તથા ધનજીભાઇ હાથીભાઈ તરફથી અર્પણ કરવામાં આવ્યાં હતાં. ત્યારબાદ રા. બ. ચિમનલાલ કિસનદાસે આમંત્રણપત્રિકા વાંચી સંભળાવી. પછી શા. ગોકુલદાસ તુલસીદાસે શ્રીમાન્ અનિરૂદ્ધલાલજી મહારાજનો, શા. રણછોડદાસ પેટલાદીનો, અને ચોપડાવાળા મગનલાલ નગીનદાસનો એવી રીતે ત્રણ તાર, અને સાદરાવાળા આસિસ્ટન્ટ પોલિટિકલ એજન્ટ હરિલાલ જયકિસનદાસ કોઠારી બી. એ., પૂનાના પ્રો. શેખ, નગરના હરિદાસ ઉત્તમદાસ, મુંબઇના શેઠ જગમોહનદાસ રણછોડદાસ બી. એ., સુગન્ધી કિસનદાસ પુરૂષોત્તમદાસ, ભરૂચના એડવોકેટ મણિલાલ ચોકસી અને છગનલાલ નાગેશ્વર, લાડિલેશ શાસ્ત્રીજી, સંખેડાના મોહનદાસ ગોવર્ધનદાસ, સુરતની મહાસભાના મંત્રી ચિમનલાલ શાસ્ત્રી ઇત્યાદિ ઇત્યાદિના કાગળો વાંચી સંભળાવ્યા હતા. તે પછી રા. બ. લલ્લુભાઇ દામોદરદાસે માનપત્ર વાંચી સંભળાવ્યું હતું. (આની એક નકલ આ સાથે બીડી છે.)

ત્યારબાદ શ્રીમાન્ પ્રમુખે સમયોચિત સુમધુર ઉપદેશ કર્યો પછી શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર સહર્ષ અર્પણ કર્યું હતું. તે પછી શાસ્ત્રીજીએ તેનો ભાવપૂર્ણ ઉત્તર આપ્યો હતો, અને વિશેષમાં જણાવ્યું હતું કે મારૂં ખરૂં જીવન આજથીજ શરૂ થાય છે અને સંપ્રદાયની મારાથી જે કાંઇ સેવા બનશે તે હું અવશ્ય કરીશ. સર્વનો ઉપકાર માની તેમણે પોતાનું ભાષણ સમાપ્ત કર્યું હતું. પછી શેઠ દામોદર ભૂખણદાસે પ્રમુખશ્રીનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી જેને પ્રો. વર્માએ તેજદાર ભાષામાં અનુમોદન આપ્યું હતું તેમજ શા. વલ્લભદાસ ચુનીલાલે પણ અનુમોદન આપી ટૂંકમાં ભાષણ કર્યું હતું. ત્યારબાદ ભરૂચવાળા દશરથલાલભાઇની બે કુમારિકાઓ બહેન કાન્તા તથા મોતીએ અત્યંત મધુર વિહાપગિરીના ગાનથી સભાનું કાર્ય સમાપ્ત કર્યું હતું. આ સભામાં પૂનાની વૈષ્ણવ અને ઇતર બહેનોએ પણ સારી સંખ્યામાં ભાગ લીધો હતો.

માનપત્ર.

વે. શા. સં. મગનલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી, એમ. એ.

પ્રોફેસર, ડેક્કન કોલેજ, પુના.

પરમમાન્ય ભગવચ્છાસ્ત્રનિષ્ણાત શાસ્ત્રીજી,

આપ સરકારી નોકરીના નિમિત્તે અહિં વિ. સં. ૧૯૭૧માં આવ્યા અને સોલ વર્ષ રહી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થતાં પૂના છોડી જન્મભૂમિ તરફ જવાનો પ્રસંગ હાલમાં આવ્યો. સોલ વર્ષના આપના સમાગમથી અમને જેટલો આનન્દ થયો છે તેના કરતાં અધિક ખેદ આપના પૂના છોડવાથી આજે થાય છે. આ પ્રસંગે આપના પ્રતિ પ્રેમ આદર અને આભારની અમારી ભાવનાઓ આ માનપત્રોદ્વારા અમે દર્શાવીએ છીએ.

આપના આટલા વર્ષોના સંત્સંગથી અમને બહુ લાભ મલ્યો છે. આપનાં વ્યાખ્યાનો શ્રવણ કર્યાં છે, આપની પાસેથી નિત્ય શ્રીસુબોધિનીજીના કથારસનું પાન કર્યું છે, શુદ્ધપુષ્ટિમાર્ગનું યથાર્થ લોકવેદનિરપેક્ષ સ્વરૂપ જાણ્યું છે, આપની જ્યેષ્ઠ પુત્રીના વિવાહોત્સવમાં અનન્યાશ્રયનો સાક્ષાત્કાર કર્યો છે એટલુંજ નહિ પરન્તુ આપનેજ લીધે વૈષ્ણવપરિષદ્‌ની પંચમ બેઠક પૂનામાં ભરી શક્યા છીએ, અને આપની અત્ર સ્થિતિને લીધેજ પરમપૂજ્ય ગોસ્વામિ મહારાજોનાં અલભ્ય દર્શનનો અને તેઓશ્રીનાં સુમધુર વચનામૃતના શ્રવણનો લાભ અમે પ્રાપ્ત કરી શક્યા છીએ. સામ્પ્રદાયિક વિદ્વાનોનો અને અનન્ય ભક્તોનો સમાગમ પણ અત્ર થયો જાય છે તે પણ આપની પૂનામાં સ્થિતિનેજ લીધે.

આપના સહવાસથી જ્ઞાન ભક્તિ અને ચારિત્ર્યનો વિરલ પણ અત્યાવશ્યક સુભગ સંયોગ અમે જોયો છે, બાલકના જેવી સરલતા, સાધુજનની સાદાઇ, સત્યનિષ્ઠની સત્યપ્રિયતા અને

નિઃસ્પૃહતા આપનામા સહજ દશ્ય થાય છે. આપની અનન્ય આચાર્યભક્તિ તો સમગ્ર સમ્પ્રદાયમાં સુપ્રસિદ્ધ છે.

શાસ્ત્રીજી, ગયા બે શતકનો આપણા સમ્પ્રદાયનો અજ્ઞાનાન્ધકાર દૂર કરવામાં આપનો પરિશ્રમ અવર્ણનીય છે. આ શતકના પ્રારમ્ભમાજ સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રસિદ્ધ કરવાની સત્પ્રવૃત્તિ આદરીને વિશ્વધર્મોમાં આપણા ધર્મનું ઉચ્ચતમ સ્થાન છે એ આપે સિદ્ધ કરી આપ્યું છે. મુંબઇ યુનિવર્સિટિમા પણ એમ્. એ. ના અભ્યાસક્રમમાં અણુભાષ્યને સ્થાન અપાવવામાં આપનો સ્તુત્ય પ્રયાસ હતો. પૂનામાં સ્થિતિ કરીને આપની પાસેથી અણુભાષ્યાદિ સામ્પ્રદાયિક ગ્રન્થોનું અધ્યયન કરીને શાસ્ત્રિપદને તેમજ પ્રોફેસરપદને અનેક વિદ્વાનો આજે અલંકૃત કરી રહ્યા છે. આપનો વર્ણ શ્રીગુંસાઇજીનું અને આપની પ્રપત્તિ દામોદરદાસજીનું સ્મરણ કરાવે છે. સમ્પ્રદાયના હિતાર્થે આપે આપનું જીવનજ અર્પણ કર્યું છે એ કોને વિદિત નથી !

આપ પૂનામાં આવ્યા તે પહેલા ગાયત્રીભાષ્ય પ્રસ્થાનરત્નાકર ઇત્યાદિ અપ્રસિદ્ધ ગ્રન્થોની પ્રસિદ્ધિ આપેજ કરીજ હતી, શ્રીસુબોધિનીજી માસિકના તો આપ આત્માજ હતા, પુષ્ટિભક્તિસુધા માસિકના પ્રેરક પણ આપ હતા, તથાપિ આપના અત્ર આવ્યા પછીજ સંપ્રદાયની ખરેખરી સેવા કરવાનો અવકાશ આપને પૂનામાં મળવાથી સપ્રદીપ અણુભાષ્ય દશમસ્કન્ધ શ્રીસુબોધિનીજીના અનેક પ્રકરણો ઇત્યાદિ ઇત્યાદિ મહાન્ ગ્રન્થો પ્રસિદ્ધ કરીને આપણા સંપ્રદાયનું ગૌરવ આપ વધારી શક્યા છો. અમારૂં તો સૌભાગ્ય એ છે કે અમારા પૂનાના શેઠ હુકમચન્દ ઇશ્વરદાસના તરફથી ફલપ્રકરણીય શ્રીસુબોધિનીજીનો અને શેઠ મગનલાલ સાંકલચન્દ તરફથી શ્રીપ્રભુચરણકૃત શ્રીટિપ્પણીજીનો પણ અનુવાદ સ્વલ્પ સમયમાં પ્રસિદ્ધ કરવાનું કહીને સાંપ્રદાયિક નામસેવાનો સુંદર માર્ગ આપે અમને દર્શાવ્યો છે. અત્રેનું શ્રીબાલકૃષ્ણ પુસ્તકાલય પણ આપની સંગતિનું ફલ છે.

સમ્પ્રદાયમાં હજી નામસેવા બહુજ કરવાની છે, અણુભાષ્યનો તત્ત્વદીપનિબંધનો અને શ્રીસુબોધિનીજીનો માતૃભાષામાંજ નહિ પરન્તુ ઇતર પણ ભાષામાં અનુવાદ કર્તવ્ય છે, સાંપ્રદાયિક પ્રાચીન અપ્રસિદ્ધ મૂલગ્રન્થો સાહિત્ય સાથે પ્રસિદ્ધ કરવાના હજી બહુજ બાકી છે, છાત્રોને સ્વમાર્ગીય આકર ગ્રન્થોનું પાંક્ત જ્ઞાન કરાવવાનું છે, પ્રાચીન શોધખોળ કાર્યમાં તો આપણું કર્તવ્ય આથી પણ અધિક છે, નિજ વ્યયે પ્રતિસપ્તાહ આપ મુંબઇમાં શ્રીગીતાજીનું પ્રવચન અને શ્રીસુબોધિનીજીની સરસ કથા તો કરોજ છો તથાપિ અન્ય પ્રાતો પણ તે અલભ્ય લાભ પ્રાપ્ત કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા રાખે છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી આપને સુદીર્ઘ આયુષ્યનું દાન કરો અને આપ આ ઉત્તમોત્તમ સેવા કરીને કૃતાર્થ થાઓ એજ અમારી અન્તઃકરણપૂર્વક અભિલાષા છે. પૂના, આશ્વિનકૃષ્ણપ્રતિપદા.

અમે છીએ, આપના ગુણાનુરાગી પ્રેમાકાંક્ષી–

શાહ હરગોવિન્દદાસ ઉગરચન્દ
શાહ કૃષ્ણદાસ ગોવર્ધનદાસ માટીવાલા
શાહ લલ્લુભાઇ દામોદરદાસ
શાહ ચીમનલાલ કિસનદાસ
શાહ મગનલાલ સાંકલચન્દ
શાહ ધનજીભાઇ હાથીભાઇ
શાહ દામોદરદાસ ભૂખણદાસ
દોશી ગોકલદાસ નારાયણદાસ
શાહ સાકલચન્દ છગનલાલ
શાહ વિઠ્ઠલદાસ ભગવાનદાસ
શાહ કિસનદાસ મનમોહનદાસ
શાહ હરિદાસ વિઠ્ઠલદાસ
શાહ પુરશોત્તમદાસ ગોકુલદાસ
શાહ રામદાસ લક્ષ્મણદાસ
શાહ કિસનદાસ નિકમદાસ
શાહ પ્રલ્હાદજી ગોવર્ધનદાસ
શાહ મજલાલ સેવકરામ
શાહ મનમોહનદાસ સામલદાસ
શાહ વિઠ્ઠલદાસ સાકલચન્દ
શાહ જીવણદાસ મોહનદાસ
શાહ માણેકલાલ શંકરલાલ
શાહ રામદાસ ગોવર્ધનદાસ
શાહ વલ્લભદાસ ચુનીલાલ
શાહ કેશવલાલ બુલાખીદાસ
શાહ ચિમનલાલ વિઠ્ઠલદાસ
શાહ હરિદાસ વલ્લભદાસ
શાહ કનૈયાલાલ રામચન્દ્રદાસ
પટેલ અંબાલાલ હેમાજી
દગડુરામ શંકરલાલ
પ્રોફેસર વર્મા
શાહ ગોકુલદાસ તુલસીદાસ
વગેરે વગેરે

श्रीयुत मगनलाल गणपतिराम शास्त्री. M.A. S. T. C. D. M. R. A. S.
(हालमांज राजसेवामांथी निवृत्त थइने. वानप्रस्थत्व स्वीकारीने संप्रदायसेवा.

श्रीयुत हरिशंकर ओंकारजी शास्त्री
मीमांसक, वेदांत विशारद M R A S
(संप्रदायमां संस्कृत मासिक पत्रना प्रथम संपादक
अने श्रीसुबोधिनीजीना समर्थ अनुवादक.

प्रोफेसर श्रीयुत जेठालाल गोवर्धनदास शाह, M A
('श्रीपुष्टिमार्गीय वैष्णव महासभा'ना नेता तरीके,
गुजरातमां सांप्रदायिक चेतन लावनारा अने अनेक
कठिन शुद्धाद्वैत ग्रंथोना-सरल अनुवाद करनारा
सांप्रदायिक विद्वान्).

दीक्षाविचार.

બ્રહ્મસંબંધઃ—બ્રહ્મસંબંધ કરાવવા બાબતનાં શ્રીગોકુલનાથજી વગેરે શ્રીગો. બાલકોનાં મૂલ વચનામૃતપર આપણે આગળ વિચાર કરીએ. ચતુર્થ લાલજી શ્રીગોકુલનાથજી કહે છે કે. (૧) ब्रह्मसंबंधकरणं नाम एतन्मार्गीयाचार्यद्वारा भगवन्निवेदनम् । બ્રહ્મસંબંધ કરવું એટલે ખાસ પુષ્ટિમાર્ગીયઆચાર્યદ્વારા ભગવાનને નિવેદન એટલે સર્વાર્પણ—અહીં एतत् શબ્દ પુષ્ટિને માટે છે. વળી આગળ કહે છે કે—तेनैव सर्वेषां देहानां सर्वेषां जीवानां च सेवाप्रतिबंधकसर्वदोषनिवृत्तिर्भवति ॥ આ પ્રમાણે પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્યોદ્વારાજ એટલે શ્રીગો. બાળકોદ્વારાજ નિવેદન કરવાથી સર્વ દેહોના અને સર્વે જીવોનાં સેવામાં નડનારા સર્વ દોષો નાશ પામે છે. આ ઉપરના વાક્યનો અર્થ છે. પ્રથમજ શ્રીગોકુલેશ तेनैव શબ્દ મુકે છે. तेन શબ્દ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્યદ્વારા અને एव શબ્દ નિશ્ચયાત્મક છે. મતલબ કે શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ સિવાય બીજી રીતે પાખંડમતની પેઠે કાન ફુંકવાથી દોષની નિવૃત્તિ થતી નથી. જેઓ શ્રીઠાકોરજી અને શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજી વળી શ્રીગોકુલનાથજી વગેરેનાં વચનામૃતને અથવા હૃદયના હાર્દને સમજે નહિ ને તે પ્રમાણે વર્તે નહિ, બ્રહ્મસંબંધ લે નહિ, તેમને પુષ્ટિમાર્ગમાં ગણવા એ અંત્યજને નાગરમાં ઘુસાડવા જેવી વાત કહેવાય. જેવી રીતે ધર્મના અસહકારીઓ અને નાસ્તિકો તથા ધર્મશાસ્ત્રોની આજ્ઞાઓને છુંદનારાઓ અંત્યજોની જોડે રોટીવ્યવહાર તથા જલવહેવાર અને સ્પર્શવહેવાર કરી હિંદુધર્મનું સત્યાનાશ વાળવા બેઠા છે, તેવી રીતે શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી શ્રીગોકુલનાથજી તેમજ અન્ય શ્રીગોસ્વામિબાળકોનાં હાર્દ વચનામૃતને ઉંચે મુકીને બ્રહ્મસંબંધ ન લે, પુષ્ટિમાર્ગીય મર્યાદાઓ ન પાળે, ખુદ શ્રીગોસ્વામિબાળકોએ બ્રહ્મસંબંધપૂર્વક આપેલી માળાઓને તોડે, શ્રીભાગવતને તથા શ્રીસુબોધિનીજીને શ્રીઠાકોરજીને પણ ન માને એમને પુષ્ટિમાર્ગમાં ઘુસાડવાનો પ્રયત્ન કરનાર બહિર્મુખજ છે એમાં જરાય અતિશયોક્તિ નથી. જેવી રીતે અંદર ઝેર ભરેલું હોય ને ઉપર મોંપર દૂધ ભર્યું હોય એવો ઘડો આપણે ફેંકી દઇએ છીએ એવી રીતે કરવું રહ્યું. વળી શ્રીગોકુલનાથજી આગળ શું કહે છે—यथा सर्वजलदोषाणा तावदेव गुणदोषादिवर्णना भवति । यावद् गंगाप्रवेशो न भवति ॥ गङ्गाप्रवेशानन्तरं सर्वेषां जलानां गंगात्वेनैव सर्वं धर्मोपयोगित्वं भवति । तद्वत् यावत्पर्यंतं भक्तिमार्गीयाचार्यैः कृतं निवेदनं न भवति तावदेव भगवद्भजने तदीयगुणदोषादिविचारणं संभवति ॥

અર્થઃ—જેમ સર્વ જળ ત્યાં સુધીજ દૂષિત ગણાય છે કે જ્યાં સુધી તેમનો ગંગાજીમા પ્રવેશ એટલે સંબંધ થતો નથી. પણ શ્રીગંગાજીમા પ્રવેશ થયા પછી સર્વ પ્રકારના જળો ગંગાજળજ બની જાય છે, ને તેનો ગંગાજળ પ્રમાણે સર્વધર્મકાર્યોમાં ઉપયોગ થાય છે. તેમ અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં સુધી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગીય આચાર્યો વડે નિવેદન જીવ ન કરે ત્યાં સુધી ભગવદ્ભજનમાં તે દૂષિન છે, ત્યાં સુધી તેને દોષનો વિચાર સંભવે છે. (પછી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગીય આચાર્યદ્વારા) બ્રહ્મસંબંધ કર્યો પછીજ જીવ નિર્દોષ બની સેવોપયોગી બને છે. હવે આપણે વિચાર કરો કે બ્રહ્મસંબંધ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા લીધા વગરનો જીવ ગમે તેવો પવિત્ર હોય છતા પણ નિર્દોષ ન બને, કારણ કે આ જન્મમાં તે પવિત્ર છે, પણ પૂર્વના સહજ દોષ તે તો નિવેદનદ્વારાજ નિવૃત્ત થાય તે થતા નથી, તો પછી બ્રહ્મસંબંધ ન લેનારાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં સ્વપ્ને પણ ન ગણાય એ દીવા જેવું સ્પષ્ટ છે. અરે આવાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં છે, એવું જે બોલનાર છે, તેને પોતાનાં વચનનું ઉલ્લંઘન કર્યા બદલ શ્રીગોકુલેશ શાપ આપે એમા નવાઇ નથી.

(२) ब्रह्मसंबंधो नाम स्वमार्गीयाचार्यद्वारा भगवति निवेदनम् ॥

શ્રીકલ્યાણરાયજી એટલે દ્વિતીય લાલજી શ્રીગોવિંદરાયજીના પુત્ર ને શ્રીહરિરાયજીના પિતૃચરણનું આ વાક્ય છે. એનો અર્થ એવો છે કે-બ્રહ્મસંબંધ એનું નામ કહેવાય કે પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્યદ્વારા ભગવાનમા નિવેદન એટલે સર્વસમર્પણ.

ब्रह्मसंबंधो नाम साक्षात्पुरुषोत्तमसंबंधकरणं ॥ तच्च श्रीमदाचार्यद्वारा शरणगमनपूर्वकम् ॥ શ્રીવ્રજોત્સવજીનું આ વચનામૃત છે. બ્રહ્મસંબંધ એટલે સાક્ષાત્ શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ સાથે સંબંધ કરવો તે, અને તે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શરણે જઇને સર્વસમર્પણપૂર્વક સંબંધ કરવો તે.

અહીં કોઇ એમ કહેશે કે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા એટલે શ્રીમહાપ્રભુજીદ્વારા, ના એવો ભાવ નથી, જો એવો ભાવ હોય તો તો શ્રીગુસાંઇજી કે શ્રીગોકુળનાથજી અથવા અન્ય પણ કોઇ બાળક બ્રહ્મસંબંધ ન કરાવી શકે. વળી આ વચનામૃત કહેનાર શ્રીવ્રજોત્સવજીના સમયમાં શ્રીમહાપ્રભુજી સાક્ષાત પ્રકટ બિરાજતા નહોતા, એટલે શ્રીમહાપ્રભુજીનેજ માટે 'શ્રીમદાચાર્યદ્વારા' એ શબ્દ નથી. અહીં મને મેં બ્રહ્મસંબંધ લીધું તે વખતનો પ્રસંગ યાદ આવે છે એ પ્રસંગ ઉપરથી "શ્રીમદાચાર્યદ્વારા" આ શબ્દનો ચોકખો નિકાલ થઇ જશે.

મેં એક મહાનુભાવીને પૂછ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે ગુરુમાં શી ભાવના કરવી? આ ભગવદીયના વચનમા મને વિશ્વાસ હતો ને છે, તેઓ બાપાશ્રીના કૃપાપાત્ર હોઇ એમના સત્સંગથી મેં પુષ્ટિમાર્ગમા શરણ સ્વીકાર્યું. આ ભગવદીયે કહ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે બ્રહ્મસંબંધ આપનાર શ્રીગોસ્વામી બાળક સાક્ષાત્ શ્રીમહાપ્રભુજીજ છે. એ ભાવના રાખવી જોઇએ. ને છે પણ શ્રીમહાપ્રભુજીજ. હવે આ વાક્યથી હું બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતનું ગુરુદેવનું સ્વરૂપ સમજી ગયો, પણ મારા વિચારો એથી આગળ દોડ્યા. જો બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતેજ શ્રીગુરુદેવ શ્રીમહાપ્રભુજીનું સાક્ષાત્સ્વરૂપ છે, તો સદા કેમ નહિ? કારણ કે તે તો સદાજ સોનું છે, હીરો તે સદાજ હીરો છે. એકજ વસ્તુ ક્ષણે ક્ષણે ભિન્ન ભિન્ન હોય એ તો ન મનાય. આ વિચારના નિર્ણયમા એવું પરિણામ આવ્યુ કે શ્રીગુરુદેવ એ સદાજ સદા આચાર્યશ્રીમહાપ્રભુજીનું સ્વરૂપ છે, स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्याय नमः ॥ આ નામનું સત્યત્વ દૃઢ બની ગયું. આજ ભાવના પ્રમાણે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શબ્દ શ્રીવ્રજોત્સવજી મૂકે છે એમ સમજવું. બ્રહ્મસંબંધસંસ્કાર ગ્રહણ કરતાં શ્રીગુરુદેવ સાક્ષાત શ્રીમહાપ્રભુજી છે એ ભાવના રાખવાથી સંસ્કાર ફળરૂપ નિવડે છે. અરે!! સદાજ સદા શ્રીગુરુદેવ સાક્ષાત્ શ્રીમહાપ્રભુજી છે એવી ભાવના તો ઉત્કૃષ્ટમાં ઉત્કૃષ્ટ છે, એવી ભાવના રાખનારને એ અગ્નિકુંડનું સ્વરૂપ તેવા પ્રકારના એટલે શ્રીમહાપ્રભુનાજ સાક્ષાત્કાર જેવા અનુભવ પણ આપે. આ વાત અનુભવગમ્ય છે વચનગમ્ય થવી મુશ્કેલ છે. ચતુર તેજ કહેવાય કે જે સાનમાં સમજી જાય, ને એકડો શીખવતાં દશ સુધી પહોંચી જાય.

(४) निवेदनं तु स्मर्तव्यमित्यत्र ॥ अत एव श्रीमदाचार्यवंश्यानां नान्यमार्गीयप्रतिमहांगीकारः ॥ શ્રીગોકુલોત્સવજીનું આ વચનામૃત છે. આની પૂર્વે શ્રીગુસાંઈજીનો સંબંધ છે. શ્રીગુસાંઇજી નવરત્નની ટીકામા કહે છે કે સદા સર્વદા તાદૃશી ભક્તો સાથે સમર્પણ એટલે નિવેદન વિચારવું. હવે નિવેદન એટલે શું? તો અહીં શ્રીગોકુલોત્સવજી કહે છે કે નિવેદન તેજ કે શ્રીમહાપ્રભુજીના વંશદ્વારા ઈશ્વરને સર્વસમર્પણ કરવુ.

બીજે કોઇ રસ્તે નિવેદન કરે તેનો પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર નથી, આ વાક્ય તો એમજ કહે છે કે શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા શરણ ન સ્વીકારે તે પુષ્ટિમાર્ગમાં નથી, (૧) એકબીજામાં માહોમાહે કાન ફુંકી બ્રહ્મસંબંધ થયુ એમ માની લેનારા સાંપ્રદાયિક નથી એ વસ્તુ આથી સ્પષ્ટ થાય છે. વળી

જેઓ તેવાઓના ફંદમાં ફસાઇ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા શરણ સ્વીકાર્યા છતા તે શરણ તરછોડી પાખંડી બની જાય છે, તેનો પણ પુષ્ટિમાર્ગમાં પ્રવેશ કે અંગીકાર નથી કારણ કે શરણ સ્વીકારવા છતાં તેને શ્રીવલ્લભકુળના શરણમાં અવિશ્વાસ આવ્યો એટલે તે પુષ્ટિમાર્ગથી વિખુટો પડી ગયો. જ્યા સુધી ગંગાજી સાથે સંબંધ હોય છે ત્યાં સુધીજ ગંગાજીનું જળ ગંગાજી છે, પણ ગંગાના જળને ગંગાજીમાંથી લઇ કોઇ બીજી નદીમાં રેડીએ તો ગંગાજળ મટી સામાન્ય જળ બની જાય અથવા ગંગાજળને ખાળમાં રેડીએ તો ખાળનું જળ ગણાય ને તે અસ્પૃશ્ય બની જાય છે. તેમ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ કરવા છતાં જેઓ શ્રીવલ્લભકુલ સાથેનો સંબંધ તોડી આવા પાખંડીઓ જોડે વ્યવહાર રાખે અથવા ભળી જાય તેઓ પણ ત્યાજ્ય છે. ખાળકુંડીમાં પડેલું ગંગાજળ માહાત્મ્ય વગરનું છે. દુઃસંગથી તેનું આધિદૈવિકત્વ નાશ પામે છે અને આવી રીતે બનવાથી પછી તેનાથી સદા પ્રવાહનાજ કામ થાય છે, ને પુષ્ટિમાર્ગથી તદ્દન દૂર જ પડે છે.

પત્રદ્વારાબ્રહ્મસંબંધ—પત્રદ્વારા પણ બ્રહ્મસંબંધ થઇ શકે છે. વાચકવર્ગને વૈષ્ણવધર્મ પતાકાદ્વારા ખબર છે કે ભગવદીય નાના બા ઉતેલીઆવાળા ભોળનાને જામનગરવાળા ગોસ્વામી શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ મહારાજશ્રીએ પત્રદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ આપ્યું છે છતા તેઓ ઉત્કૃષ્ટદશા ભોગવે છે. ગુરુદેવની તો એમણે ઝાંખી પણ નથી કરી. પણ અહીં પત્ર જેને બ્રહ્મસંબંધ આપવાનું હોય તેનેજ અને તે શ્રીગોસ્વામિબાલકજ લખે. સેંકડો વર્ષપર ગમે તેના પર ગમે તેણે લખેલા પત્રનો ઉપયોગ આજે ગમે તેને માટે બ્રહ્મસંબંધમાં ન કરી શકાય. કપોલકલ્પિત વાડાઓના બચાવ માટે શ્રીગોસ્વામીબાલકોના પવિત્ર પત્રોનો ફરી દુરુપયોગ ન થાય. એ પણ આશ્ચર્ય પામવા જેવું છે, શ્રીગોકુલેશ સાક્ષાત આજે નિત્યલીલાની ભાષામાં નિત્યલીલામાથી પત્ર લખતા હોય તો તે આપણે એમનું હાલનું બ્રહ્મસંબંધ માન્ય રાખીએ પણ આ તો ગમે તેને બ્રહ્મસંબંધ આપવા માટે શ્રીગોકુલેશે લખેલો પત્ર હશે. તેનો ગમે તેને પોતાના વાડામાં ઘુસાડવા ઉપયોગમા લે એ પાખંડની પરિસીમા છે. એવા પત્રદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ લેનારનો બચાવ કરવો એ પણ ખરી ધૃષ્ટતાજ છે એમ કેમ ન માનવું !

જે પત્રને આધારે પોતાના પાખંડ મતનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે અથવા ચલાવી રહ્યા, તે શ્રીગોકુલનાથજીનો કહેવાતો પત્ર હું રજુ કરું છું, અહીં પણ અર્થના અનર્થ કેવા કર્યા છે ! વા અવળો ઉપયોગ કેવો કર્યો છે તે આપણે તપાસીએ. આ પત્ર ઉપરથી શ્રીગોકુલેશજીની ચતુરાઈ આપણને સમજાઇ જશે. મશ્કરીમાં પ્રેમલાં ટોળાં માટે શ્રીગોકુલેશ હસતા ત્યારે તેઓ સાચું અને પ્રસન્ન થઈ હસે છે એમ માની લેતા, તેમ આ પત્રનો પણ અર્થનો અનર્થ થયો છે:—

स्वस्ति श्रीवल्लभानां भट्टकल्याणइंदभाणदेवदासदयाळदासश्यामदाससिंपजीनारदमल्लजयरामपरमेश्वरदास हीरमणिप्रभृतिवैष्णवाशिषः। शमिह भावत्कमाशास्महे। अपरच। सदा श्रीगोवर्द्धनेशः स्मर्तव्यः। किंच श्रीमदाचार्यसंबंधिभ्यः साक्षान्नामग्रहणे पत्रद्वारा स्वप्नद्वारा वा सेवकद्वारा नामग्रहणेन मार्गसंबंधादवश्यं भगवदंगीकारो भवत्येव नात्र संदेहः॥ तेन येषां पत्रद्वारा नामग्रहणे सन्देहस्ते तथा बोधनीयाः यथा येषां संदेह उत्थितः। तदनन्तरं तद्वृत्तांतो लेखनीय॥ किमधिकं मार्गस्वरूपविज्ञ॥

ઉપરના પત્રમાં श्रीमदाचार्यसंबंधिभ्यः साक्षान्नामग्रहणेन पत्रद्वारा स्वप्नद्वारा वा सेवकद्वारा नामग्रहणेन मार्गसंबंधादवश्यं भगवदंगीकारो भवत्येव नात्र संदेहः॥

અહીં આપણે પ્રથમ નામગ્રહણનો અર્થ સમજીએ, જે શ્રીગોકુલનાથજી સિદ્ધાંતરહસ્યની ટીકામાં ब्रह्मसंबंधकरण नाम एतन्मार्गीयाचार्यद्वारा भगवन्निवेदनम्। तेनैव......सर्व दोषनिवृत्तिर्भवति।

બ્રહ્મસંબંધનો અર્થ અહીં ભગવાનને નિવેદન કરવું એવો આપે છે, ભગવાનનું નામ ગ્રહણ કરવું એમ નથી આપતા. માટે નામ નિવેદન ને નામગ્રહણમાં કંઈક તાત્પર્ય હોવું જોઈએ. આપણે નાના બાળકને બ્રહ્મસંબંધ એકદમ નથી અપાવતા પણ પ્રથમ નામગ્રહણ એટલે નામ પમાડીએ છીએ. આ નામગ્રહણ એટલે ત્રણ વખત અષ્ટાક્ષર જપાવી માળા પહેરાવવી તે. નામગ્રહણ એટલે પ્રભુનું નામ ગ્રહણ કરવું, એટલે માત્ર અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો. આ અષ્ટાક્ષરમંત્ર લેવામાં પત્રદ્વારા, સ્વપ્નદ્વારા કે સેવકદ્વારા લેવામાં વાંધો ન હોય. આ બાબતમાં તો શ્રીમહાપ્રભુજીએ પણ નામ ગ્રહણ કરાવવાની (અષ્ટાક્ષર આપવાની) આજ્ઞા શેઠ કાશીવાળા પુરુષોત્તમદાસ, નરોડાવાળા ગોપાળદાસ અને આચા હરિવંશજી વગેરેને આપી હતી, પણ તે જીવો પાછળથી બ્રહ્મસંબંધ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા કરતા. જો નામગ્રહણ સેવકદ્વારા જ કરાવવાનો અર્થ બ્રહ્મસંબંધ કરાવવું એવોજ હોય તો બસેં બાવન ચોરાસીમાં આપણે વાંચીએ છીએ કે અમુક વૈષ્ણવે અમુક વૈષ્ણવને બ્રહ્મસંબંધ માટે પત્ર લખી આપી શ્રીગુસાંઈજી કે શ્રીમહાપ્રભુજી પાસે મોકલ્યો. જો વૈષ્ણવનેજ બ્રહ્મસંબંધ આપવાની સત્તા કે યોગ્યતા હોય તો પોતેજ બ્રહ્મસંબંધ આપે, પત્ર લખી આપી શ્રીમહાપ્રભુજી પાસે કે શ્રીગુસાંઈજી પાસે બ્રહ્મસંબંધ કરાવવા શા માટે મોકલે ? માટે નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષરમંત્ર લેવો, નહિ કે બ્રહ્મસંબંધ. પછી લખે છે કે मार्गसंबंधादवश्यं भगवदंगीकारो भवत्येव न संदेहः અહીં કહે છે કે मार्गसंबंधात् । એટલે નામગ્રહણ કરવાથી માર્ગનો સંબંધ થાય છે. નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવાથી પ્રભુ તરફ જવાનો માર્ગ તેનો સંબંધ થાય છે. જેમ આપણે રસ્તો ન દીઠો હોય તો કોઈ આપણને બતાવે કે આ માર્ગ છે. આ વખતે આપણે રસ્તા પર પગ મુકીએ તો માર્ગનો સંબંધ કર્યો કહેવાય. એ રસ્તે રસ્તે જઈએ એટલે ઇચ્છિત સ્થળે પહોંચીએ. એટલે નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લીધા પછી અષ્ટાક્ષર જપીએ ને અષ્ટાક્ષર લીધા પછીની પાળવા યોગ્ય મર્યાદાઓ પાળીએ, તો भगवदंगीकारो भवत्येव । પછી બ્રહ્મસંબંધ થાય છે.

આપણા માર્ગમાં તો બ્રહ્મસંબંધ કરવું એજ ભગવદંગીકાર છે, માટે ઉપરના સંસ્કૃત શબ્દોનો અર્થ બ્રહ્મસંબંધ નક્કીજ થાય છે, મતલબ કે જે નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લે છે, તેને બ્રહ્મસંબંધ લેવાનું નક્કીજ થાય છે. અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો એ બ્રહ્મસંબંધની વધાઈ છે, વધાઈ તો સ્વપ્નદ્વારા, પત્રદ્વારા કે સેવકદ્વારા પણ મોકલી શકાય. પણ વધાઈનું ફળ તો બ્રહ્મસંબંધ છે. વધાઈ મળી એટલે ફળ નક્કીજ છે. માટે एव શબ્દ વાક્યમાં વાપર્યો છે, અષ્ટાક્ષર મંત્ર એટલે નામગ્રહણરૂપ વધાઈ મળી એટલે વધાઈનું ફળ ભગવદંગીકાર એટલે બ્રહ્મસંબંધ જરૂર થશે એમાં સંદેહ નથી. આપણે જાણીએ છીએ કે, આપણા માર્ગમા નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવો એ પણ મોટી મહત્તાવાળી વસ્તુ છે. વૈષ્ણવને ત્યાં બાળક જન્મે કે થોડી મુદત પછી તરતજ નામગ્રહણ કરાવવું જોઈએ, કારણ કે વખતે બાળપણમાં ચાલ્યું જાય તો તેના જીવનો પ્રભુના નામ સાથે સંબંધ થવાથી બીજા જન્મમાં પણ બ્રહ્મસંબંધની સવડ મળે છે. આમ બાળક જન્મ્યું હોય ને કોઈ શ્રીગોસ્વામિબાળક પાસે ન હોય તો અષ્ટાક્ષર તેને વૈષ્ણવ આપી શકે ને તે પણ તાદશી વૈષ્ણવ હોય તોજ આપી શકે. સેવક કહેવાનું કારણ એજ છે, કે જે શ્રીમહાપ્રભુજીનો સેવક હોય તેણે શ્રીમહાપ્રભુજીના ભક્તિમાર્ગની સર્વ મર્યાદાઓ પાળવીજ જોઈએ. સેવક તેજ કે ગુરુની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તે; શ્રીમહાપ્રભુજીની આજ્ઞાઓ પ્રમાણે બરાબર વર્તનારજ નામગ્રહણ એટલે એટલે અષ્ટાક્ષર પણ આપી શકે, અને તેવો સેવક તાદશીજ હોય. સ્વપ્નદ્વારા આજ્ઞા પ્રભુ કરે છે છતા બ્રહ્મસંબંધ પછીથી થાય છે, એવા દાખલા પણ આપણા

માર્ગમાં છે. સંભલવાળા દામોદરદાસને પ્રભુએજ સ્વપ્નદ્વારા આજ્ઞા કરી હતી કે, આ પત્ર વાંચે તેને શરણે જજે. આ આજ્ઞા એ નામગ્રહણ છે, ને એ નામગ્રહણથી પાછળથી એ પત્ર વાંચીને બરાબર સમજાવનાર શ્રીમહાપ્રભુજીનું બ્રહ્મસંબંધ લઇ શરણ સ્વીકાર્યું તે ભગવદંગીકાર છે. સ્વપ્નદ્વારા શરણની આજ્ઞા પ્રભુએ કરી એટલે બ્રહ્મસંબંધની સવડ નક્કીજ થશે એમ નક્કીજ છે. એમાં સંદેહ નથી એમ શ્રીગોકુલેશ પત્રમા કહે છે.

પત્રદ્વારા પણ નામગ્રહણ કરાવાય છે, જો સાક્ષાત પાસે જઈને બ્રહ્મસંબંધ કરવાની સવડ ન હોય તોજ આમ પત્રદ્વારા નામગ્રહણ કરાવાય છે, અથવા બ્રહ્મસંબંધ પણ અપાય છે. હવે વિચારવાનું એ છે કે બ્રહ્મસંબંધ એકવાર કર્યા પછી બીજીવાર ન થઈ શકે. પણ પત્રદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું હોય ને ફરી શ્રીગુરુદેવનો સમાગમ થાય તો સાક્ષાત બીજીવાર સન્નિધાનમા બ્રહ્મસંબંધ લઇ શકાય.

સેવકદ્વારા નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવામા પણ શ્રીવલ્લભકુળ પાસે લેવાની અનુકૂલતા કે સવડ ન હોય તોજ સેવકદ્વારા લેવું જોઇએ. સવડ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા હોય છતાં કોઇ વૈષ્ણવ આપે તો તેમાં તો મોટો અપરાધી બને છે, નરોડા શ્રીગુસાંઇજી બિરાજતા હતા છતાં ગોપાળદાસે નામગ્રહણ કરાવવાની હઠ કરી તો પરિણામ કેવુ વિપરીત આવ્યુ ? તે આપણે જાણીએ છીએ. તો શ્રીવલ્લભકુળદ્વારા સંપૂર્ણ સવડ છતા મહદ બની જવાની આકાંક્ષાથી વા પૂજાવાની આકાક્ષાથી અથવા સેવકો વડે પોતાની ખરાબ વાસનાઓ પૂરી કરવા બ્રહ્મસંબંધ આપવું એ મહાપાખંડીઓનું કામ છે.

વળી, બ્રહ્મસંબંધ ન કર્યું હોય તે તો તદ્દન નગરો રહે તેના કરતાં પાખંડી પણ ગુરુ કરે એ સમજી શકાય પણ શ્રીવલ્લભકુળ પાસે બ્રહ્મસંબંધ લીધું હોય તેવા વૈષ્ણવની શ્રીગુસાંઇજી બાળકની માળા ઉતરાવી પોતે બ્રહ્મસંબંધ આપી નવી માળા પ્હેરાવે આ શ્રીગોકુલેશની કઈ આજ્ઞા પ્રમાણે ? હું તો આવી વાતો સાંભળીને સમસમી જાઉ છું, ને આવા અર્થનો અનર્થ કરનારા ને તદ્દન પુષ્ટિભક્તિમાર્ગથી વિપરીત કામ કરનારાઓની તથા તેવાઓનો પક્ષ કરનારાઓની શ્રીગોકુલેશજી શી વલે કરશે એજ હું નથી સમજી શકતો ! ! !

વળી પત્રમા દશમ સ્કંધ શ્રીભાગવતજીનો દાખલો આપે છે, તો શ્રાદ્ધની બાબતમા શ્રીભાગવતજીના સપ્તમ સ્કંધનો શ્લોક નહિ માનવાનો કે નહિ આચરવાનો, ને આ શ્લોક ફાવતો આવ્યો એટલે પકડી પડવાનો આ ક્યાંનો ન્યાય ! શું શ્રીભાગવતજીના ફાવતા શ્લોકો માનવાના છે ને ન ફાવતા એટલે જરા અધરા પડે તે નથી માનવાના ? આ ન્યાય એવો હશે કે ફાવે તે સહેલું સહેલું શ્રીભાગવતનું પાળવું ને જરા અધરું કે પોતાની હાજતોમાં નડે એવું હોય તો મુકી દેવું ? વળી શ્રીભાગવતજીના આ શ્લોકમા તો स्वयं समुत्तीर्य શબ્દ આપે છે, उत्तीर्य પણ નહિ કહેતાં પણ समुत्तीर्य શબ્દ કહે છે તેમા પણ તારતમ્ય છે. પોતે સંસાર સાગરમાંથી તદ્દન પાર ઉતરી જઇને બીજાને ઉતારે છે, એવો ભાવ એમાં છે. શું તેઓ તદ્દન સંસાર સાગર તરી ગએલા, છે કે બીજાને તેઓ તારી શકે ? શું આ અનર્થશીલ કાર્યોના બચાવ માટે સદ્વસ્તુનો ઉપયોગ નથી થતો ?

જે શ્રીગોકુલેશ ખાસ एतन्मार्गीयाचार्यद्वारा भगवन्निवेदनम् । આવો બ્રહ્મસંબંધ કરવાનો અર્થ આપે તે વળી બીજીવાર સેવકદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ કરવાની હિમાયત કરે પણ ખરા ? નજ કરે. માત્ર તાદશી વૈષ્ણવ હોય તો નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર આપી શકે એવું તો કહે છે. ત્યારે

અવળો અર્થ સમજી લીધો ને ફાવતું બંધ બેસાડી દીધું. વળી तेनैव......सर्वदोषनिवृत्तिर्भवति ॥ આથી તો ઉપલી વાત શ્રીવલ્લભકુળદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ કરવાની દૃઢ થાય છે. तेनैव એટલે શ્રીવલ્લભકુળદ્વારાજ બ્રહ્મસંબંધ કરવાથી સર્વદોષનિવૃત્તિ થાય છે. જો સેવકદ્વારા, પણ બ્રહ્મસંબંધ એટલે ભગવન્નિવેદન થઇ શકતું હોત તો एतन्मार्गीयाचार्यद्वाराની પાસે वा सेवकद्वारा એવો શબ્દ મુકતાં શ્રીગોકુલનાથજીને પરિશ્રમ પડત? ના, ના, જેમણે ખૂબ ટીકાઓ ને ગ્રંથો લખ્યા તેમને सेवकद्वारा એટલો શબ્દ લખતાં શ્રીહરતને પરિશ્રમ ન જ પડત!!!

આચાર્યશ્રીદ્વારાજ બ્રહ્મસંબંધ લેવાની વાણી તો ટીકામાં હોવાથી તદ્દન નિશ્ચયાત્મક છે. વળી ઘણી ટીકાઓ એકઠી કરતાં આવુંજ સિદ્ધ થાય છે, તેથી તે વધારે પ્રમાણભૂત છે. અને શ્રીગોકુલેશનો પત્ર તો તેઓ પાસે એકજ છે. અને કદાચ ખરો હોય તો આ શ્રીગોકુલેશના પત્રને પ્રમાણીભૂત માની તે પ્રમાણે વર્તવું, ને અને બીજાં ભક્તિમાર્ગીય મર્યાદા પાળવાનાં શ્રીગોકુલેશનાં વાક્યો પ્રમાણભૂત ન માનવાં, આ પણ કલ્પિત વાડાની કલ્પિત અનન્યતા ને ન્યાયવૃત્તિને ધન્ય છે!!!

દીનકિંકર.

हृदयना नाद!

(૧) આ સર્વ અહંતામમતારૂપ સંસાર મિથ્યા મૃગજલસમાન છે. તેમાં ડુબતા આ દુષ્ટ જીવને પ્રભુ પોતાની કૃપારૂપી નાવદ્વારા બચાવે છે.

(૨) આ જીવ પ્રભુનો દાસ છે અને પ્રભુસેવા એ જીવનનું સાધન તથા ફળ છે.

(૩) લૌકિકમાં જેમ સ્ત્રીને પતિસંબંધી સુખમાં મન રાખી કૃત્ય કરવું અનુકૂળ નિવડે છે, તેમ આ જીવ તો અલૌકિક શ્રીપ્રભુના મુખારવિંદસ્વરૂપ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા સાક્ષાત્ શ્રીયસોદોત્સંગ લાલિત પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણ સાથે સંબંધ હોવાથી વિશેષ નિશ્ચિંત છે અને મળેલો અષ્ટાક્ષરમંત્ર એ જીવનનું ઔષધ છે.

(૪) પ્રભુ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, માટે ચિંતાનો સર્વથા ત્યાગ કરવો એમાં શ્રેય છે. કારણ જીવ કંઇપણ કરવાને અસમર્થ હોઇ ચિંતા કરવી નિષ્ફળ છે.

(૫) શ્રીકૃષ્ણ સર્વ શુભ કરશેજ એ નિશ્ચય છે.

(૬) મારૂં સર્વસ્વ ધન શ્રીપ્રભુજ છે. શ્રીકૃષ્ણ યસોદાત્સંગ લાલિત પ્રભુ મારા ઇષ્ટ છે.

(૭) હૃદયમાં દ્વેષભાવ તેમ કોઇ પણ વસ્તુ પ્રત્યેનો અભાવ એજ પ્રભુથી વિમુખતા છે. સર્વ વસ્તુ પ્રભુમય અનુભવી રહેવું એજ પ્રભુનિકટનું દ્વાર છે.

ફક્ત રસેશ પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણજ સાચો આનંદ છે. તે આ નિઃસાધન જીવને પ્રભુકૃપાએ મળશેજ તેવો વિશ્વાસ છે. તે ધ્યેય તરફ હૃદયમાં અહર્નિશ વિરહાગ્નિ પ્રભુ જાગૃત રાખે એટલું યાચું છું.

"દીનદાસ,"

गांडा भक्त !

(લેખકઃ—રા. “શારદ” મુ. કડી.)

એ હતા તો જુના જમાનાના, નહોતી એમનામાં સાહિત્યભરી વાણી કે નહોતાં એમનામા આ દુનીઆનાં ડહાપણો ! પણ હા, એકજ વાત તેમનામાં હતી, અને તે એ કે શ્રીઠાકોરજીની સેવા, આ ઉપરાંત કોઇ વૈષ્ણવની પોતાનાંથી બનતી સેવા કરતા, આ સિવાય ભાગ્યેજ એમના એકધારી જીવનમાં આ દુનીઆનો વ્યવહારપ્રસંગ આડે આવતો. બાલપણથીજ માતપિતા તરફથી શ્રીઠાકોરજી અને શ્રીઠાકોરજીની સેવાનું જ્ઞાનજ વારસામાં મળેલું હતું. લોકો તેમને ગાંડાભક્ત ના નામે ઓળખતા અને આ સાવખોટું પણ નહોતું ઘણી વખત કોઇ દુઃખી વૈષ્ણવને જોઇ તેમની પાસેની ગમે તેવી કીંમતી વસ્તુ આપવામાં પણ પાછું વાળી ભાગ્યેજ જોતા. ઘણી વખત બને છે તેમ નીચ લોકો ભક્ત તરફ દ્વેષથી જોતા, પણ આથી આપણા ભક્તને જરાએ હરખ શોક નહોતો થતો. આ સિવાય બીજી તેમના વિશાળ હૃદયની ઉચ્ચતા વધારે જગજાહેર હતી. ગમે તેવા દુઃખીયાને તેમના ઝુંપડામાં સ્થાન હતું. એમના મીઠા હાસ્યથી અને ‘ભાઇ’ પ્રભુ બધુ ઠીકજ કરશે, એવા આશ્વાસનથી ઘણાં નિરાશ થએલાં દુઃખી હૃદયોને આશાના ઓપ ચઢતા પણ આ બધાય વચ્ચે કઇ દુઃખ હોય તો ફક્ત તેમની ગરીબાઇનું. ભક્તને પૈસા સંબંધી ઘણી વખત ખુબજ અડચણો વેઠવી પડતી. આજે ભક્તરાજ એવીજ કોઇ ચિંતાથી ઉદાસ દેખાતા હતા. જો કે નિત્ય પ્રમાણે મુખ પર તો આનંદની રેખાઓ દેખાતી હતી. છતાં પણ એ આનંદની પાછળ જાણે કોઈ ઉંડી વિચારમગ્નતાએ ઘેરો ઘાલ્યો ના હોય ! તેમ ઉંડી નજરથી જોનારને લાગ્યા વિના ના રહે.

“ ગાંડા ભક્તનું ઘર આ ” બહાર ખડકી તરફથી અવાજ આવ્યો. બધી ચિંતા ભૂલી ભક્ત સફાળા ઊઠયા “ હા, ભાઇ ! આવો શું કામ છે ! “ સેવક પોતેજ ગાંડા ભક્ત ”

“ ભક્તરાજ, પ્રણામ અને જયશ્રીકૃષ્ણ ”

“ ભાઇ જયશ્રીકૃષ્ણ ” સ્મિત હાસ્યથી આવનાર વ્યક્તિને નવરાવી નાંખતાં ભક્ત બોલ્યા. “ બોલો, શી આજ્ઞા છે ! ”

“ ભક્તરાજ ! દુનીઆના દુઃખીને તમારા ઝુંપડામા સ્થાન મળે છે માનીને આપની પાસે એક યાચના કરવા આવ્યો છું. ”

“ બડભાગ્ય મારાં, બોલો તમારૂં હું શું રૂડું કરી શકું ! ” આવનારના કપાળમાંનું તિલક જોતાં ભક્ત બોલ્યા.

“ પ્રભુ ” આવનાર વ્યક્તિનો કંઠ દુઃખની લાગણીથી ગળગળો થઇ જતા કહેવા લાગ્યો– દીકરીનાં લગ્ન છે, હું પણ હતો તો ઠીક ઠીક પણ છેલ્લાં કેટલાં વરસથી વેપાર રોજગારમાં નુકશાની જવાથી વિટંબનામા આવી પડયો છું. ગરીબાઇ ઘર કરી મારી પાસે રહી છે. ઘણું કરગર્યો પણ દીકરીનો સાસરો લગન લેવાની હઠ લઈ બેઠો છે. ” આવા સંજોગોમાં મારા માટે બેજ રસ્તા ખુલ્લા છે, કાં તો ગમે ત્યાંથી રૂપીઆ મેળવવા અગર તો મ......” દુખના ભારથી અને ભવિષ્યની ચિંતાથી બાકીના શબ્દો આવનાર વ્યક્તિ ન ઉચ્ચારી શકી.

“ કોઇ જાતની ફીકર નહિ. ભાઇ પ્રભુ બધું ઠીકજ કરશે ” મોં પર અંતરનો જરાય ભાવ દેખાડયા વિના એના એજ સ્મિત હાસ્યથી જાણે કશું ન હોય તેમ પ્રત્યુત્તર વાળ્યો.

× × × ×

જે જમાનાની આ વાત છે એ જમાનામાં આજના જેવી બેંકો નહોતી, કચેરીઓ નહોતી આપણા ભક્તરાજનું તો એકજ કર્તવ્ય હતું. હાણકારકુન તરીકે તેમને દરબારમાંથી માસિક વેતન મળતું અને એમાં પોતે આનંદ માની શ્રીઠાકોરજીને અંતરના લાડ લડાવી જીવન સાર્થક કરતા! આવતી કાલેજ દરબારમાં ભરવાના રૂ. ૧૧૦૦) પોતાના હાથે ગણી ભક્ત સેવામાં ન્હાયા હતા. એ યાદ આવતાં પોતાના ધર્મભાઇનું કાર્ય કરી શકાશે એ વિચારે ભક્ત મલકાયા પણ આવતી કાલે પોતાનું શું? એ વિચારે ક્ષણ મુઝાયા, ક્ષણવાર આંખ મીંચી, જાણે વિચાર કરી એક નિશ્ચય પર આવ્યા હોય તેમ બબડયા. "કંઇ નહિ. મારૂં તો થઇ પડશે. પણ મારા ધર્મભાઇ પર આવેલું આટલું સંકટ દૂર ન કરી શકું એ મારી કેવી અધમતા" આમ બડબડી રાજભોગ સરાવી આરતી અને શ્રીઠાકોરજીને અનુસર કરી બહાર આવ્યા. અતિથિને પ્રસાદ લેવરાવી લઇ નિવૃત્ત થયા બાદ રૂપીઆ અગીઆર સોની ભરેલી થેલી અતિથિના હાથમાં આપી, બોલ્યા "જાઓ જલ્દીથી પ્રભુ તમારૂં શુભ કાર્ય પાર પડે."

"ભક્તરાજ આવનાર વ્યક્તિ ઉપકારથી ઓશીંગણ થતી બોલી પછી આવતી કાલે તમારૂં શું"?

"ગાંડા," માતા નાના બાલકને રમકડું આપી સમજાવે તેમ સમજાવતા બોલ્યા, "એ તને શું ચિંતા? પ્રભુ બધુ ઠીકજ કરશે"

કોઇ વિજયી યોદ્ધો વિજયના હર્ષથી સમરાંગણ તરફ જોઇ રહે એ અદાથી જોઇ રહ્યા.

× × × ×

આજે આખાય મધુપુરમા એકજ વાત ચાલી રહી છે. ચોરે ચૌટે અને દરેક જાણીતાં સ્થળોએ ગાંડાભક્તે રૂપીઆ ન આપવાથી રાણાએ તેમને કેદખાનામા નાખ્યાની વાત લોકો ઉદાસ બનીને કરી રહ્યા છે! નીચ બુદ્ધિના ભક્તનું બુરૂ જોવામાંજ રાજી એવા કેટલાક દ્વેષી લોકો આનંદથી આંખો નચાવી વાતો કરવા લાગ્યા કે:—" એ તો ભક્તો બધાય એવા" એમ માની આનંદ પામે છે.

ત્રીજાજ દિવસે હજુરીઆ મારફત ગાંડા ભક્તે રૂપીઆ કોને શા માટે આપ્યા, એ સાંભળીને રાજાજીનું અંતર ઉમળકાથી ભરાઇ ગયું. મારી પ્રજા આટલી બધી ધર્માભિમાની છે એમ જાણી પોતાને કૃતકૃત્ય જાણવા લાગ્યા. ભક્તને પોતાની પાસે બોલાવી માફી માગી કહેવા લાગ્યા—

"ગાંડાભક્ત કશુ મનમા લાવશો નહિ" "અમે તો આ દુનીઆના વિલાસ અને લાલસામાં ઉછરેલા જીવો. આપના હૃદયની ઉચ્ચતા શી રીતે ઓળખી શકીએ?"

"કંઇ નહિ રાજન" "એમા તમો શું કરો? પ્રભુ જે કરે એ ઠીકજ કરે." ત્રણ દિવસના કેદખાનામાં સખ્ત ઉપવાસ ભોગ્યા છતા એના એજ હાસ્યથી જવાબ આપતા ભક્ત બોલ્યા.

"અને ભક્ત" રાજાજી આ ધર્મ પ્રેમી ભક્ત તરફ આનંદથી જોતાં બોલ્યા. "આગળથી મને કીધું હોત કે આવા કામમા મેં રૂપીઆ વાપર્યા છે. તો આ દુઃખ વેઠવુ પડત"!

"રાણાજી, એમાં મેં શી મોટી ધાડ મારી હતી કે તમારા આગળ કહી બતાવું? પોતાના એક દુખી ધર્મભાઇ પ્રત્યે મેં સહજ માયા બતાવી એ તો મારી ફરજ છે" "હવે જવાની રજા છે?" રાજાએ આજ્ઞા આપી.

ભક્ત હર્ષ ભેર ઘેર આવી સેવામા ન્હાયા! આજે પણ મધુપુરના લોકો ગાંડાભક્તે પોતાના ધર્મભાઇને માટે વેઠેલું સંકટ સંભારી વૈષ્ણવ હૃદયની ઉચ્ચતા માટે મગરૂર બને છે.

॥ श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ॥

॥ श्लोक ॥

स्वस्ति श्रीमत्सदानंदो रसात्मा पुरुषोत्तमः।
श्रीवल्लभाचार्यसुतो गोविन्दो जीवतात् चिरम् ॥१॥
श्रीदेवकीनंदननंदनप्रभोः श्रीगोकुलेन्दोश्चरणानुरागिनः ॥
श्रीवल्लभाचार्य तवात्मजः श्रीगोविन्दरायो भवतात् चिरायुः ॥२॥

॥ सोरठा ॥

श्रीमद्वल्लभलाल भये तिहारे लालजी,
सुन भक्तन प्रतिपाल भक्ति बधाई दीजिये ॥१॥
वल्लभलाल रसाल लाल बधाई सुनत ही ॥
निज जन भये निहाल पुष्टिभक्ति दृढ करहिगे ॥२॥
निज भक्तन रिझवाल श्रीवल्लभ वल्लभ सदा ॥
जियो तुम्हारो लाल, सेवो गोकुलचन्द कों ॥३॥

रचयिता उपाध्याय काशीनाथ भट्ट-बीकानेरवासी।

दोहा—गोकुलेन्दु सेवन निरत वल्लभाचार्य कुल चन्द ॥ श्रीदेवकिनंदन सुवन वल्लभलालहि बन्द ॥१॥ प्रगटे तिनके गेह महि लाल भुवन विख्यात ॥ ता पर रच कविता कहूँ सो सब श्रवन सुहात ॥२॥

छप्पय—बखत नखत नव ग्रह रु लग्न शुभ संवत आयो। सज्जन वैष्णव संत साधुजन मन हरखायो ॥ प्रकृत दृश्य विचित्र रूप पावन अति पायो। पुष्टिमार्ग मो पुष्ट दुष्ट मत वृन्द विलायो ॥ पुनि तात मात ऋण तीन तें ऊऋण होय आनँद छये ॥ जय वल्लभलाल कृपाल गृह प्रगट लाल बाबा भये ॥१॥

(२)

आनंद अतिही अमंद अवनि मंडल महँ मच्यो ॥ दे आशीष अनेक वेद विप्रन मिल बच्यो ॥ प्रेम पूर्ण अनुराग राग रँग मज बहु रच्यो ॥ कीरति कलित बखान दान याचक जन जच्यो ॥ अभिराम कामवन गाम विच धाम२मंगल छये ॥ श्रीवल्लभलाल रसाल गृह प्रगट लाल बाबा भये ॥२॥

रचयिता कविरत्न भट्ट भाऊलाल शर्मा-बीकानेरनिवासी।

શ્રીગોવિંદલાલ બાવાશ્રીનું ધોળ.

આજે આનંદનો દિન છે રે, મારે હૈયે હરખ ન માય હો બેની
ગોકુળમાં આવી વધામણીરે, શ્રીગોવિંદલાલ બાવા પ્રગટ્યા હો બેની. ૧
દૈવી તે જીવને તારવારે, ભૂતલ ધરીયો દેહ હો બેની,
કારતક માસ સોહામણોરે, વાર ભલો ગુરુવાર હો બેની. ૨
ગોકુળમાં વાજીંત્ર વાગીયારે વૈષ્ણવની ભીડાભીડ હો બેની,
ગોકુળમાં શ્રી બેઠક શોભતીરે, આનંદ ઓચ્છવ થાય હો બેની. ૩
મંગલ કીરતન ગવાય છેરે, કુમકુમ કેસર છીરકાય હો બેની;
કામવનમાં આનંદ સમુદ્ર ઉમગ્યોરે, ગોકુલમાં રસની રેલમ રેલ હો બેની. ૪
નયણે આ સુખ નીરખીયુંરે, તેના ભાગ્યતણો નહીં પાર હો બેની,
દાસી જસોમતીની વિનંતિરે, રાખો ચરણની પાસ હો બેની. ૫

[આ ધોળ; દેવગઢબારીઆવાળા બક્ષી મગનલાલભાઇનાં પુત્રી અ. સૌ. બહેન જસોદાએ રચેલું છે.]

श्याम–गीत.

(ઢાળ—સીતારામનાં સન્તાન.)

પ્રભુભક્તનાં ગુલામ, ટાળે દુઃખડાં તમામ;
ઝીલો હો! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.
સાખી—કરે કસોટી ભક્તની, આપી દુઃખ હંમેશ;
વળગ્યો રૂડે રહેને છતાં, વ્હાલો લાગે વિશેષ.
રાખે શ્યામ ઉરધામ, ભજો ભાવથી તમામ;
ઝીલો હો! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.
સાખી—ખાધી ભાજી વિદુરની, ચાખ્યાં શવરી-બોર;
સુદામાના સ્નેહથી, ખાધા તાંદુલ ઓર.
કરશો ન વામ કામ, ભજો ભાવથી તમામ;
ઝીલો હો! શ્યામ ગીત સ્નેહથી.
સાખી—દ્રૌપદીની પત રાખવા, પૂર્યાં ચીર અનેક;
કૌરવ કપટી તો મુવા, ભજજો રાખી ટેક.
એની દૃષ્ટિ સુખ-ધામ, ભજો ભાવથી તમામ;
ઝીલો હો! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.
સાખી—મીરાં ને મહેતા તણાં, કાપ્યાં કષ્ટ કરોડ;
ભવની ભાવટ ભાગશે, પૂરશે પ્રભુજી કોડ.
જીતો જિન્દગી-સંગ્રામ, ભજો ભાવથી તમામ;
ઝીલો હો! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

મૂળજીભાઈ પીતામ્બરદાસ શા

૧ હા પ્રભુ!! આ સર્વ તારું છે, અને હું તારો દાસ છું, તારે શરણે આવેલો છું તારી પ્રેરણા પ્રમાણે વર્તવું જોઇએ એ પ્રમાણે અનુસંધાન રાખવું.

૨ અસત્ય બોલવું નહિં. તેમજ જેમાં પ્રભુનું નામ ન આવે તેવું વાક્ય બોલવું નહિં. લૌકિક વ્યવહારથી બોલવું પડે તેમાં જરૂર જેટલું જ બોલવું. વૃથા આલાપ, કોઇની નિંદા કે એવી અન્ય વાર્તાઓથી વેગળા રહેવું.

૩ અહર્નિશ પ્રભુનાં નામનું સ્મરણ કરવું. મનમાં કોઈ વખત પણ ખોટા વિચાર કરવા નહિં. ખોટી ઇચ્છાઓ તેમજ તરંગો ઉઠવા દેવા નહિં. પ્રભુ બિરાજવા લાયક હૃદય બનાવવા માટે, તેને પવિત્ર રાખવાની જરૂર છે. કારણ કે કોઇ મોટો માણસ આપણે ઘેર આવનાર હોય ત્યારે તેને રહેવા માટે સ્વચ્છતા સંબંધી કેટલી કાળજી રહે છે, તો ઇશના પણ ઇશ બિરાજવા લાયક શુદ્ધ અને પવિત્ર અંતઃકરણની જરૂર છે. અને ખોટા વિચારોથી અંતઃકરણ મલિન થાય છે. તેથી તેમાં પ્રભુનો આવેશ કદિ પણ થતો નથી.

૪ લૌકિક ઘર ધન સ્થિતિ સંબંધી ચિંતા કોઈ વખત કરવી નહિં, કારણ કે પ્રભુ સર્વસમર્થ છે. તેનું કર્યું થાય છે, તો વથા ચિંતા કરવાથી કાંઇ અર્થ સરતો નથી. ઉલટું પ્રભુની સેવામાં સ્મરણમાં, વિક્ષેપ પડે છે, અને તેથી જેને માટે ચિંતા કરીએ તે સિદ્ધ થતું નથી, અને બન્ને બાજુની હાનિ થાય છે.

૫ પ્રભુ સર્વના સ્વામી એટલે માલીક- કર્તા છે. તેથી સર્વને સુખ આપવાવાળા છે. તેમાં પોતાના ભક્તને જરા પણ વિસારતા નથી.

૬ દુઃખની વેળાએ સદા ધીરજ રાખવી કેમકે જેમ લૌકિક સુખ અસ્થિર છે, તેમ દુઃખ પણ અસ્થિર છે, તો તેની અવધિ પૂરી થતાં ચાલ્યું જશે. દુઃખ એ પણ માણસની ઉન્નતિમાં સહાયક છે. કારણ કે એક ને એક બાજુમાં (સુખમાં) રહેલાને કસોટી વગર ઉન્નતિ થઈ શકતી નથી.

૭ હમેશાં વિવેક અને ધીરજ રાખવી અને પ્રભુનો આશ્રય કદી પણ મનથી છોડવો નહિં. પ્રભુ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, તો તેના આશ્રયે જે રહે છે તેનું અનિષ્ટ કદી પણ કરતા નથી. કદાચ પરીક્ષાર્થે અથવા અનિષ્ટ નિવૃત્તિને અર્થે કાંઇ વિપરીત બતાવે! તો તેવા સમયમાં પણ પ્રભુ મારાં ભલાને માટે કરે છે એવું અનુસંધાન રાખી પ્રભુનો જ આશ્રય રાખી દૃઢ રહેવું. તો ભગવાન્ કે જેનું નામ હરિ છે તો તે ભક્તના દુઃખોને નિશ્ચય હરશે જ.

૮ હમેશાં સત્સંગ કરવો એટલે જે સદા શરીરથી તેમજ મનથી પવિત્ર હોય, અસત્ય અથવા મિથ્યા ભાષણ કરતા ના હોય, પ્રભુમાં પ્રીતિ હોય, પ્રભુસેવામાં તથા કીર્તનકથામાં તત્પર હોય, સકળ વિશ્વમાં સમાન ભાવવાળા હોય, સામાનું દુઃખ દેખી જેનું અંતકરણ ખેદ પામતું હોય, પ્રભુ ઇચ્છાથી સત્ય માર્ગે જે પ્રાપ્ત થાય તેમાં સંતોષવાળા હોય તેવાઓનો જ સંગ કરવો

जीव, सावधान।

(લે. શાહ હીમતલાલ ભોગીલાલ, મુ. સાવલી.)

૧ ક્રોધ એ ચાંડાલરૂપ છે અને ક્રોધાવેશ થાય તો હૃદયમા પશ્ચાત્તાપથી શુદ્ધિ કરવી. હૃદયને નમ્ર બનાવી કાબુ રાખવો. વિચાર કરી બોલવું. વ્યવહાર કાર્ય સિવાય વૃથા બોલવું નહિ.

૨ કામ ક્રોધને પ્રભુનામથી પ્રજાળવો. (બાળવો.)

૩ ક્રોધ એજ જીવનનો શત્રુ છે. શાંતિ, ને સહનશીલતા એ ગોટામાં મોટું તપ, યોગ છે. કામ, ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ અહંકારનું મૂળ છે અને અહંકાર જન્મમરણનું કારણ છે.

૪ "ક્ષમાશીલ" બનવા પ્રયત્ન કરવો. હૃદયમાં પ્રભુનામ દૃઢ કરવું. દયા અને ક્ષમા એ ગુણો સામાનું હૃદય આકર્ષે છે અને તે ક્રોધનું ઔષધ છે.

૫ પોતાની ભૂલ કબુલવી એ દરેક મનુષ્યની ફરજ છે. તેમાથી ઉચા ગુણો આવે છે. ભૂલ થાય તો પશ્ચાત્તાપ કરવો. પશ્ચાત્તાપ એજ પાપપુંજને નાશ કરનારો યજ્ઞઅગ્નિ છે. ફરીથી ભૂલ ન થાય તે માટે સાવધાન રહેવું

૬ દરેકનું હૃદય પ્રેમથી જીતવું, પ્રેમ વિનાનું જીવન નકામુ છે. જીવ માત્ર ઉપર સમભાવ રાખવો. સામા જીવનું (આત્મા) દુઃખ વિચારવું.

૭ પ્રેમ એજ જીવન વિકાસનું સાધન છે.

प्रार्थना.

(લે—શ્રીયુત બાપલાલભાઈ મુખ્યાજી.)

નર ઉત્તમ શ્રીવલ્લભ વિઠ્ઠલ, આપ ચરણમાં નામ્યું શીશ;
રોમે રોમ ભય મૃત્યુનો, વધી પડયો છે હે જગદીશ. ૧

તન તપાસી જોતાં જુવાની, જતી રહી થયો વૃદ્ધાવેશ;
મન મુઝાય વપુરંગ ઉડયાથી, શ્યામ મટી થયા ધોળા કેશ. ૨

દાહ બળી થઇ દૃષ્ટિ ટુંકી, પાણી ટપકી તેજ ઘટે;
સરસ શ્રેણા શ્રવણ હતા તે, બહેરાપે ચઢીયા ન મટે. ૩

ગોલક જેવા લાગ ગરવીલા, તેમાં હાલે દાંત ને દાઢ;
વિયોગ થશે તે વારે ખાધું, અન્ન પચવતાં છે દુઃખ ગાઢ. ૪

દગવા માંડયું દશે દિશાથી, સૌ વ્યાધિએ વાસ કર્યો;
દાબે પ્રાણ અપાન ઉદાન બળ, ઉરે ઉર્ધ્વ ગાત કરી ઠર્યો. ૫

સરસ શક્તિ જે હતી શરીરે, વળી પગમાં તે થઇ ગઇ લીન;
દેવતા ડરી ઇન્દ્રિનું દૈવત, કેમ લુંટીને કરે અધીન. ૬

લક્ષ્મીની લોલુપે વળગ્યું, તે મન વશ વર્તાવું કેમ;
ગ્રાલિદા દીન જાણી આપનો, જવા દેશો ના આવ્યો તેમ. ૭

ડહાપણ દાખી દંભ કર્યો બહુ, ભવમાં કહેવાયો હું ભક્ત;
વાક્પતિ વિઠ્ઠલેશ વ્યાસનો, પ્રયાણ કાળ સાચવજો ફક્ત. ૮

લાડમ ધેશ અદેયદાની ઓ!, ચાહો ત્યમ એક પળે કરો;
ખાલી ભરીને ભર્યું ખાલવો, કૃપા વિચારે ફરી ભરો. ૯

जा. अङ्क. १८

आज्ञापत्र.

॥ श्रीशारदाम्बा विजयतेतराम् ॥

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणयमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टांगयोगानुष्ठाननिष्ठतपश्चर्याचरणचक्रवर्त्यनाद्यविच्छिन्नगुरुपरम्पराप्राप्तषण्मतस्थापनाचार्य–सांख्यत्रयीप्रतिपादकवैदिकमार्गप्रवर्त्तक–निखिलनिगमागमसारहृदय–श्रीमत्सुधन्वसाम्राज्यप्रतिष्ठापनाचार्य श्रीमद्राजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्य–चातुर्वर्ण्यशिक्षकगोमतीतीरवासश्रीमद्द्वारकापुरवराधीश्वरपश्चिमाम्नाय–श्रीमच्छारदापीठाधीश्वर श्रीमन्माधवतीर्थस्वामिवर्यकरकमलसञ्जातश्रीमद्राजराजेश्वराश्रमस्वामिनां–परमप्रियशिष्यकोटिप्रविष्टश्रीराजमहाराजसामन्तभूपालादिब्राह्मणादिचातुर्वर्ण्यप्रजाजनान्, प्रत्यग्ब्रह्मैक्यानुसन्धाननियतनारायणस्मरणसंसूचिताशिषस्समुल्लसन्तुतराम् जगद्गुरूणा महेश्वरापरावतारश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादाचार्याणामादिमैकान्तिकस्थानद्वारकास्थश्रीमच्छारदापीठगोचराभक्तिरनवधिकश्रेयोनिदानमिति सार्वजनीनमेतत्.

આથી આજ્ઞા કરવામાં આવે છે કે કામવનવાળા શ્રીગોકુલેશની ગાદીવાળા શ્રીવલ્લભવંશભૂષણ શ્રીમદ્ગોસ્વામીપ્રવર શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજની પ્રશસ્ય ઇચ્છાથી સંવત ૧૯૭૩ ના આશ્વિન શુક્લ દશમી (વિજયાદશમી) એકાદશી, દ્વાદશી, એ રીતે ત્રણ રોજ શ્રીમુંબઇમા શ્રીમાધવબાગમા શ્રીસનાતનધર્મ પ્રાન્તીય મહાસંમેલન ભરવાનુ નક્કી થયું છે તે શુભ પ્રસંગે ઉપર્યુક્ત સંમેલનમાં ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લેવો અને સર્વ પ્રકારની સહાયતા કરવી ઇષ્ટ છે. હાલના સમયમા સર્વ સનાતનીય હિન્દુ પ્રજાએ તથા સર્વ સમ્પ્રદાયના આચાર્યોએ ઐક્ય કરી હિન્દુથી ઇતર ધર્મીઓ તરફથી થતા હુમલાઓ અને તેનાથી થની અસર સામે સનાતન હિન્દુ ધર્મનું સંરક્ષણ કરવું જોઇએ એ પ્રથમ કર્તવ્ય છે–એ સૂચવવા માટે આ આજ્ઞાપત્રિકા પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવી છે ઇતિ શિવમ્ સ્વારી મુકામ–અમદાવાદ, સાકર બજાર તા. ૧૦–૧૦–૧૭

આજ્ઞયા,

શ્રીભગવદ્ભાષ્યકારાવતારશકાબ્દ ૨૪૮૭ } **કેશવલાલ મગનલાલ ત્રિવેદી.**
દ્વિતીય ભાદ્રપદ કૃષ્ણ ૧૦ આષાઢાદિ સં. ૧૯૭૪ } કાર્યાધિકારી સં. શ્રીશારદાપીઠ

ઉપરનું આજ્ઞાપત્ર છપાયલું હતું, છતા મિ. ત્રિવેદી અને તેના ખાસ મિત્ર તેનો ઇન્કાર કરતા હતા, તેથી અહીં અસલ મુજબ છાપીએ છીએ. શ્રીવલ્લભવંશના સનાતનધર્મીય આચાર્યત્વનો સ્વીકાર ખુદ શારદાપીઠવાળા ચકલાસીના શંકરાચાર્ય પણ કરે છે તેટલુંજ ફક્ત જોવાનું છે

તંત્રી.

चर्चापत्र.

શ્રીયુત તંત્રીજી, નીચેનું ચર્ચાપત્ર પ્રગટ કરશોજી !

બબ્બે વખત રૂબરૂમા મળ્યા છતાય કંઈ સંતોષકારક ઉત્તર ન મળવાથી આપના હસ્તક તન્ત્ર આવતાંજ આ પત્ર પ્હેલીજ તકે પાઠવીએ

અમ્હેં ખાસ અંકમા ત્રણ કૃતિઓ મોકલેલી “નવધાભક્તિ” “પુષ્ટિજન” અને “પ્રણિપાત” એને ચાટેની નોંધ જે લેવાઇ તે આપ ખાસ અંકમાં વાંચી લેશોજ.

ભાઇ દીનકિંકર ખરેખર સાહિત્યસૃષ્ટિમા દીન કિંકરજ ભાસે છે ! હજી એમનામા લેખો સુધારવાની સાહિત્યની દૃષ્ટિએ શક્તિ આવી હોય એ અમને અમાન્ય છે. અને એવા એક અર્ધદગ્ધ સાહિત્યકારને આ માસિકનું તન્ત્ર સોંપવાનું પગલું ભરાય એ અનિષ્ટ ખરૂં ! અમારા લખાણોમા શબ્દાન્તર કે વાક્યાન્તર કરવાનો હક્ક કોઇ પણ તન્ત્રીને સંભવે નહિ. અને એ ભાઈ એમની ‘રસાજલિ’નો આધાર દરેકમાં દેખે તો તે તન્મય થઈ જાય અને અને તન્ત્રી પદેથી વાનપ્રસ્થ થવું પડે !

અમારો લેખ એટલે ‘રસાજલિ’ નું અનુકરણ નહિ કિન્તુ કવિ ન્હાનાલાલના અપદ્યાગદ્યનું અનુસરણ ! અને ઠીક ઠીક લેખો કે કાવ્યો ખાસ અંકમા નજ લેવાય ! વિશિષ્ટ અંકમા ઉત્કૃષ્ટ સામગ્રી સિવાય ઇતર શોભેજ કેમ ? તો એ માટે ઠીક ઠીક શબ્દો કાં વાપરવા ?– વિદ્વત્તા વાપરવા !

કૃપયા અમારો મૂળ લેખ ‘નવધાભક્તિનો’ ફરીથી એજ સ્થિતિમા પ્રગટ થાય તો સર્વોત્તમ માનીએ !

પ્રત્યુત્તરની આશાએ વિરમતા અમે છીએ,
રમણ શાસ્ત્રી અને ઇન્દુકુમાર શહેરાવાળા.

[આ સબંધે મને તો કાંઈ ખબર નથી. કાર્યાલયમાથી આવા કોઇ લેખો મારા હાથમાં આવ્યા નથી. ચર્ચાપત્રીઓને વિનંતિ છે કે હવેથી આવો કડવો અનુભવ નહિ થાય. ખુશીથી લેખો પાઠવજો. **તંત્રી.**]

नाठो ए चोर.

(ઢાળ: બોલે છે મોર, બાલા ! બોલે છે મોર.)

નાઠો એ ચોર, જોને નાઠો એ ચોર; લઇને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો.
વિનવતી ઊભી તોય સુણે ના નઠોર, લઇને મોંઘી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો.
પોતે છે ચોર તોયે રાખે છે દોર, જોયો મ્હેં તો કાનુડાનો તોર. નાઠો.
ધડકતું દિલ થાશે આવડીનો શોર, લઇને મોંઘી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો.
જાગ્યું શું જોર એનું જાગ્યું શું જોર ? આવી આવી ગોરસી ચોરે છે ચોર. નાઠો.
ચોર્યું છે ચિત્ત એણે બાંધ્યો છે દોર, રાધાના કાળજાની એ તો છે કોર.
નાઠો એ ચોર, જોને ! નાઠો એ ચોર; લઇને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર

મૂળચંદભાઇ પીતામ્બરદાસ શાહ.

श्रीभक्तिमार्गीय–पुस्तकालय.

૧. ઉદ્દેશો—આધુનિક કલુષિત વાતાવરણના પ્રવાહમાંથી બચવા ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવ સમાજ સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તોથી ભરેલું સાહિત્ય વાંચી, વિચારી અને સ્વલ્પાંશે પણ પોતાના જીવનમાં ઉતારી તે દ્વારા પોતાની, પોતાની ભાવી પ્રજાની, અને ધર્મચ્યુત થતાં પોતાના ધર્મબન્ધુઓની કંઈક પ્રગતિ કરી કર્તવ્યપથ પર લાવવા રચનાત્મક કાર્યદ્વારા યોગ્ય પ્રયાસ કરે તે આ પુસ્તકાલયનો પ્રધાન ઉદ્દેશ છે.

૨. મુંબાઈ જેવી વૈષ્ણવોની કેન્દ્ર નગરીમાં એક પણ સામ્પ્રદાયિક-ધાર્મિક વ્યવસ્થિત પુસ્તકાલય (લાયબ્રેરી) નહિ હોવાથી કેટલાક ધર્માનુરાગી-જીજ્ઞાસુ વૈષ્ણવોને ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચવા મળી શકતું નથી. તેથી તેઓ સમ્પ્રદાયના પરમાદર્શ એવં વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાન્તોથી અનભિજ્ઞ (અજ્ઞાત) રહી ચાલુ પ્રવાહમાં ઘસડાય છે. અને અન્યને પણ (પોતાની ધાર્મિક અજ્ઞાનતાથી) ઘસડે છે. તેવાઓને સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય વ્યવસ્થિત રીતે વાંચવા મળતું રહે અને તેથી તેઓ પ્રવાહમાં નહિ તણાતાં પોતાનો ધાર્મિક આદર્શ શું છે ? સમ્પ્રદાયના સંસ્થાપક શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરથી લઈને અદ્યાપિ પર્યન્તના આચાર્યવર્યોના સિદ્ધાન્તો શું નિરૂપણ કરે છે ? વિગેરે યોગ્ય રીતે (વૈષ્ણવી જનતા) જાણી શકે તે આ પુસ્તકાલયનો દ્વિતીય ઉદ્દેશ છે.

૧. નિયમો—આ પુસ્તકાલયનું નામ ' શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય ' રહેશે.

૨. આ પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક ગિરિધરલાલ જ. શાહ છે.

૩. આ પુસ્તકાલયનો લાભ લેનાર વ્યક્તિ પાસેથી સભાસદ તરીકે દાખલ ફીના માત્ર આઠ આના લઈ સભાસદોના રજીસ્ટરમાં તેમનું નામ દાખલ કરવામાં આવશે.

૪. સભાસદે પ્રથમ રૂપીયા ત્રણ અથવા તેથી વધુ ડીપોઝીટ (અનામત) તરીકે અને પાસ બુકનો એક આનો વ્યવસ્થાપકને આપવાથી એક બુક ત્હમારું નામ અને ઠેકાણું ભરીને આપશે. (વ્યવસ્થાપકની સહી વિનાની બુક ખોટી સમજવી.)

૫. સઘળાં છાપેલાં (મુદ્રિત) પુસ્તકો, માસિકો, ત્રૈમાસિક કે દ્વૈમાસિક અથવા સાપ્તાહિકો કે અન્ય વર્તમાનપત્રો વિગેરે પુસ્તકાલયના સભાસદોને ઘેર વાંચવા આપવામા આવશે.

૬. ઘેર વાંચવા આપવાનું સાહિત્ય પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક એક ઇસ્યુબુકમાં (વાચવા આપેલા સાહિત્યનું રજીસ્ટર નોધ બુકમાં) લખી લેવા આવનારની સહી લઈને આપશે.

૭. ઘેર વાંચવા આપેલ પુસ્તક આઠ દિવસમા, માસિક ત્રૈમાસિક કે દ્વૈમાસિક ચાર દિવસમાં અને વર્તમાનપત્રાદિ સાહિત્ય બીજે દિવસે અથવા જરૂર હોય તો તેથી પણ વહેલા પાછાં આપી જવાં (બહારગામના સભાસદોને નિયત કરેલાં દિવસોથી ડબલ દિવસો સમજવા વર્તમાનપત્રાદિ સાહિત્ય બહારગામ મોકલવામાં આવશે નહિ.) પુસ્તક કે માસિકાદિ સાહિત્યની બીજાને જરૂર નહિ હોય તો એકવાર લઈ ગયેલને ફરીને આપવામાં આવશે.

૮. છાપેલાં પુસ્તકો, માસિકો અથવા વર્તમાનપત્રો વિગેરે સાહિત્ય સભાસદ ફક્ત પોતાને માટે લઈ જાય. બીજાને માટે નહિ જેઓ સભાસદ નહિ હોય તેમને પુસ્તકાદિ સાહિત્ય સભાસદના નામ ઉપર આપવામાં આવશે નહિ.

૯. પુસ્તકો વિગેરે બુકપોસ્ટથી મંગાવનાર બહારગામના સભાસદોએ ટપાલ તથા રજીસ્ટરનું ખર્ચ અગાઉથી આપવું પડશે. આવી રીતે મોકલવામાં આવેલ પુસ્તકો વિગેરે ગુમ થાય કે અવ્યવસ્થિત-થાય તો તે સઘળી નુકશાનીનું જોખમ તેને શિર રહેશે અને તેમણે તેની પુરેપુરી કિંમત ભરી આપવી પડશે. અથવા નવું લાવી આપવું પડશે.

૧૦. પુસ્તકાલયના પુસ્તકો વિગેરે બહારગામના સભાસદોને બુક પોસ્ટથી મોકલવામાં આવશે ોસ્ટના ધારા પ્રમાણે રજીસ્ટર કરવામાં આવશે.

૧૧. સભાસદો પુસ્તકાદિ જે સાહિત્ય લઇ જાય તે સંભાળ પૂર્વક રાખવું અને હોય તેવી ાતમાં પાછું ન આપે ત્યાં સુધીની તમામ જોખમદારી તેમની છે. પુસ્તકો વિગેરે ફાટશે, ડશે અથવા ગુમ થશે તો તેની પૂરેપૂરી કિંમત ભરી આપવી પડશે અથવા નવું લાવી પવું પડશે.

૧૨. હસ્તલિખિત (અમુદ્રિત) પુસ્તકો, ન મળી શકતા પુસ્તકો, ન છપાતાં પુસ્તકો કે ા મુશીબતે મળતાં પુસ્તકો અથવા તેવુંજ અન્ય સાહિત્ય વ્યવસ્થાપકની ઇચ્છા સિવાય રવા આપવામાં આવશે નહિ. વાચવાની જીજ્ઞાસાવાળા સભાસદોને પુસ્તકાલયના નિયત કરેલાં મયમાં વાંચવા આપવામાં આવશે. તદનંતર તેમનાથી જાણતાં કે અજાણતા કંઇપણ નુકશાન ા તો તેનું જોખમ તેને શિર છે.

૧૩. ઘેર વાંચવા જોઇતાં પુસ્તકો વિગેરે સવારના (સ્ટા. ટા) ૮ થી ૯ અને સાંજના ટા. ટા) ૬ થી ૭ ના સમયે પુસ્તકાલયમાંથી જ મળશે.

૧૪. ઉપરોક્ત નિયમોને ધ્યાનમાં રાખી હરેક સભાસદોએ પુસ્તકાલયનો લાભ લેવો.

૧૫. ઉપરોક્ત નિયમોમાં સુધારો વધારો કરવાની વ્યવસ્થાપકને સત્તા રહેસે.

પુસ્તકાલય પરત્વેનો પત્રવ્યવહાર નીચેને એડ્રેસે કરવો.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય, વ્યવસ્થાપક ગિરધરલાલ જ. શાહ.
ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મંદિર (ભુલેશ્વર) મુંબાઈ નં. ૨

◆

અડધી કીમતે ચાલુ છે.

શ્રીહરિરાયજીનું દિવ્ય જીવન ચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ન્યો. રૂ. ૨) છે તે રૂ. ૧ા થી આપવાનું ાતુર્માસ સુધી ચાલુ રાખ્યું છે. જીવનચરિત્ર અદ્ભુત અને ચમત્કારી છે. વી. પી. મંગાવવા રતાં રેલ્વે પાર્સલથી ઘણા ગ્રાહકો એકઠા થઇને મંગાવે તો બહુ લાભ થાય. પોસ્ટથી પણ ઘણા ેકઠા મંગાવે તો વી. પી. ખર્ચ બચી જાય. ધોળપદ સાગર-હવે જૂજ જ નકલો છે. બીજી આવૃત્તિ મણાં નીકળવાની નથી. સાડાસાતસો પેજનું પુસ્તક માત્ર રૂ. ૧ા માં અનહદ સસ્તું છે આ ઉપરાંત-

શ્રી ભક્તિમાર્ગીય સસ્તી ગ્રંથમાળાના ગ્રંથો.

(૧) શ્રીગોકુલેશના હાસ્ય પ્રસંગો અને વચનામૃતો ભાગ ૧ લો	૧—૦—૦	૦—૪—૦
(૨) શ્રીગોકુલેશના હાસ્ય પ્રસંગો અને વચનામૃતો ભાગ ૨ જો	૧—૦—૦	૦—૪—૦
(૩) રસિક વિલાસ	૧—૦—૦	૦—૩—૦
(૪) શ્રીહરિરાયજીનું જીવનચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ૨—૦—૦ હાલ	૧—૪—૦	૦—૬—૦
(૫) ધાર્મિક અને સામાજિક લગ્નગીત સાગર ૧—૦—૦ હાલ.	૦—૧૨—૦	૦—૪—૦
(૬) દીનતાને આશ્રયનાં પદ	૦—૧—૩	૦—૦—૬

લખો—આ કાર્યાલયમાં.

◆

उमरगामवाळा परम भगवदीय शेठ हरिभाइ, सकुटुंब

Photo R V Sh ff)

Sa a qaA t P Ahmedabad

गोलोकवासी परम भगवदीय ठल्लुबापा

परम भगवदीय शेठ रवजीभाई रतनसी, धमाणी.
(जेमणे पदरसो रुपीआ खर्चीने, धोळपदसागरना
पहेला भागनी बे हजार प्रताना प्रचार कर्यो.)

परम भगवदीय श्रीरत्नारीजी.

Photo R V Shroff]

Sara ya A P Ahmedabad

श्रीरवारीजी.

સં. ૧૯૫૬ ની સાલના અરસાની વાત છે. મારી ઉંમર લગભગ ૯ વર્ષની હશે. ગુજરાતમાં ભયંકર દુષ્કાલ મ્હોં ફાડીને અનેક પ્રાણીઓને પોતાના અનંત ઉદરમાં સમાવી દેતો હતો. અમદાવાદમાં અસંખ્ય પશુઓ આવ્યાં હતાં! ગોમાતાનો ત્રાસ તો દેખી શકાતો ન હતો. ગામડાના નિવાસી ઘણાં મનુષ્યો પણ ઉદરપૂરણાર્થે આ પુણ્યશાલી શહેર—અમદાવાદમાં આવ્યાં હતાં. સ્થળે સ્થળે આ વખાના માર્યાં ગરીબો અને ગોમાતાઓ માટે ઉત્તમ સવડ અમદાવાદના દાનવીર સદ્‌ગૃહસ્થોએ કરી હતી. નિત્યલીલાસ્થ દયાળુ ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીવ્રજરાયજી મહારાજશ્રીએ પણ આવા સેંકડો દુષ્કાલપીડિતોને-અનાથોને આશ્રય આપ્યો હતો. દરરોજ તેમને ખાવાને માટે મહાપ્રસાદ અને તે ઉપરાંત બહાર રસોઇ પણ તૈયાર કરાવીને સવડ કરી હતી. આખી ડોસીવાડાની પોળ દરરોજ ગરીબોથી ભરાઇ જતી હતી! આ જ અરસામાં માત્ર એક પોતીયું પહેરીને એક વ્યક્તિ “રબારી સું, ભણેલો સું, બે સોપડા નદીમા” એમ પોકાર કરતી અમદાવાદમાં પર્યટન કરતી હતી. તે કોઇને પોતાનું નામઠામ જણાવે નહિ, પોતાની કાંઈ પણ ઓળખાણેય ન આપે. કોઇ પૂછે તો ‘નદીમા’ એટલો જ જવાબ દે. તે અમદાવાદના બધા મંદિરોમાં જાય. માતા, મહાદેવ, હનૂમાન વગેરે કોઇને પણ છોડે નહિ! માત્ર એટલું કહે કે, મારી ગાયો છપ્પનિયામાં રેવા નદીમાં ડૂબી ગઇ તે પછી આ દશા થઇ છે. પણ પોતે કોણ છે? તો ‘રબારી’ એજ તેમનો જવાબ. બીજું કંઇ વધુ બોલેજ નહિ. એમ અમદાવાદમાં ફરે, કોઈ પ્રસાદ લેવરાવે તો ગોમાતાને તેમાંથી અર્ધો ભાગ ખવરાવીને પોતે ખાય. અમારે ત્યાં ઘણીવાર પ્રસાદ લેવા રબારીજી આવતા હતા.

એટલામાં નિત્યલીલાસ્થ તૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો. શ્રી૬ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજશ્રીની તેમના ઉપર કાંઇ અજબ કૃપા થઇ ગઇ. આપશ્રી તેમને પોતાની સાથે કાંકરોલી લઇ ગયા. તે પછી ત્યાં એવા તેઓ સ્થિર થઇ રહ્યા કે હવે ક્વચિત જ બહાર નિકળે છે. આપશ્રીએ રબારીજીને દીક્ષા આપીને વૈષ્ણવ બનાવ્યા ત્યારથી એમની વૈષ્ણવતા અજોડ બની છે. ભારતવર્ષનાં તમામ તીર્થસ્થળો-ધામોમા રબારીજી ફર્યા છે, એની નામાવલિ સાંભળવા માટે કાંઇ નહિ તો અર્ધો કલાક જોઇએ. તેમાંએ તેમની ભાષા સમજવી જોઇએ. તેઓ અમદાવાદમાં બિરાજતાં સ્વરૂપોને ‘નટવો શામળો’ કહે. શ્રીનાથજીને ‘શ્રીનાથ્યો’ કહે છે. એમનો શબ્દકોશ જ ન્યારો છે. એકદમ કાંઈ ન સમજાય. ગાઢ પરિચયમાં આવ્યા પછી જ તેમની સાથે વાર્તાલાપનો આનંદ આવે. તેઓ જાણે છે બધું, પણ જરૂર જેટલા જ શબ્દોનો ઉપયોગ ભાષામાં કરે છે. જેમકે, ખાવું, આવવું, લઇ આવવું વગેરેમાં ‘ભડકવું’ એનો જ ઉપયોગ થાય. કોઇ રબારીજીને કહે કે શેઠે કહ્યું છે કે આમ કરો તો તુરત જ તેમ કરી નાખે! એક વખતે કોઇ દુષ્ટે તેમને તેવી રીતે કહી દીધું એટલે રાયસાગરમાં કૂદી પડયા! ત્યારથી નિત્યલીલાસ્થ મહારાજશ્રીએ એક માણસ તેમની તહેનાતમાં રોકેલો છે.

રબારીજીએ અઢાર પુરાણો સાંભળ્યા છે. આપશ્રીએ કાંકરોલીના એક પૌરાણિકને તેને માટે ખાસ રોક્યા હતા. એ પુરાણોની બધી વાતો રબારીજીને હજુ પણ સાભરે છે. એ પુરાણીજીએ રબારીજી માટે ફલાહાર કરીને દોઢ વર્ષ સુધી દિવસભર કથા સંભળાવી તેથી સંગ્રહણીના રોગમાં આખરે તેઓ પરલોકવાસી થતાં તેમની પાછળ રબારીજીએ સદ્‌ગૃહસ્થોદ્વારા તેમના કુટુંબનું પોષણ કર્યું અને એક આકર્ષક મકાન દેવવાડાના મર્હુમ સદ્‌ગૃહસ્થને કહીને તેમના દ્રવ્યથી બંધાવી આપ્યું. રબારીજી પોતે તો બાગીચામાં ‘સુંદરવિલાસ’માંજ રહે છે. દરેક ઉત્સવ તથા

ઇલાયચી વગેરેનાં વૃક્ષો તેમાં તેઓ લાવ્યા છે. આ બગીચા પાછળ હજારો રૂપીઆ ખરચાયા છે. વનસ્પતિને શ્રુતિમાં વૈષ્ણવ કહે છે અને તેની સેવામાં રબારીજી અહર્નિશ તૈયાર રહે છે. મેવાડમાં પણ રબારીજીનું માન અપૂર્વ છે. સૂર્યવંશતિલક સદ્ગત મહારાણા તો તેમને ઉભા થઇને માન આપતા હતા. અત્યારે પણ તેમનો માન મરતબો થોડો નથી. મુંબાઇના ધનાઢ્ય વૈષ્ણવો તો તેમનો પડતો બોલ ઝીલી લે છે. આ લેખ પછી જે શિલાલેખ છાપ્યો છે, તે વાચતા જણાશે કે રબારીજીએ શ્રીકાંકરોલીની કેવી સેવા બજાવી છે! એ શિલાલેખ પછી પણ હજારો રૂપીઆની સેવા પોતાના ગુરુઘરની તેમણે કરાવી છે. રબારીજીને નિજ ગુરુદેવ પ્રતિ, જે ભાવ છે તે બીજે સ્થળે ભાગ્યે અનુભવાય છે. રબારીજી તો કહે છે કે નિત્યલીલાસ્થ શ્રીબાલકૃષ્ણ પ્રભુ તો મારા જેવા પતિતના ઉદ્ધારને માટેજ, મારે માટેજ આ ભૂતલ પર પધાર્યો હતા. અત્યારે પણ આપશ્રીના જ્યેષ્ઠ કુમાર શ્રીકાંકરોલીનરેશની કૃપા રબારીજી ઉપર થોડી નથી. શ્રીકાંકરોલીના ઘરની સેવા કરનારાઓમાં રબારીજીનું નામ કાયમ રહી જશે.

રબારીજી બધાને પૂછે કે " ભણેલા સો ! " તેઓ જવાબ ને આપે તો પોતે કહેશે કે હું ભણેલો છું. (બે આંગળા બતાવીને) બે સોપડા, નદીમાં ", બધા સાથે, પછી તો તે રાજા હોય કે ગમે તે હોય, આટલોજ વાર્તાલાપ તેઓ પ્રારંભમાં કરે. કાશી જતી વખતે રબારીજી ફર્સ્ટક્લાસમા શ્રીમાનની સાથે હતા. પ્રયાગનું સ્ટેશન આવ્યું. જે આવે તેને ઉપરનો પ્રશ્ન કરે. અને બે આંગળા બતાવે ! ત્યાં તો કોઇ ગુજરાતી સમજે નહિ એટલે ચાહવાળાને જ્યારે તેમણે ઉપર મુજબ કહ્યું એટલે બે પ્યાલા ભરીને આપવા માંડી ! તેવીજ મજાક ફલફુલ વેચનારાઓ આવ્યાં ત્યારે થઇ! કાશીમા બ્રાહ્મણમહાસભા વખતે, (રબારીજીને જ્વર હોવાથી શાલ ઓઢવાની આજ્ઞા હતી તેથી) શાલ ઓઢીને રબારીજી શ્રીમાનો સાથે મહાસભામા આવ્યા. (આમ તો રબારીજી એક ધોતિયાં સિવાય કોઇ પણ ઋતુમાં કંઇ પણ પહેરતા નથી.) કાશીના પંડિતો તો એમને કોઈ ધુરંધર પંડિત સમજીને એકદમ સહુથી પહેલે નંબરે બેસાડયા ! પછી એકાદ પંડિતે તેમની સાથે સંસ્કૃતમાં વાત કરવા માંડી ! पंडिताः ! कुत्रत्याः ! क्व वा निवासः ? રબારીજી કહે કે " નદીમાં " અહીં અજબ રકાસ થાત, પણ મેં સંસ્કૃતમા પેલા પંડિતજીને સમજાવી દીધું કે આજે આ પંડિતજી (રબારીજી) ઘણાજ બીમાર છે, તેથી બરોબર જવાબ નહિ આપે.

રબારીજીનું સ્તોત્ર પણ અજબ છે ! મંદિરમાં સ્વરૂપો પાસે તથા શ્રીવલ્લભવંશ પાસે આ પ્રમાણે તેઓ સ્તોત્ર ભણે છે:-" કેમ બોલતા નથી ? કેમ ચાલતા નથી ? કેમ કોઇના ઘરમા પેહી રહ્યા સો ? કેમ નેહરતા નથી ! મહીં આયો તો ધકડીને લઇ જઇશ. ચાલો મારી હારે મારવાડમાં. પહેલું દૂધ તમને પાઉં અને પછી દૂધ હું પીશ. તમેય રબારી સો ને હુંએ રબારી છું." વગેરે બોલે છે. શ્રીવલ્લભીયસૃષ્ટિમાં રબારીજી એક અદ્ભુત, અજબ અને વિલક્ષણ વૈષ્ણવ છે. કાંકરોલી જે જાય તે જરૂર તેમનાં દર્શન કરે, તેમની ગોસેવા નિહાળે, તેમની વનસ્પતિની સેવા જુએ, અને ગુરુઘરની ટહેલ જોઇને આશ્ચર્યમગ્ન બને; એવી નમ્ર વિનતિ કરી હાલ તો વિરમીશ.

शिलालेख.

यह सुंदर निवास बाग और वाके फिरतो कोट, बागके बीचमें सुंदर महल हैं, वह महेल श्रीमद् गोस्वामिनीजी श्री १०८ श्रीसुंदरवती बहूजीके नामसुं बंधायो है. और बागमें भारसपहानके बडे थंभानको जूला हैं, सो श्रीद्वारकानाथजीके जूल्वेके लीये हैं और श्रीमद्-

गोस्वामिबालकनके झूलवेके लीये हैं, दूसरेके लीये नहि है जो दुसरो कोइ झूलेगो तो वह याके धर्मसूं बहिर्मुख होयगो ओर नरकको भागी होयगो

श्रीके बिराजवेके लिये सोनेको सिंहासन ओर चादीको सिंहासन सोनेकी आरती ओर श्रीके अरोगवेको थाल ओर सोनेकी झारी, बटा ओर सोनेकी गाय दो (२) ओर हाथी दो ओर घोडा दो ओर सिंह दो सोनेरी भरत कामको मखमलको चंदरवा, पिछवाई, खडपाट ओर चोकी सुधा, ओर चिबुकको हीरो, श्रीठाकुरजीके श्रीकंठको कठी मोतीको नीलमणीको तामें पदक (१) बीचमें पन्ना फिरते हीरा जडाउं है ओर नकवेसर एक आजूबाजू मोती बीचमें हीरा जडाउ है, सोनाकी वेणु वेतर सोनाको हार १ ओर नवखटो चादीको बडो बंगलो श्रीठाकुरजी बीराजवेको तथा चादीके थाल तीनमें चादीके खीलोने भरे हुवे है ओर भी याके सिवाय छोटी बडी बहुत सी चीज रबारीजीने बनवायके श्रीद्वारकानाथजीके भेट कर दीयो है या लेखमें जो वस्तु लिखी है सो नित्य श्रीद्वारकानाथजीको ही अंगीकार करायवेकी है यह सब उपर लीखी गई सब चीजके मालीक श्रीमद्गोस्वामिश्री१०८ श्रीबालकृष्णलालजी ओर विनके लालजी श्रीव्रजभूषणलालजी ओर श्रीविठ्ठलनाथजी ओर विनके श्रीभाभीजी महाराजश्री सौन्दर्यवती बहुजी है ओर बगीचामें कुंड १ बावडी १ वे दोनोंको जल बगीचाकु पायवेके लिये है ओर सब लोकनके पीवेके लिये है ओर नहायवेके लिये सख्त मनाई है।

या उपरात रबारीजीने श्रीगौमाताजीके लिये जल पीवेकी प्याउ बधाई है ओर श्रीगौमाताके लिये रु. १६००० अके सोल हजार श्रीद्वारकानाथजी के दरीखानामें श्रीकृष्णभंडारमें जमा कराये है या रुपीयाको व्याज दर महीना रु. ६० अके साठ होयगो सो वे व्याजके रुपैयामेंसु रोज रु २ अके दोको सामग्री श्रीद्वारकानाथजीकु नित्य अरोगवायके महाप्रसादके लड्डुवा नग अके आठ होय सो वे श्रीद्वारकानाथजीकी गौमातानकू रबारीजी अपनी हयाती तक अपने हाथसु खवावें ओर विनकी गेरहाजरीमें वह महाप्रसाद श्रीके मंदिरके अधिकारीजी जो होय सो अपनी हाजरीमें रबारीजीकी आडीसू नित्य श्रीमंदिरके गोवर्धनपूजाके चोकमें गौवनकु बुलवायके खवावें वे अधिकारीजीके सामने खवावें खवायवे में ओर कोईको भरोसो राखनो नहि श्रीगौमातानकुं उपर लिखे लड्डवा ८ अके आठ खवाये आप उपर लिखे हुवे रु १६००० सोले हजारकी रकम श्रीगौमाताके लिये जमा कराई है विनकी व्यवस्था श्रीगोस्वामी महाराजश्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराज तथा विनके बहुजी महाराज श्रीसुन्दरवती बहुजीको अखड पुण्य है वासू भी कोई पण काल कोई बध न कर सके। श्रीद्वारकानाथजीकी गादीपर जो कोई गोस्वामिबालक बिराजते होय वह विनकी तरफसु यावतचंद्रदिवाकर परीवर्त बाही रीतसू चलाने उपर लीखी हुइ गउमातानकी बाबतमें श्रीमदगोस्वामि १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराजने अपने श्रीहस्तकी महोर करके लेख रबारीजीकुं गउमातानके लीये कर दीयो है वह लेख श्रीद्वारकानाथजी

के मंदीरके नगारखाने के दरवज्जे पर लगायो है श्रीद्वारकानाथजीके मदीरके जो अधिकारी होय वे वह रीतसूं ये लेखके अनुसार संपूर्ण रीतसूं वरतेंगे सो गउलोकके मार्गपर जायगे अगर मदान्ध होय के अगर गर्व करके कोइ गउको लडुवा बंध करके अदवीमें दानो ओर चारो बढावे सो ठीक नहीं कारण श्रीको अरोगायके गायनकू प्रसादी खवावनो यह बहुत लाभकारी है ये काममें कोइपण तरहको फेरफार कीसीको करनेको हुकम नहि है पन काम बंध करेंगे तो प्रभुको अपराधी होके गउमातनको वाकुं ओर वह काम बंध करवेमें समती देयवेवारेनकुं वशपरम्परा महत्व् आप लोगो ओर वह कुंभीपाक नर्कमें जायगें श्रीसुंदरनिवास बाग बंधवायो ओर श्रीद्वारकानाथजी कुं संवत १९७५ के वैशाख वदी ७ भृगुवारके दीन बागमें पधरायके मनोरथ कियो सो सब मिलके कुल खर्च रेबारीनी के हस्तक रु. १५१००० एक लाख एकावन हजार भयो है यह काममे उदेपुरके महाराणाश्री १००८ श्रीफत्तेहसिंहजी साहब ओर विनके भतीजा महाराजश्री १०५ श्री हिम्मतसिंहजी साहब इन दोनोने मिलके सेवामें अच्छी मदद दीनी ओर दोनोने श्रीद्वारकानाथजी के यावत्चंद्रदिवाकर परयत भेट कर दीयो है ओर वैष्णवोने बहुत अच्छी मदद दीनी है यह सब काम रबारीजीने अपने तनमन धनसे करके श्री द्वारकानाथजीकु भेट कर दीयो है यासू सब मिलकतपर श्रीद्वारकानाथजी सिवाय दूसरे कीसीको हक नहिं है कोइ तरहसे कीसी बातसे कीसीका कोइ उजर नही है यह लेख रबारीजीने अपनी राजी खुशीसें कर दीयो है यमिं कोइ बातकी न्यूनाधिकता लीखी हो सो बातकी रबारीजीने मांफी मागी है सं. १९७६ के आशु शुद ५ बुध ता. २७—११—२० इ.

શ્રીમદ્ગોકુલમાં—અનેક ધર્મશાળાઓ છે. તેમા કેટલીક તો તદ્દન ખાલી પડી રહે છે છતા તેનો સદુપયોગ થતો નથી. હાલમા શ્રીગોકુળના નિવાસી વિદ્વાન્ મુખ્યાજી શ્રીગોકુલેશજી કેટલાક વિદ્યાર્થીઓને સેવાના અનવસરમા સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન આપે છે, તથા સંપ્રદાયના ગ્રંથો ભણાવે છે. આમા જે વિદ્યાર્થીઓને અન્નઆદિકની સવડ નથી હોતી તો તે પણ પંડિત ગોકુલેશજી મેળવી આપવા પ્રયાસ કરે છે. માત્ર તેમને એક સ્થાનની જરૂર છે. આ સંસ્થા અમે નજરે જોઇ છે, અને તે સુંદર કાર્ય કરે છે. ભગવદીય શેઠ વલ્લભદાસ કરશનદાસ નાથાને વિનતિ છે કે એકાદ સ્થાન ધર્મશાળામાથી આ સંસ્થા માટે આપે. બીજા પણ ધર્મશાળાવાળા મુંબાઇના સદ્ગૃહસ્થોને વિનતિ છે. વિશેષ આ સંસ્થા માટે બીજી પણ મદદની જરૂર છે. યથાશક્તિ સહાયતા કરનારાઓએ આ સ્થળે પત્રવ્યવહાર કરવો—શ્રીગોકુલેશ શર્મા શાસ્ત્રી, શ્રીપુષ્ટિ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, મુ ગોકુલ (જી. મથુરા)

અડેલની બેઠકમાં—સેવા કરનાર પરમ ભગવદીય માધવદાસ વલ્લભદાસ લખે છે કે—"અમને ખબર મળી છે કે, ઢોંગી માણસ અડેલની શ્રીમહાપ્રભુજીની બેઠકના નામથી ખરડો કરીને ગુજરાત–કાઠિયાવાડ, મુંબાઇ વગેરે સ્થળે ફરે છે, અને પૈસા ઉઘરાવે છે. આવા કોઇ માણસને અહીંથી મોકલ્યો નથી, તેમજ એ પૈસા ઉઘરાવનારાએ એક પાઇ પણ અહીં મોકલી નથી. માટે આવા ઢોંગીઓથી સાવધાન રહેવાની જરૂર છે."

ગોપીતલાવની બેઠક—નો મુખ્યા રાધાવલ્લભ માખનલાલ નામનાએ બેઠકને નામે વૈષ્ણવો પાસેથી પૈસા ઉઘરાવવાનું અમે સાંભળ્યું છે. તે એક ખરડો લઇને નિકળ્યો છે. તેને એકાદ વર્ષ થયું, પત્તો નથી. વળી તેણે એક પાઈ પણ અહીં મોકલી નથી. માટે કોઇએ ગોપી તલાવની બેઠકને નામે એક પાઇ પણ કોઇ માણસને આપવી નહિ લી. કા. નંદદાસ હેમરાજ, ઠે. ગોપી તલાવ, પોસ્ટ—વરસાદા (કાઠિયાવાડ).

ભગવદીય રવજીભાઈ.

મુબાઇના વૈષ્ણવોમાં " રવજી ભગત " (બોખા) નામે પ્રખ્યાત શેઠ રવજીભાઇને ભાગ્યેજ ઓળખાવવાની જરૂર હોય. કોલસાના વ્યાપારમાં તેમણે દ્રવ્ય સંપાદન કર્યો પછી જે ટહેલ કરવા માંડી છે તે અદ્ભુત છે. મુંબાઇના બધા મંદિરોમાં શ્રીની સેવા તથા ગૌમાતાની સેવામાં તેમણે જે તનુજા અને વિત્તજા સેવા કરી છે અને કરે છે તે ભાગ્યેજ કોઇ કરી શકશે. ઉપરાંત મોટા મંદિરમાં મહાપ્રસાદ વાંટનાર તરીકે તો તેમને કોઇ નહિજ ભૂલે. જો તે સ્થળે ' રવજી ભગત ' મહાપ્રસાદ વાંટતા ન હોય તો તે સ્થળ સુનું લાગે! આવા શુદ્ધ આદર્શ વૈષ્ણવ જીવનવાળા શેઠ રવજીભાઇએ નામસેવામાં પણ ખૂબ ફાળો આપ્યો છે. ધોળપદસાગરની એકહજાર પ્રતોનો તેમણે પ્રચાર કર્યો છે. તેમાં નીચે મુજબ મોટી રકમ તેમણે ખર્ચેલી છે. વૈષ્ણવો તેમનો ઉપકાર કદી નહિ ભૂલે. અને હું તો આવી સેવામાં નિમિત્ત બનાવવા બદલ તેમનો ઋણીજ છું.

ખર્ચ—રૂા. ૪૯૫-૦-૦ કાગળો રોયલ ગ્લેજ ૪૫ રતલી, ૧-૬-૦ કાગળો વખારમાથી પ્રેસમા ગયા તેની મજુરી રૂ. ૫૧૭-૪-૦ છાપખાનાનું બીલ નં. ૨૧, રૂ. ૨૮૪-૧૪-૦ બાઇન્ડરને બાઇન્ડીંગના બીલ નં. ૪૭, રૂ. ૧૭-૪-૦ બ્લોક નં. ૩ બનાવ્યા તેના રૂ. ૨૯-૧૪-૦ ચિત્રો ચાર છપાવ્યા તેના, રૂ. ૨) વેરાવળથી શ્રીગોકુલાધીશજી મહારાજનો ફોટો આવ્યો તેના રૂ.૧૩૪૭-૧૦-૦ કુલ ખર્ચ.

અઢારસો દિવસનો નફો !

જ		ઉ	
૩૦૮૦-૧૨-૦	લવાજમના.	૧૧૮૮—૦-૦	છપામણ ખર્ચ.
૧૬૪—૦-૦	જાહેર ખબરના.	૭૨૧—૦-૦	ચિત્રો તથા બ્લોક.
૪૮—૦-૦	સહાયતાના.	૪૫૧—૦-૦	ટપાલ ખર્ચ.
૪૫—૦-૦	વી. પી. ખર્ચના.	૩૩૭—૦-૦	કાગળો.
		૨૭૮-૧૧-૦	બંધામણ, વળામણ તથા અંક બીડવાના.
		૧૪૪—૦-૦	ઘર ભાડું.
		૨૫—૦-૦	વર્તમાન પત્રો ખરીદી.
		૩૭—૦-૦	પરચુરણ ખર્ચ.
		૩૧૮૧-૧૧-૦	
		૧૫૬—૧-૦	સીલીક.
૩૩૩૭-૧૨-૦		૩૩૩૭-૧૨-૦	

આ નફો ઉપરાંત મુબાઇના કેટલાક ગ્રાહકોના બીજા વર્ષ, ત્રીજા વર્ષ તેમજ ચોથા વર્ષના લવાજમો વસુલ થતાં ગયા વર્ષની ચારસો રૂપીઆની ખોટ પુરાઇ ગઇ છે, અને તેમાંથી પણ બચત રહી છે. ઉપર મુજબ જે નફો આવ્યો તે નાણાં અમે 'ધોળપદસાગર' તથા અન્ય પુસ્તકો પ્રકટ કરવામાં રોકયા છે. અમદાવાદમા એક કાર્યાલય રાખવું પડ્યું છે. બીજું ખર્ચ વધારવું પડ્યું છે.

દિનકિંકરથી ચેતો—ચાલુ વર્ષની મારી ગેરહાજરી દરમ્યાન આ કાર્યાલયને એકદમ નુકશાનીના ખાડામા ભાઇ દીનકિંકરે ઉતારી દીધું છે. લવાજમો ગ્રાહકોને નામે જમા કર્યા નથી. જેના લવાજમની પહોંચ પોતે છાપી છે, તેનું લવાજમ ચોપડામાં જમાજ કીધું નથી. હીસાબમાં ગોટાળો છે. હજુ હીસાબ તપાસું છું. આખરે લાચારીએ મારે તેમની સામે ફોજદારી પગલાં

પરાયણ બહેનના ગોલોકવાસથી સંપ્રદાયને મોટી ખોટ ગઈ છે. એઓ તો પ્રભુની નિત્યલીલાનો અખંડ આનંદ લેતા જ હશે, પણ લોક દૃષ્ટિએ આપણને ખેદ થાયજ.

દેવગઢ બારીઆમાં એક મરજાદી વૈષ્ણવનું ભાગ્યજોગ અવસાન—અત્રેના મરજાદી વૈષ્ણવ ગાંધી ચતુરલાલ અમૃતલાલ શ્રાવણ સુદી ૬ના રોજ ભગવત્શરણ થયાથી અહીંના વૈષ્ણવોને તેમની ભારે ખોટ પડી છે. તેઓ લગભગ સાઠ વરસની વયમાં પાંત્રીસ વરસથી મરજાદ લઈને લૌકિકમાં હજારો રૂપીયાના વેપાર વણજમાં ગુંથાયેલા હોવા છતાં ફક્ત બે દિવસની બીમારીમાં પોતાની અંતર્પર્યંત દશામાં સુદી ૬ની સવારમાં વૈષ્ણવોને બોલાવી પોતાને ત્યાં આજને આજ સામગ્રી પહોંચી શ્રીને હીંડોળા ઝુલાવવાનો મનોરથ આદર્યો અને સાંજે સખ્ત દમ હોવા છતાં પોતે નાહી, જાતે શ્રીને હીંડોળા ઝુલાવી, મેડેથી નીચે આવ્યા, અને સર્વે મરજાદી વૈષ્ણવ તથા વૈષ્ણવોને ત્યાંજ મહાપ્રસાદ લેવડાવી પહેરામણી કરી પોતાના દ્રવ્યમાંથી યથાશક્તિ આગલે દિવસે મરજાદી વૈષ્ણવો બહારગામથી આવે તેમને સામગ્રી અર્થે અમુક રકમ તેમજ અત્રેના મંદિરમાં અમુક ઉત્સવ ઉપર મનોરથ કરવા અર્થે તેમજ શ્રીગોકુલમાં રાજભોગ વગેરે કરવા તથા ગુરુશ્રીને ભેટ પોતાની સાવચેતીમાં કરી. છઠના રોજ રાતના સાડા દશ વાગે દેહ છોડી પરલોકને પ્રાપ્ત થયા છે. ધડો લેવાનું એ છે કે નાનપણથી સેવા સત્સંગ કરેલો હોવાથી લૌકિક વ્યવહારમાં અનહદ પચેલા હોવા છતાં જલકમલવત્ સંસારમાંથી એકદમ ચિત્તનો નિરોધ હોઈ પ્રભુપ્રાપ્તિ થવાનો આ એક સચોટ દાખલો છે. એમના પુત્ર પુરુષોત્તમદાસ પણ તેવા હોઈ પિતાને પગલે ચાલી ધર્મમાર્ગમાં પરાયણ રહે એમ ઇચ્છીએ છીએ. પદ—જીત ભયે નર વે જગમે, જીન રેન દિન હરિ નામ લીયો હૈ. અંત સમે જુવા કર ચૂકે તો હું ન જમકે હાથ ગયો હૈ, કહે હરિરાય હરિકે ભીલવેકો પહેલે હી જીન કાજ કીયો હૈ, માલ સમે પહેચાય દીયો, ઘર પાછે લુંટે તો કીર કહા રહ્યો હૈ.

ગોલોકવાસ—લખતા દિલગીરી થાય છે કે અત્રેના શ્રીનટવર ગોપાળલાલના મંદિરના ભિતરિયા બ્રાહ્મણ ભટ્ટ ગોવર્ધનદાસ પ્રભુજી ગયા માસની ૧૪મી શુક્રવારના રોજ રાજકોટ મુકામે ભગવદ્ધામવાસી થયા છે. આ રીતે માંગરોળે એક વયોવૃદ્ધ સંગીતવિશારદ અને અનુભવી ભગવદીયને ગુમાવ્યા છે. અહીં સાંપ્રદાયિક સેવાપદ્ધતિના નિષ્ણાતો ટચલી આંગળીને વેઢે ગણાય તેટલાજ છે, તેવામાંથી આ એકની ખોટ પડતાં અહીં વૈષ્ણવોમાં ગમગીની ફેલાયેલી. પુરુષોત્તમ માસ આખો ઉત્સવાદિકમાં કશી પણ અડચણ વિના તેઓ સેવાનો લાભ લઈ શક્યા. જેવો માસ પૂર્ણ થયો કે તરતજ મૂત્રકૃચ્છ્રના વ્યાધિથી તેઓ પીડાવા લાગ્યા. વ્યાધ વધતોજ ગયો. ડાકટરો અને વૈદ્યોની ઓપરેશન માટે સલાહ પડી, અને તેઓ અત્રેથી રાજકોટ હોસ્પિટલમાં ગયા. ઓપરેશન થયું, સફળ થયું પરંતુ વૃદ્ધાવસ્થાને અંગે શક્તિના અભાવે પ્રકૃતિ નબળી પડતી ચાલી, અને ત્યાંજ ભગવચ્ચરણ પામ્યા. પ્રભુની કૃપા કહો કે શ્રીદ્વારકેશલાલજી બાવા ત્યાં બિરાજતા હતા તેઓશ્રીની કૃપાથી અંતિમ સ્થિતિ સારી રીતે સુધરી અને શ્રીયમુનાજી વગેરે ચરમ-સાંપ્રદાયિક રીત્યા પામ્યા. તેઓ પાછળ એક પુત્રને મૂકી ગયા છે, જે પણ પિતા પાસેથી મળેલા સંસ્કારોને દીપાવે છે. "શુદ્ધાદ્વૈત"ના તેઓ આરંભથીજ ગ્રાહક તેમજ વાચક હતા.

પરમ ભગવદીય મણિલાલભાઈ (દેવગઢ બારીઆવાળા)થી કોઈકજ વૈષ્ણવ અજ્ઞાત હશે. તેમણે અચાનકજ જતિપુરામાં શ્રીગિરિરાજજી પાસે (હરદાસવર્યના ચરણમાં) ક્ષણભંગુર દેહનો ત્યાગ કરી દીધો. મણિલાલભાઈ એટલે ગૃહસ્થાશ્રમનો સ્વીકાર ન કરતા, એકદમ સંન્યાસી જેવું તપસ્વી ત્યાગી જીવન ગાળનાર એક મર્યાદી વૈષ્ણવ. તેઓ વૈષ્ણવોની સેવામાં તો તનતોડ મહેનત કરી મચ્યા રહેતા હતા, તેઓ વિદ્વાન્ ન હતા, પણ બહુશ્રુત અને સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના જાણકાર અને આગ્રહી હતા. તે ઉપરાંત સારા વક્તા હતા. મથુરાવાળા આયુષ્માન્ ગો. શ્રીપુરુષોત્તમલાલ બાવાની સેવામાં તત્પર હતા. તેમણે 'પ્રેમ પત્રિકા' નામની માસિક પત્રિકા પણ પ્રકટ કરી હતી, પણ તે ચાલી નહિ. છેવટે તો યાત્રામાં વૈષ્ણવોની અગમ ટહેલ કરતા. તેમનું ચરિત્ર શુદ્ધ હતું. શ્રીગિરિરાજજીમાં વૃક્ષ રોપવાની સેવા, વ્રજમાં મનોરથોની સેવા આદિમાં દેહના કષ્ટની પરવાજ કરતા ન હતા. ગત ઉષ્ણ કાલમાં વ્રજની બેઠકો અને મંદિરોમાં ગુલાબના ફૂલો પહોંચાડવાની તદ્દન સેવામાં તેમણે [illegible] ઉનાળાના તાપની કે ભૂખ તરસની પણ પરવા ન કરી. આવા એક સેવાભાવનાવાળા ભગવદીયની ખોટ કદી નહિજ પૂરાય.

છપાય છે　　　　　　　　　　　　　　　　　નામ નોંધાવો ! !

શ્રીસુબોધિનીજીનો સંપૂર્ણ અનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રસિકવર શ્રીકૃષ્ણની ભાવાત્મક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમદ્ભાગવતનું મહત્ત્વ જાણવું હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેજ નામ નોંધાવો. સમ્પૂર્ણ શ્રીસુબોધિનીજીનું સરસ ભાષાન્તર અને વિષમ પદાર્થોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ એકજ અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે અલ્પજ્ઞ વિદ્વાન્ એ ઉભયને સમાન રીતે આ ભાષાન્તર અને ઉપકારક છે.

ગ્રાહકોને નામ નોંધાવવાના સ્થળો:—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય—નડિઆદ. ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ પીતાંબરદાસ વડવાકુવા—નડિઆદ ૩. જોષી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—જામનગર. ૪. શુદ્ધાદ્વૈત કાર્યાલય, રાજામહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

श्रीकृष्णाय नमः ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः)
विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषच्छ्रुतिः)

विज्ञापनम् ।

दुष्प्राप्य प्राचीन संस्कृत साहित्य, एव राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं श्रीहरिरायजी—आदिके ग्रन्थो का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामक मासिक पत्रिका विद्वत्केसरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज एवं विद्वद्रत्न गोस्वामी श्री ६ श्रीव्रजरत्नलालजी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है । आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये ।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायता संस्कृत पाठशाला—नडियाद; हरिशङ्कर शास्त्री, बडामंदिर—नडियाद, शुद्धाद्वैत कार्यालय—अमदावाद.

हरिशङ्कर शास्त्री.
मीमांसाशास्त्री, वेदान्त विशारद M. R. A. S. व्यवस्थापक.

શક્તિ માટે સૌથી સરસ !!

અમૃત ગુટીકા !!

વીર્યવીકારના તમામ દરદો જડમુળથી દુર કરી બદન તાકાતથી ભરપુર અને પ્રફુલ્લીત થાય છે. દરેક પ્રકારની તન-મનની નીરબળતા દુર કરી, નિરતેજ ચહેરાને કાંતિવાન અને આનંદી બનાવે છે. મગજની કમજોરી, બદનનો દુઃખાવો, માંદગી પછીની નબળાઇ, અરૂચી, અપચો ઇત્યાદિ અનેક શારીરિક વિકારો દુર કરી નસોની શીથીલતાને મટાડે છે. દરેક રૂતુમા એક સરખો ગુણ આપે છે.

કીંમત ૩૨ ટીકડીઓની ડબ્બીના રૂા. ૨.

જેનસ અસ્થમોલ [મીક્ષ્ચર તથા ગોળીઓ]

દમથી હેરાન થતા દરદીને તુરત રાહત થાય છે. કફ કંઇ પણ ત્રાસ વગર નીકળે છે અને ઉંઘ સારી રીતે આવે છે. સરદીની ખાંસીમાં તાત્કાલીક ગુણ થાય છે. નીરાશ થયેલા દરદીને અજમાવી જોવાની ખાસ ભલામણ છે.

કીંમત મીક્ષ્ચરનો રૂ. ૧ાા ગોળીનો રૂ. ૧) બંને સાથે મંગાવવાથી રૂ. ૨ા.

દરેક દવાનું ટપાલખર્ચ જુદુ. રજીસ્ટર ટ્રેડમાર્ક "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો. દરેક ઠેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

કોણ છે એવો કે જેને ફાયદો નહિ થયો હોય ?

તરત ફાયદો આપનારી ૪૦ વર્ષથી કસોટી પર ચઢેલી.

બાલસુધા

દ્રાક્ષાસવ

બચ્ચાઓને બળવાન જોશભેર, સુંદર અને સુખી બનાવવા હોય તો સુખસંચારક કું. નું ગળ્યું બાલસુધા પિવડાવો. (કિંમત એક શીશી એકના ૦ાાા) આના.

આ શરીરમાં શક્તિ વધારે છે, કબજીઆત, અશક્તિ, ઉધરસ, ઉંઘ ન આવવી તથા ઘડપણમાં થતાં કષ્ટોથી બચાવે છે. કિં. મોટી શીશીની રૂ. ૨) નાનીની રૂ. ૧).

મળવાનું ઠેકાણું–સુખ સંચારક કું., મથુરા.

॥ श्रीकृष्ण ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥

"શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્યમન્દિર"

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને સુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

'વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના'

અમ્હારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—વ્રજ, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામા છપાયેલા (મુદ્રિત થયેલા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુન્દર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીગુસાંઇજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ. પા. ગો. બાલકોના રંગબેરંગી સુન્દર ફોટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગબેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેડો તથા પોકેટડાયરી, ગીતાડાયરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોછાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છબીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફ્રેમો મઢાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી બાઈંડીંગ (જીલ્દ) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામા આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો

"श्रीभक्तिमार्गीय–पुस्तकालय."

(વાચન—વિભાગ)

મુંબઇ તથા આજુબાજુના પરાઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરબેઠાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફ્રી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામા આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ લ્હેના ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસરી કોઇ પણ ધર્મજીજ્ઞાસુ લઇ શકે છે. વિશેષમાં એડ્રેસે લખો યા મળોઃ—

મળવાનો સમય—
સવારના ૭ થી ૧૨ (સ્ટા. ટા.)
સાંજના ૪ થી ૮ „

ગિરિધરલાલ જ. શાહ, બુકસેલર.
વ્યવસ્થાપક—
'ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.'
ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મન્દિર, ભુલેશ્વર; મુંબઇ નં. ૨.

તા. ક:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી વખતે પોતાનું નામ તથા એડ્રેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપીયાની અંદરની કીંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુતર માટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટસ્ટાપ બીડવા. ૪. કોઇપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરના ઠેકાણે ભરી શકાશે.

હિસ્ટિરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

બ્લોક ૩૦ હીસ્ટિરિયા, મૂર્છા, ચકરી, ફેફરૂ, ગાંડપણુ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન છેલ્લી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીંમત ૧-૪-૦ પો. જુદું, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના ના. શાળા માટે નવું મંજુર કી. ૦ા≈ પો. ૦)≈

હીસ્ટિરિયા રોગનીજ રામબાણ,

પેટંટ દવા વાયુમુક્તાજ છે ઉપરના દરદોમા ૨૪ કલાકમા ફાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રંગુન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીંમત રૂ ૫) પો જુદું.

છગનલાલ લલ્લુભાઇ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડોક્ટરોની દવા ખાઇ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), સુવાઇના ઝાડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઇ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણ દવા માટે રૂબરૂ મળો યા સવાલપત્ર મંગાવો.

પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો —

માસ્તર કે. જે. પટેલ એન્ડ સન્સ, સ્પ્રુ સ્પેશીઆલીસ્ટ—આણસાવાળા.

☞ મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાડીગરાની પોળમા તંબુગરાની ખડકી ઘર નં. ૩૫૬.

અમારૂં બાલાનંદ બચ્ચાઓને હૃષ્ટ પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુદું.

અલ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ દેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાંચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ હાથ લાગશે. શરીરની પાયમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પાયમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો સુઝશે.

કિંમત કે પોસ્ટ કાંઇ પણ નહિ, માત્ર તમારૂં પુરૂં સરનામું મોકલી મંગાવો

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔષધાલય—જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

ગુર્જરસાહિત્યસમ્રાટ ભક્ત કવિ શ્રીદયારામભાઈનું

આતર જીવન અથવા દિવ્ય અક્ષર દેહ.

લેખકો—સદ્‌ગત મૂલચંદ તુલસીદાસ તેલીવાલા બી. એ. એલએલ. બી. એડવોકેટ હાઈકોર્ટ મુંબઇ, તથા પ્રોફેસર જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ. અમદાવાદ, ઉપરાત સુપ્રસિદ્ધ તત્ત્વજ્ઞાની સાક્ષર દિ. બ. શ્રીયુત નર્મદાશંકર દેવશંકર મહેતા, બી. એ. નો હૃદયવેધક ઉપોદ્‌ઘાત.

કાવ્યોનો ઉદ્દેશ શો ? કવિશ્રીના તે વિષેના વિચારો, કવિશ્રીના કાવ્યોનું વર્ગીકરણ, કવિશ્રીના કાવ્યોમા નરવરનું તત્ત્વજ્ઞાન, જીવ, જગત, બ્રહ્મ વિષેના તેમના વિચારો, સંસાર બંધનોમાથી છૂટવાના ઇલાજો, દીનતા ઉપાસના, અનન્યતા, શરણાગતિ, ભક્તિ વગેરે વિષયો પર કવિશ્રીના સચોટ વિચારો, શૃગાર રસનું સ્વરૂપ, કવિશ્રીનું મુખ્ય લક્ષ્ય, જીવન સૂત્રો, કવિશ્રીની અન્ય કવિઓ સાથે તુલના, કવિનું સાક્ષર જીવન. આટલા વિષયોપર અસરકારક વેગવાળી કલમથી સવિસ્તર પ્રકરણો લખાયા છે. કવિશ્રીની ત્રિરંગી બે છબીઓ તથા કવિશ્રીના હસ્તાક્ષર વગેરે સામેલ છે.

તે ઉપરાત કવિશ્રીની જયંતીઓ પર વચાયલા નિબંધો તથા વ્યાખ્યાનોનો મહાન્ સંગ્રહ જેમા મહાન વિદ્વાન આચાર્યો તથા વિદ્યમાન લગભગ સઘળા સાક્ષરોએ કવિશ્રીને અર્પેલી સુવાસિત કુસુમાંજલિ મહેકી રહેલી છે. ગુજરાતી સાહિત્યમા આ ગ્રંથ અજોડ બન્યો છે પચસો પૃષ્ઠ, પાકું પુઠું કીમત બે રૂપીઆ આ માસિકના ગ્રાહકોએ માત્ર દોઢ રૂપીએ મળશે.

મુંબઈ યુનિવર્સિટીમાં એમ. એ. ના અભ્યાસક્રમમા ટેક્સ્ટબુક તરીકે મંજુર થયેલો.

શ્રીદયારામકૃત કાવ્યમણિમાલા ભાગ ૧ લો.

(આવૃત્તિ બીજી) સુધારા વધારા સાથે છપાઈ તૈયાર થઇ ગયો છે.

આ ગ્રંથમા અત્યાર સુધીમા પ્રકટ નહિ થયલા કવિરત્ન ભક્ત શ્રીદયારામભાઈના ઉત્તમોત્તમ અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથો તથા કાવ્યોનો નીચે પ્રમાણે ટિપ્પણ સાથે સમાવેશ કર્યો છે.

સમ્પ્રદાયસાર—(તત્ત્વજ્ઞાનનો મહાન ગ્રંથ) રામાનુજ, નિંબાર્ક, મધ્વ અને શંકર વગેરેના સંપ્રદાયોના તત્ત્વજ્ઞાનનું રહસ્ય બહુજ સચોટ રીતે સમજાવ્યુ છે.

અજામિલાખ્યાન—ભગવન્નામ લેવાનો અદ્‌ભુત ચમત્કાર જોવો હોય તો આ ગ્રંથ જરૂર વાંચો.

ક્લેશકુઠાર—આવા સમયમા દરેક મનુષ્ય ચિંતાના સમુદ્રમા ગરકાવ થાય એ સ્વાભાવિક છે. 'ચિંતા ચિતા સમાન છે." અમો ખાત્રીથી કહીએ છીએ કે આ ગ્રંથ વાચ્યા પછી જીંદગીભર તમને ચિંતા થશેજ નહિ

કાલજ્ઞાનસારાંશ—પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે એ કોઇ જાણતું નથી. અને બધા ગફલતમા રહે છે. આ ગ્રંથ એવો અદ્‌ભુત છે કે પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે તેનો જલદીથી નિશ્ચય થઇ શકે છે. **બીજાં પદો**—બીજાં અનેક જ્ઞાન, નીતિ અને ભક્તિના પદોનો મહાન્ સંગ્રહ. આટલો મોટો ગ્રંથ છતા કીમત માત્ર રૂ. ૧) એકજ રાખવામા આવી છે. પાના ૨૦૦ પાકું બાઇંડિંગ, કવીશ્રીની પ્રાચીન રંગીન છબી સાથે. આ માસિકના ગ્રાહકોને માત્ર રૂ. ૦॥। બાર આનામા મળશે.

મળવાનું ઠેકાણું:—પ્રકાશક નારાયણદાસ પરમાનંદદાસ શાહ (ડભોઇવાલા)
ઠે. પાંજરાપોળ ઓફીસ સામે, પાંજરાપોળની ચાલી, મુંબઈ નં. ૪

તન—મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી ભરપુર

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

મૃદ્વિકારિષ્ટ—શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

☞ તાકીદે તાકત—તાઝગી મેળવવા

શરદી મટાડનાર
થાક ઉતારનાર
ઉંઘ લાવનાર
દસ્ત સાફ લાવનાર
ભુખ લગાડનાર
તાકત આપનાર
તાઝગી બક્ષનાર

ક્ષય, ખાંસી, મૂછો અને સાધારણ
નબળાઇમા તાકીદે આરામ આપનાર

લઝઝતદાર દવા

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્મસ્યુટીકલ વર્કસ લી૦—મુંબઇ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજંટ—ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ અર્ધાના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઇ ગયો ! અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીજીવનેશાચાર્યજી મહારાજે આ સરલમાં સરલ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના "ઉપદેશવિષયકશંકાનિરાસવાદ" ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમાં છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમાં રજુ કરીને તેનું અપૂર્વ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિષે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમાં છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન્ રા. રા. હરિકૃષ્ણ વીરજીભાઈએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

ઠેકાણું:—શ્રીલાલબાવાનું મંદિર.
ભૂલેશ્વર, મુંબાઈ નં ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.
સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશો ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, બીન, દીલરૂબા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીંત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાથી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઇ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોનાં ખાસ નોટેશનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોછાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ઠે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોઠડાવાળા.
મુ. ધંધુકા. (જી. અમદાવાદ)

'શુદ્ધાદ્વૈત' જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા, નો. રૂ. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીંમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સીલીકમાં હશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા રૂ. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાર્યાલયમાં.

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. **રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રન્થ**—'શુદ્ધાદ્વૈત'માં પ્રકટ થઇ ગયેલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોછાવર માત્ર ત્રણ આના, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૨. **ભાવભાવના**—(ભા. ૧લો) શ્રીદ્વારિકેશ્વરજીકૃત આ ગ્રંથ એક અહર્નિશ વિચારણીય મહાગ્રંથ છે થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે નોછાવર પછીથી જણાવાશે

૩. **પંદરમો અધ્યાય**—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુંદર વિવેચનો સાથે દરેક શ્લોક પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો માત્ર દોઢ આનો. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૪. **આટલું તો કરજો જ**—નિત્યનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોછાવર માત્ર ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૫. **'ભક્તિપોષણ'**—કવિશ્રી દયારામભાઇનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કીં ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૬. **ભક્તવાણી**—ડાકોરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. ઇચ્છારામ ભટ્ટજીએ સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે નો ત્રણ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૭. **શ્રીગોકુલેશવચનામૃત**—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોછાવર પછીથી

૮. **ચોરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો**—છપાય છે. વાંચવાલાયક ગ્રંથ. નોછાવર પછીથી.

* * *

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી ઘણી હોવાથી આ સાહસ ખેડ્યું છે. મૂલ્ય ત્રણ આના, ટપાલ ખર્ચ એક આનો.

ઠે. ૧૭૪૮, રાજામહેતા પોળ—અમદાવાદ.

श्रीमदखण्डभूमण्डलाचार्यचक्रचूडामणिश्रीशुद्धाद्वैतसम्प्रदायस्थापकजगद्गुरु
श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणप्रतिष्ठापितप्रधानपीठश्रीनाथद्वाराधीश्वर
गोस्वामिकुलकमलदिवाकर विद्यासुधाकर महोदारचरित्र
गोस्वामी श्री १०५
श्रीदामोदरलालजी महोदय.

॥ श्री हरिः ॥

धार्मिक आन्दोलन.

વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું મહાધિવેશન.

ભારતના સર્વ સંપ્રદાયોના આચાર્યશ્રીઓનો અદ્‌ભુત સહકાર-વિદ્વાનોની અસાધારણ ઉપસ્થિતિ-અંત્યજોનો કહેવાતો સત્યાગ્રહ-તેની પાછળ રહેલો ભેદ-શાંતિથી ચાલેલું કામકાજ-સુધારકોનો સખ્ત પરાજય-સનાતન આર્ય સંસ્કૃતિનો પૂર્ણ વિજય અને પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્યશ્રીનો મહાન્ સત્કાર.

ધર્મપ્રાણ દિવ્યદેશ—ભારતવર્ષ એટલે જગન્નિયંતાની દિવ્ય પવિત્ર સૃષ્ટિનો મહાન્ આદર્શ! ભારતભૂમિ એટલે નિમનાબાધિત આધ્યાત્મિક જ્ઞાનજ્યોતિ પ્રકટાવનાર વિશ્વવંદ્ય મહર્ષિઓની જન્મદાત્રી માતા! આર્યાવર્ત એટલે જેના સર્વ રજ કણોમાંથી પણ મધુર ધર્મ-સ્વર નિકળી રહ્યો હોય તેવો પુનિત દેશ! આવા મહાન્ જગદ્વંદ્ય દેશના ગુણગાન કરવા કોણ સમર્થ છે? જેના નિર્મળ ઉત્સંગમાં સર્વોદ્ધારપ્રયત્નાત્મા પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાદુર્ભાવ પામીને દુષ્ટ દાનવોનો સંહાર કર્યો હતો! જેની નિર્દોષ તીર્થસ્થળીમાં અતિમાનુષ તપ આચરતા મહર્ષિ-મુનિઓ તથા ભક્તિમંદાકિની વહેવરાવના સંતો અને ભક્તશિરોમણિઓને માટે પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાકટ્ય લઇને તેમને અમંદ આનંદનું દાન કર્યું છે, તે આજ ભારતદેશ છે! જગતમાંના અજ્ઞાનતિમિરનો ખૂણેખાંચરામાંથી પણ નાશ કરનાર મહાન્ તત્ત્વવેત્તાઓની ખાસ આર્યભૂમિનું ગૌરવ અખંડિત અને અવર્ણનીય જ છે. આ ગૌરવને પ્રાપ્ત કરવા માટે અનેક દેશો સદીઓ સુધી મથશે પણ તેના લેશને પણ નહિજ પ્રાપ્ત કરી શકે.

સર્વશિરોમણિ—આર્યાવર્તનું ગૌરવ માત્ર ધર્મથીજ હતું, અને રહેશે. ભારતસંતાનોની નસેનસમાં રહેલા સ્વધર્માભિમાનના પરમાણુઓએ દેશના ગૌરવને સુરક્ષિત રાખ્યું છે. ભારતનિવાસીઓની પ્રવૃત્તિ, પછી તે વ્યાવહારિક હો કે પારમાર્થિક હો, પરંતુ તે ધર્મના પવિત્ર બંધનની અવહેલનાને થોડે અંશે પણ સહન કરી શકતી નથી. ભારતની પ્રવૃત્તિઓમાંથી જો ધર્મનું પૃથક્કરણ કરવામાં આવે તો તે દરેક પ્રવૃત્તિઓ નિશ્ચેતન થઇને દેશના ગૌરવને હાનિ પહોંચાડનાર જ દેખાય. આ સત્યનો પ્રકાશ દેશના ઇતિહાસમાં સ્થળે સ્થળે અનુભવાય છે. ભારતવાસીઓનાં નાનામાં નાના બાળકોએ પણ ધર્મરૂપ પ્રાણના રક્ષણ માટે ભૌતિક પ્રાણોનું બલિદાન આપ્યું છે. કોઇ પણ દેશનો ઇતિહાસ ધર્મના અવલંબન માટે ભારતની માફક સંખ્યાબંધ દૃષ્ટાંતો પુરા પાડવા સમર્થ નથી. એ જ ભારતનું સર્વાધિક ગૌરવ, એ જ ભારતનું સ્વધર્માભિમાનમાં સર્વદેશશિરોમણિપણું છે.

સનાતન ધર્મનું સ્વરૂપ—જે ધર્મને લઈને આર્યાવર્ત ઇતિહાસમાં ઉચ્ચ સ્થાનને કરી શક્યો છે, તે ધર્મનું સ્વરૂપ આલેખવાની આવશ્યકતા છે. સનાતન ધર્મ એટલે પ્રાચીનમાં પ્રાચીન ધર્મ, વેદ એ ભગવાનના શ્વાસ છે, નિત્ય છે, જ્ઞાનમય છે એમાં જેનું નિરૂપણ થયેલું હોય તે સનાતન ધર્મ. વેદ પણ મંત્ર અને બ્રાહ્મણ એમ બે ભાગમાં વહેંચાઈ ગયેલો છે, એટલે તે સર્વને સંપૂર્ણ માન આપવાની દરેક ધર્માભિમાનીઓની ફરજ છે. વેદના અમુક અંગને પ્રમાણ માનવું અને અમુક અંગને પ્રમાણ તરીકે ન સ્વીકારવું એમ નહિ. વેદના બધાં અંગોને એકસરખાં જ ગણીને ધર્મનિર્ણય કરવાનો છે. સ્વતઃપ્રમાણ વેદનું પ્રામાણ્ય સ્વીકાર્યા પછી તેનાં ઉપબૃંહણરૂપ પુરાણો અને ઇતિહાસો, અંગપ્રત્યંગો, શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા, બ્રહ્મસૂત્ર આદિ પ્રસ્થાનો તેમ જ તન્મૂલ સ્માર્ત ગ્રંથો પણ ધર્મજ્ઞાનમાં સંપૂર્ણ આદરણીય છે. આર્યાવર્તના રત્નરૂપ આ ગ્રંથોને જ્યાં સુધી અલૌકિક રૂપ બુદ્ધિથી અવલોકવામાં ન આવે ત્યાં સુધી સનાતન ધર્મનું સ્વરૂપ સમજાવું મુશ્કેલ છે. વેદાદિ પ્રમાણ શિરોમણિ ગ્રંથોમાં જે ધર્મનું સ્પષ્ટ પ્રતિપાદન કરવામાં આવેલું હોય તે સનાતન ધર્મ. સ્વલ્પમાં કહીએ તો વેદાદિપ્રમાણોથી સરળતા વડે પ્રતિપાદન થતો હોય તે સનાતન ધર્મ.

ધર્મ અને યુક્તિવાદ—ધર્મનું જ્ઞાન દૃઢતર થવામાં માત્ર વેદાદિ પ્રમાણોનુંજ પરિશીલન હેતુભૂત છે, એ નિઃસંદિગ્ધ થયા પછી યુક્તિવાદ તરફ દૃષ્ટિ કરીશું. યુક્તિવાદ ધર્મજ્ઞાનમાં કેટલેક અંશે સહાયક છે, તેની પણ કોઈ ના કહે તેમ નથી; પરંતુ તે યુક્તિવાદ મહર્ષિ મનુના જ શબ્દોમાં કહીએ તો વેદશાસ્ત્રથી અવિરુદ્ધ જોઈએ. વસ્તુતઃ યુક્તિવાદ અને ધર્મ વચ્ચે શું સંબંધ હોવો જોઈએ તેનો વિચાર કરતાં સહજ જણાય છે કે, ધર્મ ૧ સ્વરૂપ માત્ર યુક્તિવાદના આધારે કદાપિ જાણવામાં આવતું નથી. ધર્મ એ અલૌકિક છે એનાં સ્વરૂપનું જ્ઞાન યુક્તિવાદથી થઈ શકે તેમ નથી; શાસ્ત્રશ્રદ્ધા અને વેદાદિમાં વિશ્વાસ જ ધર્મના તાત્ત્વિક જ્ઞાનને માટે બસ છે, તે હોય તો જ યુક્તિવાદનું ફલ છે, નહિ તો યુક્તિવાદ નિષ્ફળ જ છે. વેદ અને પુરાણો કહે છે કે: नैषा तर्केण मतिरापनेया, अलौकिकास्तु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत् । તેમજ વેદાદિમાં થતાં સંશયોનું વેદાનુકૂલ યુક્તિથી સમાધાન કરનારા શ્રીવ્યાસ ભગવાન્ પણ નિરૂપણ કરે છે કે; तर्काप्रतिष्ठानात् । એ ઉપરથી સહજ જણાય છે કે ધર્મનો અલૌકિક માર્ગ ત્યાંથી શરૂ થાય છે કે જ્યાં મનુષ્યબુદ્ધિના યુક્તિવાદો વિરામ પામે છે. કેવળ યુક્તિવાદને સ્વતઃપ્રમાણ શાસ્ત્રની પેઠે સનાતન ધર્મમાં વિશેષ અવકાશ નથી. માત્ર શાસ્ત્રાનુકૂલ, કહો કે શાસ્ત્રાનુગામી જ યુક્તિવાદ જ ગ્રાહ્ય છે એમ આપણા પૂજ્યપાદ મહર્ષિઓનું મંતવ્ય છે. યુક્તિવાદને શાસ્ત્રસમાન અવકાશ આપનારાં આર્ષ ગ્રંથોનાં વાક્યો અર્થશાસ્ત્રને અવબોધે છે, ધર્મશાસ્ત્રને નહિ. अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः એ મહર્ષ્યુક્તિ પ્રમાણે અર્થશાસ્ત્રની દુર્બળતા સિદ્ધ જ છે. યુક્તિવાદ ધર્મના મર્મને સ્વાતંત્ર્યથી સ્પર્શ કરવાનું લેશ પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી. યુક્તિવાદ શાસ્ત્રનાં બલ ઉપર જ પોતાનાં ગૌરવનો મુખ્ય આધાર માને છે. શાસ્ત્ર તો સ્વતઃપ્રમાણ હોવાથી સ્વાનુકૂળ યુક્તિવાદની ક્વચિત્ અપેક્ષા રાખે છે, અને યુક્તિવાદ વિના ધર્મના મર્મનો સ્પર્શ કરાવવાનું અસાધારણ બળ પણ ધરાવે છે. કેવલ યુક્તિવાદ ઉપર આધાર રાખનારા ધર્મો ચિરસ્થાયી નથી રહ્યા, એ ઇતિહાસસિદ્ધ જ છે. સનાતન ધર્મ આવા સમયમાં પણ જે પ્રકાશ પ્રસરાવી રહ્યો છે, તેનું ખાસ કારણ જો તપાસીશું તો જણાશે કે તેના મૂળો યુક્તિવાદની ક્ષાર જમીનમાં ન હોઈને વેદાદિશાસ્ત્રની રસાલભૂમિમાં સુદૃઢ રીતે સુસ્થાપિત છે.

ધાર્મિક પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિની રૂપરેખા—ઉપર પ્રમાણે શાસ્ત્ર અને તદનુકૂલ તર્કોના આધારે જ સનાતન ધર્મના નેતાઓની પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિ થયેલી છે, અને તેનું પણ સૂક્ષ્મ દૃષ્ટિ-

ર્શન અત્રે કરાવવાની આવશ્યકતા છે. ઇતિહાસ કહે છે કે ભારત નિવૃત્તિપ્રિય હતું. તેની દૃષ્ટિ અંતર્મુખ હતી. બાહ્ય ભૌતિક ઉન્નતિની તેને દરકાર ન હતી. નિવૃત્તિના ગર્ભમાંથી ઉદ્ભવેલા પરમ સુખરૂપ બાલક સાથે ખેલવાના અભ્યાસવાળું પ્રાચીન ભારત, બહારથી સુખના આભાસવડે આંજી નાખનારા દુઃખમાં પરિણત થનારાં પ્રવૃત્તિનાં સંતાનોને તે ચાહતું ન હતું. તેની તે વેળાની પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિઓનાં સ્વરૂપો જુદાં હતાં. ભૌતિક સુખને લક્ષ્યબિંદુ બનાવીને તે માટેની જે અનેક હીલચાલો કરવામાં આવે છે, તેને જ પ્રવૃત્તિસંજ્ઞા આધુનિકો અર્પે છે. પ્રાચીન સમયમાં તેમ ન હતું. પ્રાચીન ભારતની પ્રવૃત્તિ આધ્યાત્મિક હતી. એ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિથી થતી થતી ઉન્નતિની પાછળ ભૌતિક ઉન્નતિ ઘસડાઇને આવતી હતી. દેશના અલંકારરૂપ એ ઋષિઓની વાણી ઉપર પણ એટલી બધી પ્રભુતા હતી કે સ્વતઃ પ્રકટતી વાણીને અર્થ સ્વયં અનુસરતો, નહિ કે લૌકિકવત્ અર્થને વાણી અનુસરતી; તે ઋષિઓની આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને ભૌતિક પ્રવૃત્તિજન્ય ઉન્નતિ અનુસરતી આવે એમાં આશ્ચર્ય શું? સંક્ષેપમાં હાલમા હાલમા જેને નિવૃત્તિશબ્દથી ઓળખવામાં આવે છે, તેને પ્રાચીન મહર્ષિઓ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને નામે ઓળખતા; અને એવી પ્રવૃત્તિથી ઉદ્ભવતી ફલદશાને નિવૃત્તિસંજ્ઞા અર્પતા. આર્યવર્તના અલંકારોની આ પ્રાચીન પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિથી જે ધર્મ પ્રકટ થયો છે, તેનું જ વર્ણન ઉપર છે.

સમયપરિવર્તન—ઉપર્યુક્ત ધાર્મિક પ્રવૃત્તિ અને નિવૃત્તિનું ક્રમશઃ પરિવર્તન થતું ગયું ત્યારે દેશમાં અવનતિએ પોતાનું સામ્રાજ્ય ચોતરફ વિસ્તારવા માંડ્યું. એ અવનતિ દેવીએ ધાર્મિક લાગણીથી રહિત થતા જનસમાજને ઇર્ષ્યા, દ્વેષ, કુસંપ આદિ પોતાનાં સંતાનોના અધિકાર હેઠળ મુકી દીધો, કહો કે દુઃખના એક મહાન્ સાગરમાં એને ધકેલી દીધો. અજ્ઞાનાંધકારમા એવી રીતે અથડાતા દેશમાં ઘણા સમયસુધી ધાર્મિક અવ્યવસ્થા ચાલુ રહી. ધાર્મિક નિયંત્રણ બ્રાહ્મણો અને ક્ષત્રિયોની સ્વાધીનતા નીચે હતું. પરંતુ કાલવશાત્ તે નિયંત્રણ ધર્મરક્ષક જાતિઓથી સ્વાધીન રાખી શકાયું નહિ; તેથી ઉત્તરોત્તર ધર્મનું પરિપતન થતુ ગયું. સનાતનધર્મના ઉત્તમોત્તમ ગ્રંથોના રહસ્યો સામે ગમે તેવી રીતે આક્ષેપો થયા. કહો કે સનાતન ધર્મને તોડી પાડવાને ચોતરફથી હુમલાઓ થવા લાગ્યા. આ સમયે દેશમા સનાતન વૈદિક ધર્મનું રક્ષણ કરનાર કોઇ મહાધુરંધર નેતાની આવશ્યકતા હતી, કહો કે તે માટે પ્રભુનાં પ્રાકટ્યનીજ જરૂર હતી. કારણકે ગીતામા પોતે પ્રતિજ્ઞા કરી છે કે જ્યારે જ્યારે ધર્મની હાનિ થશે ત્યારે ત્યારે હું પ્રકટ થઇશ. એવી રીતની પ્રતિજ્ઞા પૂરી કરવા-માટે પ્રભુએ સ્વાંશે કરીને અનેક આચાર્યોનું સ્વરૂપ ધરીને સનાતન ધર્મનું સંરક્ષણ કર્યું. વેદાદિ શાસ્ત્રમાં ધર્મનાં જે જે રહસ્યો બતાવ્યાં છે, તે તે રહસ્યોને તેવા તેવા સમય, દેશકાળ અને અધિકારીઓને જોઇને પ્રકટ કર્યાં અને એક વાર ફરીને સનાતન ધર્મને ઉચ્ચ દશામાં લાવી મુક્યો. આ સમય પણ વ્યતીત થયો, હવે આગળના સર્વ સમયને ભુલાવી દે તેવો સમય આવ્યો છે. ધર્મનાં સ્વરૂપોનો લોપ કરનારા અને ધાર્મિક મર્યાદાને નહિ ઇચ્છનારાઓનો સમૂહ દેશમાં વધવા લાગ્યો છે. બહારથી અને અંદરથી સનાતન ધર્મ ઉપર પ્રહાર થવા લાગ્યા છે. કેટલાકો જ્યારે પ્રકટ રીતે હુમલો કરે છે ત્યારે કેટલાકો કહો કે પંડિત-વંચકો ધર્મની અંદર પેસીને ધર્મથી મુક્ત જનસમાજનો વિશ્વાસ મેળવીને ધાર્મિક પ્રજાને ધર્મચ્યુત કરવાનો પ્રયાસ કરવા લાગ્યા છે. આવા વિકટ સમયમાં ધર્મના સહાયકીઓને માથે स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् એ કથનાનુસાર ધર્મરક્ષણનો પ્રસંગ આવ્યો છે. એક શત્રુનો વિપ્લવ કરવા માટેના જેટલા પ્રપંચો થાય છે; તેટલા, કહો કે તેથી પણ વિશેષ પ્રપંચો ધર્મના નાશ માટે થવા લાગ્યા છે. પરંતુ વાદરે

આખો દેશ ઉદ્યોગહીન, અર્થહીન, કંગાલ થઈ ગયો. કરોડો બેકાર આળસુઓને ખોળામાં લઈને ભારતમાતા રડી રહી છે! આ બધી દશાના જવાબદાર અંગ્રેજી કેળવણી પામેલા દેશનેતાઓના સમૂહ છે. હવે તેઓની આંખો ઉઘડી છે. હવે ખાદીનો જ ઉપયોગ કરવાની બાંગ પોકારવા માંડી છે. આર્ય સંસ્કૃતિમાં વસ્ત્રોમાં મુખ્યસ્થાન ખાદીનેજ હોય, પણ યુરોપીય સભ્યતાના ચળકાટમાં પતંગીયાંની પેઠે પ્રાણાર્પણ કરનારા એ નવ્ય શિક્ષિતોને ખાદી ક્યાં ગમતી હતી? ખાદી પહેરનારા ધાર્મિકોને તો તેઓ હસતા હતા પણ ભૂખમરાથી તેમની આંખો ઉઘડી ગઈ અને હવે ખાદીસેવાનો સ્વાંગ ખૂબ ભજવવા માંડ્યો છે. આ એકજ ઉદાહરણ બસ છે. જો એક બાબત એટલે આ શરીર ઢાંકવા જેવી બાબતમાં આર્ય સંસ્કૃતિને ઉઠાડી મેલીને પાશ્ચાત્ય સુધારાના ગુલામ બન્યા તો કેવા હીન દશામાં આવ્યા? આ એક માત્ર બહારના પોષાકના ત્યાગથી જ આ દશા થઈ તો જીવનપ્રાણ જેવા ધર્મના અનાદરથી કેવી હીન તેમજ ભયંકર દશા થશે તેનો વિચાર કરવો રહ્યો. વર્ણાશ્રમવ્યવસ્થા જો તોડવામાં આવશે, પાતિવ્રત્યના આદર્શોને પગતળે ખુંદવામાં આવશે, સ્પર્શાસ્પર્શ અને ખાનપાનનો વિવેક નહિ રહે તો સમાજ કેવા દુઃખના ગંધાતા કીચડમાં સડશે કે જેનો ખ્યાલ પણ રુવાડાં ઉભા કરે છે! જેમ માત્ર સ્વદેશી વસ્ત્રોના ત્યાગથી હીન દશા સાંપડી અને વિદેશીનો બહિષ્કાર કરવા માટે હવે પ્રાણાર્પણ કરવાનો સમય આવ્યો, તો આપણી સંસ્કૃતિઓને દેશવટો દીધા પછી શો લાભ થશે? પછી ખાદીના ઉપદેશની જેમ વર્ણાશ્રમના વખાણ થશે કે? પાતિવ્રત્યની પીછાણ થશે કે? નીતિ અને ધર્મના આદર્શોનો આદર કરવામાં આવશે કે? અત્યારે તો આ દેખાતી વસ્તુસ્થિતિને પણ કોઈ નહિ જ જુએ. "દહાડાજ પાછા વળવાના" છે! હમણાં તો સ્વરાજ્યની મધલાળની લાલચે પોતાની સંસ્કૃતિરૂપ પ્રાણથી શૂન્ય બનીને, આત્મવિહોણા થઈને વિદેશીઓની સભ્યતાના ગુલામ જ બનવાના છે. આ પ્રવાહને કોણ અટકાવી શકશે? તો પણ ધર્મપ્રાણ આચાર્યશ્રીઓ અને વિદ્વાનોએ સામયિક પ્રવૃત્તિ કરે જ છુટકો છે.

ધર્મ માટે સર્વત્યાગ કરનાર તપસ્વી—સમયનો પ્રબળ પ્રવાહ, અને તેના ભયાનક પરિણામના આદ્ય દ્રષ્ટા સમર્થ વિદ્વાન્ શ્રીયુત લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ પરિસ્થિતિનો અનુભવ કર્યો. એમનામાં રહેલું શુદ્ધ બ્રાહ્મણ વર્ચસ્વ ધર્મદશાનો ચિતાર જોઈને રોમાંચિત થઈ ગયું. એમણે ધર્મ રક્ષણ માટે કમર કસી. દ્રવ્યોપાર્જન માટેના પ્રયાસો કાયમને માટે છોડી દીધા. માન, અપમાન, લોભ, લાલચ વગેરેનો સાથ સંપૂર્ણ રીતે ત્યજ્યો. કેવળ હૃદયમાં ધર્મરક્ષણની ધગશ ભભકી રહી! ક્ષુધા, તૃષા, નિદ્રા વગેરેની પણ પરવા ન કરી. ઇતિહાસમાં કદી નહિ સાંભળેલું, આધુનિક દૃષ્ટિએ તદ્દન અસંભવિત એવું યાદગાર બ્રાહ્મણમહાસમ્મેલન કાશીમાં કર્યું. સર્વ સંપ્રદાયોના મહાન્ આચાર્યોને એક જ તીર્થસ્થળમાં, એક જ સભામંડપમાં એક જ રંગમંડપમાં પધરાવીને ભારતના ધાર્મિક ઇતિહાસમાં એક અજોડ દાખલો બેસાડી દીધો. ઉપહાસ કરનારા સુધારકોના દાંત પણ ખાટા થઈ ગયા. તેઓ શરમને લીધે કાશીમાં મ્હો પણ બતાવતા ન હતા. એ યાદગાર સમ્મેલનનો ધાર્મિક જગતમાં થોડો પ્રભાવ પડ્યો નહતો. આ સમ્મેલનનો સર્વ યશ શ્રીલક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજીને જ ઘટે છે. એ સંમેલન પછી તો સ્થિતિનું ઝડપથી પરિવર્તન થઇ ગયું. સુધારક ગણાતા દેશનાયકોએ સાર્વજનિક સંસ્થાઓમાં તથા દેશની વ્યવસ્થાપિકા સભાઓમાં સનાતન ધર્મ પર ગુપ્ત તેમજ જાહેરમાં પણ છુરી ફેરવવા માંડી ધર્મહ્રાસ કરનારા કાનુનો ઘડવા માંડ્યા. તેમાંનો એક શારદા એ ઉપનામના સભાસદનો ચયનાન્યતપૂર્ણ ખરડો તો પાસ પણ થઇ ગયો. આથી સનાતન પ્રજા ખળભળી ઉઠી. શાસ્ત્રીજી તો આથી

ખૂબ ખિન્ન થયા. તેમણે તો હવે ભેખ જ લઈ લીધો. અવિરત પ્રયાસ કરવા માડયો. ધર્મહ્રાસ કરનારી ચાલુ પ્રવૃત્તિ સામે જે શસ્ત્રો રક્ષણ કરવા યોગ્ય છે તેનો સંગ્રહ કરીને ઉપયોગ કરવામાં પાછી પાની ન કરી. તેમણે 'અખિલ ભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ' નામની સંસ્થા સ્થાપીને રચનાત્મક કાર્યક્રમ પ્રારંભી દીધો. મહામહોપાધ્યાયની સરકારી પદવી સરકારને પાછી મોકલી આપી. સ્થળે સ્થળે અવિશ્રાન્ત પ્રયાસ્ કરીને 'સંઘ' શાખાઓ તથા પ્રચાર કાર્ય મારફતે સુષુપ્તિ સેવતી સનાતની જનતાના કાનમા દુંદુભિના નાદો કરવા માડયા. આથી વિદ્વાનો તથા આચાર્યશ્રીઓ પણ જાગૃત થયા અને તેમની સાથે પૂર્ણ સહકાર કર્યો. છેલ્લા સમયમા મહારાષ્ટ્રમાના એક જ ધર્મવીર મહંત સંત સંતોજી મહારાજની સહાયતાથી મહારાષ્ટ્રમા ખૂબ પર્યટન કરીને જાગૃતિનો સંચાર કર્યો. શાસ્ત્રીજીના નિઃસ્વાર્થ ત્યાગમય જીવનની અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિની ભારે અસર થઈ. એથી જલગામમા 'સંઘ'નું ખાસ અધિવેશન રાખવામા આવ્યું. એની સફળતા માટે તડામાર તૈયારી પણ કરવા માડી.

રાહ જુવે છે. આવા વિપત્તિના સમયમા પણ જો આપશ્રી ન પધારો તો અમારો ધર્મ સુરક્ષિત કેમ રહે ?"

શ્રીલક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજી તથા સંતોજી મહારાજ પોષ વદ ૧૩ ગુરુવારના પત્રથી લખે છે કેઃ— "જનતાપર પ્રભાવ પાડવાનું કાર્ય તો આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓના પધારવાથી જ બની શકે છે. અમે સેંકડો પ્રયાસ કરીએ તો પણ તેથી કાંઇ સિદ્ધ ન જ થાય. આપનાં સાન્નિધ્ય અને કટાક્ષપાતથી જનસમૂહના મનમાં અતિ આદર ઉદ્‌ભવશે. આપશ્રીના પધારવાથી અહીં મહારાષ્ટ્રીય તથા ગુજરાતી જનસમૂહ સમુદ્રની પેઠે પ્રસરી જશે. જો આપશ્રી નહિ પધારો તો અમે અત્યંત દુ:ખી થઇશું અને સનાતન ધર્મનું રક્ષણ પણ દુર્ઘટ બનશે....આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓએ તો ક્લેશ તથા શ્રમ સહન કરીને આ ધર્મરક્ષણ કાર્ય કરવા પધારવું આવશ્યક છે. અમારી આ પ્રાર્થના નિષ્ફળ નહિ જ જાય સમય હવે થોડો છે માટે તારદ્વારા જવાબની રાહ જોઇએ છીએ."

શ્રીનાથદ્વારના સંયોગો—ઉપરના તારો તથા પત્રો વખતે શ્રીનાથદ્વારમા જુદા જ સંયોગો હતા. શ્રીમાન્ બાવાસાહબના નાનાં શ્રીબેટીજીનાં શુભ લગ્ન થયે થોડો જ સમય વીત્યો હતો. ઉપરાંત પોષ સુદ છઠ્ઠના રોજ શ્રીમાન્ બાવાસાહબનો જન્મદિનનો પ્રસ્તાવ હતો. મને તો ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વરનો કામવનથી તાર મળ્યો કે, કાર્તિક વદ ૧૩ ના રોજ હું શ્રીનાથદ્વારા પહોંચીશ, માટે ત્યાં જલદી આવવું. હું દીપોત્સવાંક પ્રકટ કરીને, વી. પી. કરીને, કાર્તિકાંક પ્રકટ કરીને સખ્ત મહેનતના કારણે તાવમા તવાતો હતો. કાંઇ આરામની જરૂર હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારા જવાનું કોને ન ગમે? હું તુરત જ કાર્તિક વદ ૧૧ ના રોજ રાત્રે અમદાવાદથી ગુજરાત મેલમા ઉપડ્યો. લગ્ન પ્રસંગે શ્રીનાથદ્વારામાં ખૂબ ધામધૂમ થઇ રહી હતી, પ્રસ્તાવમાંથી પણ સમય કાઢીને વ્યાખ્યાનોની યોજના કરવામાં આવી હતી. લગભગ બે બે કલાક સુધી સભાનો કાર્યક્રમ ચાલતો હતો. સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનો—પંડિત શ્રીરમાનાથશાસ્ત્રીજી, પંડિત શ્રીબાલશાસ્ત્રીજી, પં. શ્રીકંઠમણિજી, પં. જટાશંકરજી, પં. વ્રજનાથશર્માજી આદિના વ્યાખ્યાનો થયા. ચાર દિન સુધી આ સભા ચાલી. શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર અને તેઓશ્રીના અનુજ ગો. શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી બાવાસાહબના વ્યાખ્યાનો થયાં. શ્રીમાન્ બાવાસાહબ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયના પ્રવચને તો ઘણીજ અસર કરી. શ્રીનાથદ્વારામા આવું જાહેર વ્યાખ્યાન આપશ્રીનું પહેલું જ હતું એમ ત્યાંની પ્રજા કહેવા લાગી. હિન્દુ પ્રજા ઉપરાન્ત વહોરા તથા જૈન કોમના શ્રોતાઓ પણ શ્રીમાન્‌ના ભાષણથી ઘણા જ ખુશી થયા અને પોતાના પવિત્ર નગરના યુવરાજ અને એક ધર્માચાર્યના આવા વિદ્વત્તા અને વિચારોથી પૂર્ણ ગંભીર ઉદ્‌ગારો સાંભળીને મગરૂર બનવા લાગ્યા. લગ્ન માર્ગશીર્ષ સુદ ૧ ના હતાં. હું તો લગ્ન પ્રસંગ પછી શ્રીનાથદ્વારા છોડી જવાનો હતો. કારણ આપશ્રી કામવનથી શ્રીનાથદ્વારા પધારી શક્યા નહતા. છતાં પરમ ભગવદીય શેઠ રણછોડદાસજીના સજ્જડ હુકમથી રોકાઇ ગયો. વળી માર્ગશીર્ષ સુદ ૧૫ પૂર્ણિમાને રોજ દર વર્ષે છપ્પનભોગ થાય છે, તેનાં દર્શનની પણ લાલચ હતી. પછી તો આવ્યો શ્રીગુસાંઇજીનો મહોત્સવ, તેનો લાભ કેમ ત્યજાય? એટલામા શ્રીમાન્ બાવાસાહબનો પોષ સુદ ૬ નો જન્મદિન આવ્યો. એટલે તો "અડે દ્વારકા" કરી પડી રહ્યો. એટલામાં તો ઉપરના તારો તથા પત્રોની હારની હાર શરૂ થઇ ગઇ. પ્રસ્તાવો અને ઉત્સવો એકઠા થવાથી જે પરિશ્રમ આપ શ્રીમાન્‌ને પડ્યો હતો, તેમાં આ એક નવી જવાબદારીએ આવીને ઘેરો ઘાલ્યો! આવા સંયોગમાં શ્રીનાથદ્વારા છોડાય તેમ હતું જ નહિ. છતાં ધર્મપ્રાણ પંડિતોનો મહાન્ આગ્રહ અને જે ધર્મરક્ષણ માટે શ્રીમાન્‌નું પ્રાકટ્ય આ ભૂતલ ઉપર થયું છે, તે કાર્ય જ જ્યારે આવી પડે ત્યાર પછી કેમ બેસી રહેવાય?

પંડિતોની નમ્ર વિનતિઓ પર વિનતિઓ તથા તારો આવવા લાગ્યા. આખરે જન્મદિવસ પણ શ્રીનાથદ્વારા ન કરતાં જલગામ જવાનો નિશ્ચય કરી નાખ્યો. આ વાત તો શ્રીનાથદ્વારામાં એકદમ પ્રસરી ગઇ. અધિકારી વર્ગ તથા કર્મચારી ગણ તો પોતાની ઉન્નતિ તથા કદર થવામા આ અણધાર્યું વિઘ્ન આવી ગયું જાણીને પોતાના ભાગ્યને ઉપાલંભ આપવા લાગ્યો. કારણ કે જન્મદિનના અંગે જે દરબાર ભરાય છે તેમા યોગ્યતા મુજબ પગારમાં વધારો થાય છે, સરપાવ તથા રોકડ રકમોથી કદર પણ થાય છે એટલે એમને તો ખેદ જ થાય. તેમાએ વૈષ્ણવોની વાત શી ! દિવસોથી “ જનમ દિન લાલકો ફિર આયો ” એ વધાઇનો સુમધુર નાદ હૃદયમાથી નિકળતો હતો, તેવામા એકદમ એ આનંદરસ ઝરતો નાદ, ધ્વનિ બંધ થઇ ગયો ! એટલે વૈષ્ણવોની આશા તો નિષ્ફલ જ થઇ ગઇ. ઘણા જ કચવાટ કરવા લાગ્યા. જન્મદિનનો અલૌકિક આનંદ પોતાને નહિ મળે તેથી તેમનો ઉત્સાહ જ ભાગી ગયો. વૈષ્ણવોના મુખો ઉપર તો ગ્લાનિની છાયા છવાઇ રહી. સમય સમયપર વિનતિઓ શ્રીમાનને થઇ. જન્મદિનને હવે વધુ સમય તો હતો જ નહિ. હાથમા આવેલુ અમૃત કોઈ ઝુંટાવી જતુ હોય તેવો અનુભવ વૈષ્ણવોને થયો. જન્મદિનનો આનંદ છોડીને શ્રીમાન્ જલગામ પધારે તેમા કોઇ પણ રાજી ન હતું. આખરે ભક્તિની ઉષ્ણતાએ પોતાનો ચમત્કાર બતાવી દીધો. ભગવાન્ની નિષ્ઠુરતાને પીગળાવી નાંખી ! ભક્તિવશ પ્રભુ જન્મદિનનો આનંદ આપ્યા વિના કેમ છટકી જાય ? આખરે બધાની હાર્દ લાગણીને વશ થયે જ છુટકો ! શ્રીમાને પણ જન્મદિન શ્રીનાથદ્વારામા જ કર્યો જન્મદિનની રાત્રે જ શ્રીમાન્ તો માવલી જંક્શન પધાર્યા અને ત્યા જ પોઢ્યા. કારણ કે પોષ સુદ ૭ ના રોજ સવારની દશ વાગ્યાની ટ્રેનમા તો કૂચ કરવાનું હતું !

સામાયક સ્થિતિની ભીષણતા—એક વાત તો રહી જ ગઇ. સં. ૧૯૮૬ નો પોષ માસ એટલે ઇ. સન ૧૯૩૧ નો જાનેવારી મહીનો. આપણી વિશ્વવિખ્યાત રાષ્ટ્રીય લડતની પરાકાષ્ઠાએ પહોચેલો માસ ! હજારો દેશભક્તો જીવતા જીવતા જ નરકવાસ કરતાએ ખરાબ કારાવાસમા અમાનુષ ત્રાસને રાજીખુશીથી ભેટી રહ્યા હતા ! હજારો બાલકો, સ્ત્રીઓ, વૃદ્ધો, યુવકો એ મહાન્ સ્વાતંત્ર્યયુદ્ધમા મોટા જમ જેવા અધિકારીઓની લાઠીઓ ખાઇને, પોતાના રક્તથી લોહીતરસી ભૂમિની તૃષાને દૂર કરતા હતા. રાજકીય લડતે ઉગ્ર રૂપ લીધુ હતુ. હીન્દી સરકાર જરા પણ નમવા તૈયાર ન હતી. રાષ્ટ્રીય મહાસભાએ તો આ છેલ્લી લડતમા સર્વસ્વ હોમી દેવાનો નિર્ણય જ કરી નાખ્યો હતો. આવા વિકટ સમયમા ઘરમાથી બહાર પણ કોણ નીકળે ? તેમાએ વળી આ તો સનાતન ધર્મનો પ્રશ્ન રહ્યો. સ્વતંત્રતાપ્રાપ્તિની ધૂનમા પોતાના પાલક પિતા સમા ધર્મના આદર્શોને ઊંધી આંખે જોઇને, તેમને પોતાની કાર્યસિદ્ધિમા નડતર સમાન માનીને મીટાવવાની જોશભેર ચળવળ કરનારા દેશનેતાઓ સામે આ સમયે કેમ થવાય ? સમગ્ર દેશમા તેમની જ જાણે આણ ચાલતી હોય એમ હતું. તેમાં મુંબાઇમા સનાતનધર્મીય સભામા જે ધાંધલ થઇ હતી, તેને કોઇ વિસરી ગયું ન હતુ. આ વાતાવરણથી જલગામ નહિ જ જવાની સલાહ શ્રીમાનને મળી હતી શ્રીનાથદ્વારાના બધા વિચારશીલોએ એજ વિનતિ કરી હતી. વિદ્યાવિભાગના નેતા શાસ્ત્રીજી રમાનાથજી તો ઘણા જ ગભરાતા હતા. જલગામમા શું થશે ? “ વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ ”ના અધિવેશનમા કેવા તોફાનો થશે ? દેશની સ્વતંત્રતાની લડત લડનારાઓ સામે થવામા અત્યારે કેવુ જોખમ સમાયલુ છે ? આવા અનેક કાલ્પનિક તરંગો ઉઠતા હતા. એ ઉપર પરિમિત જીવબુદ્ધિના તર્કો કોઇ વિચિત્ર પરિણામના ભીષણ રૂપને જોઇને ગભરાઇ જતા હતા. પણ શ્રીમાન્ના આત્મબલની વાત જ કાંઇ

ઓર છે. આપના આદર્શો અને હૃદય જ કાંઈ અનેરાં છે! એક અત્યાચારી દુશ્મન ઉપર પણ સહજ વૈરની ભાવના આપના હૃદયમાં કદી ઉદ્ભવતી નથી. આપના નિષ્કલ્મષ સરલ હૃદયથી એક વિરોધી પણ વશ થઈ જાય છે. કાશીમાં શું હતું? ત્યાં કાંઈ વાતાવરણ સ્વચ્છ કે અનુકૂલ તો નહતું જ! કાશીમાં શ્રીમાન્ પધાર્યા ત્યારે ત્યાં પણ ઘણા વિચારશીલ વિદ્વાનોએ સભામાં ભાગ નહિ લેવાની શ્રીમાનને વિનતિ કરી હતી. પણ ત્યાં તો શાંત અને પ્રકાશમય યશ:કિરણોથી શ્રીમાને સર્વ—આચાર્યતારાગણમાં એક શીતરશ્મિ ચંદ્રની માફક દર્શન આપીને બધાની અટકળો ખોટી પાડી હતી. કાશીની બ્રાહ્મણ મહાસભા સમયે જે ગૌરવ શ્રીમાને પ્રાપ્ત કર્યું તે સાંપ્રદાયિક ગૌરવના ઇતિહાસમાં અદ્વિતીય રીતે ચિરસ્મરણીય બન્યું છે. આ પ્રકટ પ્રતાપના પ્રત્યક્ષ અનુભવ પછી ગમે તેવી વિકટ સ્થિતિને પણ શ્રીમાન્ કાબૂમાં લાવવા એક મહાન્ સમર્થ મહાપુરુષ છે એ વાતમાં સંદેહ થવો જ ન જોઈએ. તો પણ જીવબુદ્ધિ અને સ્નેહ એ બન્નેના મિશ્રણથી માહાત્મ્યજ્ઞાન તિરોહિત થાય અને 'स्नेह खलु पापशंका' એ કવિકુલગુરુ કાલીદાસના વાક્યનો પણ સાક્ષાત્કાર સંભવે; એ જ પુષ્ટિમાર્ગની લોકોત્તર વિલક્ષણતા છે. એટલે અન્ય વ્યક્તિ સ્નેહવશ કે લૌકિક દૃષ્ટિએ શ્રીમાનના પ્રત્યક્ષ પ્રતાપબલને પણ ભૂલે એ જ લીલાવૈચિત્ર્ય ગણાય! શ્રીમાન્ તો થોડા જ એવી સલાહને આધીન થવાના હતા? આપશ્રીએ તો જલગામ પધારવાનો નિર્ણય કરી દીધો. તારથી ખબર આપી અને અગાઉથી "એડવાન્સ પાર્ટી" મોકલી દીધી.

જલગામ તરફ રવાના:—સં. ૧૯૮૭ ના પોષ સુદ ૭ ને શનિવારે ૧૦ વાગ્યાની ટ્રેનમાં માવલી જંકશનથી વિદાય થયા. રસ્તામાં કાંઈ જાણવા જેવું બન્યું નહતું. મંદસોર ઉપર એક વૈષ્ણવ શા. મુનશી દર્શનાર્થે આવ્યા વૈષ્ણવોને ખબર નહતી, તેથી સ્ટેશન પર ક્યાંથી આવી શકે! રાત્રે રતલામ આવ્યું રતલામ રાત્રે ૧૦॥ વાગે ઉપડ્યું. બધા નિદ્રાવશ હતા. એટલામાં રાત્રે દોઢેક વાગ્યાના સુમારે જયજયના ગગનભેદી ધ્વનિથી બધા જાગૃત થઈ ગયા. જોયું તો ઇંદોર સ્ટેશન આવી ગયું હતું સેંકડો વૈષ્ણવો દર્શનાર્થે જયજયનો ધ્વનિ કરી રહ્યા હતા. શ્રીમાનને ડબામાંથી બહાર પધારીને દર્શન આપે છે તેટલામાં તો એકદમ ડબા પર ભીડ તૂટી પડી. દર્શન પછી ચરણસ્પર્શ માટેની અધીરતા તો વૈષ્ણવોની જોવા લાયક જ હોય! એવી તો ધક્કામુક્કી શરૂ થઈ જાય કે જાણે સ્ત્રી, વૃદ્ધ અને બાળકોની તો દુર્દશા જ આવી! સ્વયંસેવકો બિચારા શું કરે? ભેટ તો ફેંકવા માંડી. ગાડી ઉપડવાની તૈયારી થઈ—ગાડી ઉપડી ત્યાં સુધી આ ભીડ અને ભેટના પૈસાની ફેંકાફેંક ચાલુ જ હતી! તેમાં એકાદ ઢબુ (બે પૈસા) તો મારા તથા પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી ગોડ રણછોડદાસ પેટવાદીનાં માથા કાચાં છે કે પાકાં તેની ખબર લેવા આવી પહોંચે ત્યારે તો તેની ઓરજ લીજ્જત આવતી! આખરે વૈષ્ણવોના પ્રેમસાગરના મહાન્ તરંગો વચ્ચે મહાનૌકાની જેમ આ બાષ્પરથ ધમધમાટ કરતો આગળ વધ્યો. સવારે ખંડવા પહોંચ્યા. શેઠ પુરુષોત્તમદાસ તથા મુખ્યાજી રતિલાલભાઈની આગેવાની નીચે વૈષ્ણવ સમુદાય સ્ટેશનપર હાજર હતો. વધારામાં ઇંદોરથી પરમ ભગવદીય રાયબહાદુર શેઠ હરિશંકરજી ઓનરરિ મેજીસ્ટ્રેટ પણ શ્રીમાનના દર્શનાર્થે આવી પહોંચ્યા હતા. અહીં તો ગાડી ઘણીજ રોકાઈ. એક્સપ્રેસ આજે દોઢ કલાક મોડી હતી. આખરે ગાડી આવી અને નાની ગાડી બદલીને જી. આઈ. પી. રેલ્વેની મોટી ગાડીપર સવાર થઈ ગયા. થોડાજ સમયમાં બુરહાનપુર આવ્યું. અહીંની ભીડે તો ઇંદોર ભુલાવી દીધું. ચરણસ્પર્શ અને ભેટનું દશ્ય અદ્ભુતજ હતું. સ્વયંસેવકોનો બંદોબસ્ત સારો હતો છતાં વૈષ્ણવો તેમની વ્યવસ્થાને તોડી નાખવામાં ભક્તિભાવની પરિસીમા માને એટલે

ભવ્ય ધર્મધ્વજ શ્રીમાન્ આચાર્યચરણે ફરકાવ્યા પછી તેનું રહસ્ય ધર્મપ્રાણ શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ સમજાવ્યું હતું. તેમણે કહ્યું કે, આ ધ્વજામાં શ્રીશેષશાયી ભગવાન્ બિરાજે છે. બ્રહ્માજી ચાર વેદોનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે. 'જગદંબા શ્રીમહાલક્ષ્મી પ્રભુના ચરણ સેવી રહ્યાં છે. આ પ્રભુ પાસે એક ગોમાતા આવી છે. એ ધર્મવિધ્વંસક અસુરોના અત્યાચારોથી પીડિત ભારતની ધાર્મિક પ્રજાની પ્રતિનિધિ છે. भूमिर्दृप्तनृपव्याज० એ શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધનું રહસ્ય આ ચિત્રમાં છે. ગોમાતા ભગવાનને વિનવે છે' કે હવે અસુરોના ભારથી મુક્ત કરો. આ પ્રાચીન પરિસ્થિતિ અત્યારના યુગ ઉપર પણ રોશની ફેંકી રહી છે! તે પછી સ્વાગતસભાપતિ શ્રીસંતોજી મહારાજે પણ વિવેચન કીધું. આ ધ્વજા આચાર્યશ્રીના શ્રીહસ્તથી સ્થાપિત થઇ છે. એનાં રક્ષણ માટે સર્વસ્વનો ભોગ આપવા તૈયાર રહેવાનું છે. તે પછી એક ઉત્સાહી જોશદાર વક્તા શ્રીકમલનયનાચાર્યજી શાસ્ત્રીજીએ ગર્જના કીધી, કે "જેમ શ્રીશંકરાચાર્ય, રામાનુજાચાર્ય આદિ મહાનુભાવોએ ધર્મધ્વજા ઉઠાવીને સનાતન ધર્મનો ડંકો વગાડયો તેમ આજના આપણા સભાપતિશ્રીએ આ ધ્વજા ફરકાવી છે! આ જલગામ દંડકારણ્ય છે. ભગવાન્ શ્રીરામચંદ્રજીના સમયમાં દુષ્કર તપસ્યા કરનાર મહર્ષિઓની આ તપોભૂમિ હતી. છતાં એ મહર્ષિઓને સંતાપનારા રાક્ષસો પણ આ ભૂમિમાં હતા. એ રાક્ષસોના ત્રાસથી બચાવવાની મહર્ષિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને ભગવાને ચૌદ હજાર રાક્ષસોનો સંહાર કરીને આ ભૂમિને નિષ્કંટક કરી હતી. ફરી અહીં મુસલમાનો આવ્યા ત્યારે શ્રીશિવાજીએ તેમનો સંહાર કરી નાંખ્યો. આ ઉપરાંત ધર્મધ્વજના ગીતો પણ ગવાયા હતા, એવી રીતે સભામંડપ ઉત્તેજક ભાષણોથી ઉગ્ર બની ગયો હતો. ધ્વજામા બિરાજતા સાત્ત્વિક પ્રભુપાસે રાજસ તામસ વાતાવરણ પ્રસરતું હતુ! શ્રીમાન્ બાવાસાહબથી આ કેમ સહન થાય? આપશ્રીએ પોતાની સ્વતઃસિદ્ધ શાંત, સાત્ત્વિક સુમધુર શૈલીથી એક નાનું પણ છટાદાર અને અતિબોધક વ્યાખ્યાન કર્યું; અને મંડપમાંની તામસ ઉગ્રતાને બદલે શાંત ભક્તિરસ ભર્યો પવિત્ર પવન સંચરી રહ્યો. જનસમૂહનાં હૃદયોમા કોઇ દિવ્યભાવના ઉત્પન્ન થઈ. આ રહ્યું તે ભાષણઃ—

ઉપસ્થિત વિદ્વદ્વૃન્દ, મહિલાવૃન્દ અને સભ્યવૃન્દ! વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘના અધિવેશનને અંગે આજનો આ સમારોહ છે. અહીં એ સંઘનો આ સમારોહ કેમ થયો? વર્ણાશ્રમ અને સ્વરાજ્ય; એ બન્નેનો સંઘ કેવો? આદિ વિષયો ઉપર પછીથી કહીશ. હાલ તો આ ધર્મધ્વજના વિષયમાં કાંઇક કહેવાનો છું. આ દેશ ધર્મપ્રાણ છે. ધર્મ એજ ભારતનું સર્વસ્વ છે. 'ભારતીય જીવનની વિશિષ્ટતા એ ધર્મ જ છે. ધર્મનું રક્ષણ ભારતવર્ષ કરે છે અને ભારતવર્ષનું રક્ષણ ધર્મ કરે છે. અધર્મનો ત્રાસ કાંઇ આજે આ દેશમા પહેલોજ પ્રસર્યો નથી. ધર્મ પણ વારંવાર ગુપ્ત થઈ જાય છે. ધર્મનું સ્વરૂપ પ્રકટ–પ્રત્યક્ષ તો હોતુ પણ નથી. જ્યારે ધર્મ પોતાનું સ્વરૂપ ગુપ્ત કરી દે છે, સંકેલી લે છે ત્યારે અધર્મનું વાતાવરણ જામે છે. અધર્મથી ત્રાસ પામીને જનસમૂહ ધર્મના પણ રક્ષણહાર પ્રભુ–ધર્મીને શરણે જાય છે. જળની અતિતૃષાવાળો માણસ જેમ કોઇ જલપૂર્ણ તળાવને શરણે જાય તેમ દુઃખી પ્રજા આખરે ધર્મી પ્રભુને શરણે જાય છે. આ ધ્વજમાં તે જ વાત બતાવી છે. જુઓ, ભગવાન્ શેષશાયીના શરણમા પૃથ્વી અને બ્રહ્માદિક દેવો આવ્યા છે. ધર્મના ચાર પાદ (પગ) છે. તેમાં હવે કલિયુગમા તો માત્ર એક જ પાદ રહ્યો છે અને તે પણ શિથિલ–અવસ્થામાં. એ પાદનું ઉત્થાન થાય, ધર્મ સુરક્ષિત રહે તે માટે સર્વ સંઘશક્તિએ એકત્ર થઇને સતત પ્રયત્નો કરવા પડશે. શ્રીનારાયણનાં પવિત્ર ચિત્રથી અંકિત આ ધ્વજ બતાવે છે કે પૃથ્વી અસુરભારથી દબાઇ ગઇ હતી. તેણે પોતાનું આધિદૈવિક ગોમાતાનું સ્વરૂપ ગ્રહણ કર્યું. વળી સર્વ દેશોમાં મુખ્ય દેવ બ્રહ્માજી હોવાથી તેમને

અગ્રેસર બનાવીને મહાદેવજી વગેરે શ્રીનારાયણ પાસે આવ્યા. આ વાત કહેવાય છે, જ્યાં "પિષ્ટસ્ય પેષણં ભેષ્યત્વાય" એ મીમાંસાન્યાયથી ફરીને કહું છું નારાયણ એટલે, નારનું, જલનું-અયન-સ્થાન; એવો અર્થ છે. આ ગામનું નામ પણ જલગામ જ છે! (પ્રચંડ તાળીઓ!) અહીં દેવોની પેઠે આપણને શેષશાયી પ્રત્યક્ષ નથી. પણ સર્વના હૃદયમાં બિરાજતા એ પ્રભુનું ચિત્ર આ ધ્વજમાં છે! તો જલમાં સૂતેલા નારાયણની જેમ આજે આપણે જલગામમાં આ રાષ્ટ્રધ્વજમાં બિરાજતા શ્રીનારાયણની પ્રાર્થના કેમ ન કરીએ! જેમ ત્યાં પૃથ્વી આદિનો ભાર દૂર કરવા આજ્ઞા આપી તેમ અહીં પણ અલક્ષ્ય રીતે પ્રભુ ધર્મરક્ષણ કરવાની આજ્ઞા કરી રહ્યા છે. આ ઉપરાંત મને તો આ રહસ્યથી પણ એક વિલક્ષણ રહસ્ય ભાસે છે! શ્રીવિષ્ણુના ચરણારવિંદમાં અનેક ચિહ્ન છે તેમાં એક ચિહ્ન ધ્વજનું પણ છે. આ ધ્વજ તો અહીં ફરકી રહેલો પવિત્ર ધર્મધ્વજ જ છે એવી ભાવના જ હોવી જોઇએ. (જોશભેર તાળીઓ!) એ મહાન્ ધર્મધ્વજને સંભાળી રહેલા એક પ્રચંડ કાયાવાળા સ્વામી શિવાનંદજીએ એ ધ્વજ આ સમયે સભાપતિ આચાર્યશ્રીના પુનિત કરકમલમાં અર્પી દીધો!) એ ઝંડાને તો પ્રભુના ચરણરૂપ ગણીને પૂજવો જોઇએ. એ વાત નિઃસંદિગ્ધ જ છે. એ ચરણના શરણમાં રહીશું, એ ચરણની છાયાનો આશ્રય કરીશું તો આપણે નિર્ભય છીએ. જેમ બ્રહ્માદિકની સ્તુતિ સાંભળીને ભગવાને અવતાર લઇને, કાલનેમિ, કંસ વગેરેનો સંહાર કર્યો તેમ અત્યારે પણ એ જ પ્રભુ સહાયક છે. અમારો ઉદ્દેશ કોઇનું બૂરૂં ઇચ્છવાનો નથી. આ પવિત્ર ધ્વજ નીચે આપણા પ્રતિદ્વંદીઓ પ્રતિસ્પર્ધીઓ આવે તો તે પણ નિર્ભય જ રહેશે. કોઇના નાશની ઇચ્છા આપણા હૃદયમાં ન જ હોવી જોઇએ. આપણે તો માત્ર પ્રભુની પ્રાર્થના કરીએ કે, એમની દુર્મતિનો નાશ થાય અને પ્રભુ તેમને સુમતિનું દાન કરો. (કરતલધ્વનિ!)

મહાન્ ભવ્ય જુલૂસ-સરઘસ.

પ્રાચીન આર્યસંસ્કૃતિનો વિજયધ્વજ એ અલૌકિક સંસ્કૃતિના ઉદ્ધારક જગદ્‌ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના વંશજ અને મુખ્યપીઠસ્થિત એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીના મુબારક હાથથી ફરકાવ્યા બાદ એક ભવ્ય સરઘસ નગર-પર્યટનાર્થે અને ઉત્સાહ-અભિવૃદ્ધિ માટે યોજવામાં આવ્યું. સરઘસને મોખરે શરણાઇ વગાડતા વાજાવાળા હતા તે પછી એજ મહાન્ આકર્ષક દિવ્ય ધર્મધ્વજ ઉઠાવીને ભવ્યદેહ સ્વામી શિવાનંદજી ચાલતા હતા. તે પછી પંક્તિનો અને ધર્મપરાયણ જનસમૂહ ગોઠવાયો હતો. મધ્યમાં શ્રી. લક્ષ્મણશાસ્ત્રીજી 'શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ હરે મુરારે, હે નાથ નારાયણ વાસુદેવ !" એ શ્લોકથી ભગવન્નામનો ધ્વનિ કરતા તથા અસંખ્ય જનસમુદાય એ પવિત્ર નામોચ્ચારો ઝીલીને ગગનમાંના અપવિત્ર વાતાવરણનો નાશ કરતા હતા. આસુર વાતાવરણ તો સૂર્યોદય થતા અંધકારની જેમ કોણ જાણે ક્યાં લપાઇ ગયું હતું! "જગદ્‌ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જય" "શ્રીનાથજીકી જય" "શ્રીદ્વારિકાધીશકી જય" "શ્રીદામોદરલાલજીકી જય" "સનાતન ધર્મકી જય" ના મહાધ્વનિઓ સનાતનધર્મીય જનતા જાગૃત છે અને સ્વધર્મ માટે પ્રાણાર્પણ કરવા તૈયાર છે એમ દાખવતી હતી. સહજ અંધારૂં થતા અનેક ગ્યાસની બત્તીઓ પણ હાજર થઇ ગઇ. સરઘસમાં સહુથી પાછળ શ્રીમાન્ સભાપતિ મહોદય પોતાની મોટરમાં બિરાજ્યા હતા. સરઘસનાં રક્ષણાર્થે મજબૂત સ્વયંસેવકોએ ચોતરફ પહેરો રાખ્યો હતો. સભાપતિની મોટર પર તો અસાધારણ જનસમૂહ દર્શનાર્થે ધસતો હતો, તેથી અહીં તો વ્યવસ્થા જ મુશ્કેલ પડી હતી. શ્રીમાન્ સાથે આવેલા લશ્કરી સીપાહીઓએ પોતાનું સર્વ બળ ખર્ચીને મોટર પરનો ધસારો કાબૂમાં લીધો હતો. સ્થલે સ્થલે સરઘસના

સન્માનાર્થ દરવાજાઓ તથા મુદ્રાલેખો હતા! આ પ્રમાણે જયનાદ કરતું સરઘસ આખા ગામમાં ફરીને ઠેકાણે આવી પહોંચ્યું હતું. આ ધાર્મિક વિજયનાદ ન સાંખનારી ઘંટાકર્ણ જેવી કોઇ વ્યક્તિઓ રસ્તામાં રાષ્ટ્રીય નેતાઓની જયના પોકારો કરતી, પણ તેમના પોકારના પડઘા પણ તે સમયે પવિત્ર ધ્વનિ વાળાં જનતાનાં હૃદયો ઝીલી શકતાં ન હતાં. એ રીતે પહેલા દિવસનો કાર્યક્રમ સુખશાંતિથી પૂર્ણ થયો હતો. શ્રીમાનને રેલ્વેનો શ્રમ ઉજાગરો વગેરે હતાં પણ અધિવેશનને પાર ઉતારવાની વિચારણામાં દિવસે પણ નિદ્રા ન લીધી અને રાત્રે પણ ફરી વિચાર ચાલ્યો. શ્રીમાને તો શ્રમની દરકારજ ન કરી. ધર્મરક્ષણાર્થે ગમે તેવો ત્રાસ પણ સહી લીધો.

જલગામમાં અદ્ભુત જનસમૂહ—સંમેલનને અંગે આટલી મોટી જનસંખ્યા થશે એનો સ્વપ્ને પણ ખ્યાલ ન હતો. ઠંડીની મોસમ હતી છતાં તે સમયે શીતતાએ શાંત રૂપ ધરીને જનતાને કેટલીક સવડ પણ કરી આપી હતી. 'સંઘ'ની શાખા-પ્રશાખાઓના લગભગ પાંત્રીશસો પ્રતિનિધિ આવ્યા હતા. નેપાલ, બંગાલ, બિહાર, પંજાબ, સી. પી., મદ્રાસ, કર્નાટક, રજપૂતાના, ગુજરાત-કાઠિયાવાડ, આસામ, સિન્ધ, આદિ વિભાગોમાંથી અનેક ધાર્મિક સજ્જનો અને વિદ્વાનો હાજર થયા. ઉપરાંત અન્ય દર્શનકર્તાઓની ભીડનું તો પૂછવુંજ શું? જાણે માનવ મહાસાગર પૂર્ણ ભરતીએ ચડયો હતો. આખું જલગામ 'નરગામ'ના રૂપમાં ફેરવાઇ ગયું હતું. જનસમૂહની શ્રદ્ધાનો તો પાર પણ ન મળે. બધા આચાર્યશ્રીઓને વંદન કરી આવે! શુદ્ધાદ્વૈત-સંપ્રદાયના મુખ્ય પીઠના આચાર્યશ્રી પહેલવહેલાજ પધારેલા એટલે શ્રીમાનના બંગલા પાસે તો ચોવીસે કલાક મેદિની જામેલી રહેતી હતી. મહારાષ્ટ્રની (દક્ષિણની) ગ્રામ્ય જનતાને ખબર પણ ન હતી કે આ તે કયા સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી છે? કેટલાક તો બોલે કે "શ્રીનાથદ્વારા-મધ્યે શંકરાચાર્ય આહે." તો પણ તેમની શ્રદ્ધાની બલિહારી છે! શ્રીફળ લઈ લઇને આવે. શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રી એકજ વખત ચરણસ્પર્શ આપવાનો નિયમ અહીં જાળવી શક્યા નહિ. લગભગ કલાક બે કલાકે ચરણસ્પર્શ આપવાં પડતાં! વળી તેઓ ચરણસ્પર્શ પણ અજબ રીતથી કરે! બન્ને આંખો અને માથું ચરણને લગાડે ત્યારે જ તેમને સંતોષ થાય. સ્ત્રીપુરુષને એક સરખો જ ભાવ હતો. શ્રીલક્ષ્મણશાસ્ત્રી અને શ્રી સંતોજી મહારાજને તો આ માનવસાગરનું કેમ સ્વાગત કરવુ તેનો જ વિચાર થતો હતો! એ બન્ને મહાનુભાવોએ દિવસોથી ક્ષુધા, તૃષા, નિદ્રાનો ત્યાગ કર્યો હતો. વિદ્વાનોના આદર માટે જીવતોડ મહેનત કરી રહ્યા હતા. ધર્મનિષ્ઠ શેઠ જયકીસન રામવિલાસજીનું જીનીંગ ફેક્ટરીનું દોઢ માઇલનું કંપાઉંડ અને તેમાંનાં બધાં મકાનો તંબુઓ સ્વાગત માટે તૈયાર હતા! જાણે જલગામની સ્પર્ધા કરતું નરગામ જ ન વસ્યું હોય એવો દેખાવ થઇ ગયો હતો. તે ઉપરાંત ગામના મકાનો, સ્કૂલો વગેરે પણ રોક્યાં હતાં. ચારસો સ્વયંસેવકો હતા. ઉત્રાણ, બુરહાનપુર, ચાલીસગાંવ, મહાવીર વ્યાયામશાળા, બજરંગ વ્યાયામ શાળા આદિના સ્વયંસેવકોનો બંદોબસ્ત તારીફ લાયક હતો. બુરહાનપુરના સ્વયંસેવકો તો વૈષ્ણવો હતા. અધિવેશનની આ મહત્તા, આ ગૌરવ, આ ભવ્યતા વિરોધીઓના હૃદયમાં આગ સળગાવતી હતી. મહાયજ્ઞનો ધ્વંસ કરવા જેમ અસુર આવતા તેમ કેટલાક દ્વેષીઓએ આવીને ધર્મનિષ્ઠ અંત્યજોને બહેકાવવા માંડયા હતા. રાત્રે જાહેર રસ્તાઓમાં પણ ભાષણો કરીને સંમેલનવિરુદ્ધ તેમને ઉશ્કેરવાનું કામ ચાલુ કર્યું હતું.

અનિર્વર્ણનીય-મહાસમ્મેલન.

પૌષ સુદ ૯ સોમવારનો દિવસ તો મહારાષ્ટ્રના ધાર્મિક ઇતિહાસમાં યાદગાર રહી જશે. વીસ હજાર સંખ્યાનો જનસમૂહ ભાગ લઇ શકે તેવો મહાન્ વિશાલ મંડપ તૈયાર કરવામાં

સંઘનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘનો ઉદ્દેશ એ છે કે જન્મથી જ વર્ણવ્યવસ્થા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધ્યેયનું રક્ષણ થાય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું અત્યારે ચારે બાજુ પરથી ધર્મનો નાશ થઇ રહ્યો છે હવે તે તરફ બેદરકારી બતાવાશે તો ધર્મનો નાશ સમીપમા જ છે આ અંગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી સ્કૂલો અને કોલેજો મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માંડી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર જડવાદ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે આ આસુરી તાલીમ લઇને અનેક પ્રકારના કુતર્કો જનસમૂહ રતો થયો છે તેમજ તેવા કેળવાયલા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ઘુસી જઇને ધર્મનાશને થે દેશને લઇ જવા માગે છે સ્વચ્છંદ ખાનપાન, પુનર્લગ્ન, વર્ણાન્તરલગ્ન વેદ તીર્થાદિનો તિરસ્કાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે તેઓ વા સ્વધર્મનાશક સ્વરાજ્યની ચાહના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને કવા માટે જ આ સંઘની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેળવેલું સ્વરાજ્ય તે વરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ થશે સંઘનો ઉદ્દેશ હાલના પાર્લામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા નતો નથી ગાંધીજી પોતે પણ પાર્લામેન્ટની વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જો કે મોતીલાલ નહેરૂ ગેરે તો ભારત વર્ષને યુરોપ બનાવવા ચાહે છે પણ આ સંઘ તો રામરાજ્યને ચાહે છે ઉન્સીલના રગડાઓને માનતો નથી અહીં તો ક્ષત્રિય કુલોત્પન્ન ધર્મનિષ્ઠ પ્રજાપાલક એક જ જા જોઇએ આનું નામજ ખરૂં સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે ચાર વર્ણની હારનાને આ રામરાજ્યમા સ્થાન નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય સિદ્ધાંત જ એ છે કે તપોતાના ધર્મમા રહીને સિદ્ધિ મેળવવી એટલે મુસલમાનો કે ક્રિશ્ચિયનોના ધર્મમા ડખલ વાનો ઉદ્દેશ તો હોયજ નહિ મુસલમાન હિન્દુ ન બની શકે અને હીન્દુ મુસલમાન બની શકે એટલે ધર્મવિદ્વેષના મૂળ જ ઉખડી જશે આવો વિશાલ સનાતન આદર્શ જગતમ ાં છે ? મુસલમાનો તથા ઇસાઇઓએ બીજાઓને વટલાવવા માટે કેવા જુલ્મો કર્યા છે ?

કોંગ્રેસ અને સંઘ—આજકાલ સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માટે કોંગ્રેસ દેહાંત કષ્ટ સહન કરી રહી છે કોંગ્રેસે પણ વિદેશી બહિષ્કાર તથા સ્વદેશી પ્રચારના શસ્ત્રો લીધા છે પણ તેનું ધ્યેય અર્થ ન્ય છે આ સંઘ તો ધર્મદૃષ્ટિથી જુએ છે અને વિદેશી માલમા અપવિત્ર ચીજો છે તેને અડકવાનીએ ના પાડે છે આ વિષય પર ‘સંઘ’ પ્રયાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસના કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેમ કોંગ્રેસની બીજી ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ સંઘને કાંઇ વિરોધ નથી જ પણ કોંગ્રેસ જો ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તો તેનો વિરોધ તો સંઘે જ કરવો રહ્યો

ચાલુ રાજસત્તા—આચાર્યગણ અને પંડિતવૃન્દ ! યાદ રાખો કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધર્મરક્ષા થઇ શકે તેમ નથી સરકારે શિક્ષણને પોતાના પંજામાં ફસાવ્યું છે તેમાથી આપણે આપણી પ્રજાને મુક્ત કરવી એ આપણું સૌથી પહેલું કામ છે, અને તે કયું કામ છે, એકલી કેળવણી જ નહિ પણ અમારા ઋષિમુનિસંમત ધર્માર્થ કામ મોક્ષ રૂપ ચાર પુરુષાર્થ પણ તરવારે સર કરવાના છે માટે કેવળ મોઢાના ભાષણોથી અને કાગળપર લખેલા ઠરાવથી કાંઇ કાર્યસિદ્ધિ થવાની નથી બૌદ્ધ વિપ્લવના સમય કરતા પણ અધિક જોરથી અત્યારે યુરોપી રાજ્ય રચનાથી આપ લોકોનું ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઇ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ કળથી વિદેશીઓએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ કરી દીધુ છે રાજ્યની રચનાજ એવા પ્રકારની છે કે જેના સંબંધમા આવતા પૂર્વજોના સ્થાપેલા સામાજિક રાજકીય વગેરે માર્ગો તથા વ્યવસ્થાનો

आर्यसंस्कृति-सनातन धर्मके रक्षणार्थ महान् स्वार्थत्यागी
और
अखिलभारतवर्षीय स्वराज्य संघके स्थापकोंके अग्रणी नेता
धर्मप्राण विद्वद्वर श्रीयुत् लक्ष्मणशास्त्रीजी द्राविड.

સંઘનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘનો ઉદ્દેશ એ છે કે જન્મથી જ વર્ણવ્યવસ્થા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધ્યેયનું રક્ષણ થાય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું. અત્યારે ચારે બાજુ પરથી ધર્મનો નાશ થઇ રહ્યો છે. હવે તે તરફ બેદરકારી બતાવાશે તો ધર્મનો નાશ સમીપમા જ છે. આ અંગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી સ્કૂલો અને કોલેજો મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માંડી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર જડવાદ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે. આ આસુરી તાલીમ લઇને અનેક પ્રકારના કુતર્કો જનસમૂહ કરતો થયો છે. તેમજ તેવા કેળવાયલા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ઘુસી જઇને ધર્મનાશને પથે દેશને લઇ જવા માગે છે. સ્વચ્છંદ ખાનપાન, પુનર્લગ્ન, વર્ણાન્તરલગ્ન વેદ તીર્થાદિનો તિરસ્કાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે. તેઓ આવા સ્વધર્મનાશક સ્વરાજ્યની ચાહના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને રોકવા માટે જ આ સંઘની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેળવેલુ સ્વરાજ્ય તે સ્વરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ થશે સંઘનો ઉદ્દેશ હાલના પાર્લામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા માનતો નથી ગાંધીજી પોતે પણ પાર્લામેન્ટની વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જો કે મોતીલાલ નહેરૂ વગેરે તો ભારત વર્ષને યુરોપ બનાવવા ચાહે છે પણ આ સંઘ તો રામરાજ્યને ચાહે છે. કાઉન્સીલના રગડાઓને માનતો નથી. અહીં તો ક્ષત્રિય કુલોત્પન્ન ધર્મનિષ્ઠ પ્રજાપાલક એક જ રાજા જોઇએ. આનું નામજ ખરૂં સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે ચાર વર્ણની બહારનાને આ રામરાજ્યમા સ્થાન નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય સિદ્ધાંત જ એ છે કે, પોતપોતાના ધર્મમા રહીને સિદ્ધિ મેળવવી એટલે મુસલમાનો કે ક્રિશ્ચિયનોના ધર્મમા દખલ કરવાનો ઉદ્દેશ તો હોયજ નહિ મુસલમાન હિન્દુ ન બની શકે અને હીન્દુ મુસલમાન બની ન શકે. એટલે ધર્મવિદ્વેષના મૂળ જ ઉખડી જશે આવો વિશાલ સનાતન આદર્શ જગત્મા ક્યા છે? મુસલમાનો તથા ઇસાઇઓએ બીજાઓને વટલાવવા માટે કેવા જુલ્મો કર્યાં છે?

કોંગ્રેસ અને સંઘ—આજકાલ સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માટે કોંગ્રેસ દેહાંત કષ્ટ સહન કરી રહી ? કોંગ્રેસે પણ વિદેશી બહિષ્કાર તથા સ્વદેશી પ્રચારના શસ્ત્રો લીધા છે. પણ તેનું ધ્યેય અર્થ છે. આ સંઘ તો ધર્મદૃષ્ટિથી જુએ છે અને વિદેશી માલમા અપવિત્ર ચીજો છે તેને અડકવાનીએ ના પાડે છે. આ વિષય પર 'સંઘ' પ્રયાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસના કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેમ કોંગ્રેસની બીજી ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ સંઘને કાંઇ વિરોધ નથી જ. પણ કોંગ્રેસ જો ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તો તેનો વિરોધ તો સંઘે જ કરવો રહ્યો

ચાલુ રાજસત્તા—આચાર્યગણ અને પંડિતવૃન્દ! યાદ રાખો કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધર્મરક્ષા થઇ શકે તેમ નથી સરકારે શિક્ષણને પોતાના પંજામા ફસાવ્યું છે. તેમાથી આપણી ભાવી પ્રજાને મુક્ત કરવી એ આપણુ સૌથી પહેલુ કામ છે, અને તે કઠણ કાર્ય છે, એકલી કેળવણી જ નહિ પણ અમારા ઋષિમુનિસંમત ધર્માર્થ કામ મોક્ષ રૂપ ,ચાર પુરુષાર્થ પણ સરકારે સર કરેલા છે. માટે કેવળ મોઢાના ભાષણોથી અને કાગળપર લખેલા ઠરાવથી કાંઇ કાર્યસિદ્ધિ થવાની નથી 'બૌદ્ધ વિપ્લવના સમય કરતા પણ અધિક જોરથી અત્યારે યુરોપી રાજ્ય રચનાથી આપ લોકોનુ ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઇ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ કળથી વિદેશીઓએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ' કરી દીધુ છે. રાજ્યની રચનાજ એવા પ્રકારની છે કે જેના સંબંધમા આપના પૂર્વજોના સ્થાપેલા સામાજિક રાજકીય વગેરે માર્ગો તથા વ્યવસ્થાનો

शुद्धाद्वैत—

आर्यसंस्कृति-सनातन धर्मके रक्षणार्थ महान स्वार्थत्यागी
और
अखिलभारतवर्षीय स्वराज्य संघके स्थापकोंके अग्रणी नेता
धर्मप्राण विद्वद्वर श्रीयुत् लक्ष्मणशास्त्रीजी द्राविड.

अखिलभारतवर्षीयवर्णाश्रम स्वराज्यसंघके पर स्थापक
और
जलगांवके चतुर्थमहाधिवेशनके स्वागत सभापति
श्रीसन्तोजी महाराज, (कुकरमुंडा)

Sahitya Art P. Ahmedabad

આપણુને અનુભવમાં ઉપજે છે. ધર્મપ્રેમી મુસલમાનો પણ એ વિદેશી રાજ્યની કળામાં ફસાતાં ખિલાફત જડમૂળથી ઉખડી ગઈ. એજ દશા ચીન જાપાનની થઈ. એ વિદેશીઓની આસુરી માયાની વ્યામોહક યુક્તિ અદ્ભુત રીતે ભાન ભૂલાવનારી છે.

અહીં ભારતમાં પણ વિદેશીઓના વ્યાસંગથી ઋષિમુનિઓની આદર્શભૂત ચાતુર્વર્ણ્યાત્મક સમાજરચના અને રાજકીય વિભાગ નાશ પામી રહ્યા છે. તેમને પુનર્જીવિત કરવા છે. જર્મનીની રાજ્યકારભારની માયાવી જાળ ઓર છે. મતાધિકાર ક્યા નૈતિક સિદ્ધાન્ત પર આપવામાં આવ્યો છે, તેની તો કોઈ તપાસ કરો. ત્રણ ત્રણ વર્ષે ચૂટણી, કોઈ પણ નૈતિક ધોરણ વિનાની મતદારી અને ઉમેદવારી! આવી રીતે ચાલતો કારભાર તે પણ ઓરજ તરેહનો હોય એમાં શી નવાઇ. એનો પરિણામી દાખલો એ સારડા કાયદો છે. સુધારકોના મતાધિક્યથી એ કાયદો થયો. સનાતનીઓ કમર કસે તો એ એસેમ્બલીમાં એ કાયદો રદ્દ કરાવવો કઠણ નથી. આજ દશા રાજનૈતિક તથા સામાજિક પ્રસ્તાવોની છે. જો દેશની રાજકીય સભા અસ્થિર, તો તેથી શું સ્થિર હિતકાર્ય થાય ? પાશ્ચાત્ય પ્રજાઓ આમજ ચગડોળે ચઢી છે.

આપણા દેશની વ્યવસ્થા આપણા સ્થિર સનાતન ઋષિ કૃત નિયમો જે અપૌરુષેય વેદપર સ્થિત છે, તે પ્રમાણે થયેલી છે. અમારી આ ધર્મવ્યવસ્થાનો નાશ કરનાર આસુરી રાજવિભાગ છે, વિદેશી લોકો નથી, તેથી એ આસુરી રાજકીય વિભાગનો જ નાશ કરવાની જરૂર છે. આદ્ય શ્રીકુમારિલ ભટ્ટાચાર્ય વગેરેએ જેમ પોતાના તપોબળથી બૌદ્ધ આક્રમણને પાછું હઠાવી દીધું, તે પ્રમાણે કાર્ય કરવા આ અધિવેશન કર્યું છે.

વેદવેદાંગનિષ્ણાત પંડિતોનો હ્રાસ થતો જાય છે તથા પ્રાચીન વિદ્યાનો પુનરુદ્ધાર પણ કરવાનું કાર્ય ઉભું થયુ છે. વિદ્યાપીઠની રચના કેવી હોવી જોઇએ, તે વિષે મારા નમ્ર વિચાર આપની આગળ મુકું છું. સનાતન ધર્મ જાતિ અને તે તે જાતિના ભિન્નભિન્ન કર્ત્તવ્યોના વિવેકપર આધાર આપી રહ્યો છે. શિક્ષણ યથાધિકાર હોવું જોઇયે. કેવળ શિલ્પવિદ્યા કળા જ નહિ, પણ પ્રાચીન ગ્રન્થોના પઠનપાઠન પર પણ ધ્યાન અપાવુ જોઇએ. સનાતન ધર્મ પર હુમલા કરનારાઓનાં લોકવંચક લખાણો ઝેરી બહાર પડે છે, તેથી તેના ખંડનનું કામ પણ જોરથી અને બહોળા વિસ્તારમા થવું જરૂરનું છે. સનાતની સમાજ ઘોર નિદ્રામાં પડ્યો છે. સર્વની જડ પુરોહિતો તો અજ્ઞાનમા ડુબ્યા છે. તેથી સર્વનો ત્યાગ કરી આ બાબતે ભગીરથ પ્રયત્ન કરવો પડશે. મંદિર મઠ અને ધર્માદા ખાતાઓના મહન્તો વહીવટદારો વગેરે પૈસા સાથે પ્રમાદમાં પડ્યા છે, તેમને પણ ધર્મના કામમાં ઉપયોગી બનાવવા પડશે. એ બાબત આ સંઘે દેખરેખ રાખવી પડશે. નહિ તો સુધરેલ બગાડકોની આંખો ધર્મદાયની મિલકત કાયદાઓ કરી કબજે કરવા પર લાગેલી છે, આચાર્યપીઠોની પણ એજ દશાનો ભય છે. તેથી તેમણે પણ કમર કસી ધર્મરક્ષાર્થ આ સંઘ સાથે કામ કરવુ જોઇએ. આ પ્રમાણે આ અધિવેશનને અનેક કાર્ય કરવાનાં છે તેમાં જન ધનની પણ ભારે જરૂર છે. આ અધિવેશન કોઇ સંસ્થાનો નાશ કરવાને થયું નથી. પણ ધર્મશિથિલતા છોડી સનાતનીઓ યથાશક્તિ શ્રદ્ધાપૂર્વક આચારપરિપાલન કરે તેવો યત્ન કરવાને આ સંઘ થયો છે.

સામયિક આંદોલનોનો આદર—આ સમયે ભારતવાસીઓ ઘણુ જ કષ્ટમય જીવન વીતાવી રહ્યા છે. આવા વખતમાં એકસંપીમાં અટકાવ થાય તેવુ કાર્ય સંઘ નહિ કરે એ નિશ્ચ

છે. આ વખતે જે આંદોલન ચાલે છે, મુંબાઇ, ધારાસણા, બારડોલી, ખેડા વગેરે સ્થળે જનસમૂહે જે તનમનધનનો મહાન્ ભોગ આપ્યો છે તેને માટે ઘણા ભાઇઓ ધન્યવાદ અર્પી રહ્યા છે. સરકારને પણ યાજ્ઞવલ્કય મહર્ષિનું આ વાક્ય અમે અર્પણ કરીએ છીએઃ—"પ્રજાને પીડવાના સંતાપથી પેદા થયલો અગ્નિ, રાજાના કુલને રાજલક્ષ્મીને, રાજાના પ્રાણને બાળી નાખ્યા સિવાય પાછો ફરતો નથી." આ શ્લોક સરકાર માટે એક ભયચિહ્નરૂપ થઈ પડવો જોઇએ. આ વખતે આ સંઘ સનાતની 'જનસમૂહને જોરશોરથી દુંદુભિનાદ કરીને કહે છે કે **સ્વદેશી વસ્ત્રો જ સનાતનીઓ પહેરે, મીલના પણ કપડાં ન પહેરતાં શુદ્ધ ખાદીના રેંટીયાથી કાંતેલાં અને શાળોમાં વણેલાં કપડાંનો જ સ્વીકાર કરે.**

આ અધિવેશન માટે જે બંધુઓએ સહાયતા કરી છે તે બધાને શતશઃ ધન્યવાદ ઘટે છે.

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

તર્કપંચાનનની ગર્જના.

તે પછી અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘના પ્રથમ વર્ષના પ્રમુખ શ્રીમાન્ પંચાનનજી તર્કરત્ન મહોદયે પરિષદ્‌માં ભાષણ કરતા જણાવ્યું કેઃ—

માનનીય ધર્માનુરાગી સભાસદ ગણ! કરુણામય ભગવાને જેવી અનુકંપા ભારતવર્ષ પર પ્રારંભથીજ રાખી છે તેવો સૌભાગ્યમય સમય આજ પણ જોવામાં આવે છે. કાલ સ્વભાવથી દિવસ રાત્રિ અને શિયાળો ઉનાળો જે રીતે થોડા સ્થાન ભેદ પ્રમાણે ભાવમાં ન્યૂનાધિક થાય છે તેજ રીતે ભગવાને હિંદુસ્થાનમા એ પ્રકૃતિસિદ્ધ સ્વભાવ બનાવી રાખેલ છે. અહીં જે પણ અશુભ આવે છે તે શુભ ફળ દેવાવાળું બની જાય છે, એ વાત પુરાણાદિ પ્રાચીન ઇતિહાસો જોવાથી જાણવામાં આવી જાય છે. ધર્મથી શુભ થાય છે અને અધર્મથી અશુભ થાય છે. એ ધર્મ શ્રુતિ સ્મૃતિદ્વારા જ પ્રમાણિત થઇ શકે છે.

પ્રાચીન સમયમા વેન નામના રાજાએ ધર્મનાશ કરીને વર્ણસંકરતા ફેલાવવાનો આરંભ કરી દીધો હતો. કિંતુ તે વખતે તેના શરીરનું મથન કરવાથી ઉત્પન્ન થયેલા પૃથુ મહારાજે કેવળ ધર્મનીજ રક્ષા કરી નહિ પણ તેને—ધર્મને વિશેષ યશસ્વી બનાવ્યો. વેનનું તે અશુભ આચરણ ભારતવર્ષની સ્વાભાવિક પરંપરાનુસાર પરિણામે અત્યંત શુભકારક જ નિવડ્યું. જેથી પછી બૌદ્ધ વિપ્લવનો સમય આવ્યો, જેણે પ્રથમ તો વર્ણાશ્રમ ધર્મને ઉખેડવાજ યત્ન કર્યો પરંતુ આગળ ચાલતા તેજ તેની વૃદ્ધિનું કારણ બન્યું. કારણ તે વખતે મહામુનિ વાત્સ્યાયન, શબર સ્વામી, કુમારિલ ભટ્ટ, ઉદયનાચાર્ય અને વિશેષ કરી પૂજ્યપાદ શ્રીશંકરાચાર્યજીનો ધર્મ તત્ત્વ પ્રકાશન પ્રભાવ તે લુપ્ત થતા ધર્મને રક્ષીને અધિક સુદૃઢ બનાવવામાં સહાયક થયો

યદિ બૌદ્ધવિપ્લવ થયો ન હતે તો આપણને એવા મહાત્માના વચનામૃતથી નિર્ગત પ્રધાન ધાર્મિક વિવેચનોનો લાભ મેળવીને સમયની બગડેલી ગતિનો મુકાબલો કરવાનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાત નહિ. આ સંબંધમાં આ બે ઉદાહરણ બસ થશે. એથી સમજાશે કે ભારતવર્ષ પર આવેલું અધર્મમૂલક અશુભ તેને માટે શુભનુંજ કારણ બની જાય છે. એવુંજ શુભ લક્ષણ આ વખતે પણ દૃષ્ટિગોચર થાય છે.

આપ લોક પ્રત્યક્ષજ જોઈ રહ્યા છો કે વિદેશી શિક્ષણથી વર્ણાશ્રમ ધર્મનો મોટો સંહાર થઇ રહ્યો છે. રાજનૈતિક પરાધીનતા હટાવવાને માટે સ્વરાજ્યપ્રતિપાદક અહિંસામૂલક અસહકારનું જે વર્ણાશ્રમધર્માનુસાર વિધાન અને વ્યવહાર ઋષિઓ દ્વારા બનેલ છે તેનો પણ લોક ત્યાગ કરી રહ્યા છે. અમારા ધર્મશાસ્ત્રનો સિદ્ધાંત છે કે ભારતવર્ષજ પૃથ્વીનું સર્વ શ્રેષ્ઠ સ્થાન અને શુભ કાર્યભૂમિ છે. એના વિરુદ્ધ આચરણ કરીને જે ભારતીયો મ્લેચ્છોનો સંસર્ગ કરે છે, મ્લેચ્છ દેશોમા જાય છે અથવા જે બ્રાહ્મણ મ્લેચ્છ ભાષા શીખે છે તેને મહાન્ દોષભાગી થવું પડે છે. યદિ હિંદુસ્થાનીઓ આ પ્રમાણે બગડી ન જતે તો મ્લેચ્છોનો માત્ર જમીનપર અધિકાર રહેવા છતાં પણ હિંદુસ્થાનીઓનું "સ્વરાજ્ય" કદાપિ નષ્ટ નહિ થાત અને સાથે સહકાર કરવાને કોણ પ્રવૃત્ત થાત! આજકાલની જેટલી વિદેશી વ્યવસાયની ચીજો છે તે તમામ અમારા શાસ્ત્રની આજ્ઞા પ્રમાણે હમેશા ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે. હાડકાથી સાફ કરેલી ખાંડ, દારૂ ભળેલી દવાઓ, ચરબીવાળું કાપડ, બીસ્કુટ વગેરે મ્લેચ્છોનું અન્ન, માટીથી બનાવેલા ચીની વાસણ જે એકવાર મોઢું-લગાડવાથી એંઠા થઇ જાય છે તે, ફોસફરસની બનેલી દીવાસળી, વિદેશી મીઠું અને સ્વાભાવિક રીતેજ અશુદ્ધ માદક દ્રવ્યો વગેરે વાતો અમારૂં શાસ્ત્ર ક્યાં બતાવે છે? એવી શાસ્ત્રવિરુદ્ધ વિદેશી વસ્તુઓ ખરીદીને કોણ નરકમાં જવા માગે? જો શાસ્ત્રોપર શ્રદ્ધા રહત તો! આ રીતે સનાતન ધર્મનું પાલન થાત તો વિદેશીઓનો વ્યવસાય અહીંજ જામીજ શકત નહિ.

માટે આપણે ન વિદેશીઓથી મિત્રતા કરવી કે ન વિરોધ કરવો, કારણ બેઉ પ્રકારથી તેઓનો સંસર્ગ થઈ જાય છે માટે જેને સંસર્ગ થઈ ગયેલ છે તેણે તે ત્યાગીને આપણા ઉદ્ધારના માટે આપણા શાસ્ત્રપર નજર કરવી જોઇએ. શાસ્ત્રની રહસ્યવિદ્યાઓ હૃદયંગમ કરવી જોઇએ, લુપ્ત વિદ્યાઓનો પુનરુદ્ધાર કરવો જોઇએ અને યથાધિકાર અધ્યાત્મજ્ઞાન માટે યત્ન કરવો જોઇએ અર્થાત્ આપણે યથાવિધિ જો સનાનન ધમનું પાલન કરીએ તો સ્વરાજ્ય આપણુને એની મેળે પ્રાપ્ત થાય તેમ છે.

ત્યારબાદ સહાનુભૂતિના તારો અને પત્રોનો મોટો થોકડો લઇને સંમેલનના મંત્રી શ્રીયુત દત્તાત્રય જોષી બી. એ. એલ્. એલ્. બી. રંગભૂમિ ઉપર આવ્યા. તાર અને પત્રો મોકલનારાઓનાં નામો જ માત્ર વાંચી શકયા. તદનંતર એક જ સમયે જુદાજુદા વિદ્વાનોએ ચારે આચાર્યશ્રીઓને પુષ્પહાર ધરાવીને સ્વાગત કર્યું ત્યારપછી સર્વ આચાર્યશ્રીઓને ક્રમવાર સંમેલનને પ્રાથમિક શુભ આશીર્વાદાત્મક વ્યાખ્યાનો કર્યાં.

શ્રીશંકરાચાર્યજીએ કહ્યું કેઃ—"પરિસ્થિતિ ભયંકર છે. ધર્મબુદ્ધિમાં દક્ષતા રહી નથી ઉદ્ધારના માર્ગ સૂજતા નથી. "પોતપોતાના કર્મમાં રહીને જ સિદ્ધિ મેળવી શકાય" એ શાસ્ત્રવચન કોણ સાંભળે છે? સ્વતંત્રતા માટેના વ્યર્થ પ્રયાસો થઇ રહ્યા છે, ધર્મરહિત સ્વતંત્રતાથી તો ભારતવર્ષનું પતન જ થશે. ભારતવર્ષની અજોડ પ્રતિષ્ઠા ધર્મથી જ છે. ધર્મના આદર્શથી ભ્રષ્ટ બનીને, પૂર્વજોની કીર્તિને બટ્ટો લગાડી, અધાર્મિકતાને ખરીદી શું લહાણ લેવાના છે? હવે તો ધર્મનિષ્ઠ જનતાએ સંઘબદ્ધ થઇને ધર્મરક્ષા કરવી રહી. એ યત્નમાં બધા યશસ્વી બનો."

શ્રીરામાનુજાચાર્યજી સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કેઃ—"અત્યારે તો લોકોને સ્વધર્મનો ત્યાગ જ કરી નાખવો છે, અને દુઃખ વહોરવાં છે. જો ધર્મમાં બધા ચાલે તો વિપત્તિનું નામોનિશાનજ

ન રહે. સમાજની આ અધોગતિનું કારણ આધુનિક અંગ્રેજી શિક્ષણ છે. બાળકોને કૂવામાં ધકેલવામાં આવે અને તેથી જેમ તેનો સર્વનાશ થાય તેમ આધુનિક શિક્ષાલયોમાં બાળકોને મોકલાય છે, અને ધર્મહીન દશા અનુભવાય છે. જે સત્તાએ આ સ્થિતિ કરી છે, તેના હાથનાં વિદેશી કપડાં પહેરતાં પણ શરમ આવતી નથી. વસ્ત્ર તો ઠીક પણ તે દેશના અપવિત્ર બિસ્કુટ ખાઇને પોતાનું અંતર પણ ભ્રષ્ટ કરાય છે. આને માટે ગુનાહગાર આપણે જ છીએ. અંગ્રેજો કેટલા સ્વાભિમાની છે ? બાળક જન્મવાનું હોય છે ત્યારે અહીંથી વિલાયતમાં ચાલ્યા જાય છે. જ્યારે આપણા દેશીઓની મૂર્ખતા જુઓ. તેઓ પોતાના બાળકો વિલાયતમાં જન્મે એમ ઇચ્છે છે! વિદેશીઓએ નિજ બાહુબલથી આ દેશની સત્તા મેળવી નથી, પણ છળકપટથી મેળવી છે. એ જ છળકપટમાં ફસાયલા દેશીઓ આપણા ઘરને ઉજ્જડ કરવા મથી રહ્યા છે ! ચારે વર્ણ વિરાટના જુદાંજુદાં અંગરૂપ છે, પોતપોતાના ગુણકર્માનુસાર વર્તે તો ઉદ્ધાર જ છે. આમાં ઉચ્ચ નીચતાનો ટંટો જ ક્યાં રહ્યો ? "અનાચારથી બધા ચાંડાલ બની જાય છે" એમ સ્પષ્ટ કહ્યું છે. માટે પોતપોતાનો ધર્મ નભાવીને દેશની પ્રતિષ્ઠા સિદ્ધ કરો, ઉઠો, જાગૃત થાઓ."

પ્રતિવાદિભયંકરાચાર્યજીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કેઃ—"અહીં પ્રારંભમાં અમારી પાસેથી આશીર્વાદની ઇચ્છા રાખવામાં આવી છે. અમારા આશીર્વાદથી બધાનું કલ્યાણ થાય એવું સામર્થ્ય રહ્યું નથી કોઇ જમાનો તેવો હશે, પણ અત્યારે તો 'મુખ પરાયા અન્નથી કાણું કર્યું, હાથ પરાયા દાનથી સળગાવ્યા તો એ શક્તિ ક્યાંથી આવવાની હતી ?' હવે તો આપણે બધાએ મળીને પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની છે. કારણ કે સમયસમય પર અવતાર લઇને ધર્મનો રક્ષણહાર તે જ બને છે ! આપણી પ્રાર્થના તે જરૂર સાંભળશે, એવો આપણા હૃદયમાં વિશ્વાસ હોવો જોઇએ. આપણે બધાએ ધર્મનિષ્ઠ થવું ઘટે. ધર્માનુરાગી બનીને, ઐકસંપ જાળવીને પ્રાચીન મર્યાદાનુસાર ચાલવું રહ્યું. તો સ્વરાજ્ય પાસે જ છે."

સભાપતિ શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રીના આશીર્વાદ.

આચાર્યવર્ય ગો. શ્રી ૬ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયે બુલંદ અવાજે એક નાનું, પણ છટાદાર વિવેચન બધા આચાર્યોના વ્યાખ્યાન પછી કર્યું. આપશ્રીએ રંગભૂમિ ઉપર ઉભા થઇને ભાષણ શરૂ કર્યું તેથી સભામાં શાંતિ પ્રસરી ગઈ. એ ટુંકું ભાષણ આ પ્રકારે છે.

यादृशोऽसि हेर कृष्ण । तादृशाय नमोनमः ॥ यादृशोऽस्मि हरे कृष्ण तादृशं मा च पालय ॥

બધા ઉપસ્થિત આચાર્યવૃન્દે આ વિષયમાં ખૂબ કહ્યું છે. પોતપોતાના હાર્દ ઉદ્‌ગારો વ્યક્ત કરીને આશીર્વાદો પણ આપ્યા છે. પ્રસ્તુત પરિસ્થિતિમાં શું કર્તવ્ય છે તેનું પણ પ્રતિપાદન થઇ ગયું. કલિયુગમાં સંઘશક્તિનું પ્રાબલ્ય છે. સર્વ આચાર્યો મળીને જે કહે, જે કાર્ય પ્રારંભે તેમાં ભગવાન્ શક્તિ પ્રેરે છે. મારામાં તો આશીર્વાદ આપવાનું સામર્થ્ય નથી. મારા કરતાં ઘણા વયોવૃદ્ધ એવા આચાર્યોએ અહીં ઉપસ્થિત થઇ આશીર્વાદ આપી દીધા છે જ, તો હું શું આશીર્વાદ આપું ? અમારા એ આશીર્વાદ માત્ર જ નહિ, પણ અહીં પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને શરણે આપણે રહેવાનું છે, માટે પ્રથમ તેને વંદન કરો! [એમ બોલીને શ્રીમાને સ્વર્ણસિંહાસન પર મધ્યમાં બિરાજતા વેદભગવાન્ પાસે જ્યારે શિર ઝુકાવ્યું ત્યારે તો સભામાં કોઈ અનેરો પ્રભાવ પડ્યો અને 'ધન્ય હો, ધન્ય હો!' એ અવાજથી આખો મંડપ ગાજી

ઠાયો! કરતલ ધ્વનિથી ઉત્સાહ તથા દિવ્ય શ્રદ્ધાના ફેલાવાનો પુરાવો આપતા જનસમાજે શ્રીમાન્‌ના અને વેદભગવાન્‌ના 'જયનાદ' કરી મૂક્યા!] એ જ વેદભગવાનના આશીર્વાદથી બધું કાર્ય પાર ઉતરશે કારણ કે વેદભગવાન અનાદિસિદ્ધ છે. એ વેદ શ્રીકૃષ્ણના નિઃશ્વાસરૂપ છે. શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન્ જ કાયિક, વાચિક અને માનસિક આશીર્વાદ આપે તો કૃતાર્થતા છે. કોઇ પૂછે કે આ સંઘમાં વર્ણાશ્રમ અને સ્વરાજ્ય બે એક કેમ થઈ ગયાં ? એ બન્નેનો સંબંધ શો ? ધર્મ તો એક વૃષરૂપ છે અને કલિયુગમાં માત્ર તેનો એક જ પાદ, તે પણ શિથિલ અવસ્થામાં છે પણ હજાર હાથે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન્ તેની રક્ષા કરે છે. વર્ણાશ્રમ પણ ધર્મનું એક અંગ છે. એની રક્ષા સ્વરાજ્યથી જ થઇ શકે. પરીક્ષિત રાજા જેવા સમ્રાટોની સત્તામાં એ ધર્મ સુરક્ષિત હતો. તે વખતે તો માત્ર એક જ મહારાજા પરીક્ષિત હતા. અહીં તો અત્યારે અનેક આચાર્યો, પંડિતો આદિ આવેલા છે. તો જરૂર વર્ણાશ્રમરક્ષા થશે જ. જો વર્ણાશ્રમને હટાવીને કેવળ 'સ્વરાજ્ય' સિદ્ધિ કરવામાં આવશે તો તે 'સ્વરાજ્ય'નો અર્થ શો ? પોતાનું સ્વત્વ—ભારતીયત્વ નષ્ટ કરીને સ્વરાજ્ય મેળવ્યું તો શું ? સ્વરૂપ તો નાશ પામ્યું ત્યાં સ્વ—પોતાનું રાજ્ય ક્યાં રહ્યું ? એ તો કોઇ વિદેશી કે વિધર્મીઓનાં રાજ્ય જેવું જ થાય. ભારતીય સંસ્કૃતિનો નાશ થયા પછીનું સ્વરાજ્ય કામનું શું છે ? પોતે જે ડાળ પર—વૃક્ષશાખાની ઉપર ફલની ઇચ્છાથી ચઢ્યા, તે જ શાખાને છેદવાની મૂર્ખતા કરનારને શું ફલની પ્રાપ્તિ થઈ શકશે ? ના, કદી નહિ. આજકાલ 'સ્વરાજ્ય'ના પોકારો થઇ રહ્યા છે, પણ સ્વરાજ્યનો અર્થ શો ? સ્વ એટલે મનુષ્યો, તેમનું રાજ્ય તે સ્વરાજ્ય, એ જ અર્થ કે બીજો છે ? તો હવે મનુષ્ય એટલે શું ? તો એ જ ધ્વનિ નિકળશે કે જે પોતાના પરંપરાગત ધર્મનું રક્ષણ કરે. લૌકિકની સાથે અલૌકિક તરફ નજર રાખે. આ દુન્યવી સુખમાં જ માત્ર ન મોહાતાં ધર્મનું રક્ષણ કરીને અલૌકિક ધ્યેય સિદ્ધ કરે એનું નામ મનુષ્ય. એ ધર્મનો જ જ્યાં નાશ થયો ત્યાં મનુષ્યતા—ઇન્સાનીયત ક્યાં રહેવાની હતી ? धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः । ધર્મથી હીન થતાં પશુના જ પ્રાય થશે. જો પશુના પ્રાય થઇ તો પશુને પશુ પર શાસન કરવાનો કશો હક્ક નથી અને તેવું શાસન ચાલતું પણ નથી ધર્મ વિના સુખશાંતિ જ નથી. મનુષ્યતાનું લક્ષણ એ જ છે કે ધર્મરક્ષણપૂર્વક શાસન કરવું એ માણસાઇ ગણાય. આનું જ નામ ખરું સ્વરાજ્ય છે. ભગવાન્ પુનઃપુનઃ ધર્મરક્ષણાર્થ પ્રકટ થાય છે, અને ધર્મરક્ષણ કરીને, ધર્મદ્રોહી શિશુપાલ વગેરેનો સંહાર પણ કરે છે. એ ભગવાન્ શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સર્વની ધર્મશ્રદ્ધા સ્થિર અને બળવતી બનાવે એ જ પ્રાર્થના છે." (તાળીઓ)

સભાપતિનું વરણ.

તે પછી સભાપતિની વરણીનું કાર્ય હાથ ધરવામાં આવતાં પ્રતિવાદિભયંકરાચાર્યજી અને સંખેશ્વરપીઠાચાર્ય શંકરાચાર્ય ઉઠીને ચાલતા થયા! આખી સભાને આ રુચ્યું નહિ. કારણ કે હવે કાર્યક્રમ બહુ ન હતો. તેમજ સર્વ આચાર્યોના સહયોગની જનતા ઉપર અસર પણ ઘણી જ થાય. ખેર, પ્રભુએ એ બન્નેને એવી મત પ્રેરી હશે! પણ ઉદાર વિચારના શ્રીરામાનુજાચાર્ય શ્રીયદુગિરિપીઠાધિપતિ યતિરાજ સ્વામી તો બિરાજમાન રહ્યા. એ વૃદ્ધ અને સમર્થ વિદ્વાનના સ્નેહપૂર્ણ વ્યવહાર વિષે હવે પછી ઉલ્લેખ કરીશું. મહામહોપાધ્યાય પંડિત શ્રીગિરિધર શર્મા રંગભૂમિ ઉપર આવ્યા. પ્રચંડ ધ્વનિથી તેમણે આ અધિવેશનનું સુકાન જગદ્ગુરુ—શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના મુખ્યપીઠસ્થિત આચાર્યવર્ય ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયના કરકમલમાં સોંપવાની દરખાસ્ત રજુ કરી. આ વખતે એ વિદ્વાન્ વક્તાએ એક જોરદાર વ્યાખ્યાન પણ કર્યું. તેમાંના

આ ઉદ્‌ગારો તો તેમના નોધવા લાયક છેઃ—આર્ય સંસ્કૃતિ, વૈદિક સંસ્કૃતિના છેલ્લા મહાન્ ઉદ્ધારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી થયા કે જેઓ શ્રીએ ભારત વર્ષમા ભક્તિ-મંદાકિની ગંગાનો પ્રવાહ ફેલાવી દીધો. એઓશ્રીનું પ્રધાનપીઠ શ્રીનાથદ્વારા છે. તે સ્થાનને આપણા સભાપતિશ્રીના શ્રીપિતૃચરણ આચાર્યશ્રી અલંકૃત કરે છે. આપણા સભાપતિશ્રી તો યુવરાજ છે. જેમ કોઇ સમ્રાટ દિગ્વિજય માટે પોતાના યુવરાજને મોકલે તેમ વર્ણાશ્રમના રક્ષણાર્થ શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરે-આચાર્યસમ્રાટે—પોતાના યુવરાજશ્રીને દિગ્વિજયાર્થ મોકલ્યા છે. હવે આપણે નિર્ભયપણે એમના સભાપતિત્વનીચે કાર્ય કરવાનું છે !" સભાપતિનું વરણ કરનારા ઠરાવને દરેક પ્રાતના પ્રતિનિધિઓએ અનુમોદન આપ્યા પછી તે ઠરાવ તાળીઓ અને હર્ષોત્સાહપૂર્ણ જયનાદના ધ્વનિ સાથે પસાર થતાં શ્રીમાન્ સભાપતિ મહોદયે આરંભિક ભાષણ કરતાં જણાવ્યું કે:—

આધુનિક પરિસ્થિતિ કેવી છે તે સર્વના ધ્યાનમાં છે. આ સ્થિતિમા આવો મહાન્ કાર્યભાર ઉઠાવવાની તાકાત મારામા નથી. અધિવેશને મારૂં સભાપતિ તરીકેનું જે વરણ કર્યું તે ઠીક છે, પણ તે વહન કરવાનું સામર્થ્ય પણ જોઇએ ! શૌનકાદિક યજ્ઞ કરતા હતા, માત્ર નિમિત્તરૂપ હતા. યજમાન તો નિમિત્તજ છે. કાર્ય તો અન્ય ઋત્વિજાદિ કરે છે આવા મહાયજ્ઞનો ભાર ઉઠાવવો એ પણ અહોભાગ્યજ ગણાય ! વસ્તુતઃ હું સભાપતિ નથી. સાચ્ચા સભાપતિ તો અહીં બિરાજતા વેદ ભગવાનજ છે. તેજ કૃપા કરીને મારા પર જે સભાપતિનો ભાર સ્થાપિત થયો છે તે ઉઠાવી લેશે. આ ભાર તે જડ પદાર્થનો ભાર નથી. અલૌકિક ભાર ઉઠાવ્યા વિના ચાલેજ નહિ. અહીં પધારેલા યાવન્માત્ર આચાર્યશ્રીઓ એ ભાર ઉઠાવવાની શક્તિને પ્રેરશેજ. અને પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કરીને પ્રાર્થના કરૂં છું કે, આ સ્થાનનું ગૌરવ તેઓ રક્ષણ કરી શકે. ("નમો બ્રહ્મણ્યદેવાય" એ શ્લોકનો ઉચ્ચાર કરીને વેદ ભગવાનને જ્યારે સભાપતિશ્રીએ સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કર્યો ત્યારે તો આખી સભાના હૃદયો શ્રદ્ધાજળથી છલકાઇ ગયાં ! વયોવૃદ્ધ આચાર્યો અને વિદ્વાનોની આંખો અશ્રુભીની થઈ ગઈ !) ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ આચાર્ય અને વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોને હસ્ત જોડીને આ સ્થાન ગ્રહણ કરવા આજ્ઞા માગી. આ વખતે સભાપતિશ્રીના મૂળ પૂર્વજ આચાર્યશ્રીનો શ્રીસુબોધિનીજીનો શ્લોક—आज्ञा यच्छन्तु सिद्धये કાનમા ગુંજી રહ્યો ! આ નમ્રતા, આ વિવેક, આ દિવ્ય ગુણની ઝાંખી એક સમર્થ રાજસત્તાધારી આચાર્યશ્રીમાં, એક કરોડ અનુયાયીઓ જેઓશ્રીને પોતાના હૃદયસમ્રાટ માને તેમનામાં કદી સંભવે ? આ વિચારે તો સભાને આશ્ચર્યમા ડુબાડી દીધી ! વયોવૃદ્ધ શ્રીરામાનુજાચાર્યજી તો ગદ્‌ગદ કંઠે સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કે; "આ યુગ તો શ્રીવલ્લભયુગ છે, વલ્લભ એટલે પ્રિય. તેથી સર્વ લોકના તમે પ્રિય છો. બધાએ તમને સભાપતિ બનાવ્યા છે. સર્વેને પ્રિય થાઓ તેવી રીતે આ સ્થાનને દીપાવો." વળી નાથદ્વારાધીશ છો. નાથદ્વારા એટલે પ્રભુને મળવાનું દ્વાર, એ અર્થ તો પ્રસિદ્ધ છે, પણ ન+અથ+દ્વારા=એટલે આ વિના બીજું દ્વાર નથી. એ પણ સુંદર અર્થ તેમાંથી જ નિકળે છે." યતિરાજના શબ્દોએ ભારે અસર કરી. આવા સૌહાર્દપૂર્ણ વ્યવહારો આચાર્યશ્રીઓ વચ્ચે ચાલતા હોય તો ધર્મનો ઉદય થતાં કદી વાર નજ લાગે એવા ઉદ્‌ગારો નિકળવા લાગ્યા.

ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ પોતાનું સંસ્કૃત ભાષણ બુલંદ અવાજે કર્યું,

॥ श्रीहरिः

श्रीमद्वेदव्यासविष्णुस्वामिसम्प्रदायसमुद्धारसम्भृतश्रीपुरुषोत्तमवदनावतारसर्वाम्नायसञ्चारवैष्णवाम्नायप्रा-
चुर्यप्रचारश्रीनिम्बमङ्गलाचार्यसाम्प्रदायिकार्पितसाम्राज्यासनाखण्डभूमण्डलाचार्यजगद्गुरुमहाप्रभु-
श्रीमदाचार्य इति विद्यानगरनरपतिश्रीकृष्णदेवसमर्पितबिरुदावलीविराजमानश्रीजगद्गुरु १०८
श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणप्रधानपीठस्थगोस्वामितिलकात्मजविद्यासुधाकरश्री १०५ श्रीमद्गोस्वामि
चिरञ्जीवश्रीदामोदरलालजीमहोदयानां जलग्रामेऽधिवेशिताखिलभारतवर्षीय-
वर्णाश्रमस्वराज्यसंघमहाधिवेशने सभापतीनां (प्रेसीडेन्ट)

भाषणम्

नमो भगवते तस्मै कृष्णायाऽद्भुतकर्मणे रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यतः॥१॥
नमो नमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनाम् ।
निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः ॥ २ ॥

अयि ! महानुभावा धर्माचार्या, महाराजा, निखिलशास्त्रनिष्णातधियः सुधियः, धर्मैकनिष्ठाः श्रेष्ठिनः, धर्मानुयायिनः सामान्यसभासदश्च

धर्मरक्षा प्रधानमुद्देश्यम्

विदितमेवैतद्भवतां यदिदं भारतं वर्षं धर्मप्राणो देशः तत्रापि दाक्षिणात्यसमीपगोऽयं भूभागस्तु धर्मरक्षणाय बद्धपरिकरो बहोः कालात् प्रसिद्धतम । अत्र हि भारते स्वभावत एव धर्मैकजीवना ब्राह्मणा धर्मरक्षणैकव्रता. क्षत्रिया धर्मैकजीवना विशः धर्मानुयायिनश्च शूद्रादयः । किं बहुनाऽन्याः स्त्रियोपि स्वधर्मपरिरक्षणपरित्यक्तजीविता भवन्तीति सुविदितचरमेव सर्वेषां नः ।

इदमपि तु सर्वेषां नो न परोक्षमेव यदिह चराचरगुरुर्भगवान् पुराणपुरुषः श्रीकृष्णोऽपि धर्मरक्षार्थमेव युगे युगे कृतावतारो भवति ।

अद्य वयमपि सर्वे धर्मरक्षाविचारार्थमेव विषह्याऽपि बहूनि कष्टानि नानादिगन्तवासिनः सोत्साहमत्राऽऽगताः स्मः धर्मरक्षैवास्माकं प्रधानमुद्देश्यमिति न कस्यापि सन्देहलेशः । स्वधर्मसाम्राज्यपरिरक्षणदीक्षिता देवगुरवो बृहस्पतिभरद्वाजप्रभृतयश्चाऽस्माकं पूर्वजाचार्या अभूवन् । अहमपि भवद्भिः स्वधर्मपरिरक्षणनिबद्धाशयैरिह महासभायामस्याः सभापतिपदे वृतोऽधिष्ठापितश्च धर्मरक्षाशयैव साहसमेतदुद्वोढुमुद्युक्तो भवामि

इदमपि तु न विस्मर्तव्यं यदिह महति दुःसाध्ये कर्मणि सर्वेषां नः श्रीगोवर्धनोद्धरणचरणनलिनमेव शरणं भविष्यतीति मे बलीयान् विश्वासः । स एवाऽस्मभ्यं कार्यशक्तिं वितरत्विति मे प्रथमतस्तच्चरणयोः प्रार्थना ॥

अयि भो सभासदः ! विविधेष्वपि धर्मेषु सर्वधर्मभूमिभूतोऽयं वर्णाश्रमधर्मो विशेषधर्म इति विशेषतया रक्षणीयो भवति । अस्मिन्नरक्षिते मन्ये सर्वेऽपि धर्मा अरक्षिता एव भवेयुः ।

केचिद् वैदेशिकदीक्षादीक्षिता विविधतरङ्गाकुले वैदेशिकभावमहागर्ते आमूलचूडमेव तु स्नाता वर्णाश्रमधर्ममिमं छलेन बलेन राजनीत्या च सुस्पष्टमेव नाशयितुं गृहीतव्रता भवन्ति सञ्जाताश्चेति प्रदीयतां चतुर्दिशं दृष्टिः । तैः सहाऽयमस्माकमभियोगः । ततश्च यावता बलेन तैरयमस्माकं प्रियो धर्मो नाशयितुमभिकाङ्क्ष्यते तावतैव ततोऽप्यधिकेन वा बलेनास्माभिरप्येतस्य सर्वजनहितस्य वर्णाश्रमधर्मस्य रणक्षाय बद्धपरिकरैर्भवितव्यम् । यतो हि स्वधर्मो रक्षितः सर्वेषां रक्षको भवति ।

स्वराज्यमप्याकांक्ष्यते

अयि सभ्याः ! केचन पुनः स्वराज्यप्राप्तिमेव संप्रति भारतीयानां प्रधानं ध्येयं गणयन्ति । अस्माकमपि नाऽत्र काचन विप्रतिपत्तिः । कामयामहे वयमपि स्वराज्यम् । किन्तु स्वधर्मं वर्णाश्रमधर्मं वा विनाश्य तु केवलं स्वराज्यं न कांक्ष्यतेऽस्माभिः । को वा बुद्धिमान् धर्मरहिते स्वराज्ये कामनां कुर्यात् ? धर्मरहितं हि प्राप्तमपि स्वराज्यं क्लिष्टमस्थिरं च भवति । धर्ममात्ररहितानामेतेषां विधर्मणामेतत्स्वराज्यमतिधर्मक्लेशकरमस्थिरमिव च कदाचन भवतीति सुस्पष्टमेव समाचारपत्रवाचिनां विज्ञानाम् ।

सुराज्यं हि सुखकरं भवति न तु स्वराज्यमात्रम् । भारतीयानां रावणस्याऽपि स्वराज्यमासीत् । वेनस्याऽपि स्वराज्यमेवासीत् । को नाम विज्ञो रावणस्य वेनस्य च राज्ये भारतीयानां स्वराज्यं नासीदिति वदेत् ? स्वराज्ये सत्यपि तयोः सुराज्यं नासीदिति वक्तव्यम्; अत एव तत्र महान् क्लेश आसीत् । विध्वंसश्च समाजस्य महानभूत् । तस्माद्विज्ञैः सुराज्यमेवाऽपेक्ष्यते न तु केवलं स्वराज्यम् ।

सौराज्यं च धर्मेणैव भवितुमर्हति । धर्मेण सर्वोऽपि जनो मर्यादासु तिष्ठति । बद्धजनमर्यादं च स्वराज्यं सुराज्यं सुखकरमक्लेशकरं च भवतीति विदितमेव प्रेक्षावताम् ।

तस्मात्संघोऽयं द्वयमपि वाञ्छति ।

वर्णाश्रमस्वराज्यसंघश्चाऽयं वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं च कामयत इति नाम्नैवाऽस्येदं ज्ञातव्यम् । अत्र हि वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि कामयमाना जनाः संघीभवन्ति । संघो हि बलं भवति । पुरा हि तपो बलमासीत् । ततो यजिर्बलमभूत् ततः पूजा । सम्प्रति तु संघो बलमस्ति । यद्यपि सर्वदैव समूहोऽपि बलमासीत्, किन्तु संप्रति कलौ तु विशेषतः संघे शक्तिः ।

तदर्थमनैक्यं दूरीकरणीयम् ।

वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि वाञ्छतामस्माकमाविप्रमाचाऽन्त्यजात् चातुर्वर्ण्यानां संघो महान् विद्यते । ततश्च बलवन्तो वयं भवामः । किन्तु भारतीयेष्वस्मासु परस्परं सौहार्दस्य शुभकामनाया ऐकमत्यस्य चाऽभाव इति संघवन्तोऽपि वयं दुर्बला एव सञ्जाताः स्मः । वयं हि परस्परमेकैकस्य वञ्चयामहेऽपमानयामो द्विष्मश्च । गवेषयामः प्रकाशयामश्चैकैकस्य दूषणानि ।

तेन च परस्परमेव भेदोऽविश्वासश्च प्रसृतो विद्यते । एकोऽपरस्य भिद्यते न विश्वसितीति तत एवारब्धमपि कार्यं सर्वदा विनश्यति । ततश्च प्रथमतस्तु देशदेशान्तरागतेषु मे साग्रहमावे मिदमेव यदितः परं सर्वैरिदं व्रतमिव स्वीकरणीयं यद्वयं सर्वेपि परस्परस्य भ्रातरः परस्परं वर्णा स्वराज्यकार्ये एकैकस्य साहाय्यं विधास्यामः । परस्परं सद्भावेन प्रतिष्ठां रक्षन्तो प्राणप वर्णाश्रमस्वराज्यकार्यं निर्वक्ष्यामः ।

राजशासनेपि सनातनधर्मसभ्यैरधिकाराः प्राप्तव्याः

ब्राह्मणादीनां पूर्वजातैर्यै महापुरुषैस्तपसा बलेन विद्यया धनादिभिश्च येऽधिकाराः पूर्वमर्जि येषु च यथाकथचिद्यावधि परम्परया ब्राह्मणादय कुत्रकुत्रचिदधिष्ठिता अपि सन्ति, सम तेऽत्राधिकारेषु परेऽनधिकारिणस्तिष्ठन्ति, वदन्ति च ते भारतीया एतत्पदमधिष्ठातुमनधिकृता इ ततश्चेतः परं पुनरपि ते एवाधिकारा अस्माभिः परहस्तेभ्य आच्छिद्य स्वहस्ते करणीयाः भारत ब्राह्मणैः पुनरपि विद्यास्थानेषु महत्पदमादातव्यम् । अस्माकं क्षत्रियैः शासनविभागप्रधानस्थान लम्भनीयानि । अस्मदीयैर्वणिक्प्रवरैः पुनरपि व्यवहारव्यापारधनादिविभागाः स्वायत्तीकरणीया भारतीयैः शूद्रादिकुलसमुद्भवैरपि कलास्थानेषु स्वधर्ममनतिक्रम्य प्रधानपदं स्वीकर्तव्यम् ।

आन्दोलनं कर्तव्यम्.

यद्यपि तपः सन्तोषश्चोभयमपि सर्वथा श्रेयस्करम् । किन्तु येन तपसा धर्महानिरात्मनाः भवेन्न तत्तपः श्रेयस्करं भवति । सन्तोषोऽपि तथा । महर्षिर्वसिष्ठो महातपा अतिसंतुष्टश्चासी किन्तु यदा बलोन्मत्तेनाभिमानिना राज्ञा विश्वामित्रेण तद्धर्मनाशमत्याहितं च विधातुमारब्ध त तेनाप्यगत्या तत्प्रतीकारो विहित एव ।

न वयं कस्मा अपि द्विष्मः । न च कस्याप्यपकारं कर्तुमभिकांक्षामः । किन्तु स्वाप प्रतीकारं समाजधर्महितरक्षणं तु वाञ्छाम एव ।

परस्यापि द्वेषस्त्याज्यः

अद्यावधि केनापि वर्णाश्रमरक्षणकामेन विदुषा केषामपि किमपि प्राप्तुमिच्छता म व्याघातो न कृतः, तदाधिकारे स्थितैरप्यस्माभिः 'सर्वः स्वार्थं समीहते' इति नीतिमवल धर्मत्यागिनामप्युपेक्षैव कृता । एवमपि ये शिरसि दण्डनिपातनमिव बलादेवास्मदधीनमपि व श्रमधर्मं त्याजयितुमीहन्ते यतन्ते च तदर्थं, तत्प्रतीकारस्त्ववश्यमस्मत्कार्यम् । आत्मनाशे धर्म चं सन्तोष उपेक्षा वा नैव श्रेयस्करीति संघशोऽस्माभिर्मिलित्वा धर्मरक्षणस्य समाजहितस्य मा कारलम्भनस्य चोपाया अवश्यं परिभाव्याः ।

केचित्तु धर्ममुपेक्ष्य विनाश्य वा स्वराज्याभिलाषिणः प्रधानराजव्यवहारसभासु [एसेम्ब सामान्यराजसभासु [कौन्सिल] नगरपरिष्कार (म्युनिसिपिल कमेटी) परिषत्सु च, एवमेव स्वदे

राष्ट्रीयसभासु च प्रविश्य प्रधानाधिकारान् लब्ध्वा स्वसमानैः सभ्यैरतिसन्धाय बलादेव भारतीयानां धर्मं त्याजयितुमीहन्ते, प्रतिवर्षं च नवनवान् धर्मविध्वंसकान् प्रस्तावानुपस्थापयन्ति, बलादेव च भारतीयानां सर्वथाऽनभिवाञ्छितानपि तान्प्रस्तावान्प्रमाणयन्ति व्यवहारयन्ति कारयितुमिच्छन्ति च । येन धर्मविप्लवः समाजविप्लवो राज्यविप्लवश्च समये समये भवति । ततश्चात्राप्युपाया विधेया एव ।

सनातनधार्मिकैरसेम्ब्लीप्रभृतिषु स्वस्थानं रक्षणीयम्.

भारतीयानां पण्डितानामग्रे राजनीतिविषयकोऽयं प्रश्न उपस्थायापि विनश्यति । अस्मिन्कोणे पुरातनपण्डितैः कदाचनाऽपि दृष्टिर्न निक्षिप्यते स्म । कदाचन केषांचन दृष्टिर्गच्छत्यपि किन्तु ते प्रज्ञामात्रवादिनो प्रज्ञा इवोत्तरं प्रयच्छन्ति यत् प्रधानराजसभादिषु केचनाधिकारं लभन्तां मा लभन्तां वा किमस्माकं पण्डितानां ततः प्रयोजनमिति ।

अहो कियती हानिः ? कथं वा भयङ्करः परिणामः ? येन हि वयं जीवामः, यद्धि भारतीयानां जीवितं तमेव धर्मं वैदेशिकैः संधायाऽस्मीया एव धर्मविरोधिनो विध्वंसयन्ति तथापि वयं न निद्रां मुञ्चामः । वयं सुखं स्वपिमः, परे तु धर्मविध्वंसका यथायथं भारतीयानेव जनान् प्रलोभ्य वंचयित्वा च स्वस्य राजसभ्यपदप्राप्तये सम्मतिं (वोट्) प्राप्नुवन्ति । तत्र गत्वा चास्माकं प्रियं धर्मं यथेच्छं नाशयन्ति ।

वोट्दातृषु सत्त्वमात्मीयं रक्षणीयम् ।

ततश्चात्रापि प्रथममुपायः सत्वरं परिग्राह्योऽस्माभिः । संघशस्तत्र तत्र (एसेम्बलीकौंसिलेषु) गत्वा प्रतिच्छन्नधर्मनाशकानां तेषां तत्स्वरूपं प्रकाशनीयम् । निवारणीयाश्च तेभ्यः पदप्राप्तये सम्मतिप्रदातारः । सर्वत्र प्रदेशेषु च वर्णाश्रमधर्मरक्षिण्यः सभाः स्थापनीयाः । प्रचारणीयाश्च सर्वत्र धर्मोपदेष्टारः । प्रधानराजसभासु नगरपरिष्कारपरिषत्सु राष्ट्रीयसभासु (कांग्रेस) चास्माकं विशिष्टा विद्वांसो धर्माग्रहवन्त प्रवेशनीयाः । सुघोरं चान्दोलनं विधातव्यम् । सभ्यतापूर्वकेण च धर्मान्दोलनेन राजभक्तिः प्रदर्शिता भवति, सामर्थ्यमावर्जितं भवति, स्वत्वं च रक्षितं भवति ।

निःसत्वो निर्बलश्च पुरुषः प्रजासु राज्ञि चापमानभाजनं भवति । यदा हि भवन्तोऽपि धर्मरक्षार्थं चतुर्दिशं सुघोरमान्दोलनं विधास्यन्ति तदा राज्ये राजजने च भवतामपि प्रतिष्ठा स्यादेव । भवतां च वाञ्छितं सिद्धं स्यादेव । निर्बलस्य कोपि सहायो न भवति । विना कोलाहलं माताऽपि पुत्रं स्तनं न पाययति ।

तस्माद्—धर्मरक्षणार्थं स्वस्याधिकारप्राप्त्यर्थं च संघशो विद्वद्भिः संमन्त्र्य ते त उपाया अवश्यं परिग्राह्याः । धर्मोपदेशश्च सर्वत्र दातव्यः । उपायचतुरं च जनं भगवान् श्रीकृष्णोऽप्यनु-

गृह्णाति । भगवदनुग्रहेण चावश्यमेव समीहितसिद्धिर्भविष्यतीति तदनुग्रहार्थं वयमपि तच्चरणसरोजयोः प्रार्थना निवेदयन्तो विरमामो बहुपल्लवनात् । हरिः ॐ शम् ।

किरातहूणाऽन्ध्रपुलिन्दपुल्कसा आभीरकङ्का यवना· खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नम ॥
स्वय समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ।
भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याता सदनुग्रहो भवान् ॥

हीन्दी अनुवाद.

हमारे भारतवर्षीय आचार्य महानुभाव ' सुक्षत्रिय महाराजा ' धर्मप्राण विद्वद्गण ! एवं सामान्य समासद लोक !

इतिहासके द्वारा अब ये बात सर्वत्र प्रसिद्ध हो चुकी है कि यह एक भारतवर्ष ही धर्मप्राण देश है । धर्म ही इस देशका सामर्थ्य है ! जिस तरह मनुष्यको अपने प्राणपर कीसी प्रकारका भी आघात आनेका सन्देह हो तो वह अपने सब सामर्थ्यको इकट्ठा करके उस आपत्तिका उपाय करनेके लिए तत्पर हो जाता है इसी तरहसे यह भारतवर्ष भी जब तक इसके धर्मपर किसीने भी आघात पहुँचाया है या पहुँचानेका प्रयत्न भी किया है तो उस समय इस भारतवर्षने अपनी सब ताकतको इकट्ठी करके उसका सब तरहसे उपाय किया है । इस लिए मालूम होता है कि यह वर्णाश्रमधर्म इस देशका प्राण है ।

विशेषकर राजपूताना और यह दक्षिण प्रदेश तो अपने धर्मकी रक्षा करनेमें सुप्रसिद्ध है। चिरकालसे आजतक यहाके ब्राह्मण लोग धर्मकथन होते चले आ रहे हैं । यहाँके क्षत्रिय धर्मरक्षा करनेके लिए बैठे रहते आए है । यहाँके वैश्यवर्ग अपने जीवनको धर्ममय बनाते चले आ रहे हैं । कि बहुना यहाँके शूद्र और अन्त्यजादि भी वर्णाश्रमधर्मके अनुयायी होते चले आ रहे हैं । और हमें विशेष तो इस बातका गर्व है कि भारतवर्षकी और विशेषकर दक्षिण प्रदेशकी स्त्रियोंने भी अपने देह प्राण और सुखोंका परित्याग सुखसे कर दिया है किन्तु धर्मका परित्याग कभी नहीं किया । और तो क्या कहूं ' यह बात भी आप लोगोंको विदित ही है कि इस एक भारतवर्षमें ही जगद्गुरु श्रीकृष्णभगवान भी इस वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करनेके लिए ही बारबार अवतार धारण करते है ।

आज अपने सब लोग भी जो अनेक कष्टोंका सहन करते हुए नाना देशोंसे यहा आकर इस स्थानपर एकत्रित हुए है उसका भी एक यही प्रयोजन है कि किसी प्रकारसे इस वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करना उचित है । स्वधर्मकी किसी तरह भी रक्षा करना यह हम सबका प्रधान लक्ष्य है । आज धर्मरक्षार्थ ही सबके हृदयमें उत्साह भरा हुआ है ।

भाव एवं ऐकमत्य का अभाव है। हम आपसमें एक दूसरे का अपमान करते हैं, एक दूसरे को ठगना चाहते है और एक दूसरे से द्वेष रखते हैं। और तो क्या कहें हम आपसमें एक दूसरे के दोष ढूंढने लगते हैं और उनको प्रकाशित करने में अपना हित मानते हैं। इसका यह फल हुआ है कि एकदेशवासियों और भाई भायों में हमारे यहां भेद और अविश्वास घर कर चुका है। उस आपुस के भेद और अविश्वास की बुराई से हमारे प्रारम्भ किए हुए अनेक महत्व के कार्य भी कभी कभी मध्य में ही नष्ट होजाते हैं।

इस लिए प्रथम तो अनेक कष्टोंको सहन करके भी अपने धर्मकी रक्षा करनेके विचारसे भिन्न भिन्न देशोंसे आए हुए संघके सदस्य महानुभावोंसे मेरा यह साग्रह आवेदन है कि जो हो चुका उसे जाने दीजिए किन्तु अब आजसे ही आप लोग एक व्रतकी तरह स्वीकार करें कि हम सब आपसमें एक दूसरेके भाई हैं और इस लिए एक गृहकार्यकी तरह इस वर्णाश्रम स्वराज्य संघरूप गृहकार्यमें हम सब एक दूसरेकी सहाय करते रहेंगे।

परस्परमें सद्भाव रखते हुवे एव एक दूसरेकी प्रतिष्ठाको अपनी मानकर उसकी रक्षा करते समूहबल एवं व्यक्तिबल दोनोंसे ही वर्णाश्रम–स्वराज्य संघके कार्यको प्रतिदिन उन्नत बनाते रहेंगे।

हमारे पूर्वज ब्राह्मणादि चतुर्वर्ण जात जिन महापुरुषोंने अपनी तपस्या अपने बल अपनी ही विद्या और अपने धनादिसे जो जो अधिकार पूर्व समयमें प्राप्त किए थे, और अब भी जिन अधिकारोंपर कहीं कहीं किसी तरहसे भी सही, हमारे ब्राह्मणादि भारतीय ही परम्परासे आज तक अधिष्ठित चले आ रहे हैं। किन्तु खेद है कि हमारे आपसके भेद और अविश्वाससे उन अधिकारोंके प्रधान स्थानोंपर तत्तत्स्थानोंके अनधिकारी विदेशी और विधर्मी लोग सब तरहसे स्थित हो चुके हैं। और छलबलसे हमारे ही अधिकारोंको छीनकर वे लोग फिर यह कहते भी हैं कि भारतीय लोग इन अधिकारोंपर स्थित होनेके अधिकारी अभी नहीं हैं।

अब हमें उचित है कि अपने धर्मको न छोडते हुए फिरसे अपने अपने अधिकार उनके हाथसे अपने हाथमें लेलें। भारतीय ब्राह्मण लोग अपने प्राचीन विद्यास्थानोंके प्रधानपदोंपर फिरसे स्थित हों। हमारे क्षत्रिय वीर फिरसे शासन विभागकी बागडोर अपने हाथमें ग्रहण करें। भारतवर्षीय वणिक्प्रवरोंको चाहिए कि अपने बल एवं उद्योगसे फिर भी उन्हीं अपने व्यापार और धनादिके अपना स्थानोंपर अपना अधिकार जमावें। और हमारे भारतीय शूद्रादि सज्जनोंका भी यह कर्तव्य है कि अपनी प्राचीन मर्यादाको न छोड़ते हुए अपने कलारथोंके प्रधानपदोंको पुनरपि स्वहस्तगत करें।

कितने ही प्राचीन मर्यादाके सन्तोषी पुरुष कभी कभी यह भी कहने लगते हैं कि भारतीयोंका तो सन्तोष और तप ही सर्वस्व है उससे सब कार्य सिद्ध हो सकते हैं। ठीक है जिस समय हमारा आत्मा हमारे पास था और हमारा धर्म बलपूर्ण था उस समय तप और सन्तोष

श्रेयस्कर थे किन्तु आजकल हमारा आत्मा दूसरोंके हाथमें है और हमारे धर्मका नाश दिनों दिन होता चला जा रहा है ऐसे समय आत्मनाश और धर्महानि सहनेवाले तप और सन्तोष श्रेयस्कर नहीं हो सकते ।

महर्षि वसिष्ट बडे सन्तोषी और तपस्वी थे किन्तु जब बलोन्मत्त अभिमानी विश्वामित्रने उनके धर्मकी हानि और आत्मस्वातंत्र्यका नाश करना चाहा तब उन्हें भी अगत्या उसका उपाय करना ही पड़ा ।

विधर्मी लोग ही नहीं किन्तु कितने ही हमारे भाई भारतीय होकर विधर्मियोंके वेष भाषा भावोंके जालमें फँसकर उनकी नकल करते करते जो वैसे ही हो चुके है वे भी शासन और व्यवहार-स्थानोंपर प्रतिष्ठित होकर हमारी आत्मसत्ता और धर्मका नाश करनेपर कमर कसे बैठे है । उसका भी हमें अवश्य कोई न कोई उपाय करना ही पडेगा ।

हमारे हृदयमें किसी के प्रति द्वेष नहीं है और न हम किसीका अपकार करना चाहते हैं किन्तु जो आपदाएँ हमारे ऊपर आई हुई हैं किंवा आनें वाली हैं उनका उपाय तो हमें अवश्य करना चाहिए ।

आजसे २ वर्ष पूर्वतक हमारे किसी भी सनातनधर्मी विद्वान्ने किसी विभागके कुछभी प्राप्तिके मार्गमें किसी तरहका भी विघात नहीं किया था । 'सर्वः स्वार्थं समीहते' इस न्यायसे किं वा धर्मरक्षार्थ स्वराज्यप्राप्ति भी सनातन धर्मियोंका स्वार्थ ही है, ये समझ कर भी धर्मरक्षाका अधिकार रखते हुए भी हम लोगोने धर्मत्यागियोंकी उपेक्षाही की ।

इस तरह उपेक्षा करते रहते भी जो लोग सिरपर दण्ड मारते चले आ रहे है, हमारे अधीन धर्मका भी नाश करानेके लिए राजबलका भी आश्रय ले रहे है उनका तो प्रतीकार हमें करना ही होगा । आत्मनाश और धर्मनाश के समय भी सन्तोष किंवा उपेक्षा करना उचित नहीं है इस लिए हमें भी अपना संघबल तैयार करके धर्मरक्षा समाजहितरक्षा एवं अपने अधिकार-प्राप्तिके उपायोंका स्वीकार तो अवश्य करना चाहिए ।

यह बातें अब स्पष्ट हो चुकी है कि कितनेही धर्मकी उपेक्षा किंवा उसका नाश करके खाली स्वराज्य चाहनेवाले ऐसेम्बली कौंसिल और म्युनिसिपल बोर्डोंमें अपूर्ण अधिकारोंको भी प्राप्त कर और अपने समान अधिकारवाले विधर्मियोंके साथ एकमत हो कर जबरदस्ती सनातन धर्मियोंके धर्मका नाश राज्यबलसे करानेके लिए विशाल उद्योग कर रहे हैं ।

प्रतिवर्ष कान्सिल ऐसेम्बली और म्युनिसिपल कमीटियों में नवीन नवीन धर्मविध्वंसक प्रस्तावोंको उपस्थापित कर रहे हैं और उन्हें मनमानी रीतिसे पास भी करा लेते हैं और इस तरह हमारे धर्मका नाश कर रहे हैं । इसका तो उपाय हमें करनाही पडेगा ।

स्वराज्य हमें भी चाहिए इस लिए हम स्वराज्यप्राप्तिके मार्गमें विघ्न करना सर्वथा नहीं चाहते। प्रत्युत विदेशीय वस्तु बहिष्कार और स्वदेशीय वस्तु स्वीकारके द्वारा जो कि पवित्रता-रक्षा और धर्मरक्षाका सहायक है उसमें भी सहयोग देनेके लिए तैयार है। किन्तु हमारा धर्म-रक्षा प्रधान उद्देश्य हैं इस लिए धर्मनाशके उपायोंका प्रत्युपाय तो हमे अवश्य करना ही होगा। इस लिए अब राज्यशासन विभागमें भी प्रवेश करना यह भी इस परिषद्का उद्देश्याङ्ग होना उचित है।

राजनीतिविषयक यह प्रश्न आजतक तो हमारे प्राचीन पण्डितोंके साम्हने उपस्थित हो हो कर भी नष्ट होता रहा। पुराने विद्वानोंने इस कोने पर अभी अपनी दृष्टि डाली ही नहीं। प्रत्युत कभी २ दृष्टिपात करते हुए भी ब्रह्मज्ञानियों की तरह 'ऐसेम्बली प्रभृति राजसभाओंमें कोई भी जाओ, हम पण्डितोंको इन बातोंसे क्या मतलब?' इस तरह उपेक्षा ही करी।

किन्तु इस उपेक्षासे बडी हानि हुइ है। बडा भयंकर परिणाम आया है। जिस धर्मको भारतीय लोग अपने प्राण समजते आ रहे थे, जिसके लिए कोटिशः भारतीय स्त्रीपुरुषोने युद्धमें सुखसे प्राण खो दिये थे उसी हमारे सनातन धर्मका नाश हमारे ही भाई विदेशियोंकी चालमें आकर कर रहे हैं और हम सोये हुए की तरह बेखबर रहे अबे, अब इन सब आपत्तियोंका भी उपाय करना चाहिए।

हमें अपनी सनातनधर्मिजनताके अनेक सघ तय्यार करने चाहियें और उनके द्वारा ऐसेम्बिली कौन्सिल म्युनिसिपल कमेटी प्रभृति चाहे स्वदेशीय चाहे विदेशीय हो दोनो राज्यशासन विभागों में प्रवेश कर अपनी धर्मरक्षा के लिए वहाँ स्थान–प्राप्ति करना चाहिए।

जो लोग अपनी ही जनता से वोट ले ले के वहाँ जाते है और अपने धर्मपर आघात कर रहे हैं उन लोगों का वह प्रच्छन्न स्वरूप और धर्मनाशका कार्य सामान्य धार्मिक जनता के आगे प्रकट करना चाहिए। जो लोग उन्हें भोलेपन से भारतहितैषी समझकर उनकी सदस्यता के लिए सम्मति (वोट) देते है उन्हें इसके रहस्य को समझा कर इस अनर्थ से मुक्त करने चाहिए। देश देश में सर्वत्र वर्णाश्रम धर्मरक्षिणी सभाओं का स्थापन करना उचित है। चारों तरफ धर्मोपदेशकों को भेजने चाहियें। प्रधान राज (कौन्सिल) सभा राष्ट्रीय सभा (काम्रेस) और नगरपरिष्कारिणी सभा (म्युनिसिपिल) प्रभृति शासनविभागोंमें भी धर्माग्रही उभय भाषा-भिज्ञ हमारे विद्वानों को भेजने चाहिए। इस विषय में विपुल आन्दोलन करना चाहिए। सभ्यता पूर्वक यदि राजनीतिका भी आन्दोलन किया जाय तो उसमें किसी प्रकार का दोष नहीं है, प्रत्युत उससे राजभक्ति का प्रदर्शन होता है, जनता में सामर्थ्य है यह विदित होता है, और अपने स्वत्व का रक्षण होता है।

अखिल भारतवर्षीय-वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्घका चतुर्थ महाधिवेशन-जलगाव.
(सभामण्डपके रङ्गमञ्चका अपूर्व दृश्य)

—वामपार्श्वमें—	बीचमें	—दक्षिणपार्श्वमें—
श्रीमान् सभापति महोदय	श्रीवेद भगवान	श्रीयदुगिरिमठाधीश्वरजी

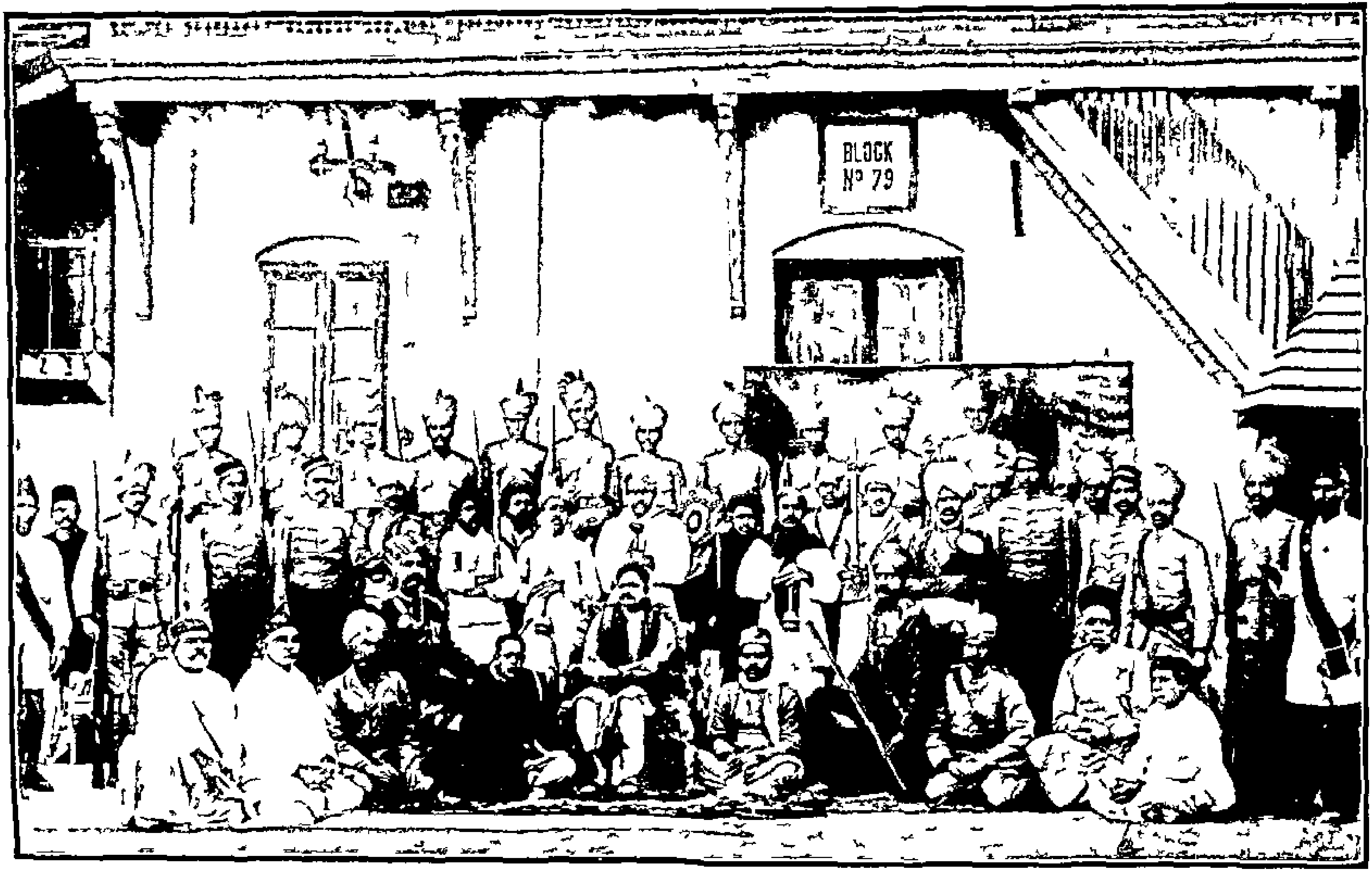

BLOCK
Nº 79

जिस पुरुष में कोई सत्व नहीं अत एव-जो निर्बल है उसका आदर न तो प्रजामें ौर राजवर्गमें ही होता है । ससत्व और सबल पुरुष का ही मान प्रजा और राजा के यहाँ ो सकता है जिस सनातनधर्मी जनता भी धर्मरक्षा के लिए मर्यादित और विपुल आन्दोलन चावैगी उस रोज उसका भी भारतीय प्रजा और राजा दोनों में आदर होगा और उसी समय मोरे लोगोंकी वाञ्छितप्राप्ति हो सकैगी ।

इस लिए हमारा वक्तव्य यह है कि अपने धर्म की रक्षा के लिए और अपने अधिकारों की क्षा के लिए इसी प्रकार संघ बनाकर हमें उन सब उपायों का ग्रहण करना उचित है

धर्मरक्षणार्थ जब उचित उपायों का परिग्रह होगा उस समय श्रीकृष्ण भगवान् भी हमारे ऊपर अवश्य कृपा करेंगे भगवदनुग्रह से हमारे इच्छित कार्य में अवश्य सिद्धि होगी इतना कहकर मैं भगवान् श्रीकृष्णके चरणकमल में प्रार्थनापुष्पाञ्जलि निवेदन करता हुआ अपने वक्तव्य को सम्पूर्ण करता हूँ । हरि. ॐ शम् !

किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कसा आभीरकङ्का यवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः ॥
स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदा ।
भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याता. सदनुग्रहो भवान् ॥

સભાપતિ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયનું ભાષણ.

ગુજરાતીમાં સાર.

મહાનુભાવ ધર્માચાર્યો, મહારાજાઓ અને સકલશાસ્ત્રનિષ્ણાત વિદ્વાનો તથા ધર્મનિષ્ઠ ગૃહસ્થો! આપ જાણતાજ હશો કે આ ભરતખંડ ધર્મપ્રાણ દેશ છે તેમાં પણ દક્ષિણમા રહેતી ભૂમિના મનુષ્યો તો બહુ કાળથી ધર્મરક્ષણાર્થે કેડ બાંધીને તત્પરજ છે એમ પ્રસિદ્ધ છે. આ ભારતની અંદર સ્વાભાવિક રીતે, બ્રાહ્મણો ધર્મનેજ પોતાનું ધન માને છે, ક્ષત્રિયો ધર્મરક્ષણનેજ પોતાનું મત માને છે, વૈશ્યો ધર્મનેજ પોતાનું જીવન માને છે અને શૂદ્રો વગેરે પણ ધર્મના અનુયાયીઓ જ છે. કિંબહુના આ દેશની સ્ત્રીઓએ પણ પોતાના ધર્મના રક્ષણાર્થે જીવનનો પરિત્યાગ કરેલો છે એ આપણે બધા સારી રીતે જાણીએ છીએ. આ પણ આપણે સર્વેને અજાણ્યું નથી કે આ જગતના ચરાચરગુરુપુરાણપુરુષ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે પણ ધર્મના રક્ષણને માટેજ યુગે યુગે અવતાર ધારણ કર્યો છે.

આજે આપણે પણ સર્વે જૂદા જૂદા પ્રાંતોમાંથી ઘણાં કષ્ટો સહીને ઉત્સાહપૂર્વક ધર્મરક્ષણ વિચાર અર્થે અહીં એકત્ર થયા છીએ. સ્વધર્મની રક્ષા કરવી એજ આપણો પ્રધાન ઉદ્દેશ હોવો જોઇએ એ નિઃસંદેહ છે. પોતાના ધર્મસામ્રાજ્યનું રક્ષણ કરવાની દીક્ષાવાળા દેવગુરુઓ બૃહસ્પતિ ભરદ્વાજ વગેરે અમારા પૂર્વાચાર્યો થઇ ગયેલા છે. તમો કે જેઓ સ્વધર્મના રક્ષણની આકાંક્ષાવાળા છો તેઓએ મને આ મહાસભાના સભાપતિપદ ઉપર અધિષ્ઠાપિત કરેલ છે તે સાહસ કેવલ હું શ્રીગોવર્ધનધરણના ચરણના આશ્રયથી સ્વીકારૂં છું. અને મને દૃઢ વિશ્વાસ છે તેજ ભગવાન મને કાર્યશક્તિ પ્રદાન કરશે.

સભ્યો ! વિવિધ પ્રકારના ધર્મોમા પણ સર્વ ધર્મના મૂળરૂપ વર્ણાશ્રમ ધર્મ છે તે વિશેષ ધર્મ છે માટે ખાસ કરીને રક્ષણ કરવા લાયક છે. આ ધર્મનું જો રક્ષણ કરવામાં ન આવે તો હું માનું છુ કે બીજા તમામ ધર્મ પણ રક્ષણ વિનાના થઇ જાય.

કેટલાક વિદેશી શિક્ષાદીક્ષાવાળા વિવિધ તરંગોથી વ્યાકુળ અને વિદેશી ભાવમા નખથી તે શિખ સુધી ડુબેલા આ વર્ણાશ્રમ ધર્મને કપટથી, દગાથી, રાજનીતિથી નાશ કરવાને માટે મત લઇ બેઠેલા છે, એ તમો જ્યાં જુઓ ત્યા સ્પષ્ટજ છે, તેઓની સાથેજ આપણો પનારો પડયો છે. એટલા માટે જેટલા બળથી તેઓ આપણા પ્રિય ધર્મનો નાશ કરવાને ઇચ્છે છે તેટલાજ અથવા તેથી પણ વધારે બલથી આપણે પણ સર્વજનહિતકારક વર્ણાશ્રમધર્મના રક્ષણને માટે કમર કસીને ઉભા રહેવું જોઇએ, કારણ કે સ્વધર્મનું રક્ષણ કરવાથી તે ધર્મજ સર્વનું રક્ષણ કરશે..

કેટલાક વળી હાલમા સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિનેજ ભારતવાસીઓનું મુખ્ય ધ્યેય માને છે, એમા અમારે અડચણ નથી. અમે પણ સ્વરાજ્ય ઇચ્છીએ છીએ, પરંતુ સ્વધર્મ અથવા વર્ણાશ્રમ ધર્મનો નાશ કરીને કેવળ સ્વરાજ્યની ઇચ્છા નથી રાખતા. કયો એવો બુદ્ધિમાન પુરુષ ધર્મરહિત સ્વરાજ્યની કામના કરે ? ધર્મરહિત સ્વરાજ્ય મળ્યું હોય તોય તે ક્લેશકારક અને અસ્થિર નિવડે છે. કેવળ ધર્મરહિત અને વિધર્મીઓનું સ્વરાજ્ય એ અતિ ધર્મક્લેશકર અને અસ્થિર જેવુ થાય છે. એ સમાચારપત્રો વાચનારથી અજાણ્યું નથી.

સુરાજ્યજ સુખકર છે પણ એકલુ સ્વરાજ્ય નથી. ભારતવર્ષમા રાવણનું પણ સ્વરાજ્ય હતુ વેનનું પણ સ્વરાજ્ય હતું અને એવો કયો ડાહ્યો માણસ એ બન્નેના રાજ્યને સ્વરાજ્ય ન કહી શકે ? અલબત્ત એ સ્વરાજ્ય હતું પણ સુરાજ્ય ન હોતું એટલા માટે એ રાજ્યોમા મોટો ક્લેશ હતો અને સમાજમા મોટો વિપ્લવ હતો તેથી બુદ્ધિમાન પુરુષો સુરાજ્યને માગે છે નહિ કે સ્વરાજ્યને. સુરાજ્ય ધર્મ વડેજ મેળવી શકાય છે. ધર્મથીજ સર્વ લોકમર્યાદામાં રહે છે. જે લોકો ધર્મની મર્યાદામા બંધાયલા હોય તેઓનું સ્વરાજ્ય એજ સ્વરાજ્ય છે અને એ સુખકર અને અક્લેશકર થાય છે એ સર્વ જોનારને જાણીતું છે.

આ વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘ વર્ણાશ્રમધર્મવાળા સ્વરાજ્યને ઇચ્છે છે એ એના નામ પરથી સમજી શકાય એવુ છે, અને આમા વર્ણાશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્યની ઇચ્છાવાળા જનો એકત્ર થાય છે, કારણ કે સંઘ એ બળ છે. પૂર્વે તપ યજ્ઞબળ હતું, તત્પશ્ચાત્ એ બળ હતું, પછી પૂજા એ બળ હતું અને હાલમા સંઘ એજ બળ છે. જો કે હમેશાં સમૂહ એ બળ છે એ વાત ખરી પરંતુ આ કળિયુગમા સંઘશક્તિ એ વિશેષ બળ છે.

વર્ણાશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્ય બન્નેને એક સાથે ઇચ્છાવાળા અમારા લોકોના સંઘમં ચાતુર્વર્ણ્ય અંતર્ગત બ્રાહ્મણથી લઇને અંત્યજ સુધી સામેલ છે. આ રીતે અમારા લોકોનું બળ પણ બહુવ્યાપક છે, કિંતુ અમારા ભારતીયોમા પરસ્પર શુભ કામના તથા સૌહાર્દની એકમતિ ન હોવાના કારણે આપણે સંઘશક્તિશાળી હોવા છતાં અત્યંત દુર્બળ તથા ક્ષીણ જેવા થઇ ગયા છીએ. આપણા લોકોમાં એ પણ વિકાર આવી ગયો છે કે એક બીજાને ઠગીએ છીએ અપમાન કરીએ છીએ અને ઇર્ષ્યાને વધારીએ છીએ. એક બીજાના દોષ શોધવા તથા પ્રકટ કરવા જ લાગી ગયા છીએ.

એથી લોકોમા પરસ્પર દ્રોહ તથા અવિશ્વાસ વધતો જાય છે. એક બીજામાં ભેદ ઉત્પન્ન કરીએ છીએ પરંતુ વિશ્વાસને હૃદયમા સ્થાન દેતા નથી. આ પ્રકારે શરૂ કરેલું કાર્ય સર્વદા નષ્ટજ

થઇ જાય છે. માટે સર્વ પ્રથમ દેશદેશાન્તરથી આવેલા મહાનુભાવોને મારૂં સાગ્રહ નિવેદન છે કે હવેથી આપ આ વ્રતનો સ્વીકાર કરો કે સૌ એક બીજાના ભાઈ છીએ અને વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યમા એક સાથે મળી એક બીજાને સહાયતા કરો. પરસ્પર સદ્ભાવથી પ્રતિષ્ઠિત તથા પ્રાણપણથી રક્ષિત વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યનો હું અભિલાષી છું.

આજ સુધી કોઇ વિદ્વાને વર્ણાશ્રમધર્મની રક્ષાની ઇચ્છાને વશ થઇને કોઇના ઉદ્દેશની સિદ્ધિના માર્ગમાં બાધા પહોંચાડી નથી सर्वे स्वार्थं समीहन्तेनी નીતિ મુજબ તેના તે તે અધિકારોપર અધિષ્ઠિત રહેવા છતા પણ અમે લોકોએ તેની ઉપેક્ષાજ કરી છે. પરતુ તે પછી પણ જે લોક દંડનિપાતની માફક જબરજસ્તીથી અમારા વર્ણાશ્રમધર્મને નષ્ટ કરવા ચાહે છે અને તે માટે યત્ન પણ કરે છે તો તેના પ્રતીકાર માટે આપણે અવશ્ય તત્પર થવુ જોઇએ. આત્મનાશ તથા ધર્મનાશને વખતે સંતોષ તથા બેદરકારી રાખવા કદાપિ ઉચિત તથા શ્રેયસ્કર નહિ કહેવાય. એ માટે આપણે સંઘબદ્ધ થઇને અવશ્ય ધર્મરક્ષણ તથા સમાજહિતરક્ષણના ઉપાય કરવા જોઇએ

કોઇ લોક જે ધર્મનો નાશ કરીને સ્વરાજ્ય લેવા ચાહે છે તે એસેમ્બ્લી, કાઉન્સિલ અને મ્યુનિસિપાલિટીમા પ્રવેશ કરીને પોતાની ટોળીઓ બાંધીને બળાત્કારે ધર્મનો નાશ કરવા ઇચ્છે છે ધર્મવિધ્વંસક લોક પ્રતિવર્ષ નવો નવો ધર્મવિરોધી ઠરાવ રજુ કર્યા કરે છે અને હિંદીઓની ઇચ્છાથી તદ્દન પ્રતિકૂળ તે ઠરાવોપર જબરજસ્તી પોતાનો મત પણ આપી દે છે તેમ તેઓની ઇચ્છા હોય છે કે તેને આચરણમા પણ મુકવો. પરતુ આવી વાતોથીજ સમયે સમયે ધર્મવિપ્લવ, સમાજવિપ્લવ વગેરેની સંભાવના રહે છે, આ બાબતમા આ કારણથી પણ યત્ન કરવો અત્યાવશ્યક છે.

ભારતીય પંડિત જનો સમક્ષ રાજનીતિ સંબધે પ્રશ્ન ઉભો થવા છતા પણ તે નષ્ટ થઇ જાય છે. પુરાના પંડિતો આ તરફ ધ્યાન્ સુદ્ધા દેતા નથી અને જો કદાચિત્ કોઇ રીતે કોઇની દૃષ્ટિમા વાત પણ આવી ગઇ તો તે બ્રહ્મજ્ઞાનીની માફક એવો ઉત્તર આપતા જોવાય છે કે "એસેમ્બ્લી-ધારાસભામા કોઇ કોઇ પ્રકારનો અધિકાર પ્રાપ્ત કરે અથવા ન કરે એમા અમારે પંડિતોને શુ પ્રયોજન" ?

એથી કેટલી હાનિ તથા કેટલુ ભયંકર પરિણામ થઇ રહ્યુ છે? જેના આધારથી અમે લોકો જીવતા છીએ, જે અમારા ભારતીયોનુ જીવન કહેવાય છે તે "ધર્મ" વિદેશીઓ તથા આપણાજ પોતાના ધર્મવિરોધી માણસોદ્વારા નષ્ટભ્રષ્ટ કરાઇ રહ્યો છે, તો પણ આપણી નિદ્રા નથી તુટતી આપણા લોક સુખમા નિદ્રા લઇ રહ્યા છે, બીજી તરફ ધર્મવિરોધી લોક ભારતીયોને પ્રલોભન આપીને છેતરીને મત લઈ રાજસભાઓમા પ્રવેશ કરે છે અને અધિકાર જમાવે છે. ત્યા જઇને તે લોક અમારા ધર્મનો મરજી મુજબ નાશ કરે છે માટે આ દશામા આપણે ઉપર્યુક્ત માર્ગનું શીઘ્ર અવલંબન કરવુ જોઇએ એસેમ્બ્લી કોંગ્રેસ પ્રભૃતિમા સંઘ બાંધીને ઘુસવું અને તે ધર્મનાશકોનું સ્વરૂપ સર્વની સામે પ્રકટ કરી દેવુ જોઇએ એવા લોકોને મત ન આપવા માટે પ્રજાને સમજાવવી જોઇએ. સર્વ પ્રદેશમા વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘની શાખા સ્થાપન કરવી જોઇએ, સર્વત્ર ધર્મોપદેશક મોકલવા જોઇએ, કોંગ્રેસ, ધારાસભા, મ્યુનિસિપાલિટી વગેરેમા આપણા વિશિષ્ટ ધાર્મિક વિદ્વાનોને દાખલ કરવા જોઇએ, અને ઉગ્રમા ઉગ્ર આંદોલન કરવુ જોઇએ

નિઃસત્વ તથા નિર્બળ પુરુષ પ્રજા તથા રાજા બન્નેના અપમાનને પાત્ર થાય છે. જે વખતે આપ લોકો ચારે તરફથી અતિ ઘોર આંદોલન ઉઠાવશો તે વખતે રાજ્યજનોમા પણ આપની પ્રતિષ્ઠા થશે અને લક્ષસિદ્ધિમાં વિલંબ નહિ થાય નિર્બળની સહાયતા કોઈ કરતું નથી. કોલા-

હલ કર્યાવિના મા પણ પોતાના પુત્રને દૂધ પીવરાવતી નથી. માટે ધર્મરક્ષણાર્થે તથા પોતાનાં અધિકારોની રક્ષાને સારૂ વિદ્વાન્ સજ્જનો સંઘબદ્ધ થઇ વિચારપૂર્વક અત્યન્ત પ્રબળ ઉદ્યોગ કરે અને સર્વત્ર ધર્મોપદેશ કરે. ઉદ્યોગી પુરુષોપર ભગવાનની પણ અનુકંપા થશે. ભગવાનની કૃપાથી મનની ઇચ્છા મુજબ સિદ્ધિપણ અવશ્ય થશેજ. તે ભગવાનની કૃપા પ્રાપ્ત કરવાને માટે તે દેવદેવેશના ચરણકમળોમાં પ્રાર્થનાપૂર્વક સાદર પ્રણામ કરીને મારૂં વક્તવ્ય સમાપ્ત કરૂં છું.

સભાપતિશ્રીના વ્યાખ્યાન પછી વિષયવિચારિણી સભાનું અધિવેશન રાત્રે નવ વાગે રાખીને, પહેલી બેઠક સુખશાંતિ અને ઉત્સાહ સાથે સંપૂર્ણ થયલી જાહેર થઈ. આ વખતે સાંજના સાત તો વાગીજ ગયા હતા. તો પણ શ્રીમાન્ સભાપતિ બરોબર સમય ઉપરજ ૯ વાગે પધાર્યા. હજુ મંડપમાં ગણતરીનાજ સભ્યો આવ્યા હતા. શ્રીમાન સમયસર પધાર્યાનું સાંભળતાંજ એકદમ ટપોટપ બધા આવવા લાગ્યા. જોતજોતામાં મંડપમાં તો ગીરદી થવા લાગી. જે ન આવવા જોઇએ તે પણ તમાશો જોવા જાણે આવ્યા હોય તેમ અંદર ભરાઇ ગયા. આ ગેરવ્યવસ્થા થવાથી સભાપતિશ્રીએ કાયદાનો પૂરો અમલ કરવા માંડયો! પોતાના સીપાહીઓને મંડપની વ્યવસ્થા સોંપી દીધી. જેઓ સભાસદ ન હતા, તેમને મંડપમાંથી બહાર જવા હુકમ કીધો. માત્ર જેમને હક્ક હતો તેમનેજ મંડપની અંદર રાખ્યા. આથી શાંતિ પ્રસરી ગઇ! પછી મોડી રાત સુધી વિષયવિચારિણી સમિતિનું કાર્ય ચાલ્યું. બીજે દિવસે વિદ્વત્પરિષદનું અધિવેશન સવારમાં ૮ વાગે હતું, તેથી સમિતિ કાર્ય અધૂરૂં રાખીને ઉઠી ગઇ. આજે રાત્રે અંત્યજોનાં હૃદયોમાં ઝેર રેડવાનો ખૂબ પ્રયાસ ચાલી રહ્યો હતો. જાહેર સભાઓદ્વારા અંત્યજોને ઉશ્કેરીને સંમેલનના સભામંડપમાં ઘુસી જવાનો અને તે મુરાદ પાર ન પડે તો મુખ્ય દ્વાર ઉપર સત્યાગ્રહ કરવાનો પેંતરો રચ્યો. આ વાતની ખબરે રાત્રે જ પડી હતી. પણ પ્રભુ ઉપર શ્રદ્ધા રાખનારાઓ કાંઇ થોડા જ ડરી જાય છે!

બીજો દિવસ—અંત્યજસત્યાગ્રહ!

બે કલાક નિદ્રા લીધા પછી પ્રભાત થતાં પથારી છોડવી પડી! જલગામમાં તો જનસંખ્યા ખૂબ વધી ગઇ હતી. બુરહાનપુર આદિના વૈષ્ણવો મોટી સંખ્યામાં આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાનના દર્શન અને ચરણસ્પર્શ માટે તો મોટી ફોજ આવી પહોંચી હતી, ઉપરાંત મંડપના ઉત્તર દ્વાર પાસે પચાશેક અંત્યજોની એક ટુકડી આવી ગયાના અને તે દ્વાર બંધ કર્યાના, તેમજ દ્વાર બંધ થતાં જ તેની પાસે દ્વારને ઘેરો ઘાલીને રામનામ જપવાનો તમાશો કરતા અંત્યજોની વાત આવી ગઇ! હવે શું કરવું તે માટે વિચાર ચાલ્યો. જલગામના અંત્યજોને તો પડીજ ન હતી. કોંગ્રેસના રોજના આઠ આનાના રોજગારે આવેલા બહાર-ગામના દરેક ટેડાઓનુંજ આ કારસ્તાન કે તરકટજ હતું. હિન્દુસ્થાનના કમનસીબે જાતપાંત તોડક મંડળવાળા ભ્રષ્ટાચારીઓમાંના કોઇને કોઇ દરેક ગામમાં હોય છે! આ ગામના તેવા-કેટલાક પરદા પાછળ રહીને દોરી ખેંચતા હતા! જલગામના અંત્યજો તો ધર્મદ્રોહ કરવા તૈયાર જ ન હતા. આ તરફ અધિવેશનની ભવ્યતા કોંગ્રેસની બેઠકને પણ ઝાંખી પાડતી હતી. આ ઉકળાટ પેલા કહેવાતા સુધારકોથી કેમ સંખાય? પહેલાં તો આ અધિવેશનને જ તોડી નાંખવું એવા નિશ્ચય પર તેઓ આવેલા, અને તેવાં ભાષણો પણ કરેલાં હતાં! પણ એ વાત તો ભડભડતા પ્રજ્વલિત અગ્નિ સાથે ખેલ કરવા જેવી હતી. તેથી ગામના અભણ અંત્યજોને હથિયાર બનાવીને બીજી મુરાદ પાર પાડવી હતી. અધિવેશનના મંત્રી પાસે તેઓ આવે છે તેની ખબર મળતાં એક રા. મેર નામના શિક્ષિત ગૃહસ્થે મારફત લખી મોકલ્યું કે "આ સંબંધમાં દાખલ થવા માટેનું

જે પ્રતિજ્ઞાપત્રક છે તે ઉપર અંત્યજો સહી કરી આપે અને જે સ્થાન પર મંડપમાં અમે બેસાડીએ ત્યાં બેસે તો આ અધિવેશનમાં ખુશીથી આવી શકે છે." પણ પેલા બહારનાઓને તોફાન જ કરવું હતું. કોઇ વાતનો નિવેડો આવવા દેવો જ ન હતો, તેથી "અંત્યજોને દાખલ કરવામાં નહિ આવે" એવું પાટીયું મંડપની હદની બહાર જ લગાડી દેવામાં આવ્યું. આખરે તેઓએ ઉપર જણાવ્યા મુજબ સત્યાગ્રહ (!) શરૂ કર્યો. ઘણાઓએ આ વખતે પોલીસની સહાયતા લેવાનું કહ્યું, પણ તે માર્ગે જવાની ધર્મપ્રાણ શ્રીલક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ ના જ પાડી. સત્યાગ્રહ શરૂ થઇ ગયો. આ ભાડુતી સત્યાગ્રહીઓને ત્યાંથી ઉચકીને બીજે સ્થળે મૂકી દેવા એ એક પલ માત્રમાં બને તેવું હતું, પણ "નાગાથી બાદશાહ આઘા" એ કહેવત મુજબ દક્ષિણ દરવાજામાંથી બધા આચાર્યશ્રીઓ તથા વિદ્વાનો મંડપમાં ગયા. અને વિદ્વત્પરિષદનું કાર્ય તો શરૂ પણ કરી દીધું! એક દ્વારપર અંત્યજો અને તમાશબીનોની ઠઠ જામી હતી. સમય ઘણો વીતનાં અંત્યજોને ખાવા માટે ચણા અને પીવા માટે પાણી પૂરૂં પાડ્યું હતું. કોઇને કુદરતી હાજતે ઉઠવાની પણ મનાઇ હતી! તેમના નેતાઓને તો ખૂબ ધામધૂમ કરવી હતી, જનસમૂહની સહાનુભૂતિ ખેંચવી હતી! પણ આવા ભાડુતીઓ કાંઈ સંત્યાગ્રહીઓ કહેવાય? આ પેંતરો તેમનો મુદ્દલે ચાલ્યો નહિ. એટલે વેશ બદલી બીજે બારણેથી કંપાઉંડમાં પેઠાની ખબર પડતાં જ આ જમીનના મીલમાલેકે પોલીસને ખબર આપી દીધી. તે પરથી આ પ્રાઇવેટ માલીકીની જમીનમાં પેસવા બદલ બહારગામના તોફાની ભાડુતીઓને પોલીસે ગિરફતાર કરવા માંડ્યા એટલે ગામના અંત્યજો તો જીવ લઇને, મુઠ્ઠી વાળીને નાસી ગયા! ભાડુતી સત્યાગ્રહનો આ રીતે ફેંસલો થયો. આ વાતની ખબર છાપાઓમાં તો અજબરીતે ચિતરવામાં આવી હતી. પૂના અને મુંબઇના વર્તમાનપત્રોના પ્રતિનિધિઓ ત્યાં રિપોર્ટ લેવા બેસતા હતા, પણ છતી આંખે આંધળા હોય તેમ અજબગજબ રિપોર્ટ લખતા હતા. આજના છાપાંઓ એટલે જેમાં સોએ નવાણું ટકા જૂઠા ગપગોળા આવતા હોય હોય તે, અને એ દમડી કિંમતના વિચારોનું ભુંસું ભરનારા એડીટરાચાર્યોના બીહામણાં ચિત્રામણો! તો પણ ઘણાં પત્રોએ એટલું તો લખ્યું કે આ સત્યાગ્રહની થોડી પણ અસર સંમેલન પર થઇ નહતી. જ્યારે સત્યાગ્રહ શરૂ થયાની વાત બંગલામાં સાંભળી ત્યારે તો હૃદય ફફડી ઉઠ્યું હતું! શ્રીનાથદ્વારાથી નિકળતાં ભવિષ્યના જે વિઘ્ન–સ્વપ્નો જોયલાં હતાં તે પ્રત્યક્ષ કરવાનો શું સમય આવી પણ ગયો! પણ મંડપ પાસે જતાં સત્યાગ્રહ પાછળ રહેલું બળ અને તરકટ તુરતજ પ્રત્યક્ષ થયાં. શ્રીમાન્ સભાપતિ પણ ત્યાં પધાર્યા. કોઇ જાતનું વિઘ્ન આવ્યું નહિ. શ્રીમાન્‌ના પ્રતાપબળથી વિઘ્નો પાસે પણ ન ફરકી શકે એવો અનુભવ નવો તો હતો જ નહિ. છતાં આવા વિકટ સમયમાં તેના સાક્ષાત્કારથી જીવબુદ્ધિમાં માહાત્મ્યજ્ઞાનની જ્યોતિ વધુ પ્રદીપ્ત બને છે.

યાદગાર અધિવેશન—સવારમાં વિદ્વત્સંમેલન થયું તે બપોર સુધી ચાલ્યું, વિષયવિચારિણી સમિતિ પણ થઇ. ઉપસ્થિત થયલા અંત્યજસત્યાગ્રહ વિષે ખૂબ ઊહાપોહ થયો. ત્યારબાદ ઠરાવોનો નિર્ણય કરીને બધા ભોજનાદિ દેહકાર્યાર્થ સભામંડપ છોડી ગયા. આજે બપોરે ત્રણ વાગે 'સંઘ' ના મહાધિવેશનની બીજી બેઠક હતી. પહેલા દિવસ કરતાંયે આજે માનવસમૂહ તો વિશેષ ઉભરાતો હતો. સભામંડપ તો નાનો પડ્યો અને આસપાસના મંડપના આવરણોને ફાડી તોડીને મંડપની બહાર પણ જનસમૂહ મંડપની અંદરનું દશ્ય જોવા લાગ્યો. આજે બીજા આચાર્યો અધિવેશનમાં ન આવ્યા તેથી ભારે ચર્ચા થઇ હતી. પણ આજનો દિવસ તો યાદગાર બન્યો હતો. આજનું દશ્ય તો કાશીની મહાસભાને પણ ભૂલાવી દે તેવું હતું! લગભગ ૬૦

હજાર સંખ્યાની જનતા ઉપસ્થિત થઇ હતી. ભાડુતી અંત્યજોના દંભ અને પાખંડમય અરણ્ય રુદને કોઇની સહાનુભૂતિ મેળવી ન હતી. મસલત સમિતિએ પસાર કરેલા ઠરાવો એક પછી એક રજુ થયા, અને વિદ્વાન્ પંડિતો અને ધર્મનિષ્ઠ સદ્‌ગૃહસ્થોના સંપૂર્ણ અનુમોદનથી પસાર પણ થવા લાગ્યા. આ ઠરાવો ઉપરનાં ભાષણો અજબ પ્રેરક હોઇ ધાર્મિક જુસ્સો ઉત્પન્ન કરતા હતા. આ જ સમયે વિલાયતમાં ગોળમેજી પરિષદ્ ચાલુ હતી તેથી એ પરિષદ્‌ને ચેતવણીરૂપે પહેલો ઠરાવ મૂકાયો; અને નીચે મુજબ તાર વિલાયતમા વડા પ્રધાનને તથા બીજા ગોળમેજી સભ્યોને કરવામા આવ્યો. એ તાર આ પ્રમાણે છે—

THE PRIME MINISTER,
LONDON (England.)

At the meeting of the All-India Varnashram Swarajya Sangh held at Jalgaon, Khandesh District, Bombay Presidency.

It was resolved that in the new Constitution which is to be framed as the result of the Round Table Conference, it should be provided that there shall be no interferehce by Legislation or othervise in matter affecting Hindu Religeons or Religeon and Socio-Religeons beliefs Practices and Culture of the Sanatan Hindus and that such provision shall be unalterable.

Please put this Resolution before the Round Table Conference and be good enough to get this provision introduced into the new constitution.

From
Goswami Shri Damodarlalji Maharaj,
Chief Acharya Vallabha Sampraday of Nathdwara
President,
All India Varnashram Swarajya Sangh Conference.

Copies to
Secretary of State for India.
Maharaja of Durbhanga
Maharaja of Dholpur.

Dated, 30-12-1930. 6 p. m.

બીજો ઠરાવ સોલાપુરમા ફાસીની સજા પામેલા સદ્‌ગૃહસ્થો માટેનો હતો, પણ આ સરકાર પાસેથી એવી દયાની આશા જ હવે તો ફોગટ ગણાય. ત્રીજો ઠરાવ એકસો (૧૦૦) કાર્યકર્તા ધર્મવીર ઉભા કરવા માટેનો હતો. "સ્વાધીનજીવનવાળા, સદાચારસંપન્ન, સર્વથા નિઃસ્વાર્થ, ઉત્તમોત્તમ ત્યાગી" આવા કાર્યકર્તા જોઇતા હતા. આ વિશેષણવાળા તો ભાગ્યેજ નિકળી આવે. સભામા જ્યારે નામ નોધાવા માડયા ત્યારે તો જાહેરમા નામ આવે એવી આશાએ ઘણાએ પોતાના નામ પોકારવા માડયા, પણ સભાપતિશ્રીએ કપરી કસોટી કરી; ઉભા થઇને જણાવ્યું કે જેને નામ નોધાવવું હોય તે પાછળથી કાર્યાલયમા નોધાવે, અહીં ઘોઘાટ ન કરે. જોયું કે પાછળથી

ભયંકરાચાર્યજીએ હાજરી આપી! શારદા બીલ માટે જ્યારે ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તો શંકરાચાર્યજીના એક પંડિત કે જેઓ વારંવાર વ્યાખ્યાનપીઠ ઉપર આવીને, કાંઈને કાંઈ ગર્જના કરીને, જનસમુહને હાસ્યમાં ગરકાવ કરતા હતા, તેમણે તો કહ્યું કે "હું તો મારા નાના ભાઈનાં લગ્ન નાનપણમાંજ કરવાનો છું; જોઉં છું કે બ્રીટીશ સરકાર મને શું કરે છે!" આથી ખૂબ હસાહસ થઈ અને તાળીઓના વિપુલ અવાજો થયા! એ ઘડીં ગંમત આવી! આજે અંત્યજસ્પર્શને લગતો ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તેણે જનસમાજનું ખૂબ ધ્યાન ખેંચ્યું. આ ઠરાવ શાસ્ત્રીજી રમાનાથજીએ મૂક્યો, અને તેને અનુમોદન મારે આપવાનું હતું. મારો તો ખાસ વિષય હતો, કારણ કે આ સવાલ જ્યારથી ગાંધીજીએ ઉઠાવ્યો છે ત્યારથીજ હું એ વિષે લખી રહેલો છું. એ વિષેની વિગતો જ્યારે મેં મૂકી ત્યારે સભા આશ્ચર્યચકિત થઇ ગઇ. સભાપતિશ્રીએ પણ શ્રીમુખે પાચ મિનિટનાં વ્યાખ્યાન માટે મને શાબાસી આપી ત્યારે તો હું કૃતાર્થજ થયો આ ઠરાવે ઘણી ચકચાર ઉત્પન્ન કરી, પણ તે પસાર થયો. બીજા પણ ઠરાવો પસાર થયા. છેવટે ઉપકારાદિ વિધિ થયા પછી અધિવેશન પૂર્ણ થયું.

વિદ્વત્પરિષદમા ખૂબ ચર્ચા ચાલી. આમાં આવીને જેને જે કાંઈ સવાલ કરવા હોય તેને માટે પૂર્ણ છૂટ હતી. ખૂબ શાસ્ત્રાર્થો થયા. શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજીના વાચસ્પતિસમા વક્તા અને વિદ્વાન્ પંડિત રાજેશ્વર શાસ્ત્રીજીએ તથા અન્ય પંડિતોએ શંકાઓનું સમાધાન અચ્છી રીતે કર્યું હતું. આવતા વર્ષનું મહાધિવેશન કલકત્તામાં ભરવાનું આમંત્રણ સ્વીકારાયું હતું.

પસાર થયેલા અગત્યના ઠરાવો.

ઠરાવ ૧ લો:—ગોળમેજી સભાદ્વારા જે ભાવી શાસનવ્યવસ્થા કરવામાં આવે એમાં એવું વિધાન થવું જોઈએ કે હિંદુઓની ધાર્મિક અને સામાજીક વ્યવસ્થા તથા વ્યવહારમાં કોઈ પ્રકારનો હસ્તક્ષેપ કરવામાં નહિ આવે. આ આશયનો ઠરાવ તાર હિંદી પ્રધાન મારફત વડા પ્રધાનને મોકલી દેવો જેથી તેઓ તેને ગોલમેજી સભામાં રજુ કરે.

ઉપરનો ઠરાવ રા. રા. હીરાલાલ સોલીસીટરે રજુ કર્યો અને ટેકો મળ્યા બાદ સર્વાનુમતે પસાર થતાં બીજો ઠરાવ રા. માધવરાવ ગોડબોલેએ રજુ કર્યો; અને તે પસાર થયો.

ઠરાવ ૨ જો—અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘનું આ અધિવેશન શ્રીમાન વાઇસરોય મહોદયને નિવેદન કરે છે કે સોલાપુર હુલ્લડમાં મલાપ્પા વગેરે જે ૪ વ્યક્તિઓને ફાંસીની શિક્ષા થઇ છે તેના પર આપ નામદારે કૃપા કરી ફાંસીની શિક્ષા રદ કરવી.

ઠરાવ ૩ જો:—આ અધિવેશનની સમ્મતિમાં એ આવશ્યક જણાય છે કે અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘના ઉદ્દેશને પાર પાડવાને માટે ઓછામાં ઓછા ૧૦૦ સ્વાધીન જીવનવાળા, સદાચારસંપન્ન, સર્વથા નિઃસ્વાર્થ ઉત્તમોત્તમ ત્યાગી કાર્યકર્તાઓને સારૂ ચાળીશ ખરાક પાડી કાર્યકર્તાઓની વ્યવસ્થા તુરત કરવી જોઈએ, અને એને માટે એક ઉપસમિતિ સ્થાપવી જોઇએ કે જે આ કાર્યને શીઘ્ર પૂરૂં કરે.

ઉપરનો ત્રીજો ઠરાવ શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ રજુ કર્યો અને પસાર થયા પછી ચોથો ઠરાવ મહામંત્રી સ્વામીજી દયાનંદજીએ રજુ કરતાં, શ્રી. ગિરિધરશર્માના અનુમોદનથી પસાર થયો.

ઠરાવ ૪ થો:—સંઘના કાર્યને માટે દ્રવ્યની સગવડ અર્થે માનનીય વ્યક્તિઓનું એક ડેપ્યુટેશન હિંદુસ્થાનના મુખ્ય મુખ્ય સ્થાનોમાં ફરીને આવશ્યક્તા પ્રમાણે દ્રવ્યસંગ્રહ કરી શકે એવો પ્રબંધ થવો જોઈએ. ધનસંગ્રહને માટે કમમાં કમ એવા લોકોની પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઇએ કે જે નિયમિત રકમ એક વર્ષની અંદર એકત્ર કરવાનો બોજો પોતપોતાના ઉપર ઉઠાવે અને શાખાસભાઓને પણ તેની યોગ્યતાનુસાર કાર્ય સોંપવું જોઇએ.

બીજો સામાન કેમ ઉપાડી શકાય ? સદ્ભાગ્યે એક હમાલ મળી ગયો. વાદળામાં ચંદ્ર ઢંકાઇ રહેલો એટલે અંધારાનું સામ્રાજ્ય હતું! તેમાએ વળી સ્ટેશનના તાર અને રેલ્વેલાઇનવાળા રસ્તામાં ચાલવાનું હતું. એક ભોમીઓ પણ સાથે હતો. આ દોઢ માઇલની વિકટ મુસાફરી તો કદી નહિ ભૂલાય! અત્યારસુધી જે મોજ ઉડાવી હતી, તે અહીં નિકળી ગઇ. એમ અથડાતાં ઠોકર ખાતા જ્યારે માલગાડી પાસે ગયા ત્યારે ત્યાં ઉભેલી માલગાડીઓમાં ખંડવા જનારી કઇ તે શોધતાં પણ સમય નીકળી ગયો. આખરે માલગાડીનો પત્તો લાગ્યો અને ગાર્ડના ડબ્બામાં બેસવાની જગા મળી ગઇ! આ ડબ્બો શોધવા માટે ઈન્જીન પાસેથી ઠેઠ છેલ્લા ડબ્બા સુધી ભારલાદેલી સ્થિતિમાં કવાયદ કરતાં જે ડબ્બો લાધ્યો તે પણ ખોચરાના સાલનો હતો એટલે બેસવાના કે સામાન મૂકવાના નીચેના પાટિયાં પણ તુટી ગયાં હતા ! એટલે રેલનાં પૈડાં કેમ ફરે છે અને નીચેના લોખંડના પાટા અને પથરાયલા પથરાનો દેખાવ કેવો થાય છે તેનો અનુભવ લેવાની જરૂર હતી તે પૂરી પડી! જેમ તેમ કરીને સવારે નવ વાગે ખંડવા પહોચ્યા. હવે તો હાથમાં એક જ કલાક હતો. માલ ગાડીમાંથી ઉતરીને સામાન ઉઠાવીને ખંડવા સ્ટેશન તરફ આ સંઘ ચાલ્યો. સ્ટેશન-પાસે આવતાં નાની અને મોટી લાઈન પાસેપાસે થઈ જાય છે. મોટી લાઇન પર ઈંજિન ચાલતું હતું તેથી હું નાની લાઇન તરફ ચાલતો હતો. પણ પાછળથી અંગ્રેજ મુસાફરોની સ્પેશ્યલ નાની લાઇન પર જોશભેર આવી રહી હતી. હું તે લાઈનની વચ્ચે હતો. મારા હાથમાં શ્રીમાનની જોખમની પેટી-કલમદાન હતી. પેલી ટ્રેન-વાળા ઈજીન ડ્રાઇવરે સીટીઓ પર સીટીઓ લગાવી, પણ મેં ઈજીનોના ઘોંઘાટમાં સાંભળીજ નહિ. સ્ટેશનનું પ્લેટફોર્મ તદ્દન નજીક આવેલું જોતા જ મે પેલી નાની લાઈન છોડી કે પાછળથી ધમધમાટ કરતી સ્પેશ્યલ ગાડી પસાર થઈ ગઈ! આબાદ બચાવ થયો! સિગ્નલ આપનારે કહ્યું કે તમને આજે ઇશ્વરે જ બચાવ્યા છે! પણ તેને કયા ખબર હતી કે, બધી બાબતમા અંગીકૃત જીવના રક્ષણકારની છાયામાં રહેનારને બીજો કયો નવો ઇશ્વર આવીને બચાવવાનો હતો? એક કલાકમાં શ્રીમાને સ્ટેશન પર જ નિત્ય કાર્ય કરી લીધુ! વૈષ્ણવો તો દર્શનાર્થ આવેલા હતા જ. પણ નાગપુરની પેઠે તેમના મનોરથો મનમાં જ રહી ગયા! બરોબર અગીયાર વાગે ખંડવા છોડ્યું. રાત્રે રતલામ આવ્યુ, અને સવારે ચિતોડ થઇને પોષ વદ ૧૦ મંગળવારે સવારે ૮ વાગે માવલી સ્ટેશન પર આવી પહોચ્યા. શ્રીમાન્ મોટરમાં બિરાજીને તાબડતોબ શ્રીજીની સેવામાં પધાર્યા.

શ્રીનાથદ્વારામાં પધાર્યા પછી એક જાહેર સભા ભરવામાં આવી. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની શાખા અહીં સ્થાપી. જલગામમા જે કાર્યક્રમ થયલો અને જાહેર વર્તમાન પત્રોમાં જે ગપગોળા ઉડેલા તે વિષે લંબાણથી ખુલાસો કરવા મને આજ્ઞા થતા મેં જલગામ અધિવેશનનો ભવ્યતાનો થોડો શાબ્દિક ચિતાર આલેખ્યો. ત્યારબાદ અહીં પણ 'સંઘ'ને શ્રીનાથદ્વારાના અધિકારીઓ તરફથી સારી મદદ મળી અને ઘણા સભાસદો થયા. બહારગામના વૈષ્ણવ સદ્ગૃહસ્થોએ પણ 'સંઘ'ને યથાશક્તિ મદદ કરી એ રીતે સભાપતિએ 'સંઘ'ને મદદ કરવાનું કાર્ય પોતાને ત્યાંથી જ પ્રારંભ્યું

ત્યારબાદ કાંકરોલીમાં શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીવ્રજભૂષણલાલજી મહારાજે પણ 'સંઘ'ની શાખા સ્થાપી અને પોતે ઉદારતાપૂર્ણ મદદ સંઘને કરી. એ રીતે 'સંઘ'માં સક્રિય મદદ સંપ્રદાયે કેટલી કરી તેનો ટુંક ઇતિહાસ અહીં આલેખ્યો છે. શ્રીનાથદ્વારા મકરસંક્રાંતિ કરી, હવે ખેલના દિવસ પાસે આવ્યાથી વસંતપંચમી કરીને અમદાવાદ જવાનો નિર્ણય કર્યો. લગભગ અઢી માસે માઘ સુદમાં હું અમદાવાદ આવ્યો.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધોળ .ગર–ભાગ–૨. નિત્યપા ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રન્થો, શ્રીવલ્લભાખ્યાન, શ્રીયમુનાજીનાં ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદદાસજીકૃત રાસ. ચાધ્યાયી, ભમરગીત, મુળપુરુષ, નિત્ય પદ (જગાવવાથી પોઢાડવાનાં) જન્માષ્ટમી વધાઇઓ, દીનતા આશ્રયનાં પદો, શ્રીભાગવતનાં ૧૬ ધોળ, ભક્તિપોષણ, શ્રીનાથજીનાં ધોળ, શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી, સાતબાળક શ્રીવલ્લભકુલ આદિનાં ૪૦૦ ધોળ. આવો સાતસો પાનાંનો સસ્તામાં સસ્તો ગ્રન્થ સંપ્રદાયમાં પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર છપાઈ, આકર્ષક બંધાઇ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ. ટે. ખ. સાત આના.

૧. **શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર**—અઢીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળ અને શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીરઘુનાથજી તથા શ્રીગોપેશજીની સંસ્કૃત ટીકાઓનો સવિસ્તર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અઢી આના, ટ. ખ. દોઢ આનો.

૨. **પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ**—શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી, શ્રીગોકુલનાથજી તથા શ્રીવલ્લભકુલના અસરકારક ઇતિહાસો, તેમાંએ મહાનુભાવ રસખાનજી તથા શ્રીમતી તાજની વાર્તા તો વાચ્યાજ કરશો. આવા મોટા પુસ્તકનું નોછાવર માત્ર ૭ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૩. **શ્રીગોકુલેશજીનો માલાપ્રસંગ**—શ્રીગુસાંઇજીના ચોથા લાલજીએ જહાંગીરના જુલ્મો સામે જે અહિંસક ધર્મયુદ્ધ વર્ષો સુધી ચલાવ્યું તેનું જલહલતી ભાષામાં વર્ણન, યુક્તિઓથી સમજાવેલું તિલકનું રહસ્ય, સચિત્ર પુસ્તક છતાં નોછાવર માત્ર દોઢ આનો.

૪. **શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર**—નવ લાખ શ્લોક લખનાર મહાન્ વિદ્વાન ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર તથા શિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ વિષે કવિ શ્રીદયારામભાઇનો ગ્રંથ છે. વિષ્ણુદ્રોહીઓને તમાચો મારનાર આ ગ્રંથની નોછાવર માત્ર ચાર આના.

૫. **જવસંત મહાત્યાગ**—પંચમપીઠાધીશ્વર શ્રીગોવિન્દપ્રભુએ જયપુર નરેશના જુલ્મો સામે ચલાવેલી લડતનો ઇતિહાસ વાંચી રડવું આવશે, ખુશી થશો, હસશો, સચિત્ર છતાં નોછાવર ચાર આના. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૬. **વૈષ્ણવ નરેશો**—હિન્દમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રાજામહારાજાઓનાં અદ્‌ભુત વૃત્તાંતો, સચિત્ર, મૂલ્ય ત્રણ આના. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૭. **આટલું તો કરજોજ**—ટુંકામા ટુંકો નિત્ય નિયમ ૩૦ ત્રીસ હજાર નકલો વેચાઇ ગઇ છે. નોછાવર એક આનો. ટ. ખ. ૦॥.

૮. **ન્યાયમૂર્ત્તિનો ચુકાદો**—મુંબાઇના ન્યાયમૂર્તિ રાંગણેકરે ભગવદીય શેઠ પ્રાગજી સુરજીએ માંડેલા કેસમાં આપેલો અગત્યનો ચુકાદો વાંચીને સુધારકોની પોલ પારખી શકશો અને પુષ્ટિમાર્ગની નહેજલાલી જોઇ શકશો. મૂલ્ય બે આનો. ટ. ખ. એક આનો.

૯. **પંચાવન પાઠનો ગુટકો-પૃષ્ઠ ૨૫૬**—નિત્ય નિયમના પંચાવન પાઠોનો આ ગુટકો જે પહેલાં ૪૨ પાઠનો હતો તે) મોટા અક્ષરમાં હમણાં ફરી છપાવ્યો છે. મૂલ્ય માત્ર ત્રણ આના. ટ. ખ. એક આનો.

૧૦. **શ્રીનટવરલાલનાં ધોળ**—રાજનગરવાળા ચિ. ગો. શ્રીરણછોડલાલબાવાસાહેબનાં નિત્યલીલાસ્થ અ. સૌ. વહુજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય બે આના. ટ. ખ. અર્ધો આનો.

બધા ગ્રંથોમાં ટપાલ ખર્ચ જુદું.

ઠેકાણું:—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.
૨૭૪૮, ગુલામહેતાની પોળ, અમદાવાદ

धारापुरीनी गुफामां सद्गृहस्थो, तथा निज परिकर साथे श्रीमान

Photo: Seth Hansraj]

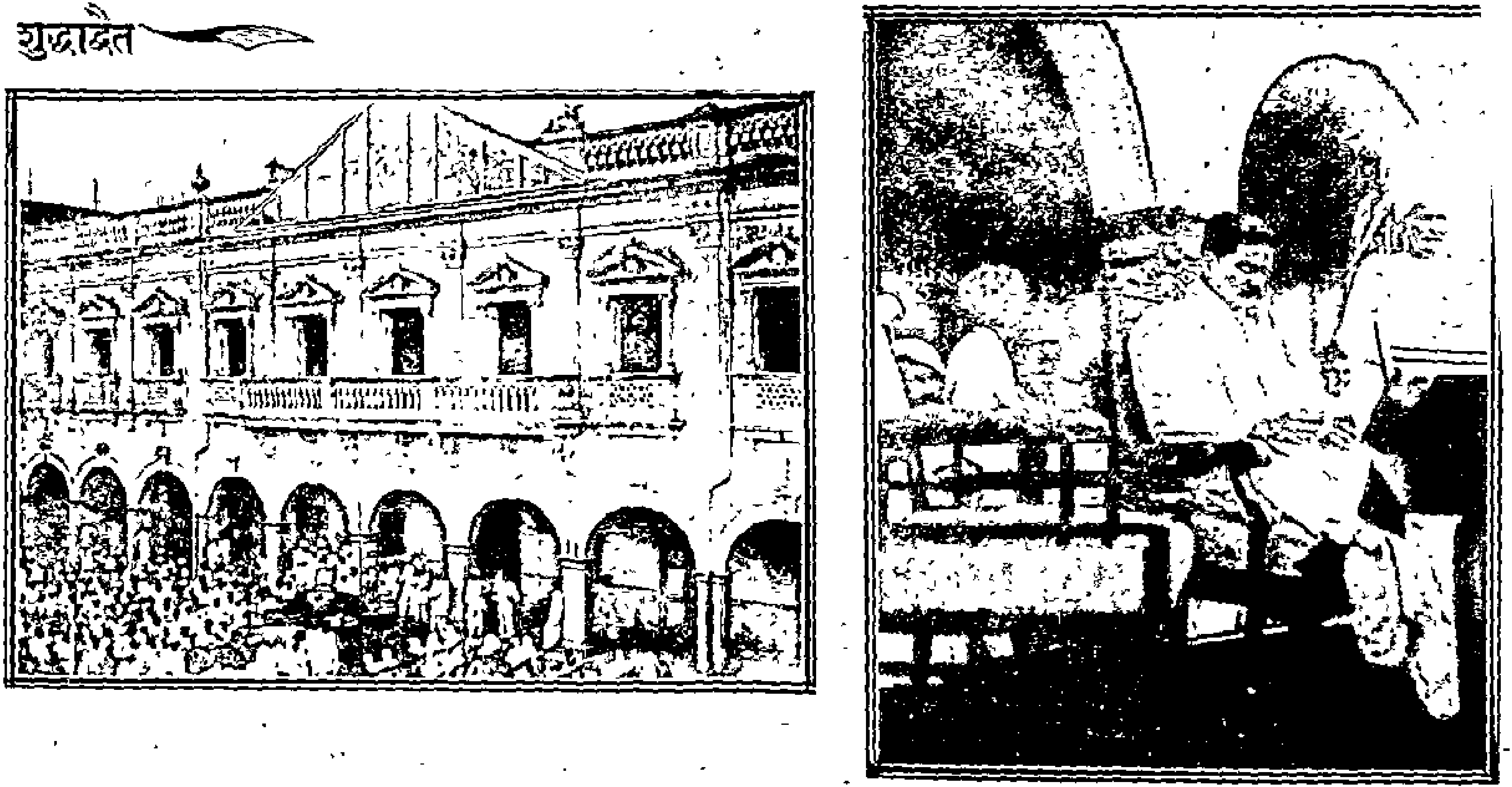

वर्णाश्रम स्वराज्य-संघना सभापति तरीके मुंबाईमां करेलुं आंदोलन. माधवबागनी यादगार सभानुं दृश्य.

Photo: Seth Hansrajbhai.)

Saraiya Art P. Ahmedabad.

દરેક ધર્મ, સંપ્રદાય અને સંસ્થાઓની સમાન અને તટસ્થ રીતે સેવા બજાવી રહ્યું છે. હાજર રહેલા બીજા ઘણાઓએ પણ દરબારશ્રીએ કરેલી પ્રશંસાને અનુમોદન આપ્યું હતું.

બાદ અમારા પ્રતિનિધિએ મહારાજશ્રી સાથે તેઓશ્રીની પધરામણીનો હેતુ, સ્વદેશી વગેરે બાબતોના સંબંધમાં વાતચીત કરીહતી, જે અમો સવાલજવાબના આકારમાં હેઠળ રજુ કરીએછીએ:-

સવાલ—હાલમાં આપશ્રીની અત્રેની પધરામણીનો હેતુ શો છે ?

જવાબ—અમારો અહીં આવવાનો હેતુ વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કારોબારી કમીટીની બેઠકમાં હાજરી આપવાનો, વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું ડેપ્યુટેશન મોકલવાનો અને સંસ્કૃત યુનિવર્સિટી સ્થાપવાની હીલચાલ કરવાનો છે. અમારા અહીં આવવાના હેતુ વિષે જે ખોટી અફવા ફેલાઇ છે કે અમો કોંગ્રેસને તોડવા માટે પ્રચાર કરવા આવ્યા છીએ તે વાત બીલકુલ ખોટી છે. એ વાત ખરી છે કે અમારો વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ ધર્મમાં બાધક હોય તેનો વિરોધ કરવાનો છે, પરંતુ જ્યાં સુધી અમારા ધર્મમાં દખલગીરી થતી ન હોય ત્યા સુધી અમારે કોઇની સાથે-કાંઇ વિરોધ નથી. અમે કોંગ્રેસને તોડવા માટેના કાર્યનો પ્રચાર કરવા માટે અત્રે નથી આવ્યા પણ ધર્મની રક્ષા કરવા માટે આવ્યા છીએ. ધાર્મિક બાબતોમાં દખલગીરી સામે જ અમારો વિરોધ છે. બાકી જે બાબતોમાં ધાર્મિક વિરોધ ન હોય તે સર્વ બાબતોમાં સહકાર કરવા આવ્યા છીએ. અને એ વાત અમે અહીં સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છીએ છીએ.

મંદિરો અને સ્વદેશી.

સવાલ—મંદિરોમા સ્વદેશી પ્રચાર વિષે આપ શું કહો છો ?

જવાબ—અમારા મંદિરોમા સ્વદેશીનો પ્રચાર સારો છે. પરંતુ અમારી સંસ્થા ધર્મની સંસ્થા હોવાથી બહારથી કોઇ ગૃહસ્થ કાઇ ભેટ લાવે અને તે વિદેશી પણ હોય તો તેના પર અમે દબાણ કરી શકીએ નહિ. પરંતુ અમે અમારા મંદિરમાં તો સ્વદેશી વસ્ત્રોજ ખરીદીએ છીએ. પરંતુ કોઇ પરદેશી કાપડ લાવે તો અટકાવી શકીએ નહિ.

સવાલ—આપશ્રી આપના ભક્તોને સ્વદેશી ચીજોજ ભેટ લાવવાનું ફરમાન ન કરી શકો ?

જવાબ—અમે તેમના પર તે જાતનું દબાણ ન કરી શકીએ કે ફરજ ન પાડી શકીએ પરંતુ તેઓને સમજાવીએ તો ખરાજ અને તેમ તો કરીએ છીએ.

ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજન આપવાની હીમાયત.

હું તો ગૃહ-ઉદ્યોગોને ઉત્તેજન આપવાનો હીમાયતી છું. બુહાનપુરમાં મેં તો સાંચાકામ સામે વિરોધ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. કારણ કે સાંચા કામ માણુસ જાતને નુકશાનકારક છે. એકલા ચરખાજ નહિ, પરંતુ દરેક ગૃહ-ઉદ્યોગોને ઉત્તેજન આપણે આપવું જોઇએ.

વલ્લભસંપ્રદાયમાં સ્વદેશીનો આગ્રહ.

અમારા વલ્લભસંપ્રદાયમા તો સ્વદેશી માટે પરંપરાથી ભારે આગ્રહ છેજ. આ સ્વદેશીની ભાવના એટલી બધી તો અમારામા ભારે છે કે દેવસેવામા અમે બેઠા હોઇએ તે વખતે અમે પરભાષા પણ વાપરતા નથી. અમે પણ જ્યાં સુધી સ્વદેશી વસ્ત્રો હોય ત્યાં સુધી અમે તે વસ્ત્રોજ વાપરીએ છીએ.

પ્રભુ માટે સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ નથી.

અમારા મંદિરોમા સ્વદેશીની બાબતમાં આવી ભાવના પ્રસરેલી છે પરંતુ અમારા પ્રભુ માટે તો ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ અમે અંગીકાર કરાવીએ છીએ. તેમાં સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ રાખતા નથી. કારણ કે પરમેશ્વરને તો સ્વદેશી-પરદેશી સમાન છે. 'આમ છતા પણ શ્રીઠાકુરજી માટે

ઑલ ઈંડીયા વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘ.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક–સાત કલાક ચાલેલું કામકાજ. સંસ્કૃત યુનીવર્સીટીની સ્થાપના વિષેનો સવાલ–રાઉંડટેબલ કૉનફરન્સમાં પ્રતિનિધિ મોકલવાની ચર્ચા.

કરોડો સનાતની હીંદુઓની તથા ભારતવર્ષના સમસ્ત ધર્માચાર્યોની બહોળી લાગવગ ધરાવનારી અખિલ ભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક બુધવારે સાંજે ચાર વાગે અહીં વાલકેશ્વરમાં શ્રીકૃષ્ણકુંજ નામના બંગલામાં મળી હતી. તેમાં ભાગ લેવા માટે જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રધાન પીઠપર બીરાજતા સુપ્રસિદ્ધ આચાર્યવર્ય પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદય શ્રીનાથદ્વારાથી અહીં પધાર્યા છે. એઓશ્રી સંઘના સભાપતિ હોવાથી પ્રમુખસ્થાને બીરાજ્યા હતા તે ઉપરાંત મુંબઈના મશહુર ધર્માચાર્ય પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ગોકુલનાથજી મહારાજ પધાર્યા હતા. બનારસથી જાણીતા સ્વામીજી શ્રી. દયાનંદજી અને સુપ્રસિદ્ધ પંડિત દેવનાયકાચાર્યજી પણ મંત્રી તરીકે હાજર હતા. તે ઉપરાંત પંડિત શ્રી. રમાપતિમિશ્રજી, પુનાવાળા બાપટ શાસ્ત્રીજી, શ્રી એનાપુરે શાસ્ત્રીજી, અમદાવાદવાળા રા. વસંતરામ શાસ્ત્રીજી તથા કોષાધ્યક્ષ શ્રીયુત નાણાવટી સોલીસીટર તથા સુરતવાલા પ્રોફેસર દૂરંકાલ એમ. એ. વગેરે આવ્યા હતા.

સંસ્કૃત યુનિવર્સિટી માટે ડેપ્યુટેશન મોકલવાનો ઠરાવ જલગામ ખાતે થયો હતો તે પર વિચાર ચલાવતાં હાલના કટોકટીના મામલાપર વિચાર કરતાં મુંબઈની આર્થિક સંકડામણ જોતાં હાલમા ડેપ્યુટેશન મારફત મુંબઈમાં ફંડ ભરાવવાનું કામ મુલતવી રાખવાનો ઠરાવ થયો હતો. જો કે હીંદના રાજામહારાજાઓએ ડેપ્યુટેશનને આમંત્રણ આપેલું છે, પણ પચાસ લાખની બાદશાહી રકમ આવા સમયમાં એકઠી કરવાનો પ્રશ્ન મુશ્કેલી ભરેલો લાગવાથી હાલ તુરત મુંબઈના ધર્મિષ્ઠ ધનાઢ્ય શ્રીમંતોપર ફંડનો થોડો પણ બોજો નહીં નાખવાનું કમીટીએ યોગ્ય ધાર્યું હતું, અને સંઘના વિશાળ ધાર્મિક આદર્શના પ્રચાર અર્થે મુંબઈ ઈલાકામા સભાઓ દ્વારા આંદોલન કરવાનો ઠરાવ થયો હતો.

તે ઉપરાંત રાઉંડ ટેબલ કૉનફરન્સમા પ્રતિનિધિઓ મોકલવા વિષેની ચર્ચા ચાલતા હીંદના જાણીતા ધર્માગ્રહીઓની એક વગવાળી કમીટી નીમવામા આવી હતી. કરોડોની સંખ્યા ધરાવનારી સનાતનધર્માગ્રહી હીંદુ જનતામાંથી યોગ્ય સંખ્યાના પ્રતિનિધિઓનો સ્વીકાર બ્રીટીશ ગવર્નમેંટ કરે તે માટે આંદોલન કરવા ઠરાવ્યું હતું. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ સ્વરાજ્ય માટે પૂર્ણ સહમત છે, પણ તેમાં હીંદુ ધર્મના રક્ષણ માટે જે ઘટતા ચાપતા ઈલાજો લેવા જોઈએ તે લેવા માગે છે. કારણકે સ્વરાજ્ય માટેના આંદોલનો કરતાં આપણે આર્ય સંસ્કૃતિનો નાશ કરી બેસીએ અને વીલાયતી મોહમા ન ફસાઈએ તે જોવાનું છે.

આ ઉપરાંત દરેક સનાતની સંસ્થાઓના સંગઠન વિષે પણ ઊહાપોહ થયો હતો અને મુંબઈમાં વિશાળ સભાઓ ભરીને ધર્મના રક્ષણપૂર્વક આર્ય સંસ્કૃતિના રક્ષણપૂર્વક સ્વરાજ્ય પ્રાપ્ત કરવાના કેવા માર્ગ હોય તેના આદર્શો રજુ કરવાનું ઠરાવ્યું હતું. છેવટે સાડા પાંચસો માઈલ દૂરથી મોટો ખર્ચ કરીને અહીં પધારવા માટે સભાપતિશ્રીનો ઉપકાર માન્યો હતો અને

એઓશ્રીએ બહારગામથી આવેલા પ્રતિનિધિઓને ધન્યવાદ આપીને રાત્રે ૧૦॥ વાગે સભા બરખાસ્ત કરી હતી.

માધવબાગમાં ગંજાવર સભા.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક પછી મુંબાઇમાં જાહેર સભાઓ ભરવાનો કાર્યક્રમ શરૂ થયો. ચૈત્ર વદ ૧૦ ને રવિવારે માધવબાગના ભવ્ય ચોગાનમાં સભા ભરવામાં આવી, જેનાં દૃશ્યો આ પુસ્તકમાં છાપ્યાં પણ છે. આજે પ્રારંભમાં સંઘના મંત્રી મંડળના એક ઉત્સાહી કાર્યકર્તા અને ધુરંધર શ્રીરામાનુજીય વૈષ્ણવ વિદ્વાન્ શ્રીદેવનાયકાચાર્યજી તથા મહામંત્રી સ્વામીજી દયાનંદજી બી. એ. સંઘના ઉદ્દેશો ઉપર લંબાણથી બોલ્યા. સભા સમજી શકી કે સંઘ કેમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહ્યો છે અને કરવા માગે છે ! આ શાંત, વિરોધીઓ ઉપરના હુમલાઓથી-રહિત અને સ્વધર્મનું રહસ્ય સમજાવનારૂં વ્યાખ્યાન ઘણું જ ફતેહમંદ નિવડ્યું તે પછી શ્રીમાને નીચે મુજબ પ્રવચન કર્યું.

સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયનું ભાષણ.

સભ્યવૃંદ એવં વિદ્વદ્વૃંદ ! આજનો કાર્યક્રમ શો છે તે સર્વને વિદિત જ છે. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘ જેવી મહાસંસ્થા શા ઉદ્દેશથી સ્થપાયલી છે અને તે કેવાં લોકોપયોગી કાર્યો કરી રહી છે અને કરવા માગે છે તે અહીંની જનતાને સમજાવવા માટે જ આ સભા ભરવામાં આવી છે. સમય ઘણો થઇ ગયો છે. જનતા હવે સભા છોડવાને ઉત્સુક બની ગયલી દેખાય છે. તેમાં એ અહીંની પ્રવૃત્તિવાળી અશાંત જનતા પાસેથી વધુ ધૈર્યની આશા રાખી ન જ શકાય. કાશી આદિ સ્થલોમાં તો પચીસ હજારની સંખ્યા પણ શાંતિથી ધૈર્ય રાખીને વ્યાખ્યાન સાંભળતી હતી. ધર્મનું પાલન સાધારણ નથી. આ દેશમાં એવા ધાર્મિક જનો થયા છે કે જેમણે ધર્મ માટે વહેતી આગમાં પોતાનું જીવન હોમી દીધું છે. આવા ધાર્મિક નરોને જ ઇતિહાસ સ્મરે છે. તેથી દેશની જનતા ધર્મપ્રધાન હતી અને રહેશે. (તાળીઓ.) બીજા દેશો માત્ર ઉદ્યોગ–વ્યાપારમાં જ મચ્યા રહીને દુન્યવી સુખ માટે જ તલસી રહે છે. તેમનામાં ધર્મરુચિ હશે કે કેમ તેની શંકા છે. પણ ભારતવર્ષ તો ધર્મપ્રધાન દેશ છે. આ દેશ કેવલ ઐહિક સુખ માટે જ સ્વશક્તિનો સર્વ વ્યય કરશે જ નહિ.

આજે વિદ્વાન્ વક્તાઓ કહી ચુકયા કે ધર્મ વિના દેશોન્નતિ નથી. ખચિત જ નથી, નથી, ને નથી જ. આ જ વિષય હું ફરીને કહીશ કે દેશોન્નતિ પણ વર્ણાશ્રમધર્મથી જ છે. (તાળીઓ.) ધર્મ વિનાનું જીવન તે જીવન જ ન ગણાય. એ તો પશુજીવન થશે. ધર્મમર્યાદા છોડીને ઉન્નતિની આશા વ્યર્થ જ છે. બીજા દેશો આપણી વર્ણાશ્રમની વ્યવસ્થાની તારીફ કરી રહ્યા છે. આપણા દેશનું ધાર્મિક સંગઠન જગતને આશ્ચર્યચકિત કરી રહ્યું છે. આપણા કેટલાક દેશીઓ હવે તેને તોડવા માગે છે. જેમકે આ દેશને માથે શારદા એક્ટ ઠોકાયો છે. એ કાયદો સમજાવે છે કે લગ્ન જલદી કરવાથી નિર્બલ પ્રજા થશે, માટે મોટી ઉમરે પરણાવો. કેવી બેહુદી દલીલ છે ? લગ્નની ભાવનાને કેવી કચરી નાંખવામાં આવી છે ? આપણે ત્યાં લગ્ન જલદી થાય છે. તે લગ્ન થયા પછી કન્યા જ્યાં સુધી ગર્ભધારણ કરવાને લાયક ન થાય ત્યાં સુધી પતિના ગૃહમાં મોકલવામાં આવતી નથી. હવે લગ્ન થયા પછી આ એવી જ ભાવના રાખે છે કે, મારો આજ પતિ છે, સંસાર શકટનો આથી છે. એમ પાતિવ્રત્યના અંકુરો જામે છે. તેવા જ સંસ્કારો પતિના હૃદયમાં પણ થાય છે, આ જીવન એક આદર્શ જીવન બને છે. આપણાં શાસ્ત્રો કદી અહિતકારક આજ્ઞા ફરમાવતાં નથી. પણ તેનું રહસ્ય કોને સમજવું છે ? આપણા દેશનું ધન પાતિવ્રત્ય છે, અને તે આપણાં શાસ્ત્રો જે આજ્ઞા કરે છે તે પ્રમાણે વર્તવાથી જ દૃઢ થાય છે.

મોટી ઉમરનાં લગ્નો પાતિવ્રત્યનો નાશ કરનારાં છે. આવા કાયદા અને ચળવળો સામે આ સંઘની પ્રવૃત્તિ છે. તે પછી સભાપતિનો ઉપકાર માનીને સભા બરખાસ્ત કરવામાં આવી.

શ્રીમદાચાર્યમહોત્સવ.

ચૈત્ર વદ ૧૧ એટલે તો વિશ્વોદ્ધારક જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણનો પ્રાદુર્ભાવ મહામહોત્સવ. આજે તો વૈષ્ણવોના આનંદની સીમાજ ન હોય. દરેક વૈષ્ણવ ગૃહમાં જન્માષ્ટમીથીએ અધિક આનંદ પ્રસરે. મંદિરોની તો વાતજ શી ! આજે મુંબાઇમાં મોટા મંદિરમાં પણ સભા હતી. તે સાંજના હતી અને માધવબાગની મહાસભા રાત્રે આઠ વાગે રાખી હતી. આજની સભામાં મોટા મંદિરવાળા ગો. શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીના દ્વિતીય આત્મજ શ્રીદીક્ષિત ભગવાન વક્તા હતા. પણ મોટા મંદિરની સભા કાંઇ વધારે ચાલી, તેથી તેઓશ્રી માધવબાગમાં સમયસર પધારી શક્યા નહિ. શ્રીમાન્ સભાપતિ તો બરોબર નિશ્ચિત સમયેજ પધાર્યા. તુરતજ સભાનો કાર્યક્રમ શરૂ થયો. વધાઇઓ ગવાઇ અને એક વિદ્યાર્થીએ ગઝલ ગાઇ. તે પછી મને બોલવાની આજ્ઞા થઇ. પ્રારંભમાં સભા બોલાવવાનો ઉદ્દેશ કહીને, શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના વિશ્વોદ્ધારક આદર્શોનો પરિચય કરાવ્યો અને આપશ્રીના પ્રાકટ્ય-સમયની દેશની સ્થિતિની ભયંકરતા અને તે સમયે નાશ પામતી આર્ય સંસ્કૃતિનું રક્ષણ કરવામાં બતાવેલી ઇશ્વરતા વિષે એક ટુંકું વિવેચન કર્યું. તેટલામાં શ્રીદીક્ષિત ભગવાન્ પધાર્યા, એટલે મેં વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કરી દીધું. આજના મહોત્સવ ઉપર શ્રીવલ્લભવંશના વચનામૃતોનીજ પિપાસા હોય.

શ્રીદીક્ષિત ભગવાને તો આજે કાંઇ અદ્ભુત વિષય કહ્યો. “ ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય શા માટે ? ” એ ઉપર આપશ્રીએ અર્ધો કલાક સુધી મનનીય વ્યાખ્યાન કર્યું. પણ ઘોંઘાટ ઘણો હોવાથી તે બરોબર સંભળાયું નહિ. તેમાંએ આપશ્રીનો અવાજ આજે કાંઇક બેસી ગયલો હતો. ત્યારબાદ સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયે એ જ વિષય ઉપર બુલંદ અવાજે પ્રવચન કર્યું.

શ્રીમાન્ સભાપતિનું વ્યાખ્યાન.

આજનો વિષય ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ છે ? એ છે. ભારતવર્ષમાં અનેક આચાર્યો થયા છે. બધા આચાર્યોએ પુરુષોનીજ મુક્તિ વર્ણવી છે. કારણ કે વેદ તો દ્વિજની તેમાંએ પુરુષદેહનીજ મુક્તિ કહે છે. આ કારણથી શ્રીમદાચાર્યચરણે પ્રકટ થઇને ‘પુષ્ટિમાર્ગ’ કર્યો. ‘પુષ્ટિ’ એટલે અનુગ્રહ કૃપા. આ માર્ગમાં સ્વકૃતિની જીવના પોતાનાં સાધનોની દરકાર નથી અને તે સાધનોથી આ માર્ગ સિદ્ધ થતો નથી. અહીં તો અનુગ્રહ થતાંજ સર્વફલની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ ‘ ‘પુષ્ટિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ ? ” આ પ્રશ્ન છે. આપણે શાસ્ત્રદૃષ્ટિએ સમજી શકીએ છીએ કે પુરુષ તો શાસ્ત્રોમાં કહેલાં કર્મો કરી શકે છે. પુરુષો માટે કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિના ત્રણ મહાન્ માર્ગો શાસ્ત્રમાં બતાવેલા છે. પણ સ્ત્રીએ શું કરવું ? સ્ત્રી કોઈ એ ત્રણે માર્ગમાંથી એકેયનું અવલંબન કરી શકતી નથી. નાનો બાલક જેમ પોતાની મેળે ખાઇ શકતો નથી, તેમ સ્ત્રીઓ પોતાની સ્વતંત્રતાથી કાંઇ કરી શકતી નથી. શાસ્ત્ર મુજબ તો તે માત્ર પતિકૃત સાધનોપર જ આધાર રાખે છે. અને સ્ત્રીજન્મમાં મોક્ષ તો સર્વથા નથી. તેથી સ્ત્રી શૂદ્રોના ઉદ્ધાર માટે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણ પ્રકટ થયા છે. આપશ્રીનું નામ તો “સ્ત્રીશૂદ્રાદ્યુદ્ધૃતિક્ષમ” છે. બળવાન્ કે શક્તિ-સામર્થ્ય-વાળો તો નોકરી વગેરે સાધન કરી શકે, સ્ત્રીશૂદ્રો પ્રભુપ્રાપ્તિનાં શાં સાધનો કરે ! આવા નિઃસાધનોનો ઉદ્ધાર અનુગ્રહમાર્ગદ્વારા શ્રીમદાચાર્યચરણે કર્યો છે. વળી શાસ્ત્રોમાં શ્રીગોપીજનોનેજ ભક્તિમાર્ગમાં મુખ્ય માન્યાં છે. લૌકિકમાં પણ તેમની મુખ્યતા છે. પુરુષ તો માત્ર પ્રેરકજ છે, પણ વિકાસ તો સ્ત્રીદ્વારાજ થાય છે. પુરુષ શક્તિનો વિકાસ પણ

સ્ત્રીઓના હાથમાંજ છે. સાંખ્યમાં તો પુરુષ માત્ર ચેતન અર્પી અલગ રહે છે, અને બધું કાર્ય પ્રકૃતિ જ કરે છે. હવે આપણે જોઈએ છીએ કે, પ્રેરણા ગમે તે કરે, પણ જે કાર્ય કરે તે જ મુખ્ય ગણાય છે. તેથી શાસ્ત્ર અને લોકદૃષ્ટિએ સ્ત્રીઓની મુખ્યતા છે તો ભક્તિમાર્ગમાં તેમનું પ્રાધાન્ય કેમ નહિ ?

ગોપીજનો પુષ્ટિમાર્ગમાં ગુરુરૂપે મનાય છે. તેઓ કોઈ સામાન્ય સ્ત્રીઓ ન હતાં, પણ શ્રુતિરૂપા હતાં. વેદની જ્ઞાનોપદેશિકા ઋચાઓ તે જ શ્રીગોપીજનો હતાં! વળી ઋષિરૂપા હતાં. શ્રીમદ્ ભાગવતમાં તેમની વિષયવાસનાનું એક પણ પ્રમાણ મળતું નથી. તેઓ ઋષિમુનિ ન કરી શકે એવો સર્વસ્વનો ત્યાગ કરી દેહ વસ્ત્રનું પણ ભાન રાખ્યા વિના પ્રભુના ચરણારવિંદને પ્રાપ્ત થયેલાં હતાં. માટેજ તેઓનું સ્થાન પુષ્ટિમાર્ગમાં ઉંચું છે. સંન્યાસ એટલે સારી રીતે ત્યાગ, માત્ર મુંડ મુંડાવી ભગવા પહેરવા અને અંતરમાં તમામ વાસનાઓ સેવવી એ સંન્યાસ નથી. ઉદ્ધવજીને ભગવાન્ પોતાના સમાન ગણતા તે ઉદ્ધવજી પણ પોતાને ગોપીજનોની પગની રજથી પવિત્ર થયેલા માને છે. રાજા પરીક્ષિતને શ્રીશુકબ્રહ્મ બહુ માનથી સંબોધતા, પણ જ્યારે પરીક્ષિતે ગોપીજનોના ચારિત્ર્ય વિશે શંકા ઉઠાવી ત્યારે શ્રીશુકદેવજીએ તું શબ્દથી સંબોધી તિરસ્કાર કરેલો છે. આધુનિક સમયમા કેટલાક શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનો ઉપર વ્યભિચારનો આરોપ મૂકે છે. તેઓનું ભયંકર અજ્ઞાન તથા કમળાવાળો જેમ સર્વત્ર પીળું જુએ તેના જેવું છે. લોકમા કુમારિકાઓ અને સ્ત્રીઓ ગણપતિ, ગૌરી અને શંકર, સૂર્ય તથા અગ્નિની પૂજા કરે છે તો શું ગણપતિ શંકર સૂર્ય અને અગ્નિમાં પુરુષત્વ નથી કે ? જો છે તો શું પૂજન કરનારી સ્ત્રીઓ તથા કુમારિકાઓને વ્યભિચારી ગણવી ? હમેશાં શંકરની તો લિંગની પૂજા થાય છે, તે શું વ્યભિચાર છે ? અર્થાત્ આ આક્ષેપ તદ્દન ખોટો છે, પ્રભુ તેવાઓને પણ કૃપા કરી સદ્‌બુદ્ધિ અર્પે.

ઘાટકોપરમાં વૈષ્ણવોની ગંજાવર સભા.

નવયુવકોનાં હૃદયોમાં સળગતા સવાલો.

વૈષ્ણવ ધર્મ શેમાં સમાયલો છે ?

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરકુમાર અને વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ આપેલા સચોટ જવાબો.

ઘાટકોપરમાં અનેરો આનંદ.

(તા. ૨૨-૪-૩૧ના "સાંજ વર્તમાન" પરથી.)

ઘાટકોપર, ૧૪મી એપ્રીલ—આજનો દિવસ ઘાટકોપરના ધાર્મિક જીવનમાં એક યાદગાર દિવસ તરીકે ઇતિહાસમાં નોંધાઈ રહેશે. ઘાટકોપર જેમ રાજકીય લડતનું એક મહાન્ કેંદ્ર છે તેમ આર્ય સંસ્કૃતિનું રક્ષણ ચહાનારા અનેક ધર્મનિષ્ઠ સનાતની વૈષ્ણવોની બહોળી વસ્તી ધરાવનારૂં છે. આવા ક્રાંતિના સમયમાં ધાર્મિક ઉપદેશો ભાગ્યેજ થાય છે અને તેમાંએ ધર્માચાર્યો તો જવલ્લેજ ઉપદેશ આપવા બહાર પડે છે. મર્હુમ ધર્મનિષ્ઠ ચતુર્ભુજ જીવણદાસના સંસ્મારકસ્વરૂપ ધર્મપત્ની બહેન મણિબહેને અહીં શ્રીનવનીતલાલજીનું એક મંદિર સ્થાપ્યા પછી ઘાટકોપરમાં

ધર્મચર્ચા વારંવાર થતી રહે છે. એક કરોડ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોના પરમપૂજ્ય અને પવિત્ર ર શ્રીનાથદ્વારાની ગાદીવાળા ઉત્તમ વિદ્વાન્ આચાર્ય પૂજ્યપાદ ગોસ્વામીશ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલા મહોદય મુંબઇમાં પધારતાં અહીંના વૈષ્ણવ સદ્‌ગૃહસ્થો તરફથી ધર્મનિષ્ઠ રા. રા. છગન પુરુષોત્તમદાસ મહેતાએ ઘાટકોપરના ધાર્મિક જનસમૂહને સદુપદેશ આપવા માટે શ્રીમાન્ આચ શ્રીને આગ્રહથી વિનતિ કરી હતી અને કૃપા કરીને તેઓ શ્રીમાને તેનો સ્વીકાર કર્યો શ્રીનાથદ્વારાના પીઠાધિપતિ ભાગ્યેજ બહારગામ પધારે છે અને ઘાટકોપર જેવાં નાનાં ગામોને તેમના ઉપદેશામૃતનો લાભ મળવો એ તો એક દુર્લભ ઘટનાજ ગણાય.

અસાધારણ સન્મીન.

આચાર્યશ્રીને માન આપવા માટે મોટા પાયા પર તૈયારી થઇ હતી. સ્થળે સ્થળે માગ તોરણો શોભી રહ્યા હતા. સભાસ્થાન તો વિવિધ ઉપદેશોના સંસ્કૃત તેમજ અન્ય ભાષ વાક્યોવાળા તોરણો તેમજ ફુલહારના તોરણોથી તેમજ અનેક વીજળીના દીવાઓથી અદ્ રીતે અલંકૃત કર્યું હતું. આચાર્યશ્રીને બીરાજવા માટેનું વ્યાસપીઠ તો મઘમઘતા ફુલોનાં તોરણે ખુબ શણગારી દીધું હતું. ચાંદીની આકર્ષક ખુરસી રાખવામા આવી હતી. બરોબર નવ મોટરમાં આચાર્યશ્રી પધારતાં બંદુકના અવાજોથી તેમજ હીંદુ મહાસભાના નેશનલ સ્કા બેંડના સુંદર સ્વરોથી અને ભાટીયા વોલંટીયર કોરે પુષ્પથી વધાવી લઇને જયનાદથી મ ગજાવી મુક્યો હતો. શ્રીમાનને હારતોરા પહેરાવીને પછીથી એક ભવ્ય સરઘસ કાઢવામાં આ હતું. ઠેર ઠેર રસ્તાઓમાં મહારાજશ્રી પર પુષ્પવૃષ્ટિ થઇ રહી. તે બજારમાં ફરીને શ્રીનવની લાલજીના મંદિરના ભવ્ય ચોગાનમાં સભાસ્થાનમા આવ્યું હતુ. વિશાલ સ્થાન પણ જનસમૂહ ખુબ ભરાઇ ગયું હતું. મહારાજશ્રી સાથે એમના વિદ્યાવિભાગના મુખ્ય નેતા શ્રીયુત રમાનાથ શાસ્ત્રીજી પણ આવ્યા હતા. ઉપરાંત મહારાજશ્રીના ખાનગી મંત્રી શેઠ રણછોડદાસ વરજીવનદ શ્રોફ તથા 'શુદ્ધા ત'ના તંત્રી વસંતરામ શાસ્ત્રી પણ હાજર થયા હતા. ઘાટકોપરના વૈષ્ સિવાય બીજી કોમના ગૃહસ્થોએ મોટા પ્રમાણમાં હાજરી આપી હતી.

આચાર્યશ્રીએ પ્રમુખસ્થાન લીધા પછી મંદિરના મુખ્યાજી શ્રી. જમનાદાસ નાનજીએ પ્રસ પુષ્પમાળા શ્રીમાનને પહેરાવી હતી. તેમજ શ્રીનવનીતલાલજીના મંદિર તરફથી શેઠ હરગોવનદ જીવણદાસ અને છોટાલાલ કાનજીએ તથા સ્વાગતસમિતિ તરફથી શેઠ જીવણદાસ ભાણજી આચાર્યશ્રીનું સ્વાગત કર્યું હતું. તે પછી અહીંના વૈષ્ણવ યુવક વર્ગના આગેવાન શેઠ જમનાદ મેઘજી કબાલીએ સમિતિ તરફથી આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

યુવક હૃદયનો પડઘો.

હું સમિતિ તરફથી પૂજ્યપાદ આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરૂં છું. (તાળીઓ) આજ કાલ એ આક્ષેપો કરવામાં આવે છે કે ધર્મગુરુઓ ઉપદેશ આપના નથી, પણ આચાર્યશ્રીએ અહીં પધારી ઉપદેશ આપવાનું કબુલીને આક્ષેપ ઉડાવી દીધો છે. (જોશભર તાળીઓ) આજનો વિ પહેલેથીજ નક્કી કરી દીધેલો છે. 'ભક્તિ' વિષય પર આચાર્યશ્રી આજે બોલવાના છે. પણ તે પહેલાં એક વાતનો ખુલાસો ઇચ્છું છું. હું વૈષ્ણવ કુટુંબનો છું. તેમજ અનેક યુવકો વૈષ્ કુટુંબના છે. અમને બધાને વૈષ્ણવ ધર્મના આદર્શોનો શુદ્ધ ખ્યાલ આવ્યો નથી. હું પુછું છું વૈષ્ણવ ધર્મનો ખ્યાલ શો ? અમારા વડીલો તો અમને નહાવા ધોવામાંજ તેમજ રસોડાંને ન અડકવામાંજ વૈષ્ણવ ધર્મ સમાઇ-ગયેલો સમજાવે છે. આજે વૈષ્ણવ યુવકો આ વિષે ખુલાસે

સાંભળવા ઇચ્છે છે. હું આચાર્યશ્રીનો સ્વાગતસમિતિ તરફથી ઉપદેશ આપવાનું કબુલવા બદલ ઉપકાર માની બેસી જવાની રજા લઉં છું.

પ્રશ્નનો આશય શો?

આચાર્યશ્રીએ મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે સભ્યવૃંદ તથા શ્રોવૃંદ, આજનો વ્યાખ્યાનનો વિષય 'ભક્તિ' એ રાખેલો હતો, છતાં અહીં વૈષ્ણવ ધર્મ વિષે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે. એટલે પ્રશ્નનો મુદ્દો બરાબર રજુ કરવાની જરૂર જણાય છે. ખરૂં જોતાં 'ભક્તિ' અને વૈષ્ણવ ધર્મ એ બન્ને જુદા નથી. 'ભક્તિ' ની પણ ઘણી કક્ષાઓ છે. ધીરે ધીરે ઉંચી ઉંચી સીડીએ ચઢી શકાય છે. નાના બાળકોને પહેલાં અક્ષરો ઘુંટવાનું શીખવાય છે. તે પછી તે ઉંચો અભ્યાસ કરીને ઉન્નત બને છે. તેમ 'ભક્તિ'ની સર્વ કક્ષાઓનું વર્ણન કર્યા પછી શંકાને સ્થાન નજ રહે. સ્વાગતના વ્યાખ્યાનકર્તાએ જે પ્રશ્ન કર્યો છે તેની છણાવટ થવી જોઇએ. તેમનો આશય શો છે? રસોડાં કે નહાવા ધોવામાં ધર્મ એમ જે કહેવાયું છે તેનો મુદ્દો શો છે? પ્રશ્નકર્તાએ પોતાનો પ્રશ્ન વિશેષ ખુલાસાવાર રજુ કરવો ઘટે છે.

ગાંધી યુગ અને વૈષ્ણવ યુવકો.

અત્રે પ્રશ્નકર્તા શેઠ જમનાદાસ કબાલીએ જણાવ્યું કે:—અમારા વડીલો એમજ કહે છે કે બે ચાર વખત નહાવું અને કોઇનું ખાવું નહી, કોઇનું પાણી પીવું નહી એનું નામ ધર્મ છે. શું ધર્મ એટલે ખાવાપીવામાં બાધ માનવો અને વારંવાર નહાવું ધોવું એજ કે કાંઇ બીજું? શું એ આચારોમાં જ ધર્મ સમાઇ ગયેલો છે? આવા ખાનપાનના બાધમાં ધર્મ સમાયલો છે એવા વડીલોના સંસ્કારોથી હવે યુવકોની શ્રદ્ધા કમી થતી જાય છે. આ ગાંધીયુગમાં કેવળ સંકુચિત વિચારોથી હવે યુવક વર્ગ આકર્ષાશે નહી. વેપારમાં કાળાધોળા કરવાથી ધર્મ જતો નથી, પણ ખાનપાન કે નહાવાધોવામાં ભૂલ થવાથી ધર્મ નાશ પામે છે એ વિષે સ્પષ્ટ ખુલાસો થવાની જરૂર છે.

આચાર્યશ્રીનો સંગીન જવાબ.

ઉપરના પ્રશ્નનો જવાબ આપતાં આચાર્યશ્રીએ જણાવ્યું કે પ્રશ્નકર્તાનો આશય હાલમાં જે જનસમૂહની પ્રવૃત્તિ ચાલુ છે તે ધર્મ સાથે કેટલો સંબંધ ધરાવે છે તે વિષે છે. આપણા દેહમાં પણ ભિન્ન ભિન્ન સ્થિતિ છે. દરેક વસ્તુ ત્રણ દૃષ્ટિએ જોઇ શકાય એવો શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણનો સિદ્ધાન્ત છે. ૧ આધિભૌતિક, ૨ આધ્યાત્મિક અને ૩ આધિદૈવિક. આ ત્રણ શક્તિઓ છે. આપણા દેહમાં પણ આ ત્રણ સ્થિતિ છે. આપણો દેહ આધિભૌતિક છે, આત્મા આધ્યાત્મિક છે અને પ્રભુ આધિદૈવિક છે. આ ત્રણે વસ્તુનું રક્ષણ કરવું રહ્યું. શરીરમાં માંસનીજ વૃદ્ધિથી કામ ન ચાલે, રુધિર પણ રહેવું જ જોઇએ. એ રીતે શાસ્ત્રીય નિયમો મુજબ ઉક્ત સર્વ વસ્તુની શુદ્ધતા જોઇએ.

પ્રભુને પ્રાપ્ત કરવાના માર્ગ ત્રણ છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ. કર્મમાર્ગ એટલે કર્મ કરવું એમ નહિ, કારણ કે તેવો અર્થ લેતાં તો કોઇને મારી નાખવું એ પણ કર્મ બની જાય. તેથી એમ સમજવું કે શાસ્ત્રોક્ત જે કર્મો છે તેજ કર્મ ગણાય. બીજાં નહી. જે કર્મથી અધોગતિ થાય તે કર્મ ન કહેવાય. તેથી જ કલિવર્જ્યમાં યજ્ઞયાગાદિમાં થતો પશુવધ બંધ કરવાનું કહ્યું છે, અને યજ્ઞ જપયજ્ઞ છે એમ ગીતામાં પ્રભુ શ્રીમુખે આજ્ઞા કરે છે. જપયજ્ઞ એટલે ગોમુખીમાં હાથ નાખીને માળાના મણકા ફેરવવા એ નથી, પણ ભગવાનમાં પોતાનું મન કેંદ્રિત કરી દેવું, એ જપયજ્ઞ છે. (તાળીઓ.) ઇશ્વરમાં મન લગાવવું એજ ખરો માનસિક જપયજ્ઞ છે. જપ કરતાં પ્રભુમાં મન લાગે છે. જેમ કોઇનું ચિત્ર જોવાથી તેનામાં મન કેંદ્રિત થાય છે, તેમ, અહર્નિશ

ગુણગાનથી પ્રભુ હૃદયમાં બિરાજે છે અને મનોવૃત્તિ તે તરફ ઝુકે છે. તેજ ખરો જપ છે. કેટલીક વખતે સ્થૂલ બાબત સૂક્ષ્મ કરતાં વધી જાય છે તેથીજ કર્મયોગ પણ મુખ્ય ગણાય છે. ચિત્તની વૃત્તિઓ ચંચલ હોય છે તેને જપયજ્ઞરૂપ કર્મયોગથી વશ કરી શકાય છે અને ભક્તિમાર્ગમા તો કર્મમાત્ર ઇશ્વરાર્પણબુદ્ધિથીજ થાય છે. તેથી જ કર્મ પણ નિસ્સ્વાર્થ બને છે. એવી વૃત્તિથી કર્મ થાય તોજ તેનું ઉત્તમોત્તમ ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. સર્વ સ્થળે ઇશ્વરબુદ્ધિથી જુઓ. જે કંઇ કરો તે ભગવદર્થ કરો. ખાઓ, પીઓ, પહેરો ઓઢો, નાસિકાથી સુઘો, નેત્રથી જુઓ, એ બધાં કર્મ નિષ્કામ ભાવે ભગવદર્પણબુદ્ધિથી કરો. આ આધ્યાત્મિક વ્યવસ્થા છે.

હાલમાં શાસ્ત્રીય આચારોના પ્રશ્નો થાય છે, પણ શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કેટલા કરે છે? શાસ્ત્રની બાબત પુછો તો તેનો અભ્યાસ કરીને પુછો. ધર્મનું સ્વરૂપ ગહન છે. આપણા બહારના આચારવિચારોમાં ધર્મ છે. જુઓ, આપણે ભોજન ન કરીએ તો શક્તિ ઘટી જાય છે, અને ભોજન કરવાથી શક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે, અને શરીરમા વીજળીક બળ આવે છે. તે બળ જમીન પર બેસવાથી જમીનમાં ચાલ્યું જાય છે. તેથી આપણે ત્યાં લાકડાના પાટલા પર બેસવાની રીત છે. તેમ સ્પર્શાસ્પર્શમા પણ ઉત્તમ વિજ્ઞાન છે. હવે મોટા મોટા ડાકતરો એકદમ હાથ મીલાવી લેવાની પણ ના પાડતા થયા છે. બધાને એકાકાર કરવાથી ફાયદો નથી. વીજળીના તાર જુદા રહીને કેવો સુદર પ્રકાશ આપે છે? તેમજ આપણે અલગ રહીને પણ એક ઉત્તમ કાર્ય કરીએ.

અંત્યજોના ઘણા ઉપકારો છે. તેમના તરફ ૂર દૃષ્ટિ રાખી શકાયજ નહી. આપણે તો સર્વ પ્રાણી માત્ર તરફ તેવી દૃષ્ટિ ન રાખી શકીએ તો પછી અંત્યજોની તો વાતજ શી? કેટલાકો અંત્યજો મનુષ્યજ નથી તેવો વર્તાવ કરતા હશે તો તે યોગ્ય નથી. જ્યા એકજ કુવો હોય ત્યાં તેમને માટે પાણીનો બંદોબસ્ત કરી આપવાનું ધર્મશાસ્ત્રનું ફરમાન છે. તેમ તે આપણા મંદિરોમાં ચાલ્યા જાય એ પણ ઉચિત નથી. ભગવાનનાં વિરાટ શરીરમાં મુખરૂપ બ્રાહ્મણો છે. અંત્યજો ગુદાસ્થાને છે. ગુદાનું કાર્ય મુખ કરે તો સંનિપાતની ઉલટી થઇ કહેવાય. તેથી પોતપોતાના કર્મમાં રહેવાથી શ્રેય છે. આપણે બહારથી ભલે ભિન્ન દેખાઇએ, પણ સમષ્ટિમા એકજ છીએ. મન દેહથી અલગ નથી. દેહની અપવિત્રતાની અસર મનપર થાય છે.

શાસ્ત્રીજી રમાનાથજી.

આચાર્યશ્રીનું વ્યાખ્યાન થતા શાસ્ત્રીજી રમાનાથજીને આગ્રહ થવાથી તેમણે છટાદાર હીંદી ભાષામાં વિવેચન કરીને, શાસ્ત્રને ઠોકરે મારીને મનઃકલ્પિત આચારવિચારો સ્થાપવાથી કેવી ગેરવ્યવસ્થા થાય છે તેનો આબેહુબ ચિતાર આપ્યો હતો અને ધર્મ અને અધર્મની વ્યવસ્થામાં તો શાસ્ત્રો વિના બીજો કાંઇ ઇલાજ નથી એવું ભાર દઇને જણાવ્યું હતું.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

તે પછી આગ્રહ થતા વસંતરામ શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું, કે શેઠ જમનાદાસ કબાલીનો પ્રશ્ન નવો નથી. વૈષ્ણવ યુવક હૃદયોમા સળગી રહેલા સવાલોનું તે પ્રતિબિંબજ છે. ગાંધીજી તો એક મહાન્ ભક્ત છે. મીઠાનો કાયદો તોડવા માટે નીકળ્યા ત્યારે 'અબકી ટેક હમારી' એ શ્રીસૂરદાસજીનું પદ ગાતા નિકળ્યા હતા. આજના યુવકો તે વાત જીવનમાં મુકવા તૈયાર નથી. ગાંધી યુગમાં 'ભક્તિ' ને મુખ્ય સ્થાન હોયજ, એમ સમજીનેજ આજનો વિષય રાખ્યો હતો, પણ ચર્ચા ઘણી સુંદર થઇ. ગુરુદેવ પધારે ત્યારે આવા ઉભરાઓ ઠાલવવાજ ઘટે. વૈષ્ણવ ધર્મ બેધારી તલવાર છે. આચારોનું કડક પાલન કરીને વેપાર ધંધામાં જુઠું બોલે અને કોઇને ગરદન મારે તો તે વૈષ્ણવ નથી, તેમ નીતિનું પાલન કરીને આચારવિચારોનો શંભુમેળો કરે તો તે પણ વૈષ્ણવ નથી. અહીં તો બધી તરફથી વૈષ્ણવતા જાળવવી રહી.

'શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધાભાઇ મોદી.

શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધાભાઈ મોદીએ લાગણી ભર્યું જુસ્સાદાર વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે આપણા સંસાર ઉપર ધર્મની સત્તા મોટી છે. તેનું કારણ એ છે કે સંસારની ચલનવલણનો આધાર મોટે ભાગે ધર્મ ઉપર રહેલો છે. મનુ આદિ આપણા ધર્મશાસ્ત્રોમાં દરેક વર્ણના લોકો માટે જુદા જુદા આશ્રમોના નિયમો દર્શાવવામાં આવેલા છે. એ નિયમોને આધારે જ આપણું સંસારી બંધારણ રચાયલું છે, પણ આપણા લોકોની અંદર અંધશ્રદ્ધા મિથ્યા વહેમો અને ઘોર અજ્ઞાનતાને લીધે પાખંડ વધ્યું ગયું છે. તે પાખંડ દૂર કરવાનો વખત હવે આવી લાગ્યો છે. દેશની મુક્તિ માટેનાં યુદ્ધમા મહાત્મા ગાંધીજીએ ધર્મભાવના દાખલ કરી છે અને આપણે આપણી પૂર્વની સંસ્કૃતિઓ જાળવી રાખી આગળ વધીશું તોજ આપણું કલ્યાણ થશે મી. પ્રભુદાસે એ પછી કેટલુંક વિવેચન કરી ગોસ્વામી શ્રીદામોદરલાલજીને યોગ્ય દિશાએ વૈષ્ણવોને દોરવવાની વિનતિ કરી હતી અને પાખંડ અને ખરાબ રૂઢિઓનો નાશ કરી આર્ય સંસ્કૃતિનું વૈષ્ણવ ધર્મના મહાન્ આચાર્ય શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીના ખરેખરા સિદ્ધાંતોનું પાલન કરવાની મજબુત હીમાયત કરી, આચાર્યશ્રી તથા પંડિતોનો આભાર માનવાની દરખાસ્ત મુકી હતી જેને કપોળ ન્યાતના પ્રમુખ શેઠ જીવણદાસ ભાણજીએ ટેકો આપતા કહ્યું કે મહારાજશ્રીએ આટલે લાંબે મોઠી રાત્રિના અહીં પધારી ઘાટકોપરના વૈષ્ણવોપર ભારે આભાર કર્યો છે. તેઓનાં વચનામૃતનો આપણને અમૂલ્ય લાભ મળ્યો છે તે માટે તેઓશ્રીનો જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે.

ઉપસંહાર.

છેવટે આચાર્યશ્રી તથા બંને વિદ્વાનોને હારતોરા અર્પણ કરીને આચાર્યશ્રીને શ્રીનવનીતલાલજીનું મંદિર જોવા પધરાવ્યા હતા. તેઓશ્રી મંદિર જોઇને ઘણા પ્રસન્ન થયા હતા અને ગોલોકવાસી શેઠ ચત્રભુજ જીવણદાસના ધર્મપરાયણ ધર્મપત્ની ગં. સ્વ. મણિબ્હેન તેમજ ગોલોકવાસી શેઠ નારણદાસ દેવીદાસનાં ધર્મપરાયણ પત્ની ગંગાસ્વરૂપ સંતોકબાઇને મંદિરની સુંદર વ્યવસ્થા માટે ધન્યવાદ આપી આશીર્વાદ આપ્યા હતા.

શ્રીમાન્ બાવાસાહબના ધન્યવાદ તથા આશીર્વાદને પ્રણત મસ્તકે ગ્રહણ કરીને, એક સહૃદય વૈષ્ણવને યોગ્ય દીનતાથી ગં. સ્વ. મણિબહેન તથા ગં. સ્વ. સંતોકબહેને વિનતિ કરી કે; આ મંદિર કે તેની આ વ્યવસ્થાને માટે અમને કાંઇ પણ ધન્યવાદ ઘટતો નથી. મંદિરની આ ભવ્યતા અને આકર્ષક સુંદરતા તેમ જ સુવ્યવસ્થા માટે જો કોઇને સુયશ આપવામાં આવે તો અમારાં મહારાણીસ્વરૂપ શ્રીમાતાજી ગોસ્વામિની શ્રીભાગીરથી માતાજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના કુમાર ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીને જ ઘટે છે. આજે ઘાટકોપરના વૈષ્ણવોને સ્વપ્નમાં પણ ન મલે તેવો જે અણધાર્યો આનંદ મલ્યો તેમ બીજી વખતે જે કાંઇ અલૌકિક આનંદ મળે છે તે પણ એઓશ્રીની કૃપાથી જ મળે છે એમ અમે માનીએ છીએ.” તે પછી સ્વયંસેવકોના બેન્ડની સલામી તથા ‘જયનાદ’ વચ્ચે મોડી રાત્રે શ્રીમાન્ મોટરમાં મુંબાઇ પધાર્યા હતા.

કાવસજી જહાંગીર હોલમાં જાહેર સભા.

આપણાં સામ્પ્રદાયિક વ્યાખ્યાનો માત્ર આપણાં મંદિરોમા અથવા તો વળી બીજા કોઇ ધર્મસ્થાનોમાં થતાં હતાં! પણ જે સ્થાન જાહેર કહેવાય છે, જે સ્થાનોમાં આજકાલના રાષ્ટ્રીય નેતાઓ ગર્જના કરવામાં ગૌરવ સમજે છે, જે સ્થાનમાં સભા થતી હોય તો ત્યાં રંગભૂમિપ-

બેસવામાં અને બોલવામાં માન મળ્યું મનાય છે તે જાહેર સ્થાનોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો થાય એ તો યુગનો પલટોજ ગણાય. પણ હા, તે યુગપલટો મહાસમર્થ આચાર્યસમ્રાટ્ શ્રીદામોદર લાલજી બાવાસાહેબે કરી દીધો છે. મુંબાઇમાં ટાઉન હોલમાં આપશ્રીએ સભા કરીને એક ઐતિહાસિક દષ્ટાંત ધાર્મિક ઇતિહાસમાં આલેખાવી દીધું છે. એ સભાનું દશ્ય તો મુંબાઇ કદી નહિ ભૂલે. ત્યારપછી જેટલીવાર આપશ્રી મુંબાઈ પધાર્યા તેટલીવાર જાહેર સ્થાનોમાં સભામાં ભાષણ કરવા માટે સદૈવ ઉત્સાહિતજ રહ્યા છે. મુંબાઇમાંજ નહિ પણ અમદાવાદ આદિના ટાઉન હોલમાં પણ પહેલી પહેલ આપશ્રીએજ કરી છે. આ વખતે પણ વૈષ્ણવપરિષદના મંત્રીઓ રા. ત્રીકમદાસ ચકુભાઈ તથા રા. નારણજી દયાલે એવી સભા કાવસજી જહાંગીર હોલમા ગોઠવી. ચૈત્ર વદ ૧૩ ને બુધવારે સાંજે એ હોલ આગળનું દશ્ય અદ્ભુત હતું. મોટરો તથા ગાડીઓ તથા વૈષ્ણવ સમૂહથી હોલ ઘેરાઇ ગયો હતો. મુંબાઇના ધનાઢ્ય શ્રીમંતો મોટી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. સભાસ્થાનની કાઇ અદ્ભુત શોભા બની હતી. આજે મુંબાઇમાં બિરાજતા બધા શ્રીવલ્લભવંશ્ય શ્રીગોસ્વામી આચાર્યશ્રીઓ આ સભામાં પધાર્યા હતા.

આરંભમાં મુબાઇના આગેવાન વૈષ્ણવ વ્યાપારી તથા એક કેળવાયલા વિદ્વાન્ શેઠ મથુરાદાસ મટાણીએ જણાવ્યું કે, વંટાયલા હસ્તપત્રો પ્રમાણે શ્રીમાન્ બાવાસાહબ આજે આ જાહેર હોલમાં વ્યાખ્યાન આપનાર છે. જાહેર સ્થળોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો આપવાની પહેલ આપશ્રીએ જ કરેલી છે. આજે પણ કૃપા કરીને "સર્વશ્રેષ્ઠ ભક્તિમાર્ગ" એ વિષય ઉપર કહેશે.

ત્યાર બાદ શ્રીમાન્ બાવાસાહબે મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કેઃ—

આજે યાવન્માત્ર સાધનોમાં ઉત્કૃષ્ટ સાધન ભક્તિમાર્ગજ છે તે વિષે કહું છું. પ્રભુને મળવાનાં અનેક સાધનો છે. વેદ તો तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व કહીને તપને સાધન બતાવે છે. વળી કેટલાક અંશોમાં યજ્ઞયાગાદિ પણ પ્રાપ્તિમાં સાધન છે એમ પણ વેદજ કહે છે. મનુસ્મૃતિ તો આ લોકમાં કર્મની જ મુખ્યતા કહે છે. પુરાણોમાં ઘણા સાધનો વર્ણવ્યાં છે, પણ બધાથી મુખ્ય સાધન તો ભક્તિજ છે એમ કહ્યું છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ; એ ત્રણમાં મુખ્યતા ભક્તિની જ છે, શાસ્ત્રોના પ્રમાણો તો મુખ્ય ભક્તિજ છે એમ કહે છે, પણ આજકાલના તર્કના જમાનામા સવાલ થશે કે તેજ મુખ્ય કેમ છે ? એવો સવાલ થશે તેને માટે યુક્તિવાદથી એ વાત સિદ્ધ કરીશ.

સૂક્ષ્મ વિચાર—ભક્તિની ઉત્કૃષ્ટતા કેમ છે તો જુઓ. વેદમાં બતાવેલા કર્મ જ્ઞાન, અને ભક્તિનાં સ્વરૂપ શાં છે તે હું બતાવું છુ. કર્મ તો કેવલ કૃતિસાધ્ય છે. આ પાંચમહાભૌતિક દેહથીજ થઇ શકે છે. જ્ઞાન ઇન્દ્રિયસાધ્ય છે, સૂક્ષ્મ છે. ભક્તિ મનઃસાધ્ય છે. હવે જુઓ કે ઉત્કૃષ્ટ કોણ છે ? જેનું રૂપ જેમ વધુ સૂક્ષ્મ તેમ તેનામાં વધુ શક્તિ હોય છે. તેમ જેનું રૂપ વધુ સ્થૂલ તેમ તેનામાં શક્તિ થોડી હોય છે. અતિ સૂક્ષ્મ પદાર્થમા તો શક્તિ કેટલી તેની ઇયત્તા માપ જ ન હોય, જેમ વધારે શક્તિ તેમ વધારે કામ આપે છે. હવે જુઓ કે બધાથી વધારે તાકાત શેમાં છે ? શું આપણા દેહમાં-વધારે તાકાત છે કે, ઇંદ્રિયોમાં કે મનમાં ? એ ત્રણેમા વધારે શક્તિ શેમાં છે ? વિજ્ઞાનશાસ્ત્રીઓ પણ કહી શકશે કે, લોઢું, સોનું, અને રેડીયમ; એ બધામાં સૂક્ષ્મ કોણ અને તાકાત-સામર્થ્ય શેમાં વધારે છે ! તો સાફ કહેશે કે સૂક્ષ્મ રેડીયમ જેટલી શક્તિ કોઇનામાં નથી. જેમ શક્તિ વધારે તેમ તેનું મૂલ્ય પણ વધારે અંકાય. જેમ વધારે સૂક્ષ્મ તેમ તે અતિશય વ્યાપક બને. સ્થૂલની ગતિ રોકાતાં વાર ન લાગે. ટાંકણી કે ખીલા પગમાં પેસી જાય, પણ જાડી લાકડી પગમાં પેસી જ ન શકે ! તેવી જ રીતે દેહ સ્થૂલ છે, ઇંદ્રિયો

તેથી સૂક્ષ્મ છે અને મન તો અતિસૂક્ષ્મ છે. દેહમાં કેટલી તાકાત ? ઇંદ્રિયોમાં કેટલી શક્તિ ? મનમાં કેટલું સામર્થ્ય ? જેમ ૧૦ હોર્સના પાવરવાળા ઇંજિનમાં, ૨૦ હોર્સ પાવરવાળા ઇંજિન વગેરેમાં ઘટતી વધતી તાકાત હોય છે તેમ અહીં પણ સમજવું રહ્યું. દેહની તાકાત તો અમુક હદમાં ફેલાય છે. આપણા હાથપગ કાંઇ એક નાનીશી કોટડીમાં પણ બધે સ્થળે ફેલાવી શકાશે નહિ. ઇંદ્રિયોમાં આંખ, કાન, નાક વગેરેની શક્તિ વધારે છે, કેમકે તે સૂક્ષ્મ છે. દૂરથી આંખ જોઇ શકે, કાન સાંભળી શકે, નાક સુગંધ લઇ શકે. આ ઇંદ્રિયોથી પણ કર્મ જ્ઞાનભક્તિદ્વારા ભગવાનને પ્રાપ્ત કરવાનો જ ઉદ્દેશ છે. છતાં એ ઇંદ્રિયોને તો અંતરાય પણ નડે. દૃષ્ટિમાં ઝાંખ આવે, કાનનાક બહેરા થઇ જાય, પણ મન, તે તો અતિસૂક્ષ્મ છે. તેથી જ તેની શક્તિની હદ નથી. અરે ઇંદ્રિયોથી તો પ્રાણની ગતિ સૂક્ષ્મ છે. એક કાચના શીશામાં મરવા પડેલા માણસને નાંખીને અનુભવ કરતાં તેના પ્રાણ કયાથી ગયા તેનો વિચાર અંગ્રેજોને થઇ પડ્યો હતો. તો મનની તો વાતજ શી કરવી ! તો દેહથી સિદ્ધ થતા કર્મો—યજ્ઞયાગાદિમા તાકાત પણ થોડી જ છે. ઇંદ્રિયોથી પ્રાપ્ત થતા જ્ઞાનમાં પણ શક્તિ વધારે કયાથી હોય ? અને મન જેવા પ્રબલ પદાર્થથી મેળવાતી ભક્તિની શક્તિ કોણ વર્ણવી શકે ? (તાળીઓ).

ભક્તિની ઉત્તમતા—દેહથી થતાં સાધનો કમજોર હોય છે, તેમાં શક્તિ અમુક જ પ્રમાણમાં હોય છે. ઇંદ્રિયોથી થતું જ્ઞાન પણ વિશેષ બળ નજ ધરાવી શકે. અને ભક્તિ અને પ્રેમ, અને તે દેહ કે ઇંદ્રિયોથી સિદ્ધ થતો નથી. પ્રેમ તો તો માત્ર મનનો જ ધર્મ છે. મન વિશાળ અને સૂક્ષ્મ છે. શ્રવણકીર્તનાદિ નવધાભક્તિ તો બીજી ઇંદ્રિયોથી થઇ શકે છે, પ્રેમભક્તિ તો મનના જ હાથમાં છે. પ્રભુનું સ્વરૂપ અતિસૂક્ષ્મમા સૂક્ષ્મ છે. તો તે પ્રભુને પ્રાપ્ત કરવા માટે મન જેવું અતિસૂક્ષ્મ સાધન જોઇએ. પ્રેમ પણ સૂક્ષ્મ છે તેથી પ્રભુને મેળવી શકે છે. એ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ પણ બે પ્રકારની છે, એક તો જીવકૃતિથી સિદ્ધ થાય છે અને બીજી ભક્તિ પ્રભુના અનુગ્રહથી મેળવી શકાય છે. જીવકૃતિવાળી ભક્તિ રગશીયા ગાડા જેવી ધીમી છે અને અનુગ્રહસાધ્ય ભક્તિ તો વિમાનની પેઠે એકદમ ઉચ્ચે લઇ જાય છે. અહીં આ વિષય પૂર્ણ થાય છે.

પ્રેમભક્તિની પરાકાષ્ઠા ! જેમ આપણે પ્રભુને મળવા ઇચ્છીએ છીએ તેમ ઇશ્વર ભક્તજીવને મળવા તલસે એ ઇશ્વરકૃતિસાધ્ય અનુગ્રહાત્મક ભક્તિ કહેવાય. વધુ તો શું પણ પ્રભુ ભક્તને સેવવા તૈયાર થાય. આનું જ નામ ભક્તિની પરાકાષ્ઠા છે. આ વખતે ઇશ્વરના ધર્મો જીવમાં આવે છે. શ્રીનંદયશોદાજી શું કરતા હતા ? भर्ता सन् भ्रियमाणो विभर्ति એમ ભગવતી શ્રુતિ કહે છે, તેનું રહસ્ય એ છે કે જગતનું ભરણપોષણ કરનાર પ્રભુ છે છતાં ભક્તોવડે તેમનું ભરણપોષણ થાય છે, શ્રીનંદયશોદા એ પ્રભુનું પાલન–પોષણ કરે છે, આ બાલભાવનાની સેવાનું રહસ્ય છે. શ્રીયશોદાજી પ્રભુને ધમકાવે છે અને પ્રભુ ભયભીત બને છે. વાત્સલ્યસ્નેહમાં ઇશ્વરના ધર્મ–શિક્ષા કરવારૂપ ધર્મ–શ્રીયશોદાજીમાં આવ્યા અને ડરવારૂપ ધર્મ જીવ ધર્મ પ્રભુમા ગયો. આમ અદલાબદલી થઇ ગઇ. (હર્ષભેર તાળીઓ.) ગોવાળીઆઓ પોતાનું ઉચ્છિષ્ટ પ્રભુને ખવરાવે છે અને પ્રભુ તે આરોગે છે. શ્રીગોપીજન કહે છે કે भक्ता भजस्व અમારી સેવા કરો; પ્રભુ ભક્તપરાધીન થઇને તેમ કરે છે.

ઉપરનાં વિવેચન પછી શ્રીસુબોધિનીજીનાં રહસ્યનું વર્ણન કરતાં શ્રોતાઓમાં ભક્તિરસ છલકાઇ ગયો હતો, અને વ્યાખ્યાનની કાંઇ અનેરી અસર જામી હતી. તે પછી શ્રીમાને વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારબાદ બૃહન્મંદિરાધીશ્વર પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ય ગોસ્વામી શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ કરતલધ્વનિ વચ્ચે એક છટાદાર વ્યાખ્યાન કર્યું—

"આજના વ્યાખ્યાનથી મને ઘણો આનંદ થાય છે. આપશ્રી જે સ્થાનપર બિરાજે છે તે સ્થાન સંપ્રદાયમાં શિરોમણિરૂપ છે. વળી એ સ્થાનનું ગૌરવ આપશ્રી આવા ઉપદેશોદ્વારા, ધર્મરક્ષણાર્થ બદ્ધપરિકર થઇને જાળવી રહ્યા છે. (તાળીઓ) તેથી વિશેષ આનંદ થાય છે." ત્યારબાદ આધુનિક આક્ષેપકર્તાઓને સચોટ જવાબ આપીને આપશ્રીએ વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું. છેવટે શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશી જે. પી. એ ઉપકાર માનીને સભા બરખાસ્ત કરી હતી.

વીલે પારલેમાં સભા—તા. ૧૬ મીને ગુરુવારે રાત્રે વીલે પારલેમાં સભા રાખી હતી. ત્યાં એક સંસ્કૃત પાઠશાળા સ્થાપીને બ્રાહ્મણબાળકોને વિદ્યાદાનની સવડ કરવા માટે ખૂબ યત્ન કરી રહેલા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણ મોહનલાલ દવેએ આ યોજના કરી હતી. અહીં પણ રાત્રે ૮ વાગે સભા થઈ, અને મ. મ. પંડિત શ્રીગિરિધર શર્મા આદિનાં વ્યાખ્યાનો પછી શ્રીમાને પણ થોડું પ્રાસંગિક પ્રવચન કર્યું.

માધવબાગની બીજી ગંજાવર સભા.

ચૈત્ર વદ અમાવાસ્યાના રોજ માધવબાગમાં બીજી ગંજાવર સભા ભરી હતી. આજે મુબાઇના બધા ધનાઢ્ય શ્રીમંતોએ હાજરી આપી હતી. શરૂઆતમાં શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશીએ ઉપક્રમ કરતા શ્રીમાનને વિનતિ કરી હતી કે, અમારા વૈષ્ણવોમાં એક ભ્રમ છે કે, આપણને કાંઇ વર્ણાશ્રમધર્મ સાથે લેવા દેવા નથી. તો તે વિષે સ્પષ્ટીકરણ આજ શ્રીમુખે જ આપશ્રી કરો તેવી વિનતિ છે. આ વિનતિ મુજબ શ્રીમાને એજ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું.

ઉપસ્થિત સભ્યવૃંદ, આજનો આ વિષય વર્ણાશ્રમધર્મ સાથે પુષ્ટિમાર્ગનો શો સંબંધ છે તે છે. પુષ્ટિ એટલે અનુગ્રહ તેનું વિવેચન ખૂબ કરી ચુક્યો છું. અનુગ્રહમાર્ગમા વર્ણાશ્રમની શી જરૂર છે? ભગવત્કૃતિસાધ્ય છે, તેમાં કાંઇ જરૂર નથી. જીવકૃતિસાધ્યમાં વર્ણાશ્રમની જરૂર છે પ્રમાણમાં તો જરૂર છે. એક મહેલ છે, તેમા અવધિરહિત આનંદ છે. તેની પ્રાપ્તિ થવા માટે અનુગ્રહજ મુખ્ય પણ મહેલમા જવા માટે દ્વાર-સીડીઓ હોય છે. લીફ્ટથી જલદી જવાય છે. વેદાંતમાં ભગવાનને પક્ષિરૂપ કહ્યા છે, જે એરોપ્લેનની પેઠે સીધું જવાય છે. તેમાં ગાત માટે પ્રાથમિક ઉદ્યોગની જરૂર છે. અનુગ્રહમાર્ગમાં પ્રાધાન્ય રસરૂપ પ્રભુજ છે, રસ પાત્ર વિના ઠરી શકતો નથી, અહીં સાધારણ પાત્ર નથી, તેના પાત્ર તો શ્રુતિજ છે. અર્થાત્ પ્રમેયજ છે. પ્રમેય ઉત્તમ પણ તેની સાથે પ્રમાણની જરૂર છેજ, તે કેમ? વાસ્તવિક છે. જ્યાંસુધી પ્રમેય સિદ્ધ નથી; પ્રમાણથી અગ્રાહ્ય બ્રહ્મ છે, તો અનુગ્રહથીજ ગ્રાહ્ય છે. શાસ્ત્રો કિલ્લો છે, એક છોકરો ઇચ્છે કે વિદ્વાન્ બની જાઉં, પણ તેમ થતું નથી, વિદ્યાભ્યાસથી જ થવાય છે. સર્વધર્માન્માં, ધર્મમાત્રનો ત્યાગ નથી થઇ શકતો. દેહ છે ત્યાં સુધી એક પ્રકારના ધર્મો છે, પણ તે મર્યાદા છે. જો તેનો દુરુપયોગ થાય છે, તેથી અવનતિજ થાય છે. શક્તિ મર્યાદિત કરવામાજ ઋષિમહર્ષિઓએ આહ્નિક રચ્યું છે, એનું સૂક્ષ્મ દૃષ્ટિએ નિરીક્ષણ કરો ત્યારેજ તત્ત્વ સમજાશે. ધાર્મિક જનતાએ બીજી નકલ કરવાની નથી. વર્ણાશ્રમધર્મ એ કિલ્લાનું કામ કરે છે, તેથી વર્ણાશ્રમધર્મથી ભ્રષ્ટ થવું એ લક્ષ્યચ્યુત થવા જેવું છે. શરણાગતિ પણ શાસ્ત્રોજ કહે છે, તેથી ધર્મશાસ્ત્રનો ત્યાગ ન જ કરવો જો કે ઉત્તમ કક્ષામાં-પુષ્ટિમાર્ગમાં તેની બહુ જરૂર નથી, એ તો હું કહું છું. પણ તેમાં પહોંચવું અનુગ્રહસાધ્યજ છે. ત્યાં પહોંચ્યા વિના વર્ણાશ્રમમર્યાદા પાળેજ છુટકો છે. તેમાંએ આક્રમણકાળમાં કીલ્લાનું રક્ષણ કરવું રહ્યું. તેના માલીક શ્રીકૃષ્ણ વર્ણાશ્રમ કિલ્લાનું રક્ષણ કરો એવી પ્રાર્થના છે, તે પછી

यज्ञमंडप

Photo: R V Shroff)

म. म. अनंतकृष्ण शास्त्री.

पंडितवर्य श्रीदेवनायकाचार्यजी

दानवीर शेठ लच्छीरामजी.

१

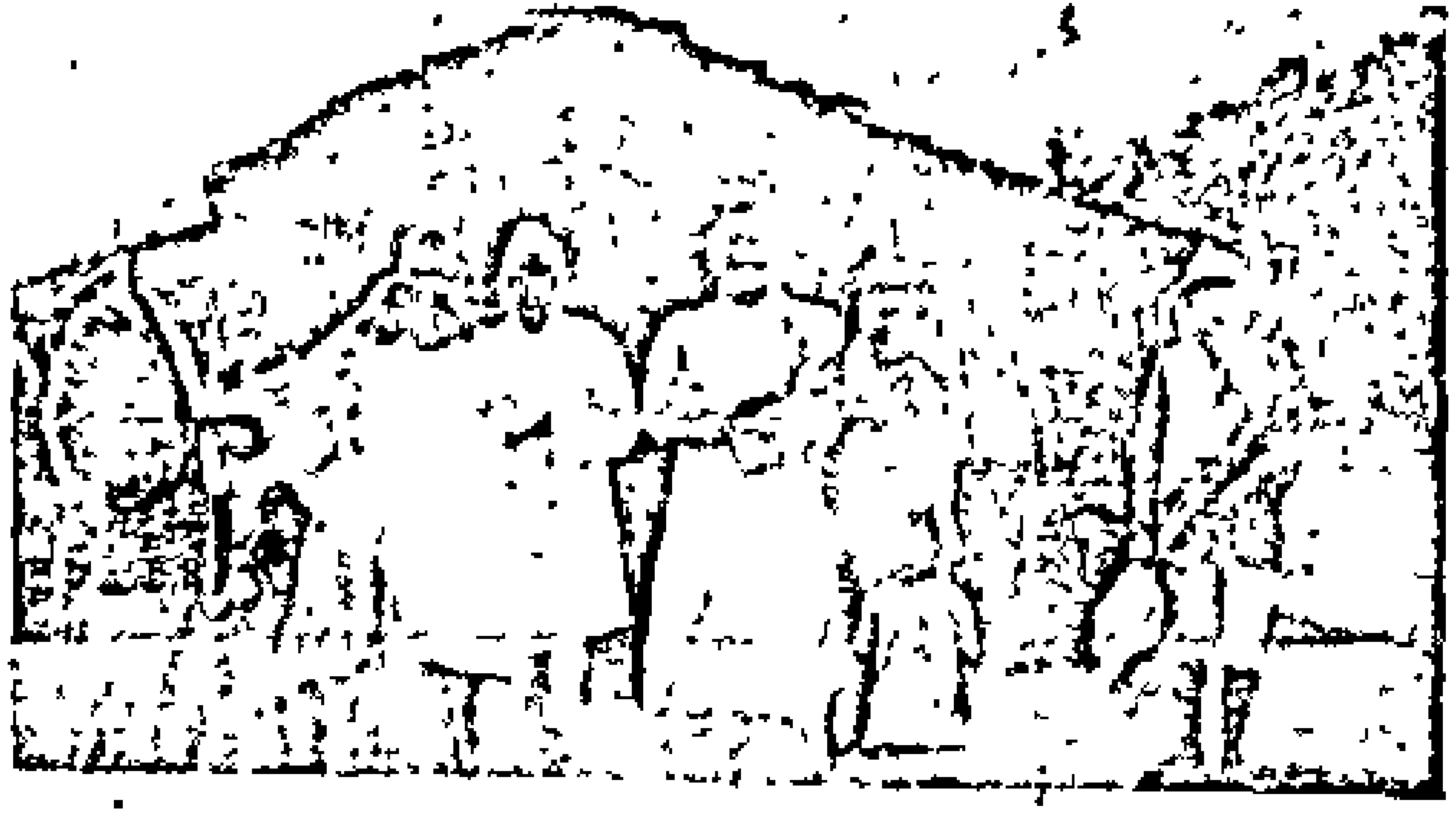

२.

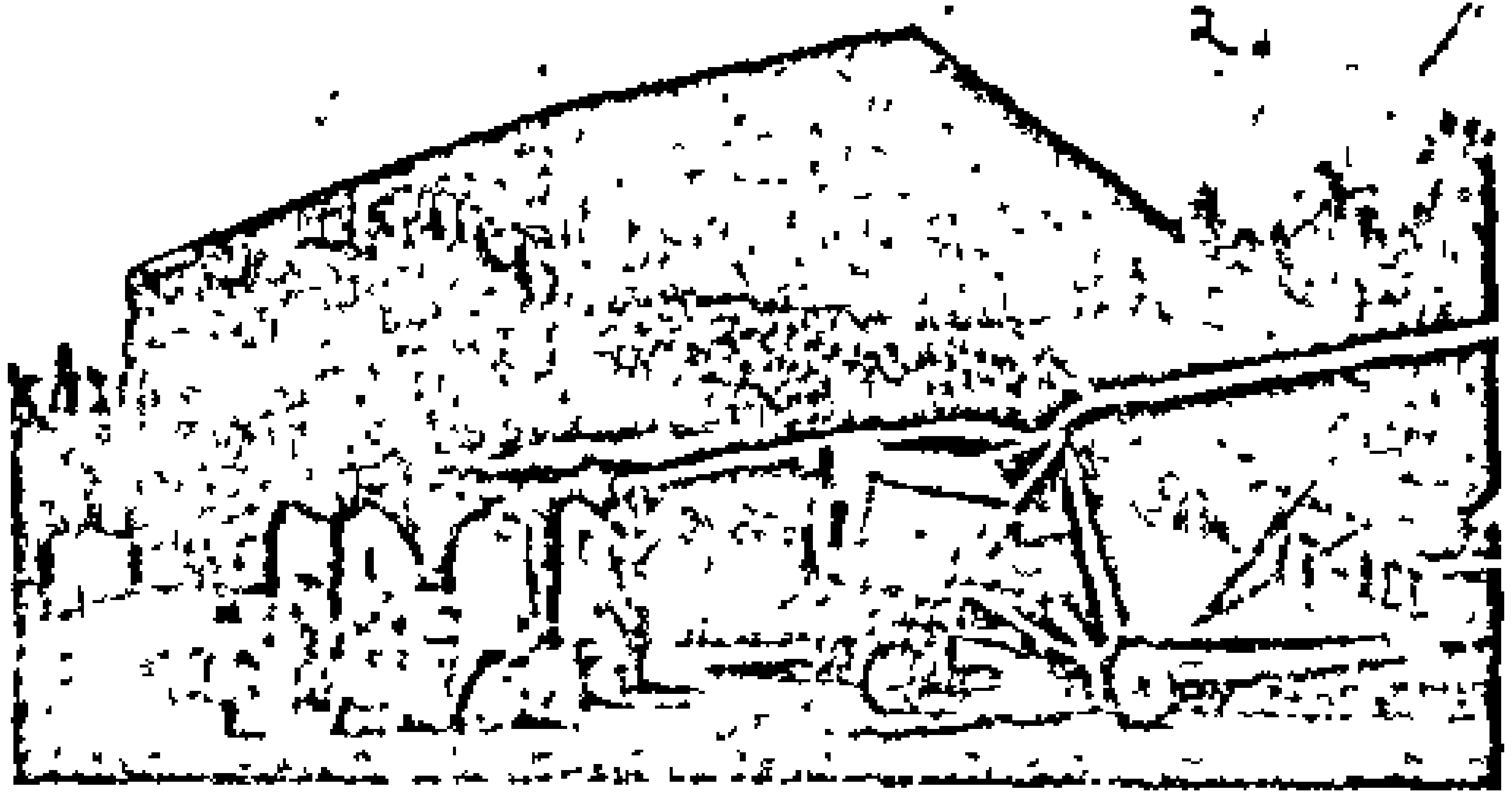

३

४

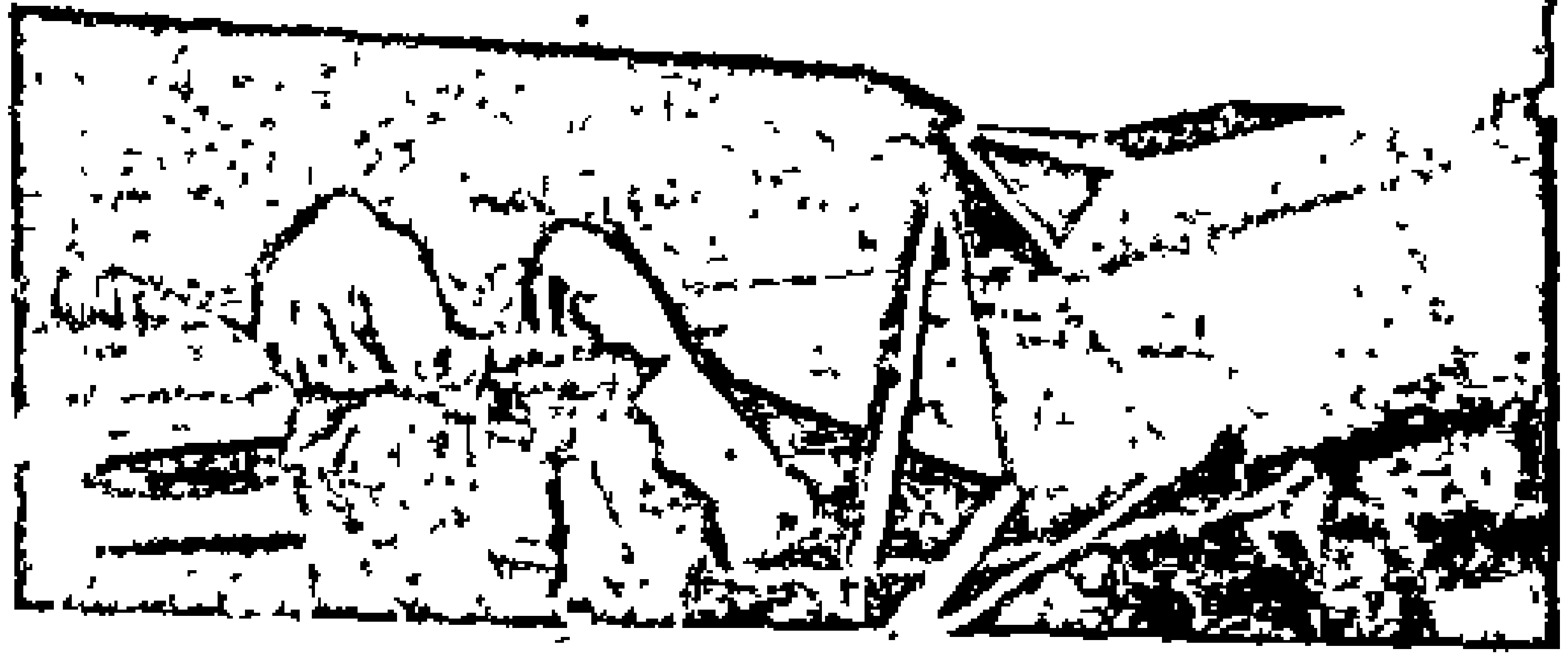

५

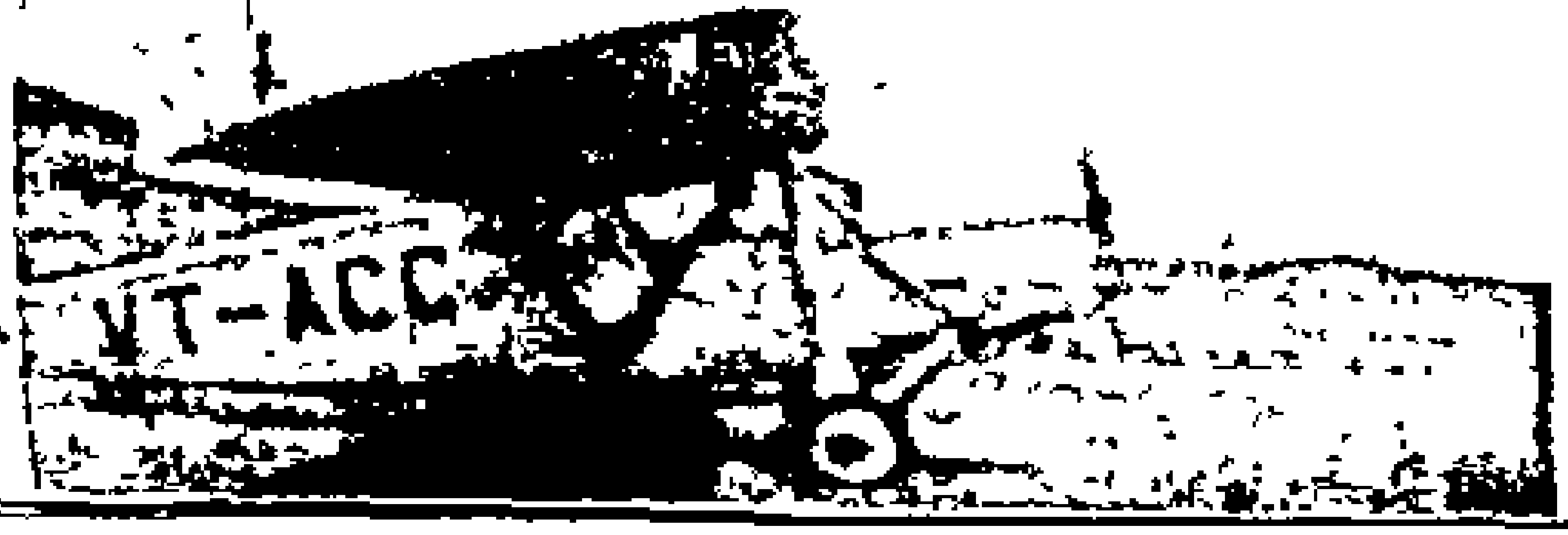

ધાર્મિક આન્દોલન.

યાદગાર વિમાનયાત્રા.

ચૈત્ર વદ ૧૪ થી શ્રીમાન્ દરરોજ સાંજના શ્રીગોપીગીત ઉપરના શ્રીસુબોધિનીજી ઉપર એકાદ કલાક વચનામૃત કરતા હતા. મોટા મંદિરનો બગીચો તે વખતે શ્રોતાઓથી ઉભરાઇ જતો હતો. ઘણાએ અભ્યાસીઓ તો હાથમાં ગ્રંથ લઇને જાણે અભ્યાસ જ કરતા ન હોયને શું! તેમ શ્રવણ કરતા હતા. શ્રીમાને મુંબાઇમાં પહેલાં ઘણી વાર શ્રીસુબોધિનીસ્થ શ્રીવાક્પતિવાક્સુધાનું પાન કરાવ્યું છે તેમ શ્રીનાથદ્વારા આદિમાં પણ ઘણી વાર પ્રવચન કર્યું છે. પણ આ વખતે તો કોઇ ઓર જ રસવર્ષા કરી હતી આવો મોટો જનસમૂહ શાંત રીતે એકીટસે શ્રીમાનના મુખારવિન્દમાંથી પ્રકટ થતાં શ્રીઅનલાચાર્યારવિન્દના મકરંદરસનું પાન કરતો હતો. આપશ્રીએ તો આ વખતે અદ્ભુત કૃપા કરી હતી. ગુપ્તમાં ગુપ્ત રહસ્ય પ્રકટ રીતે વર્ણન કરતા હતા. એવી રીતે પ્રતિદિન કથારસોદધિ ઉમડતો હતો, તેટલામાં વૈશાખ સુદ ૧ પ્રતિપદાના રોજ આજ્ઞા કરી કે, વૈશાખ સુદ બીજના રોજ કથા નહિ થાય; પણ અક્ષય તૃતીયાને રોજ થશે. વૈષ્ણવો તો આ વિઘ્ન સહન કરવા તૈયાર ન હતા, પણ જ્યારે ભેદ ખુલ્યો ત્યારે આશ્ચર્યમાં ગરકાવ બની ગયા.

અક્ષયતૃતીયાનો ઉત્સવ આવી પહોંચ્યો. હતો શ્રીમાનની પ્રબલ ઇચ્છા થઇ કે રસેશ શ્રીજીએ પ્રેરણા કરી કે શું થયું કે આપશ્રી વૈશાખ સુદ બીજના રોજ બપોરે ૧૧ વાગે મુંબાઇથી ૧૨ માઇલ દૂર આવેલા જુહુ પધાર્યા. જુહુ પાસે જ વિમાન [એરોપ્લેન] નું સ્ટેશન છે. શ્રીમાન્ આજે વિમાનમાં શ્રીનાથદ્વારા પધારવાના હતા! ભગવદીય ધર્મપરાયણ શેઠ વલ્લભદાસ ચતુર્ભુજ શિવજી જે. પી તથા શેઠ દેવજીભાઇ પણ શ્રીમાનને વિદા કરવા આવ્યા હતા. આ એક વિલક્ષણ સાહસ હતું. આ સાહસ માટે વાત્સલ્યદૃષ્ટિવાળા કદી રજા નજ આપે. મુંબાઇમા વૃદ્ધ વર્ગે તો આ સાહસ ન કરવા પ્રાર્થના પણ કરી હતી. કેમકે વિલાયતમાં થયેલો ૧૦૧ નંબરના જંગી વિમાનનો અકસ્માત કોઇ ભૂલી ગયું નહતું. નવયુવક વર્ગ તો શ્રીમાનના આ સાહસથી રાજીરાજી થતો હતો. બરોબર ૧૧-૨૦ મિનિટે પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી શેઠ રણછોડદાસ પેટલાદી તથા શ્રીમાન્ વિમાનમાં બિરાજ્યા અને વિમાન ચાલુ કરવામાં આવ્યું. આ વખતના ફોટાઓ શેઠ વલ્લભદાસના સત્પુત્ર શેઠ ક.કુભાઇએ લીધેલા છે. તે પરથી આ પુસ્તકમાં છાપ્યા છે. પહેલા નંબરના ફોટામાં શ્રીમાન્ વિમાન તરફ જવા પધારે છે. સાહેબ જેવી હેટ (ટોપી) વાલા શેઠ રણછોડદાસભાઇ છે. નં. બીજાના ફોટામાં શ્રીમાન્ વિમાન પાસે પધાર્યા તેનું દૃશ્ય છે. નં. ત્રણમાં વિમાનની અંદર બિરાજવાનો પોષાક ધરી રહ્યા છે. નં ૪ માં વિમાનની અંદર બિરાજતી વખતનો દેખાવ છે. નં ૫ માં વિમાન ઉડતી વખતનો દેખાવ છે. નં. ૬ વિમાન આકાશના અનંત અવકાશમાં દૃષ્ટિપથથી સુદૂર થવા લાગ્યું તેનું ચિત્ર છે. તે પછી બરોબર બે કલાકે શ્રીમાન્ અમદાવાદ પધાર્યા. વિમાન બરોબર દરિયા કિનારે ચાલ્યું જતું હતું. ખંભાત સુધી તો સમુદ્રતટેજ ચાલ્યું પછીથી સીધું અમદાવાદ આવ્યું. અમદાવાદના એરોડ્રામ ઉપર વિમાન ઉતર્યું ત્યાંથી ગૃહસ્થોને ટેલીફોન કરીને બોલાવ્યા. પરમ ભગવદીય શેઠ બાલાભાઇ તથા બીજા ગૃહસ્થો આવી પહોંચ્યા. દોઢ કલાક લગભગ નીકળી ગયો. તે પછી પાછું એરોપ્લેન ઉડ્યું તે ૧।। કલાકે શ્રીનાથદ્વારા તરફ જઇ પહોંચ્યું. વિમાન ચલાવનાર (પાઇલટ) એક કાબેલજ લશ્કરી

માટે બહુજ સાવધાન રહેવાનું હતું. શ્રીનાથદ્વારા તાર ગયો હતો, શ્રીમાન્ તિલકાયિતશ્રી તો મોટરમાં બિરાજીને લાલ બાગમાં પધાર્યા હતા. વિમાન જોવાને દૂરદૂરથી અસંખ્ય જનસમૂહ એકઠો થયો હતો. લાલબાગનું મેદાન નાનું પડ્યું એટલે વૃંદાવન 'બાગમાં' વિમાન ઉતારવામાં આવ્યું. શ્રીમાને શ્રીપિતૃચરણારવિન્દમાં દંડવત પ્રણામ કર્યાં. શ્રીમાન્ શયનાર્તિમાં સેવામાં પધાર્યા. મેવાડના ઇતિહાસમાં આ વીસમી સદીની નવીનતા સુવર્ણાક્ષરે આલેખાઇ ગઇ. અક્ષયતૃતીયાનો મહોત્સવ કરી, શ્રીને ચંદનાદિ સમર્પીને ભોજન પછી લગભગ બે વાગે શ્રીમાન્ પાછા વિમાનમાં પધાર્યા. આ જમીન વિમાનને ઉડવા યોગ્ય ન હતી તેથી શેઠ રણછોડદાસ ભાઇને શ્રીનાથદ્વારા જ છોડવા પડ્યા. મુબાઇ પાછા ફરતી વખતે તો સવા કલાકે વિમાન અમદાવાદ આવી પહોંચ્યું. અમદાવાદમાં તો આજે સેંકડો વૈષ્ણવો કેંપ ઉપર ઉભા થઇ ગયા હતા. દર્શનચરણસ્પર્શમાં લગભગ કલાક નિકળી ગયો. અમદાવાદથી શેઠ જયંતિલાલ અમૃતલાલ દામોદરદાસને શ્રીમાને સાથે લીધા. બરાબર બે કલાકે વિમાન મુંબઇ (જુહુ) આવી પહોંચ્યુ અને સાંજે તો મોટા મંદિરના બગીચામાં શ્રીમાને શ્રીસુબોધીની કથારસનુ પાન કરાવ્યું.

ખોટાં વગોણાં—શ્રીમાન્‌ના આ ઐતિહાસિક સાહસને નવીન જનસમૂહે વધાવી લીધું. વૃદ્ધવર્ગ આશ્ચર્યચકિત થઇને શ્રીમાન્‌ના સામર્થ્યનો અનુભવ કરવા લાગ્યો. પણ પેલા નિંદાખોરોને નવો ખોરાક મળી ગયો. જો જમાના પ્રમાણે ન ચાલે તો કહેશે કે, આ વિમાનોના જમાનામાં (વીસમી સદીમાં) ધર્મગુરુઓ ૧૬ મી સદી જેવા જ રહ્યા! જો હવે આવાં સાહસ કરે તો કહેશે કે પૈસાનો ધુમાડો કર્યો. ખરી રીતે જોતાં વિમાનયાત્રામાં શ્રીમાન્‌ને ચારસો રૂપીયાથી વધુ ખર્ચ થયું નથી. તે શ્રીજીની સેવા પાસે તુચ્છમાં તુચ્છ ગણાય. બીજી ગપ મારી કે, મહારાજશ્રીએ અઢાર હજાર રૂપીઆ ખર્ચીને વિમાન ખરીદ્યુ. આ બધી ગપોનો જવાબજ નહોય. એ નિંદાખોર કીડાઓને નિંદા–વિષ્ટામાં જ મજાહ પડે છે એટલે બિચારાને બીજું શું સૂઝે ? ખરૂં જોતાં આપશ્રીએ વિમાન ખરીદેલું જ નહતું. વળી ગપ ઉડી કે ઉદેપુર રાજ્યે શ્રીમાન્ સામે પગલાં લીધાં. આ બધી ઉડાઉ ગપજ છે, એ અહીં

ધાર્મિક જનતા અને ગોળમેજી.

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર વાઇસરોયની મુલાકાતે.

ધર્મ અને રાજસત્તા—ધર્મ એ ભારતવર્ષનું જીવન-સર્વસ્વ છે. જગતની સંસ્કૃતિઓમાં આર્ય સંસ્કૃતિનું જે ભવ્ય સ્થાન છે તેનું કારણ ધર્મજ છે. હિન્દમાં ઘણી સાર્વભૌમ રાજસત્તાઓ સ્થપાઇ અને કાલના અનંત ગર્ભમાં સમાઇ ગઇ. પણ એ રાજસત્તાઓએ હિન્દના પ્રાણરૂપ ધર્મનું અખંડ ગૌરવ જાળવવામાજ પોતાનું ચિરસ્થાયિત્વ અને કલ્યાણ માન્યું હતું. આર્ય સંસ્કૃતિના કોઇપણ અંગને ઝાંખું પાડવા માટે કોઇ પણ રાજસત્તાએ સ્વસત્તાનો દુરુપયોગ કર્યો નથી. ભારતીય સમ્રાટોએ તો જગન્મૂર્ધન્ય આર્ય સંસ્કૃતિના મહામંદિરને આંગણે પોતાના રાજમુકુટો હંમેશાં નમતા જ રાખ્યા છે. વિદેશી અને વિધર્મી રાજસત્તાઓએ પણ એનું જ અનુકરણ કરવામાં પોતાની સહીસલામતી સમજી લીધી છે. છતા જે રાજસત્તાઓએ સત્તામદથી અંધ બનીને હિન્દના મહાન્ પવિત્ર અને ઓજસ્વી આત્મા સાથે થોડી પણ અટકચાળી કરી છે તે રાજસત્તાઓએ પોતાનાં જ અસ્તિત્વ પર, પોતાની જાહોજલાલી અને સુખશાંતિ ઉપર કુઠારાઘાત જ કર્યો છે. એ પ્રજ્વલિત સત્ય ઇતિહાસની સુવર્ણભૂમિકાપર અત્યારે પણ પ્રકાશી રહેલું છે. આર્યસંસ્કૃતિની લોકોત્તર ભવ્ય ભૂમિકા લેશ પણ ઝાંખી પડી નથી અને પડશે નહિ જ.

રાજકારણમાં ધર્મ—રાજસત્તા, ધર્મ અને સમાજ એ ત્રણેય વસ્તુ એવી સંગઠિત થયેલી છે, તેને અલગ કરતાં રાષ્ટ્ર જેવી કોઇ વસ્તુ જ રહેવી અસંભવિત થઇ પડે. બીજા દેશો ભલે તે ત્રણેનાં પૃથક્કરણ કરીને પોતાના રાજકીય જીવનનો નિર્વાહ કરવાનું જાણે, પણ આ ધર્મભૂમિમાં તેમ થવું જ મુશ્કેલ છે. આર્ય સંસ્કૃતિની અનંતકાલીન ભવ્યતા અને સર્વોચ્ચતાનું કારણ ઉક્ત ત્રણ વસ્તુઓનાં સંગઠનમા સમાયલું છે. ધર્મ અને સમાજની ઉચ્ચતા જાળવવાની જોખમદારી રાજસત્તાપર રહેલી છે અને એમ કરીને જ કોઇપણ રાજસત્તા પોતાનાં અસ્તિત્વને પણ સુરક્ષિત રાખી શકે છે. એ ત્રણે વસ્તુઓના સંગઠનમાં લેશ પણ વૈમનસ્ય પેદા થાય તો ભારતીય જીવનમાંથી રસકસ કાયમનો ચાલ્યો જાય અને સ્થલે સ્થલે દુઃખના દાવાનળોજ સળગી રહે. આનો અનુભવ અત્યારે આપણે સારી પેઠે કરી રહેલા છીએ. રાજસત્તાના કલ્પિત ખ્યાલમાં સમાજ અને ધર્મની સંસ્કૃતિ સાથે અટકચાળી કરીને આપણે ઉન્નતિના સ્વપ્ના પણ જોઇ શકવાના નથી. ભૂતકાલ તેનો સાક્ષી છે અને વર્તમાન તો ચેતાવી રહ્યો છે. ભવિષ્ય તો પ્રભુ જ જાણે છે. આપણે તો ભવિષ્યમા ભયચિહ્નો જ જોવાં રહ્યા!

રાજસત્તાનું પુનર્વિધાન—હાલમા હિન્દથી ૭૦૦૦ સાત હજાર માઇલ દૂર રાજકીય પુનર્વિધાન થઇ રહ્યું છે. દેશમાં ક્રાંતિયુગના રણદુંદુભિ વાગી રહ્યા છે. જડવાદનું વાતાવરણ જોશભેર ધસમસી રહ્યું છે. વિદેશી શિક્ષાના ચોમેર પ્રસરતા ચળકાટમાં અંજાયલી આંખો પોતાના વ્યક્તિત્વને, દેશની સંસ્કૃતિની સર્વોચ્ચતાને નિહાળવા અસમર્થ બનવા લાગી છે. દેશ, ધર્મ અને સમાજના રક્ષણને બદલે જાણે અજાણે ભક્ષણ થતું હોય તેવા ભણકારા થાય છે. હિન્દમાં પ્રાણરૂપ ધર્મની તો ડગલે પગલે અવહેલના જ થતી જાય છે. ધર્મ અને ઇશ્વર; એ બન્ને જીવનની દિવ્યતાનું રક્ષણ કરનારા અજોડ દુર્ગ છે. તેને ઉન્નતિની આડે આવનારા પ્રતિબંધક

લોર્ડ વિલિંગ્ડન જ્યારે મુમાઇના ગવર્નર હતા ત્યારે પણ મહાબ્લેશ્વરમા આચાર્યશ્રી મળ્યા હતા ફરીથી આ મુલાકાત પણ સંતોષજનક રીતે થઇ હતી" આચાર્યશ્રી સાથે શીમલામાં મોટો સ્ટાફ હતો. પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી તરીકે શેઠ રણછોડદાસ હરજીવનદાસ પેટલાદીએ ઘણીજ કુશલતા સાથે કાર્ય બજાવ્યું હતું. તે ઉપરાંત એ. ડી. સી. લાલા હરસ્વરૂપરાય તથા શ્રીનાથદ્વારાના કમાન્ડર ઇન ચીફ તથા વસંતરામ શાસ્ત્રી વગેરે હતા.

સીમલાથી આચાર્યશ્રી તા. ૧૦ મીએ દીલ્હી પધાર્યા હતા અને બે લાખ પ્રેક્ષકો જેમા ભાગ લે છે, તેવી રામલીલામાં તેના નેતાઓની વિનતિથી સભાપતિ ગોસ્વામી શ્રીદામોદરલાલજીએ એક સચોટ વ્યાખ્યાન આપ્યુ હતુ આ પ્રમાણે ધર્મને માટે તનમન અને ધનનો ભોગ આપીને જે શ્રમ આચાર્યશ્રીઓએ લીધો છે તેને માટે સનાતની પ્રજા તેમની ઋણી બની છે. આથી પણ વિશેષ ઉત્સાહથી તેઓશ્રી ધર્મરક્ષણાર્થ બદ્ધપરિકર બને એજ અભિલાષા છે.

* * *

નોંધી લો! ઉત્સાહી બનો!

સાહિત્યવિલાસી વૈષ્ણવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો!

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠયા જ પુસ્તકો મળતાં હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા ગ્રંથો પ્રકટ થઇ ગયા છે કે એક જીન્દગીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, વ્રજ, હીંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા ગ્રંથો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોછાવર લઇને મોકલી આપે છે. નહિ મળતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખશો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી. સૂચીપત્ર મંગાવી લો.

ઠે. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,
મુ. નડિયાદ, (જી. ખેડા),

એક કરોડ વૈષ્ણવોનું

આ એક જ

શું?

હીન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામાં પ્રકટ થતું

અપ્રતિમ સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તણ્ડ

(વાર્ષિક લવાજમ માત્ર બે રૂપીઆ)

ઉત્તમોત્તમ સાંપ્રદાયિક સંસ્કૃત ગ્રંથો તથા તેના અનુવાદો, પ્રાચીન અપ્રસિદ્ધ કીર્તનો, ભાવનાઓ, પ્રાચીન સાંપ્રદાયિક ભાષા ગ્રંથો ઉપરાંત સુંદર ત્રિરંગી ચિત્રો.

આવું માસિક સંપ્રદાયમાં એક જ છે.

જલદી ગ્રાહક થાઓ.

તંત્રી—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી,
ઘર નંબર ૧૭૮૮, રાજામહેતાની પોળ,
અમદાવાદ નં. ૧.

તમારા બાળકોને વારસામાં શું આપશો ?

ધર્મના ઉદયમાં શ્રીવૈષ્ણવયુવકમંડળ તરફથી છપાએલા નાના બાળકો પણ સમજી શ તેવાં સરળ ભાષામા લખાએલાં નીચેના પુસ્તકો આપશો તોજ ઉન્નતિ છે.

પુસ્તકો.	પ્રથમ કીંમત.	ઘટાડેલી કીંમત.
શ્રીવૈષ્ણવબાળપોથી	૦–૨–૦	૦–૧–૬
પ્રથમપાઠાવલી	૦–૪–૦	૦–૨–૦
રાજા આશકરણ	...	૦–૧–૩
શ્રીવલ્લભચરિત્ર	...	૦–૨–૦
શ્રીનારાયણદાસ બ્રહ્મચારી	...	અમૂલ્ય
શ્રીપદ્મનાભદાસજી	...	૦–૧–૩

તા. ક.—ઘટાડેલી કીંમત ઉપરાંત પાઠશાળાઓ વગેરે માટે ૫૦ થી વધુ કોપ મંગાવનારને કમીશન આપવામા આવશે. લખો:—

મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ સરૈયા, મંત્રી: શ્રીવૈષ્ણવયુવકમંડળ-નડીઆદ

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કીંમત ઘટાડીને અઢી આના કર્યા, ટપાલ ખર્ચ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઇ, ધોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજીનું એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૯ પદો, શ્રીહરિકેશજીના એક સો પચીસ દુહા, આ પ્રાચીન સાહિત્ય ઉપરાંત **શ્રીગોકુલનાથજી, શ્રીરઘુનાથજી** તેમજ **શ્રીઆચાર્યગોપેશજી** એ ત્રણે મહાનુભાવીઓની સંસ્કૃત ટીકાઓનું **સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ સુંદર ચિત્રો.** આવું સાહિત્ય કદી બહાર પડ્યું નથી, ઉંચા કાગળો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તનોનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી પોઢાડવા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમાએ વર્ષાઋતુ શીતકાલ, ઉષ્ણકાલ, ઉત્સવોની પ્રણાલિકા સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા બારમાસી ઉત્સવના પદો. દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ. ધોળ પદો, નિત્યપાઠો.

બીજાં પુસ્તકોની જરૂરજ નહિ પડે. અક્ષરો મોટા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સંપ્રદાયમાં પહેલોજ છે. અપ્રસિદ્ધ પદોનો તો ભંડાર છે. થોડાજ સમયમાં બહાર પડશે. નોછાવર હવે પછી.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રાજામહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

॥ श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणा विजयन्तेतराम् ॥

વિશ્વના તારણહાર શ્રીમહાપ્રભુજીના વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો
પ્રચાર કરતું સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

પુસ્તક ૬ ઠું] માર્ગશીર્ષ, સં. ૧૯૮૮. [અંક ૯.

દેવદીપોત્સવાંકનો સત્કાર.

ગયા વર્ષોના ખાસ અંકો સાથે ચિત્રોના આગમનમાં ઓટ પડી જતાં ગત દેવદીપોત્સવાંક વૈષ્ણવોએ વધાવી લીધો છે એ માટે સૌની સાર્થકતા માનું છું. ભક્તિભાવથી અર્પેલી અણુમાત્ર વસ્તુને પ્રભુ નંદનંદન મહાન માની લે છે તો પછી ભગવદીયો કેમ ન માને? તે એઓની મહત્તા છે. બાકી દીવાળી ગોટાળા, કાર્યાલયની ગેરવ્યવસ્થા, અંધાધુંધી, નાણાંની ઉચાપત વગેરેમાં અને એ ખાસ અંક લખવા-છપાવવાની મહેનતમાં ગતદિવસના ઉજાગરા થયા છે પણ એ અંકનો સત્કાર થયો એ જ સંતોષનું કારણ છે.

ટપાલ ખાતું ખર્ચાળ બન્યું છે એટલે ગ્રાહકોએ લવાજમ અમદાવાદમાં કોઈની મારફત ભરાવવું. અથવા તો પોતે ભરી જવું. કાર્યાલય રાજા મહેતાની પોળમાં છે, પણ તે મોટી હોવાથી તાતણીઆ માતાની પાસેનો ખાંચો પૂછવાથી જડશે પણ નીચેના જાહેર ઠેકાણે લવાજમ ભરી શકાશે—
૧. ગુજરાતી પંચ ઓફીસ, ઠે. પાનકુવા, ચાર રસ્તા, રીચીરોડ ૨. વસ્તુભાઈ જગનલાલ દેસાઈની દુકાને, ઠે. ૧૦ રીચીરોડ. ૩. ગાંધી [illegible] અમૃતલાલ, ટીકવા ચોકી પાસે, ઠે. રીલાયાની પોળ બહાર જગન્નાથ હાથની દુકાનોની હારમાં

ઠે. નં. ૧૭૪૮, રાજામહેતાની પોળ }
અમદાવાદ.

તંત્રી અને પ્રકાશક
વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

વાર્ષિક લવાજમ બે રૂપીઆ (ટપાલ ખર્ચ સાથે)

નામ નોંધાવો !!

સુબોધિનીજીનો સંપૂર્ણ અનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રસિકવર શ્રીકૃષ્ણની ભાવાત્મક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમદ્ભાગવતનું મહત્ત્વ
હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેજ નામ નોધાવો.
શ્રીસુબોધિનીજીનું સરસ ભાષાન્તર અને વિષમ પદાર્થોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ
અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ આજ્ઞા કરે
ત્પન્ન વિદ્વાન્ એ ઉભયને સમાન રીતે આ ભાષાન્તર અને ઉપકારક છે.

ગ્રાહકોને નામ નોંધાવવાના સ્થળોઃ—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય—નડિઆદ. ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ
રદાસ પડવાકુવા—નડિઆદ. ૩. જોષી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—
ગર. ૪. શુદ્ધાદ્વૈત કાર્યાલય, રાજામહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

श्रीकृष्णाय नमः।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम्। (छान्दोग्यश्रुतिः)
विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषच्छ्रुतिः)

विज्ञापनम्।

। लुप्तप्राय प्राचीन संस्कृत साहित्य, एवं राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं
यजी—आदिके ग्रन्थो का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामक मासिक पत्रिका विद्वत्केसरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी
। एवं विद्वद्रत्न गोस्वामी श्री ६ श्रीव्रजरत्नलालजी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई।
ों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ
मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायता संस्कृत पाठशाला—नडियाद, हरिशङ्कर
बडामंदिर—नडियाद, शुद्धाद्वैत कार्यालय—अमदावाद

નબળાં શરીરને બળવાન, કાંતિમય બનાવવાના મનોરથ પૂર્ણ કરવા માટે

અમોએ આપને પ્રથમથીજ રાખ્યું છે કેઃ-

દ્રાક્ષાસવ

(સ્ફુર્તિદાયક ક્ષુધાવર્ધક બલકારક)

શિઆળાની ઋતુમા આપને બળવાન અને તન્દુરસ્ત રહેવાની ઇચ્છા હોય તો આજેજ અંગુરી દ્રાક્ષથી બનાવેલો મધુર, સ્વાદિષ્ટ, ઉત્તેજનાદાર સુખ સંચારક દ્રાક્ષાસવ મંગાવી તેનુ સેવન કરો. જેથી શરીરમા રક્ત માસ વધે છે. ચહેરાપર રોનક અને સુર્ખી આવે છે. કબજીયત દુર કરી દસ્ત સાફ લાવે છે. શરીરમા નવું ચેતન આવી કામમા મન લાગે છે. એક વખત સેવન કરી પરીક્ષા કરી જુઓ. કિં. નાની બાટલીનો રૂ. ૧) મોટી બાટલીના રૂ. ૨)

ચ્યવનપ્રાશ

અવલેહ

(અષ્ટવર્ગ ઔષધી મીશ્રીત.)

આ અવલેહ રોગી, નીરોગી, બાળક, વૃદ્ધ સ્ત્રી, પુરૂષ દરેકના માટે દરેક વખતે એકસરખું ઉપયોગી છે.

આયુષ્ય વધારનાર અને નવું જીવન આપનાર છે, આનાજ સેવનથી મહર્ષી ચ્યવન ઋષિએ પુનઃ યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી હતી. વીર્ય વિકાર, નબળાઇ, ખાસી, શ્વાસ, અને ફેફસાની કમજોરી માટે રામબાણ છે. આનાથી સ્મૃતિ, કાંતિ વધે છે. ઇંદ્રિઓમા બળ આવી મસ્તિષ્ક શક્તિ વધારે છે. કિં. તોલા ૨૦ નો રૂ. ૧).

નમુનો મફત મોકલવામાં આવે છે, દરેક દવા વેચનારાઓ પાસે મળશે.

મળવાનુ ઠેકાણું—સુખ સંચારક કંપની,-મથુરા.

અણધાર્યા વખતે સારા ડૉકટરની જરૂરત પૂરી પાડનાર દરેક ઋતુમાં ઉપયોગી ૪૧ વર્ષથી પ્રચલિત સંસાર પ્રસિદ્ધ અનુપાન વગરની

મશહુર દવા

સુધાસિંધુ

કફ, ખાંસી, દમ, શૂળ, સંગ્રહણી, ઝાડા, કોલેરા, પેટનો દુઃખાવો, અતિસાર, મોળ આવવી, ઉલટી થવી, મુંઝારો. વગેરે એવાજ રોગો તાત્કાળીક નાબુદ કરનારી ખાસ દવા છે.

કિં. બા. એકના ૮ આના.

ઠેકાણું:-સુખસંચારક કંપની-મથુરા.

॥ श्रीकृष्ण ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥

"શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્યમન્દિર"

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને સુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

'વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના'

અમ્હારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—વ્રજ, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલાં (મુદ્રિત થયેલાં પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુન્દર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીગુસાંઇજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ. પા. ગો. બાલકોના રંગબેરંગી સુન્દર ફોટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગબેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેડો તથા પોકેટડાયરી, ગીતાડાયરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોછાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છબીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફ્રેમો મઢાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી બાઈડીંગ (જીલ્દ) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

"श्रीभक्तिमार्गीय-पुस्तकालय."

(વાચન—વિભાગ)

મુંબઇ તથા આજુબાજુના પરાંઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરબેઠાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફ્રી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ ત્હેનાં ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસાર કોઇ પણ ધર્મજીજ્ઞાસુ લઇ શકે છે. વિશેષમાં એડ્રેસે લખો યા મળો:—

મળવાનો સમય—
સવારના ૭ થી ૧૨ (સ્ટા. ટા.)
સાંજના ૪ થી ૮ ,,

ગિરિધરલાલ જ. શાહ, બુકસેલર.
વ્યવસ્થાપક.—
'ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.'
ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મન્દિર, ભુલેશ્વર; મુંબઇ નં. ૨.

તા. ક:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી વખતે પોતાનું નામ તથા એડરેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપીયાની અંદરની કીંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાંપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુતર માટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટસ્ટાંપ બીડવા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સુચના—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરના ઠેકાણે ભરી શકાશે.

હિસ્ટરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

બ્લોક ૩૦ હીસ્ટિરિયા, મૂર્છા, ચકરી, ફેફરૂ, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરિકન છેલ્લી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાતો, સમજુતી અને સાદા ઉપચારોનુ પુસ્તક વાચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીંમત ૧-૪-૦ પો. જુદું, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના ગ. શાળા માટે નવુ મંજુર કીં. ૦।= પો ૦)=.

હીસ્ટિરિયા રોગનીજ રામબાણ,

પેટંટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમા ૨૪ કલાકમા ફાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રંગુન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીંમત રૂ. ૫) પો. જુદુ

છગનલાલ લલ્લુભાઇ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડોકટરોની દવા ખાઇ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), મુંબાઇના ઝાડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઇ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણ દવા માટે રૂબરૂ મળો યા સવાલપત્ર મંગાવો.

પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો —

માસ્તર કે. જે. પટેલ એન્ડ સન્સ, સ્પ્રુ સ્પેસીઆલીસ્ટ-માણસાવાળા.

☞ **મેળાપ**—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાડીગરાની પોળમા તંબુગરાની ખડકી ઘર નં. ૩૫૬.

અમારૂ બાલાનંદ બચ્ચાઓને હૃષ્ટ પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુદું.

અલ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ દેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના ગુપ્ત સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ હાથ લાગશે. શરીરની પાયમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પાયમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો સુઝશે.

કિંમત કે પોસ્ટ કાંઈ પણ નહિ, માત્ર તમારૂં પુરૂં સરનામુ મોકલી મંગાવો

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔષધાલય—જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

નોંધી લો !　　　　　　　　　　ઉત્સાહી બનો !

સાહિત્યવિલાસી વૈષ્ણવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠ્યા જ પુસ્તકો મળતા હતાં, ત્યા હાલમાં એટલા બધા ગ્રંથો પ્રકટ થઇ ગયા છે કે એક જીન્દગીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સસ્કૃત, વ્રજ, હીંદી, ગુજરાતી અને અગ્રેજી બધા ગ્રથો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોછાવર લઇને મોકલી આપે છે નહિ મળતા પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખશો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી સૂચીપત્ર મગાવી લો.

ઠે. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,
સુ. નડિયાદ, (જી. ખેડા),

અનેક રોગની એકજ દવા !!

જીવન ધારા !!

ઝાડા, ઉલ્ટી, સુક, શરદી, શુળ, અજીર્ણ હાથ-પગ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, દાંત-દાઢની પીડા, સંધીવા, તાવ, પાણીવીકાર, ઝેરી ડંખ, પ્રમેહ, પ્રદર, અશક્તી, ખાસી, દમ, શ્વાસ, ગડગુમડ, ઘા, લોહી નીકળતું, હરસ, મોડાની તથા ખાળકુવાની દુરગંધ, ચાચડ-માકડની પીડા ઈત્યાદિ અનેક રોગોની ખાત્રીપુર્વક દવા.

કી. મોટી બા. રૂ. ૧॥ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૦॥.

જેનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દુર કરનાર અનુભવસીદ્ધ ઉપાય છે. રજસ્વલાની તકલીફ, સુવારોગનો ત્રાસ, શ્વેત યા રક્ત પ્રદર, કસુવાવડ, પેટ તથા પેડુ-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણજ્વર, બદન ફીકું, બેચેની, દુખાવો, ઈત્યાદિ અનેક અડચણો દુર કરી બદન તાકાદથી ભરપુર અને ગર્ભ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂા. ૨) બે.

દરેક દવાનું ટપાલ ખર્ચ જુદું. રજીસ્ટર ટ્રેડમાર્ક 'જેનસ' નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો દરેક ઠેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાજગીથી ભરપુર

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

મૃદ્વિકારિષ્ટ-શારંગધર મ. ખ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

☞ તાકીદે તાકત-તાજગી મેળવવા
શરદી મટાડનાર
થાક ઉતારનાર
ઊંઘ લાવનાર
દસ્ત સાફ લાવનાર
ભુખ લગાડનાર
તાકત આપનાર
તાજગી બક્ષનાર

ક્ષય, ખાંસી, મૂછો અને સાધારણ
નબળાઇમાં તાકીદે આરામ આપનાર

લજ્જતદાર દવા

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્મસ્યુટીકલ વર્ક્સ લી૦—મુંબઇ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ—ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ અધીના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઇ ગયો ! અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગોસ્વામી શ્રીઃ શ્રીજીવનેશાચાર્યજી મહારાજે આ સરલમા સરલ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના “ઉપદેશવિષયકશંકાનિરાસવાદ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમા છે તે ઉપરાત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમા રજુ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિષે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવુ ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમા છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન્ રા. રા હરિકૃષ્ણ વીરજીભાઇએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

આ ઉપરાત વૈષ્ણવ દ્વિજો માટે (યજ્ઞોપવીત ધારણ કરનારા માટે) સવારથી સાંજ સુધીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા બે પુસ્તકો વૈષ્ણવ દ્વિજાહ્નિક હીંદીમા તથા ગુજરાતીમાં તૈયાર છે.

હીંદી મૂલ્ય—આઠ આના. ગુજરાતી મૂલ્ય—એક રૂપીઓ.

ઠેકાણું:—શ્રીલાલબાવાનું મંદિર.
ભૂલેશ્વર, મુંબાઈ નં ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.
સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશો ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, બીન, દીલરૂબા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીંત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનુ આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાથી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઇ અને ધમાર એ બધાંના ૮૦ રાગોના ખાસ નોટેશનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોછાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના

ઠે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.
મુ. ધંધુકા. (જી. અમદાવાદ.)

'શુદ્ધાદ્વૈત' જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા, નો. રૂ. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીંમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો શીલીકમાં હશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા રૂ. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ— પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાર્યાલયમાં..

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. **રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રન્થ**—'શુદ્ધાદ્વૈત'માં પ્રકટ થઇ ગયેલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોછાવર માત્ર ત્રણ આના, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૨. **ભાવભાવના**—(ભા. ૧લો) શ્રીહારિકેશ્વરજીકૃત આ ગ્રંથ એક અહર્નિશ વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોછાવર પછીથી જણાવાશે.

૩. **પંદરમો અધ્યાય**—શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક શ્લોક પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૪. **આટલું તો કરજો જ**—નિત્યનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોછાવર માત્ર ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૫. **'ભક્તિપોષણ'**—કવિશ્રી દયારામભાઇનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કીં. ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૬. **ભક્તવાણી**—ડાકોરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. ઇચ્છારામ ભટ્ટજીએ સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૭. **શ્રીગોકુલેશવચનામૃત**—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોછાવર પછીથી.

૮. **ચોરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો**—છપાય છે. વાંચવાલાયક ગ્રંથ. નોછાવર પછીથી

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી ઘણી હોવાથી આ સાહસ ખેડયું છે. મૂલ્ય ત્રણ આના, ટપાલ ખર્ચ એક આનો.

ઠે. ૧૭૪૮, ગજામહેતા પોળ—અમદાવાદ

સંન્યાસીએ વેદશાસ્ત્રવિરુદ્ધ સિદ્ધાંત રાજાને બતાવીને એનાં મનને ભ્રમ ઉપજાવ્યો તે વિષેનું કારણ હવે બતાવીએ છીએ.

લક્ષ્મણનાથ સંન્યાસી, જેણે વેદશાસ્ત્રને બાજુએ મુકીને પોતાની યુક્તિથી વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર પ્રશ્નોમાં દૂષણ દેખડાવ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે કે પ્રાચીનશાસ્ત્ર મનુસ્મૃતિ છે, બધા વર્ણને વર્ણાશ્રમધર્મમાં ચાલવાનું મનુએ કહ્યું છે. તેથી વર્ણાશ્રમધર્મથીજ સર્વે વર્ણનો મોક્ષ છે. એ મનુસ્મૃતિમાં વૈષ્ણવી દીક્ષાનાં આચરણ કોઇ ઠેકાણે કહેલાં નથી, તેથી એ દીક્ષા કલિયુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવી ચલાવી છે. માટે શાસ્ત્રપ્રમાણ નથી. એ રીતે બીજા પ્રમાણમાં બતાવ્યું છે. એ રીતે બીજા પણ કેટલાંક દૂષણ પ્રશ્નોમાં બતાવ્યા છે ત ઉપરથી એવું દેખાય છે કે એજ ઉપદેશ સંન્યાસીએ રાજાજીને બતાવીને રાજાજીનાં મનને વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં ભ્રમ ઉપજાવ્યો છે. પણ એ રાજાને શાસ્ત્રનું શ્રવણ પઠન નહિ હોય તેથી રાજાજી શું જાણે કે મનુસ્મૃતિમાં વેદના ક્રીયા કાંડનું પ્રકરણ છે? અને વર્ણાશ્રમધર્મ થકી સર્વે જાતનો મોક્ષ કહેલો છે કે નથી કહ્યો? ઇત્યાદિ 'સર્વ વાતથી રાજાજી અજાણ હશે, તેથી સંન્યાસીની વાત ખરી માનીને સંન્યાસીએ લખી આપેલા પ્રશ્ન પ્રમાણે વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર એ પ્રશ્ન કરવાની આજ્ઞા આપી. તેનો ઉત્તર શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની ગાદીના ટીકેત શ્રીવલ્લભજી મહારાજના લાલજી શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીગોવિંદરાયજી મહારાજે વેદશાસ્ત્રનાં વચનસહિત ટુંકામાં લખી આપ્યા છે, તથા રામાનુજ મતના સઘળા આચાર્યોયે પણ લખી આપ્યા છે. પણ રાજાજી શાસ્ત્રમાં જાણીતા નહિ તેથી સંન્યાસીએ તેના ઉત્તર વિષે રાજાજીને ન જાણે કે શું સમજાવ્યું હશે? તેથી રાજાજીએ તે ઉત્તરની વાત કાન ઉપર ન લીધી, અને સંન્યાસીના કહ્યા પ્રમાણે તેઓને તથા બધી પ્રજાને ચાલવાનો આગ્રહ કીધો કે જેની મરજી એ પ્રમાણે ચાલવાની ન હોય તેણે ગામ મૂકી અન્યત્ર જવું. એ રીતે રાજાનો શાસ્ત્રવિરુદ્ધ આગ્રહ જોઇને શ્રીગોવિંદરાયજી મહારાજ પોતાના સેવ્ય શ્રીઠાકુરજી શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી તથા તેમની સાથે શ્રીમદનમોહનજી પણ શ્રીબીકાનેરના રાજાજીના આગ્રહથકી શ્રીબીકાનેર હાલમાં પધાર્યા છે. આ સમયમાં ધન્ય છે કે શ્રીગોવિંદરાયજી મહારાજને કે વેદધર્મનું રક્ષણ કરવા સારૂ લાખો રૂપીયાની પોતાની મીલકત છોડી દીધી, પણ પોતાનો વેદોક્તધર્મ ન છોડયો.

વૈષ્ણવ ધર્મ વેદમાં સ્મૃતિયોમાં ગીતાજી તથા ભાગવતાદિ શાસ્ત્રોમાં પ્રસિદ્ધ રીતે વિસ્તારથી કહેલો છે, અને બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય શૂદ્ર અને ચાંડાલ ઇત્યાદિક સર્વે જાત વાળાનો મોક્ષ એજ ધર્મથી કહેલ છે. વર્ણાશ્રમધર્મથી મનુસ્મૃતિમાં અને વેદાદિ સર્વ શાસ્ત્રમાં એક બ્રાહ્મણદેહવાળા સંન્યાસીને અનંત જન્મે કરીને મોક્ષ કહ્યો છે. બીજી કોઇ જાતને એ વર્ણાશ્રમધર્મથકી મોક્ષ કહ્યો નથી. તેમ વર્ણાશ્રમના ધર્મ ફક્ત એક સત્યયુગમાંજ 'સહુથી બની શકયા. ત્રેતાયુગથી એ ધર્મનો લોપ થવા લાગ્યો. એ રીતે ભારતાદિકના ઇતિહાસોમાં કહેલું છે. અને ત્રેતાજુગમાં એ ધર્મ કોઇથી ન બની શકયા તો કલિજુગમાં કયાંથી બની શકે? કદાચ કોઇએક પાળે તો તેને એ ધર્મથી મોક્ષ તો શાસ્ત્રમાં કહેલોજ

નથી. પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ કહી છે અને તે લોકથી પુણ્ય ક્ષીણ થતાં તેનો પાછો જન્મ થાય છે. એ રીતે સર્વ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. તે છતાં સંન્યાસીએ એ ધર્મને પ્રશ્નમાં મોક્ષકર્તા બતાવ્યો છે, એ કેટલી વિરુદ્ધતા વેદશાસ્ત્રથી બતાવી છે? અને વેદશાસ્ત્રમાં શિવજીનું પ્રાકટ્ય ભગવાનથી બતાવેલું છે અને શિવજીની ગણના ભગવાનના ભક્તોમાં કરેલી છે. શિવજીના સ્વામી જે ભગવાન, તેને મૂકીને એકલા શિવજીની ઉપાસના કરવી શ્રેષ્ઠ છે એમ સંન્યાસી બતાવે છે. એ વાર્તા પણ વેદશાસ્ત્રથી કેટલી વિરુદ્ધ છે? એ સર્વે શાસ્ત્રની વાત જ્યારે રાજાજી સાંભળશે ત્યારે એને પોતાને વૈષ્ણવ માર્ગની ખબર પડશે કે વૈષ્ણવ માર્ગમાં અને સંન્યાસીના બતાવેલા માર્ગમાં કેટલો તફાવત છે? સંન્યાસીના પ્રશ્નના ઉત્તર અમે વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણના શ્લોકસહિત લખીને આપ્યા છે. તેનો અર્થ વ્રજભાષામાં લખેલો છે. કદાચ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર સંસ્કૃતમાં લખત તો રાજાજી વગેરે બીજા રાજાઓ પોતે વાંચીને સમજી શકત નહિ અને સંન્યાસી રાજાજીને તેનો ઉત્તર ચાહે તેમ સમજાવી દેત, અને સંસ્કૃત ગ્રંથ સારા વિદ્વાન્ પંડિતની સહાયતા વગર કોઈ પુરુષથી સમજાઈ શકત નહિ. એટલા સારૂ રાજવંશી પુરુષોને સમજવા સારૂ વ્રજભાષામાં કરેલો છે. અને ગુજરાતી ભાષા જાણનારા પુરુષોને સારૂ ગુજરાતીમાં કરીને છપાવેલો છે. એ સંન્યાસીએ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ પ્રશ્ન કર્યો તેથી એના મતમાં અમને સંદેહ ઉત્પન્ન થયો, તેથી પ્રશ્નના ઉત્તર લખ્યા પછી એના મત ઉપર અમે થોડાએક પ્રશ્ન કરેલા છે. જો એનો મત વેદથી સાચો હશે તો અમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણ સહિત સર્વે રાજવંશીઓને સમજવા સારૂ ભાષામાં છપાવીને પ્રકટ કરશે અને વેદથી અપ્રમાણ હશે તો ટાઢો દઈ બેસી રહેશે! એજ એની પરીક્ષા સર્વ પુરુષોએ સમજી લેવી.

ગ્રંથપ્રસ્તાવના.–કર્મમાર્ગીયોનો બળાપો.

૧. કર્મમાર્ગી લોકો શાસ્ત્ર વિષે અજાણ એવા જે વૈષ્ણવો તેના મનને આ રીતે ભ્રમ ઉપજાવે છે કે વૈષ્ણવ માર્ગ વેદ તથા સ્મૃતિમાં નથી. એ માર્ગ કલિજુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવો ચલાવેલો છે. એ માર્ગ શૂદ્રાદિક હીન જાતવાળાને આચરણ કરવા યોગ્ય છે, બ્રાહ્મણોને આચરણ કરવા લાયક નથી. બ્રાહ્મણોને તો સૂર્ય પિતૃ તથા ગાયત્રી ઉપાસના વેદ તથા સ્મૃતિઓમાં કરવી કહી છે અને ભસ્મ તથા રુદ્રાક્ષની માલા ધારણ કરવા કહ્યાં છે, ઉભું તિલક તુલસીની માલા અને શંકચક્રાદિ મુદ્રા ધારણ કરવાનું બ્રાહ્મણને વેદમાં કહ્યું નથી, એ રીતે વેદ શાસ્ત્રથી ઉલટો સિદ્ધાંત વૈષ્ણવ માર્ગના અજાણ પુરુષોને બતાવીને સર્વ દેવતાના સ્વામી એવા જે ભગવાન તેમની ભક્તિ કરવા થકી વિમુખ કરે છે. એજ સિદ્ધાંત સંન્યાસીએ પ્રશ્નોમાં બતાવેલો છે.

કર્મમાર્ગ કોને માટે છે?

વેદશાસ્ત્રમાં કર્મમાર્ગને કનિષ્ઠ માર્ગમાં ગણેલો છે. ભગવત્જ્ઞાન અને ભક્તિમાર્ગને શ્રેષ્ઠ માર્ગ ગણેલા છે. એજ માર્ગ થકી સર્વે વર્ણનો મોક્ષ કહેલો છે. કર્મમાર્ગ થકી પિતૃસ્થાનની પ્રાપ્તિ કહી છે અને ત્યાંથી પુણ્ય ક્ષીણ થયે તે જીવનો

પૃથ્વીમાં જન્મ કહેલો છે. એ સર્વ વાત અમે પ્રશ્નના ઉત્તરમાં વેદના પ્રમાણસહિત બતાવી છે, પણ વેદાદિકમાં કર્મમાર્ગ કયા જીવો સારૂ કહ્યો છે ? તે કહીએ છીએ.

સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિના પ્રસંગમાં બ્રહ્માજીના અંગ થકી પહેલાં આસુરી, પછી દૈવી સૃષ્ટિ અકસ્માત નીકળી છે, એ રીતે બે પ્રકારના જીવ નીકળ્યા કહ્યા છે. તેમાં આસુરીને અવિદ્યાસહિત પાપી સંજ્ઞા આપી છે. માટે એ જીવોને પ્રથમ થકી ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર નથી, તેથી તેઓને પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ સૂર્ય ચંદ્ર પિતૃ એવા દેવતાઓની ઉપાસના વેદમાં બતાવી છે. દૈવી જીવોને ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર પ્રથમથી છે; તેઓને સારૂ ભગવાનનું સેવન સ્મરણ વેદમાં બતાવ્યું છે. પણ પૂર્વના કનિષ્ઠ સંસ્કાર થકી કર્મમાર્ગી લોકોને એ વાતની સમજણ પડતી નથી. માટે ભગવાનની ભક્તિ વેદમાં શ્રેષ્ઠ કહી છે, તો પણ તે મૂકીને સૂર્ય દેવતાની ભૂક્તિને શ્રેષ્ઠ જાણે છે. એવા જીવોને કર્મજડની સંજ્ઞા શાસ્ત્રમાં આપેલી છે.

શાસ્ત્રાર્થ એટલે શું ?

તેમાંએ વળી એ લોકોનો શાસ્ત્રાર્થ વેદના એક પ્રકરણને પકડીને છે, માટે વેદના બીજાં ઘણાં પ્રકરણોથી તે શાસ્ત્રાર્થ વિરુદ્ધ પડે છે. એવા શાસ્ત્રાર્થને અંધહસ્તિન્યાયની સંજ્ઞા શાસ્ત્રમાં આપેલી છે. અંધહસ્તિન્યાય એ કે:—કેટલાએક આંધળાઓએ હાથીના જુદા જુદા અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યો. જે અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યા તે તે અંગ જેવો હાથી છે એમ તે આંધળા કહેવા લાગ્યા, પણ બધા અંગ મળીને એક હાથી તે વાતને તેઓ જાણતા નથી માટે એક પક્ષ પકડીને વેદાર્થ કરવો તે અંધહસ્તિન્યાયવત્ કહેવાય છે. વેદનાં બધાં પ્રકરણો સાથે મેળવીને વેદનો અર્થ કરવો એવો અર્થ જે કરે તેને દેખતો પુરુષ શાસ્ત્રમાં કહેલો છે.

૨. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના માર્ગમાં વેદના સર્વપક્ષો સાથે મેળવીને શાસ્ત્રાર્થ કરવાની રીત છે. તેજ પ્રમાણે અમે પ્રશ્નોના ઉત્તર લખેલા છે, માટે આ પુસ્તકનો જે કોઈ વૈષ્ણવ પોતાના ઘરમાં સંગ્રહ કરશે તેના મનને અન્યમાર્ગી લોકો કદિ ભ્રમ ઉપજાવી શકશે નહિ. અને બીજા માર્ગનાં ફલનું તથા ભક્તિમાર્ગના ફલનું તેઓને જ્ઞાન થશે માટે આ પુસ્તક સર્વ વૈષ્ણવોએ જરૂર સંગ્રહ કરવા જેવું છે.

૩. આ પુસ્તક બીબાંથી છપાવેલું છે. પણ જેવા જોઈએ તેવા મોહટા અક્ષર ચઢેલા નથી. કાના માત્રાની ભૂલ થઈ હશે. તે સુજ્ઞ પુરુષોએ સંબંધ બેસાડીને વાંચવું. જ્યાં અર્થ ફેરફાર છાપેલો છે, તેનું શુદ્ધિપત્રક આ પુસ્તકમાં ટાંકેલું છે, ત્યાં જોવું, અને તે ઉપરથી પુસ્તકમાં જ્યાં ચૂક હોય ત્યાં શાહીથી ઠીક કરવું એજ વિનતિ.

૪. આ પુસ્તકમાં વેદના અર્થ લખ્યા છે, પણ વચન લખ્યાં નથી. કેમકે આ પુસ્તક શૂદ્રના વાચવામાં આવશે માટે એ વચનનો સંગ્રહ અમે એક જુદા પુસ્તકમાં કરેલો છે. તેની યોગ્યતા જેને હશે તે પત્ર લખશે તો તેને મોકલીશું.

૫. આ પુસ્તક સુરતના મોટા મંદિરમાં લાલાજી શ્રીરણછોડભટ્ટજી હસ્તક મલશે. જેની મરજી જે ગામ મંગાવવાની હશે તેણે પત્ર લખવો અને પોસ્ટ ખર્ચના બાર આના અને પુસ્તકનો ખરચ મોકલશે તો તેને કોઈ પણ દેશમાં મોકલીશું.

॥ श्री हरिः ॥

चासठ प्रश्नोना प्रत्युत्तरो.

મંગલાચરણ.

અથ ગ્રંથપ્રારંભે મંગલાચરણમાં પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીએ છીએ. શ્રીભાગવત એકાદશ સ્કંધના પાંચમા અધ્યાયમાં નવ યોગેશ્વરે શ્રીકૃષ્ણનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોકઃ—

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम् ॥
भृत्यार्तिहन् प्रणतपालभवाब्धिपोतं वंदे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१॥

હે કૃષ્ણ ! તમારાં ચરણકમલ ભક્તોને સદા ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે. જે ધ્યાન અગ્યારે ઇંદ્રિયોનાં જે વિઘ્ન છે, તેને તુરત દૂર કરે છે, અને મનવાંછિત ફળને આપે છે. તીર્થાદિકને પવિત્ર કરવાવાળાં છે. શિવબ્રહ્માદિક દેવતાઓને આશ્રયરૂપ છે, અને તે સર્વને નમન કરવા યોગ્ય છે. ભક્તોનાં સર્વ દુઃખ દૂર કરીને પાલન કરવાવાળાં છે. આ સંસારસમુદ્ર તરવાને નૌકારૂપ છે. એવાં જે તમારા ચરણકમલ તેને અમે નમન કરીએ છીએ. હવે આ વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી તેમને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીએ છીએ. ભાગવત દશમ સ્કંધ પૂર્વાર્ધમાં ગર્ભસ્તુતિ બ્રહ્માદિ દેવતાએ કરી છે, તે શ્લોકઃ—

स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ॥
भवत्पदांभोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥२॥

બ્રહ્માજી કહે છે હે શ્રીકૃષ્ણ ! આપની ભક્તિના પ્રતાપથી મોટા પુરુષો પૂર્વકાળમાં આ સંસારસમુદ્રને ગાયની ખુરી પ્રમાણે કરીને ચરણકમલના આશ્રયરૂપી નૌકાથી પાર ઉતરી ગયા, અને સર્વે પ્રાણી માત્રના હિતને સારૂ આશ્રયરૂપ નૌકા એટલે વહાણરૂપી સંપ્રદાય અહીં મૂકી ગયા. તે સંપ્રદાયરૂપી વહાણ થકી આપની કૃપાથી તેનો આશ્રય કરનારા પણ આ ભયાનક સમુદ્રની પાર ઉતરી જાય છે. એ રીતે વૈષ્ણવમાર્ગપ્રવર્તક આચાર્યોનું સ્વરૂપ કહ્યું છે. આ સંપ્રદાય વિના બીજા વર્ણાશ્રમાદિક સંપ્રદાયોના ધર્મવાળાઓને તે સંપ્રદાય થકી તેમની ગતિ બ્રહ્માજી હવે આ શ્લોકમાં કહે છે:—

येऽन्येऽरविंदाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतंत्यधोऽनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥३॥

હે ભગવાન્ ! તમારી ભક્તિના સંપ્રદાય વિનાનાં જે બીજાં જ્ઞાનવર્ણાશ્રમાદિ સાધન કરનારા જે પુરુષો છે, તે જ્ઞાનાદિક સાધન થકી પોતાને મુક્ત થયેલા માને છે, પણ તમારા ચરણકમલના આશ્રય વગર તે મુક્તિસ્થાન થકી પાછા પડે છે એટલે પાછા જન્મ પામે છે. ભક્તિ વગર તે કદી મુક્ત થતા નથી. એ રીતે

ષ્ણવ સંપ્રદાય વગર બીજાં સાધનોના સંપ્રદાયથી ભગવાનના સ્થાનની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ આ શ્લોકમાં બ્રહ્માજીએ વેદનો સિદ્ધાંત બતાવ્યો છે. તે થકી વૈષ્ણવસંપ્રદાયપ્રવર્તક આચાર્યોની કૃપાથી મોક્ષાદિક મળે છે. તેથી અમે તેમને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીએ છીએ. હવે ષષ્ઠસ્કંધ ભાગવતના ત્રીજા અધ્યાયમાં ધર્મરાજે પોતાના યમદૂતોને ધર્મનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોકઃ—

धर्मं तु साक्षात् भगवत्प्रणीतं न वै विदू ऋषयो नापि देवाः ॥
नसिद्धमुख्या असुरा मनुष्याः कुतश्च विद्याधरचारणादयः ? ॥४॥

ધર્મ જે છે તે સાક્ષાત્ ભગવાનનો કહેલો છે, તેથી ધર્મનું બરાબર સ્વરૂપ એક ભગવાનજ જાણે છે. દેવતા, તથા ઋષિઓ, મનુષ્યો, દૈત્યો, કોઈ જાણતા નથી. તો વિદ્યાધર ચારણ ક્યાંથી જાણે ? એ રીતે ધર્મનું સ્વરૂપ દેવતા તથા ઋષિઓને જાણવામાં આવતું નથી, એ રીતે કહ્યું છે. તો અમારા સરખા શાસ્ત્રોમાં વ્યુત્પન્ન નહિ તેને ક્યાંથી જાણવામાં આવે ? તથાપિ શ્રીગુરુના પ્રતાપ થકી યથાશ્રુત યથાબુદ્ધિ અમે કહીએ છીએ તેથી એમાં જે અજ્ઞાનપણાંથી કહેવાયું હોય તે અમારા સ્વામી શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર અને સુજ્ઞ ભક્તજન અમને ક્ષમા કરો.

દેવનકો દુર્બોધ વેદ અન્યકો સુબોધ કેસેં ? તથાપિ શ્રીગુરુયુગ્મ ચરણ હૃદય ધારિકેં, યથાશ્રુત યથામતિ પ્રશ્નોત્તરકોં ગતિ દીજે પતિ કૃષ્ણ વેત્તા વેદપારકે. યા મેં જહાં વ્યલીક હોય, ક્ષમા કીજે પ્રભુ સોય, હમ તો હેં અલ્પ જીવ, કહા જાને સારકે. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યપદાશ્રય નૌકા હમેં મહાભયાનક સિંધુ દીજીયે તારકે.

અથ પ્રશ્નો તથા ઉત્તરનો પ્રારંભ કરીએ છીએ.

પ્રશ્ન પહેલોઃ—સંપ્રદાય એટલે શું ?

૧ પ્રશ્ન—सम्प्रदायशब्दस्य कोर्थः ? સંપ્રદાય શબ્દનો શો અર્થ છે.

ઉત્તરઃ સંપ્રદાયશબ્દનો રૂઢ અર્થ તો એ છે કે સૃષ્ટિના આરંભ થકી આજ પર્યંત ચાલી આવેલી જે રીત, તે રીતનું નામ સંપ્રદાય છે. તે રીત-સૃષ્ટિને કહેનારા બ્રહ્માજી છે. તેમણે સૃષ્ટિના આરંભમાં વેદ કહેલો છે. તે વેદમાં વર્ણ આશ્રમના ધર્મ તથા કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ, યોગમાર્ગ એ પાંચ માર્ગની રીત કહી છે. તેમાંથી પોતપોતાની રુચિ પ્રમાણે તથા યોગ્યતા પ્રમાણે સૃષ્ટિના પુરુષોએ એક માર્ગનું ગ્રહણ કર્યું છે, એ રીતે એ પાંચ માર્ગની રીત પરંપરાથી આજ પર્યંત સૃષ્ટિમાં ચાલી આવે છે તેથી વેદમાં જેટલા માર્ગ બ્રહ્માજીએ કહ્યા છે, તેટલા સંપ્રદાય સૃષ્ટિમાં છે. એ રીતે સંપ્રદાયશબ્દને બહુપણું આવે છે. પણ બ્રહ્માજીને વેદના કહેનાર ભગવાન છે, તે એકાદશસ્કંધ ભાગવતમાં ભગવાને પોતે ઉદ્ધવજીને કહ્યું છે તે શ્લોકઃ—

कालेन नष्टा प्रलये वाणीयं वेदसंज्ञिता । मयादौ ब्रह्मणे प्रोक्ता
धर्मो यस्यां मदात्मकः । तेन प्रोक्ता च पुत्राय मनवे पूर्वजाय सा ॥

પ્રલયકાળમાં આ વેદવાણી અંતર્ધ્યાન થઇ હતી તે ઉત્પત્તિકાળમાં એ વેદવાણી મેં બ્રહ્માને કહી. કેમકે ધર્મ છે, તે મારો આત્મા છે. એ ધર્મથકી મારી પ્રાપ્તિ જીવોને થાય છે. એ વેદવાણી બ્રહ્માએ પોતાના મન્વાદિક પુત્રોને કહી છે, એ પુત્રો થકી એ વેદવાણી સર્વ સૃષ્ટિમાં પ્રવૃત્ત થઇ છે. એ રીતે વેદના કહેનારા ભગવાન્ છે, અને સર્વ ધર્મનું મૂળ પોતે છે. તેથી બધા સંપ્રદાયનું મૂલ ભગવાન છે. એ વાત આ શ્લોકમાં નિશ્ચય કરીને કહી છે. એ રીતે વેદમાં પણ કહ્યું છે. તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો જે સંપ્રદાય છે, તેજ સંપ્રદાય મુખ્ય છે. બીજા સંપ્રદાયો ગૌણ છે, તે ગૌણ એટલે ઉતરતા છે, એ રીતે સંપ્રદાય શબ્દના રૂઢ અર્થથી પણ એજ વાત સિદ્ધ થઈ.

વેદાદિમાં ઘણા સંપ્રદાયો શા માટે ?

એ ઠેકાણે કોઇ એવો પ્રશ્ન કરશે કે વેદમાં મુખ્ય અને ગૌણ એ રીતે બે સંપ્રદાય છે કે એક સંપ્રદાય છે ? જો બે સંપ્રદાય કહેશો તો તે બે સંપ્રદાય પ્રકટ થવાનું કારણ શું ? તે બતાવો.

એ પ્રશ્નનો ઉત્તર કે વેદમાં વર્ણાશ્રમધર્મનો માર્ગ અને કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ, યોગમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ; એ પાંચ માર્ગના સંપ્રદાયની રીત જુદી જુદી કહી છે, અને એ પાચે સંપ્રદાયનાં ફલ પણ જુદાં જુદાં વેદપુરાણોમાં કહેલાં છે. તેથી પાંચે સંપ્રદાય ભગવાને બ્રહ્માજી દ્વારા જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. કેમકે એ પાંચે સંપ્રદાયના ફલનું ગ્રહણ કરનારા જીવ તે પણ જુદી જુદી પ્રકારના બ્રહ્મા થકી પ્રકટ કરાવ્યા છે, તે વાત તૃતીય સ્કંધ ભાગવતના બારમા અધ્યાયમાં સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિના પ્રસંગમાં કહી છે તે શ્લોકઃ—

ससर्जाग्रेन्धतामिश्रमथ तामिश्रमादिकृत् ॥ महामोहंच मोहं च तमश्चाज्ञानवृत्तयः॥१॥
दृष्ट्वा पापीयसीं सृष्टिं नात्मानं बह्वमन्यत ॥ भगवद्ध्यानपूतेन मनसान्यां ततोसृजत् ॥२॥

ભિન્ન ભિન્ન સૃષ્ટિના પ્રકારો.

શોકાતુર, ક્રોધી, વિષયી, અહંકારી, અજ્ઞાની એ પાંચ પ્રકારની અવિદ્યાસહિત એવી પાપી સૃષ્ટિ બ્રહ્માએ પોતાના અંગમાંથી નીકળેલી જોઇ, પછી ભગવાનનું ધ્યાન કરીને પોતાના મનને પવિત્ર કરીને તે શુદ્ધ મન થકી ફરી સૃષ્ટિ કરતા થયા. તેમાંથી નારદાદિક ભગવાનના ભક્ત મહાજ્ઞાની જીવ નીકળ્યા. એ રીતે વિદ્યા સહિત દૈવી જીવ પ્રકટ થયા અને અવિદ્યાસહિત આસુરી જીવ પ્રકટ થયા. એ રીતે બે પ્રકારની સૃષ્ટિ બ્રહ્માથી નીકળી છે. એ બે પ્રકારની સૃષ્ટિની પ્રકૃતિમાં સાત્વિક, રાજસ, તામસ, એ ત્રણ ગુણ ભગવાને મૂકેલા છે. તેથી બે પ્રકારની સૃષ્ટિ ત્રણ ગુણની પ્રકૃતિથી છ પ્રકારની થઈ. એ રીતે સૃષ્ટિ બહુ પ્રકારની સજી છે. તેથી એ બધાની રુચિ જુદી જુદી પ્રકારની છે, અને સાધન કરવામાં અધિકાર જુદા જુદા છે. તેમ સર્વેને જુદાં જુદાં ફલ આપવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે, તેથી

સંપ્રદાય પણ બ્રહ્માજીથી જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા સંપ્રદાયનું કારણ સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિથી તથા તે સંપ્રદાયનાં સાધન તથા ફલ વેદશાસ્ત્રમાં જુદા કહેલાં છે તેથી સિદ્ધ થાય છે.

પણ સર્વ શાસ્ત્રમાં સહુથી ઉત્તમ ફલરૂપ ભગવાનની પ્રાપ્તિ બતાવી છે. એ ઉપરાંત બીજા સર્વે ફલ ગૌણ બતાવે છે, તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો સંપ્રદાય ઉત્તમ છે. એ વાત બધા શાસ્ત્રથી સિદ્ધ છે. આસુરી જીવ છે, તેનો અધિકાર પ્રથમથી ભગવાનની ભક્તિ કરવામાં નથી અને તે જીવોની પ્રીત પણ ધન, સ્ત્રી, પુત્ર, રાજ્ય, સ્વર્ગ ઇત્યાદિકમાં છે, તેથી વર્ણાશ્રમકર્મના દેવતા જે ચંદ્ર, અગ્નિ, સૂરજ, પિતૃ ઇત્યાદિકની ઉપાસના એમને બતાવી, તેથી વર્ણાશ્રમનાં કર્મનો સંપ્રદાય અવિદ્યાસહિત જીવોને સ્વર્ગાદિક સ્થાનની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ કહ્યો છે. એથી વેદમાં તથા મનુસ્મૃતિમાં મુક્તિ કહી નથી. એ વર્ણાશ્રમી સ્વર્ગમાંથી પુણ્ય ક્ષીણ થવાથી પૃથ્વીમાં જન્મ પામે છે. તેથી એ વર્ણાશ્રમી આ સંપ્રદાયથી કદી મુક્ત થતા નથી દૈવી સૃષ્ટિ જ્ઞાનસહિત સૃજી છે, તેથી એની રુચિ ભગવાન ઉપર છે, તથા મુક્ત થવા ઉપર છે, એને સારૂ જ્ઞાન તથા ભકિત તથા યોગ એ ત્રણ માર્ગ. સંપ્રદાય બ્રહ્માજીએ કહ્યા છે, પણ દૈવી જીવોમાં સાત્વિક, રાજસ, તામસ; એ ત્રણ ગુણના સ્વભાવવાળા જીવ સર્જ્યા છે, તેથી શુદ્ધ સાત્વિક ગુણવાળાઓની રુચિ એક ભગવાન ઉપર જ છે, તેને સારૂ ભગવાનની ભકિત કરવાનો સંપ્રદાય બ્રહ્માએ કહ્યો છે, અને સાત્વિક, રાજસ, મિશ્ર ગુણની પ્રકૃતિનાં જે દૈવી જીવ છે, તેને સંસાર થકી મુકત થવા ઉપરજ રુચિ છે તેમને સારૂ જ્ઞાન તથા યોગ એ માર્ગના સંપ્રદાય બ્રહ્માએ કહ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા પ્રકારના જીવોની રુચિ પ્રમાણે તેઓને ફલ મલવા સારૂ બધા સંપ્રદાય જુદા જુદા કહ્યાં છે.

એમાં કોઈ એવી આશંકા લાવશે કે દૈવી અને આસુરી બે પ્રકારની સૃષ્ટિ ભગવાને શા સારૂ કરી અને સર્વેને એવું જુદું જુદું ફળ આપવાની ઇચ્છા કેમ કરી? એવો પ્રશ્ન કોઈ કરશે તો તેનો ઉત્તર કહીએ છીએ. જો સર્વે જીવ જ્ઞાનીજ ઉત્પન્ન કરતા તો તે આ સૃષ્ટિમાંથી તરત બધાનો મોક્ષ થઇ જાત. ત્યારે બ્રહ્માંડમાંથી સૃષ્ટિ સહુ ખાલી પડી જાત. ત્યારે સૃષ્ટિ કરી, તે ન કર્યા જેવી થઇ જાત. તેથી અજ્ઞાની સૃષ્ટિ પણ કરી, એને ધીરે ધીરે મુક્ત કરવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે. તેમાં કારણ એ છે કે બ્રહ્માજીનું આયુષ જ્યાં સુધી છે, ત્યાં સુધી આ સૃષ્ટિની સ્થિતિ પૃથ્વી ઉપર રાખવી છે. તેથી સૃષ્ટિમાં બે ભેદ કર્યા. એ એનું કારણ વેદશાસ્ત્ર થકી સિદ્ધ થાય છે તેથી ભગવાનની ભક્તિના સંપ્રદાય વગર બીજા સંપ્રદાય સર્વે ગૌણ છે, અને તુચ્છ ફલ આપવાવાળા છે. તથા એ સર્વે સંપ્રદાયો સાઇના મનુષ્યોએ કેમ ચલાવ્યા છે તે વાત ભગવાને ઉદ્ધવજીને કહી છે, તે એકાદશસ્કંધના ચૌદમા અધ્યાય વિષે બતાવી છે.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૬.] માર્ગશીર્ષ, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩. [અંક ૯.

प्राचीन कीर्तन.

(संग्रहकर्ता:—भगवदीय वेलजीभाई नथुभाई.)

चलो री बहिनां गोरस बेचन क्यों एती करत अवार ॥ मोय ग्रह काज योंही पर्यो हे, लोटेंगी फिर करूं सवार ॥१॥ कोन पेंडो परही सूधो, नाहि मिले नटवार ॥ ताजको प्रभू तुरत दिखायो आयो कहि ठाडी रहे अवार ॥२॥ पद ॥१॥ एडी टेडी झुकत जात हँसत हँसत नवेली कहां ते आई ॥ में बरसानेकी लला, रानी कीरतजुकी जाई ॥१॥ काहुतें काहु बेर नांही सुनी हे। राजा वृखुभानजुकी नवाई ॥ ना जानु तुं कोहे शाम-रंगभीनो, रसीले नेन मन हरलाई ॥२॥ अरी मृगछोनीसी बाल में नंदको लाल, जसुदा जीवन सुखदाई ॥ तेरी निकाई नांही त्रिभुवनमें जगन्नाथ जिन जग ढूंढे सो रह्यो तेरे रूप लुभाई ॥३॥ पद ॥२॥ एसो निठुर दानी सबपें मागत दान ॥ पराई बेटी चलत पेंडे करत ताई अचगरी कहान ॥१॥ काहुकी न राखत कान । कहत तेरी नीकी उठान ॥ हित हरिवंश कहत लाडली, चवाई करत लगत तेरी मीठी बान ॥२॥ पद ॥३॥ में कहा चबाव करुं जानत सब व्रज ॥ तोही नंदको बहुत सयानो, खोलत पट छुवत उरज ॥१॥ मो सरिखी मिली नां कोउ देवेंगी सुधी समज ॥ मेहा तुं मत जाने काहुने काढी तेरी करज ॥२॥ पद ॥४॥ एसी चतुराई ठान काहेकुं निकसत गेल ॥ गेल कहा तोई बाबाकी हम निकसे कहुं पहेल पहेल ॥१॥ यह पेंडो सब चलिबेको काहेकुं तु रोकत छेले ॥ कही रसखान सूधो चल जैयो देहुं उरानो नदमहेल ॥२॥ पद ॥५॥ अरे गोपाल गोरसकी तोही झक परिरी ॥ देखत तरसत सरसत मनमन, रोमरोम प्रति अंग महिरी ॥१॥ दोर दोर मटुकी मुख मांडत कर नांही छांडत उरज अरिरी ॥ शामदास प्रभु तुंही रसीले तेरी लीत्र कछु लखी न परीरी ॥१॥ पद ॥६॥ आजु अचानक देख्यो लला ॥ खल खल चन्यो जात आलीरी, मेने कही जानी तेरी कला ॥१॥ करत सेन सुघर जाही पर मेरी देवेंगी जु बला ॥ कही द्वारकेश दिखाय अंगुठा छेले गोरस तुंही भला ॥२॥ पद ॥१॥ गारी खानेगो मेरी गँवार ॥ एसी कोन सिख ई तोही पकरत आय पराई नार ॥१॥ जा जा गोरसके पिवैया तु कोन हे रोकनहार ॥ एती बरजोरी ना कीजे मोहन, सिख दई तोही सतवार ॥२॥ सीज मटुकियां झटक पटकी बयो

वहो गोरस चली पनार ।। कहि रसखान आज मोई जान दे कल आउंगी हों मुकरार ।।३।। छोटी सी बठेन बेठो मुरार ।। में जान्यो हे कोउ पंथी निकट देख्यो नंदकुमार ।।१।। मेरे सिर गोरसकी मटुकी दृष्टि परि वाही चितवार ।। नेक आई कहि गोरस देरी पिछे चलि जा घूंघट मार ।।२।। शामदास प्रभु व्हे रंग रसिआ मटुकी लीनी सीस उतार ।।३।। पद ।।९।। सखिरी एसे कहोनां कहत कछु समजत ओर।। मेहुं निपट भोरो तुंही बरी भोरी सूधो देत ना करूं बरजोर।।१।। में गोरसकी बहुत रसिया याते मागत हाथ जोर ।। मुरारी दास मो मागी न मिलेरी, तो देहुं मटुकीयां अवार फोर ।।२।। पद ।।१०।।

श्रीवल्लभ एकरूप द्वै दरसें ।। गोवर्धन पर्वतके इत चांदनी उत अग बरसे ।।१।। इत तो राजत स्याम घटा जुरि जिमि दामिनी आकरसे ।। मंद मंद मुसक्यात मनोहर कर कपोल द्वै परसे ।।२।। यह सोभाकी उपमा नहीं नीरख दुहुन मन हरसे ।। माधोदास दास हितकारन भानदेवी व्रज सरसे ।।३।। (यह पद अडेलसूं भगवदीय माधवदासजीने लिख्यो है.)

वालवोध.

(લેખક:—દેસાઈ ભગવતીપ્રસાદ ગોવિંદલાલ.)

नत्वा हरिं सदानन्दं सर्वसिद्धांतसंग्रहम् ।
वालप्रवोधनार्थाय वदामि सुविनिश्चितम् ॥

સદા આનન્દરૂપ હરિને નમન કરીને, સારી રીતે વિશેષે :કરીને નિશ્ચય કરેલા સર્વ સિદ્ધાંતના સંગ્રહને, બાળકોને બોધ થાય તેને માટે કહું છું.

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પહેલવહેલાં સદાનન્દ હરિ ભગવાનને નમન કર્યું છે. આ શ્લોકમાં શંકા ઉપસ્થિત થાય કે “સિદ્ધાંતમુક્તાવલી” “જલભેદ” માં અનુક્રમે “नत्वा हरिं” “नमस्कृत्य हरिं” એમ કહેલ છે; પણ અત્ર “સદાનન્દ હરિં.” કહેવાનો આશય શો હશે? આ શંકાના નિવારણમાં આચાર્યચરણો કહે છે કે, આ બાલબોધ ગ્રંથ શ્રીમહાપ્રભુજીએ અન્યના પુરુષાર્થો સમજાવવાને માટે રચ્યો છે. તેથી પુષ્ટિમાર્ગીય જીવ તે અન્યના પુરુષાર્થો વાચતા પણ પોતાના જે “સદાનન્દ પ્રભુ” તેને ન ભૂલે તે માટે “સદાનન્દ હરિ” કહેલ છે. એટલે કે ભક્તિમાર્ગીય જીવનના તે પુરુષાર્થો નથી. અને તેની સાથે એટલો બધો સંબંધ પણ નથી. તેનો સંબંધ તો “સદાનન્દ” હરિ સાથેજ છે. એટલે તેણે સદાનન્દને ન ચૂકવા એજ શ્રીમહાપ્રભુજીનો આશય છે.

“સદાનન્દનો” સિદ્ધાંત પ્રમાણે એવો આશય છે કે સત્ એટલે સાચો અને આનન્દ એટલે ભજનાનન્દ બન્ને મળીને સાચો ભજનાનન્દ એમ થાય છે. તેમજ પ્રભુ આનન્દઘન છે. માયાવાદી વગેરે કહે છે કે પ્રભુ નિરાકાર છે. ત્યારે આપણા ભક્તિમાર્ગમાં આપણે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર પ્રભુને નિરાકાર તેમજ સાકાર પણ કહીએ છીએ. આમાં શંકા થશે કે કોઈ પ્રભુ સાકાર અને નિરાકાર બન્ને હોય? તેને માટે સિદ્ધાંત કહે છે કે પ્રભુને નિરાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે

પ્રભુને આપણા જેવો પ્રાકૃત આકાર નથી. તેમજ પ્રાકૃત મનુષ્યની અંદર આપણે જોઇ શકીએ છીએ કે; પહેલવહેલાં માણસ જન્મે છે પછી અસ્તિત્વમાં આવે છે. પછી વધે છે. યુવાન્ અવસ્થામાં આવે છે, ઘસાય છે, વૃદ્ધ થાય છે, અને પછી તેનો આકાર પણ લુપ્ત થઇ જાય છે. એ પ્રમાણે છ વિકારો પ્રાકૃત દેહમાં થાય છે. ત્યારે તેમાંનો એક પણ વિકાર અપ્રાકૃત પ્રભુની અંદર નથી. તેથીજ તેને નિરાકાર કહેલા છે.

ત્યાર પછી પ્રભુને સાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ આનન્દરૂપ છે. પ્રભુના દરેક અવયવો આનન્દરૂપ છે. ' તેને માટે શ્રુતિ સ્મૃતિ :કહે છે કે आनन्दनात्रकरपादमुखोदरादिः ॥ પ્રભુના શ્રીહસ્ત, ચરણ, અને મુખારવિન્દ વગેરે સર્વ આનન્દરૂપજ છે. તેમજ કહે છે કે ब्रह्मवादे आनन्द एव आकारसमर्पकः બ્રહ્મવાદમાં આનન્દજ આકાર આપનાર છે. એ પ્રમાણે પ્રભુ આનન્દઘન છે. જેમ એક સાકરની પુતલી બનાવી હોય તો તેનો કયો ભાગ સાકર વિનાનો હોય ! તેજ પ્રેમાણે પ્રભુનો કયો ભાગ આનન્દ વિનાનો હોય ભલા ? તેમજ શ્રીમહાપ્રભુજીએ કૃષ્ણાશ્રય ગ્રંથમાં બધા શાસ્ત્રોનો સાર કાઢીને કહ્યું છે કે प्राकृताः सकला देवा गणितानन्दकं बृहत् पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात् कृष्ण एव गतिर्मम ॥ બધા દેવો પ્રાકૃત છે, અક્ષર બ્રહ્મ (પ્રભુનું ધામ) ગણિતાનન્દ છે. એટલે તેના આનન્દની ગણત્રી થઇ શકે એમ છે. હરિ તો પૂર્ણાનન્દ છે. તેથી કૃષ્ણજ મારી ગતિ હો. આમાં પ્રભુને પૂર્ણાનન્દ કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ અગણિતાનન્દ છે. તેના આનન્દની ગણત્રી થઇ :શકતીજ નથી તેને માટે ઉપનિષદ્માં બે ઠેકાણે એક મનુષ્યથી આરંભી અક્ષર બ્રહ્મ સુધી આનન્દની ગણત્રી કરેલ છે, તે આ પ્રમાણે છે'—એક માણસ યુવાન, સુંદર, પુષ્ટ, ચક્રવર્તી હોય તેના ઘરમાં પણ કોઇ પણ જાતની કમી ન હોય, કહોને કે બધે વાતે આનન્દી હોય, તો તેના આનન્દનો પારજ ન હોય. (૨) એ મનુષ્યના ૧૦૦) (સો) આનન્દ ભેળા મળીને મનુષ્ય ગન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ શ્રોત્રિયોનો આનન્દ થાય છે (૩) મનુષ્ય ગન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ શ્રોત્રિયોના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે દેવગન્ધર્વનો આનન્દ થાય છે. (૪) તેના ૧૦૦ આનન્દ ભેળા થાય ત્યારે પિતૃઓનો આનન્દ થાય છે. (૫) તેના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે અજાનજ દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૬) તેના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે કર્મદેવનો એક આનન્દ થાય છે. (૭) કર્મદેવના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા મળે ત્યારે દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૮) તેના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે ઇન્દ્રનો એક આનન્દ થાય છે. (૯) તેના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે બૃહસ્પતિનો એક આનન્દ થાય છે. (૧૦) બૃહસ્પતિના ૧૦૦ આનન્દ ભેગા થાય ત્યારે પ્રજાપતિનો એક આનન્દ થાય છે. પ્રજાપતિના ૧૦૦ આનન્દ જ્યારે મળે ત્યારે અક્ષર બ્રહ્મનો એક આનન્દ થાય છે. જ્યારે મનુષ્ય એ અક્ષર બ્રહ્મને પામી પછી અન્નમય પુરુષને પછી પ્રાણમયને, મનોમય અને પછી વિજ્ઞાનમયને પામે છે. અને પછી આનન્દમય પ્રભુને પામે છે. એ આનન્દમયની ગણત્રી થઇ શકતીજ નથી કારણ કે શ્રુતિ કહે છે કે; यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह મનસહિત વાણી ત્યાં પહોંચી શકતીજ નથી. એટલે મન અને વાણી ત્યાં પહોંચતાજ નથી. તેથી વેદમાં અક્ષરબ્રહ્મ પર્યંત આનન્દની ગણત્રી કર્યાં પછી નેતિ નેતિ કહે છે. હવે નીચે અન્નમય વગેરે કહ્યું તે શું તે જાણવું જોઇએ. અન્નમય એટલે જગત્ પ્રાણમય એટલે જીવ, મનોમય એટલે વેદનામાત્મક સૃષ્ટિ અને વિજ્ઞાનમય એટલે અક્ષર બ્રહ્મ અને આનન્દમય એટલે રસેશ શ્રીકૃષ્ણ रसो वै सः પ્રભુરસ રૂપ છે. અરે પ્રભુ એકલાજ રસરૂપ છે એટલુંજ નહિં પણ તેની દરેક લીલા પણ રસ (આનન્દ) રૂપ છે. આ ઉપરથી એવી એક શંકા થશે કે પ્રભુની દરેક લીલા કયાં રસરૂપ હતી ? અમુકજ રસરૂપ હતી એવી શંકા થશે.

કારણ કે શ્રીકૃષ્ણે પૂતના [(અવિદ્યા) નો નાથ કર્યો ધેનુક (દેહાધ્યાસ) નો નાશ કર્યો કાલીયનાગને નાથ્યા. કુબ્જા ઉપર પ્રસન્નતા દેખાડી. દ્વારકાની અંદર ગૃહસ્થાશ્રમ ધર્મ બાંધ્યો તેમજ નલકૂબર મણિગ્રીવ વગેરેનો ઉદ્ધાર કર્યો એ લીલાઓ આનન્દમય કર્યાં હતી ?

આને માટે શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધના પહેલા જ ચાર અધ્યાયો જે જન્મપ્રકરણના છે તે વાચવાથી એટલે તેનું રહસ્ય ઉપર ઉપરથી વાંચી જવાથી સમજાય તેમ નથી. પણ તેની ઉપર જે શ્રીમહાપ્રભુજીની સુબોધિનીજી વાંચવાથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાશે કે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર સાથે ચાર વ્યૂહોનું પ્રાકટ્ય હતું. સંકર્ષણ, પ્રદ્યુમ્ન, અનિરુદ્ધ અને વાસુદેવ આ ચાર વ્યૂહોને પ્રભુએ જુદી જુદી લીલા કરવા સાથે રાખ્યા હતા. જ્યાં કોઇને હણવાનું જેમકે પૂતના, બકાસુર ધેનુક, અઘાસુર વગેરેનો વધ કરવો એ સંકર્ષણ વ્યૂહનું કામ હતું. જ્યાં વ્યવહાર બતાવવો હોય જેમકે કુબ્જા તેમજ દ્વારકામા ગૃહસ્થાશ્રમી થવું હોય ત્યારે પ્રદ્યુમ્ન વ્યૂહથી તે કામ થાય છે જ્યા ધર્મરક્ષાનું કામ કરવું હોય જેમકે નલકુબર મણિગ્રીવ વગેરેનો જ્યારે ઉદ્ધાર કરવો હોય ત્યારે પ્રભુ અનિરુદ્ધ વ્યૂહથી કામ લેય છે અને જ્યારે મોક્ષ આપવાનું એટલે પૂતના વગેરેના વધ પછી તેમને મુક્તિ આપવાનું કામ વાસુદેવ વ્યૂહથી થયું છે. પણ સાક્ષાત લોકવેદાતીત પુરુષોત્તમનું કાર્ય તો જ્યા રસ પ્રકટ કરવો હોય જેમકે શુરુરાસમાં રસેશ શ્રી કૃષ્ણજ છે, આ પ્રમાણે પ્રભુ તેમજ તેમની લીલા આનન્દરૂપ છે. તેથી પણ શ્રીમહાપ્રભુજીએ આનન્દરૂપ હરિને નમન કર્યું છે.

આ પ્રમાણે ઘણે ઠેકાણે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પહેલ વહેલાં શ્રીબાલબોધ, શ્રીસિદ્ધાંતમુક્તાવલી, જલભેદ વગેરે ઠેકાણે નમનજ કર્યું છે. તેનું કારણ કહે છે કે લક્ષ્મીજી જેમનાં કલત્ર છે એવા પ્રભુને જીવ શું આપી શકવાનો હતો વારુ? તેમજ પ્રભુ જેટલા નમનથી સ્નેહયુક્ત થાય છે તેટલા બીજા કોઇ પણ સાધનથી નથી થતા. માટે પહેલવહેલા નમન કર્યું છે.

હવે આ શ્લોકમા કહ્યું છે કે “ बालप्रबोधनार्थाय ” આમા બાલક કોને ‘ કહેવા ? આમા બાલકો એને કહેવા કે જેને જે બાબતનું જ્ઞાન ન હોય તેને. જેમકે એક માણસને એક કલા આવડે છે અને તેજ કલા બીજા માણસને નથી આવડતી. આમાં જેને આવડે છે તે મોટો અને નથી આવડતી તે નહાનો કહેવાય. બીજું એક ૧૦ વર્ષનો બાલક છોકરો હોય તેને અમુક જાતનો ઉદ્યોગ આવડે છે અને તેજ ઉદ્યોગ (૫૦) પચાસ વર્ષના માણસને નથી આવડતો આમા પણ (૧૦) દશ વર્ષનાને મોટો કહેવો અને (૫૦) વર્ષનાને નાનો કહેવો એ આશય શ્રીમહાપ્રભુજીનો છે.

જુઓને આપણે બધા સિદ્ધાતના સારથી અજ્ઞાન છીએ તેથીજ આપણને ઉદ્દેશી શ્રીમહાપ્રભુએ બાલક કહેલ છે. ઉપરના લખાણમા મારી નાની બુદ્ધિ પ્રમાણે ઘણી ભૂલો હશે. તે વૈષ્ણવો સુધારીને વાચી મને ક્ષમા આપશે એજ વિનતિ કરી હું આ લખાણથી વિરમું છું.

जगत् ते मिथ्या होय ?

(લેખકઃ—રા. રા. હિંમતલાલ ભોગીલાલ શાહ, મુ. સાવલી.)

(ગતાંકથી ચાલુ.)

કૃષ્ણદાસ—ભાઇ ઘટ અને દેહનો તમે નાશ માનો છો, પણ તેવું નથી. વસ્તુતઃ આ દેહ તથા સઘળું જગત એ પ્રભુના સદંશમાંથી બનેલુ હોઇ બ્રહ્મકાર્ય હોવાથી સત્ય છે તેથી ઘટ અને દેહનો નાશ થતો નથી. પણ તે પોતપોતાના મૂળ કારણતત્ત્વમાં ભળી જાય છે. દેહમાં જીવાત્મા હોય ત્યાં સુધી હલનચલન સર્વ ક્રિયા થાય છે. આ દેહમાંથી જીવાત્મા જતાં દેહ પંચતત્ત્વમાં ભળે છે. અને ઘટ ભાંગી જતાં મૃત્તિકા રૂપ મૂળ તત્ત્વમાં ભળે છે. તેથી કંઇ પોતાનું અસલ તત્ત્વ કંઇ નાશ પામતુ નથી. એટલે જેમ મૃત્તિકાઓ ઘટ અને ઘટમા મૃત્તિકા રહેલી છે, તેવીજ રીતે આ જગતમાં બ્રહ્મ અને બ્રહ્મમાં જગત રહેલું છે. નામરૂપાદિ એ પણ સૃષ્ટિ કાર્યની અંદરજ છે.

હરિપ્રસાદ—બ્રહ્મ નિર્ગુણ અને નિર્ધર્મક છે તો પછી આ જગત તેનું કાર્ય કેમ ?

કૃષ્ણદાસ—નિર્ગુણ એટલે પ્રાકૃત ધર્મોથી રહિત શુદ્ધ આનંદમય બ્રહ્મ નિર્ધર્મક નથી. પણ બ્રહ્મ સર્વધર્મયુક્ત છે ને તે વિરુદ્ધધર્માશ્રય છે. બ્રહ્મ નિર્ધર્મક હોય તો જ્ઞાન શી રીતે સંભવે ? બ્રહ્મના તમામ ગુણો આનંદમય અને અલૌકિક હોઇ તે સગુણ અને સાકાર છે. તે મહાન્માં મહાન્ અને અણુમાં અણુ જેવું છે. હાથ નથી છતા વસ્તુ ગ્રહણ કરે છે અને પગ નથી છતાં દોડે છે. એવાં અનેક ગુણયુક્ત હોઇ બ્રહ્મ વિરુદ્ધધર્માશ્રય છે.

હરિપ્રસાદ—તમારા કહેવા મુજબ જગતનો કર્તા બ્રહ્મ છે એમ કદાચ માનીએ પણ જગત્ કાર્યરૂપે બહાર પડયા પછી પાછું કારણ રૂપમાં શી રીતે આવી શકે ? ઘટ જાણે માટીનો બનેલો હોવાથી તે ભાગી જતાં માટી રૂપ રહે છે, એ ઠીક છે, પણ આ જગત કાર્ય અસલ રૂપમાં કેવી રીતે જઇ શકે ! જેમ દૂધનું દહીં બન્યા પછી અસલ રૂપમાં જઇ શકતું નથી તેમ આના સંબંધમાં કેમ ન માનવું !

કૃષ્ણપ્રસાદ—દરેક વસ્તુના બે પરિણામ હોય છે, એક અવિકૃત અને બીજું વિકૃત પરિણામ. અવિકૃત એટલે મૂળ કારણજ સર્વ કાર્યરૂપ થાય છતાં પણ કારણમાં કોઇપણ પ્રકારનો વિકાર ન થાય કે ફેરફાર ન થાય અને અસલ સ્થિતિમા આવે તેને અવિકૃત પરિણામ કહે છે. અને વિકૃત એટલે તમો કહો છો તે પ્રમાણે કોઇ વસ્તુનો ફેરફાર થયા પછી કાર્ય મૂળ કારણમાં ન આવે તેને વિકૃત પરિણામ કહે છે. જેમ સુવર્ણના કડકામાંથી અનેક કુંડળ આભરણ બનાવ્યા છતાં તે કાર્ય મટી અસલ કારણમાં આવી શકે છે. તેવીજ રીતે આ જગત કાર્ય એ પોતાના અસલ કારણ બ્રહ્મમાં આવી શકતું હોવાથી કાર્ય કારણને બાધ આવતો નથી, કે જગત અને બ્રહ્મની સત્યતામાં કંઇ ન્યૂનતા આવતી નથી. આને અવિકૃત પરિણામ કહે છે. સુવર્ણમાં કુંડળ અને કુંડલમાં સુવર્ણ, પાણીમાં બરફ અને બરફમા પાણી, માટીમાં ઘટ અને ઘટમા મૃત્તિકા કાર્ય કારણરૂપે પ્રથમથી રહેલા છે. તેવીજ રીતે બ્રહ્મમાં જગત અને જગતમાં બ્રહ્મ કારણરૂપે રહેલું છે એટલે કાર્ય અને કારણ એક હોઇ તેને સમવાયિકારણ કહે છે.

હરિપ્રસાદ—મૃત્તિકા કારણ અને ઘટ કાર્ય એ બન્ને સમવાયિકારણ હોવા છતાં અને કુંભાર, ચક્ર, દંડ એ અંગભૂત કારણો હોઇ જેમ ઘટ બનાવવામાં તે નિમિત્તકારણ કર્તા (કુંભાર) ની જરૂર પડે છે તેમ જગત અને બ્રહ્મ સમવાયિકારણ માનીએ તો પણ તેને ઘટ માફક

જુદું નિમિત્ત કારણ હોવું જોઇએ ને તે નિમિત્ત કારણ એટલે કર્તા સિવાય જગત નવું કાર્ય બનવું અશક્ય છે.

કૃષ્ણપ્રસાદ—તમારૂં કહેવું ખરૂં છે, જેમ ઘટ કુંડલ આભ્રરણાદિક તેમ ઇતર કાર્ય બનવાને લૌકિક નિમિત્ત કારણ અને સમવાયિકારણ જુદાં હોય છે. એટલે કર્તા જુદો હોય છે. એ ખરૂં પણ બ્રહ્મ અને જગતના સંબંધમાં તેવું નથી, કારણ બ્રહ્મ એ અચિંત્ય અને અનંતશક્તિયુક્ત છે. તેથીજ તેના ગુણોનું વર્ણન કરતાં શ્રુતિ નેતિ, નેતિ બોલી અટકી જાય છે. કારણ બ્રહ્મ ઝીણું મચ્છર સમાન નાનામાં નાનું અને હાથી જેવું મોટામાં મોટું હોઇ અનેકગુણયુક્ત છે. એટલે બ્રહ્મની સ્વઇચ્છા થતા તે બની શકે છે. ઘટ કુંડલની માફક તેને નિમિત્ત કારણોની જરૂર નથી. પોતેજ નિમિત્ત કારણ (કર્તા) તેમ સમવાયિકારણ પણ પોતેજ છે એટલે જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે અભિન્નતા હોઇ જગતનું કાર્ય કારણ અને કર્તા પણ પોતેજ છે.

હરિપ્રસાદ—ઘટ અને મૃત્તિકાનો દાખલો આપી આપ જગન અને બ્રહ્મની અભિન્નતા બતાવો છો. પણ મારૂં માનવું માટીમાં બીજાં તત્ત્વો મળવાથી જેમ ઘટ ઉત્પન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે કુદરતી તત્ત્વો ભેગા મળવાથી જગત આપોઆપ ઉત્પન્ન થાય છે. એટલે જગત અનિર્વચનીય છે, એ ખરૂં, પણ તે મિથ્યા છે, ફક્ત બ્રહ્મ એક ખરૂં છે.

કૃષ્ણદાસ—જે વસ્તુ સત્ય હોય તેનો નાશ પણ ન થાય અને મિથ્યા માનતા હોય તો તેને અનિર્વચનીય શી રીતે કહી શકો ? આપ જગતને અનિર્વચનીય કહો છો તો તેની સત્યતાજ ઠરી. આપ બ્રહ્મને માનો છો અને જગત એ બ્રહ્મનું કાર્ય છે. બ્રહ્મ સત્ય વસ્તુમાંથી તે ઉત્પન્ન થયું છે. હવે જો તેને અસત્ય માનશો તો બ્રહ્મ પણ અસત્ય ઠરશે! માટે જગતને મિથ્યા કહી શકાય નહી. એ પ્રભુકૃત્ય હોઇ સત્ય છે અને જીવ ઉપાધિએ રચાએલો સંસાર મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગત અને સંસાર એકજ છે. તેને આપ જુદાં કેમ બતાવો છો ?

કૃષ્ણદાસ—અહીંજ તમે ભૂલતા લાગો છો. જગત અને સંસાર વચ્ચે મોટો ફાસ્લો છે. જગત એ બ્રહ્મકૃત્ય છે, અને સંસાર એ જીવે અવિદ્યારૂપી ઉપાધિથીજ રચેલો છે. તેને જગતની સત્યતા સાથે કંઇ સંબંધ ન હોઇ સંસાર જીવકૃત હોવાથી મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગતને બ્રહ્મકૃત કહો છો એ ઠીક પણ જ્યારે જગત અને જીવ એનું કૃત છે તો પછી જીવના જેવી ઉપાધિ એને કેમ ન લાગે? કારણ? કાર્ય કરનારજ ઉપાધિપાત્ર થાય પછી સંસાર જીવ કૃત કેમ કહો છો ?

કૃષ્ણદાસ—બ્રહ્મમાંથી જીવ, જગત ઉત્પન્ન થયું છે. (સદંશ ધર્મમાંથી જગત અને સતચિત ધર્મમાંથી જીવ) જીવમાં આનંદ તિરોહિત છે. જીવ અવિદ્યાએ કરી પોતાના સ્વરૂપની વિસ્મૃતિ પામી જવાથી અને દેહ તથા સંસારનેજ ખરો સમજી તેમાં ગુંથાયા કરે છે અને હું અને મારૂં આ વાસનાથી જન્મ–મરણરૂપ સંસાર થાય છે. જેમ સૂર્યપ્રકાશથી અંધકાર દૂર થઇ સર્વ વસ્તુ પ્રકટરૂપે દેખાય છે. તેમ જીવને પોતાના આત્મસ્વરૂપનું જ્ઞાન થતાં અવિદ્યાનો નાશ થાય છે ને પોતાના ખરા સ્વરૂપને જાણે છે. ત્યારે સંસાર માયા સૃષ્ટિનો આપોઆપ નાશ થાય છે. માયા જેવી ઉપાધિ બ્રહ્મને લાગે તો તેને સ્વતંત્રતા રહી ક્યાં ? એટલે આવું કંઇ બ્રહ્મના સંબંધમાં નથી. પોતે તો સ્વઆનંદી છે. જેમ કરોડીયો જાળ કાઢી તેમાં રમણ કરે છે. પણ તેમાં તે લપટાતો નથી. તેમ સંસાર માયા સાથે બ્રહ્મને કંઇ સંબંધ નથી. કારણ બ્રહ્મ આનંદસ્વરૂપ છે. પોતે સર્વ કરવાને સમર્થ છે. આ પ્રમાણે જગત કાર્ય અને સંસારમાં ભેદ હોઇ જગત સત્ય છે અને સંસાર એજ મિથ્યા છે.

હરિપ્રસાદ—ધારો કે જગત સત્ય છે પણ તેવું જગત કાર્ય કરવાનું બ્રહ્મને શું પ્રયોજન ? બ્રહ્મ તો સ્વઆનંદી છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—બ્રહ્મ પોતે સ્વઆનંદી હોવા છતાં પોતાને બહુરૂપ થઇ જગદ્રૂપ બનવાની ઇચ્છા થતાં, જીવ, જગત રૂપે થયા. આપણે એકલા બેસી રહીએ તે કરતાં પાંચ મનુષ્યો વચ્ચે બેસવાથી વધારે આનંદ લાગે છે. અને આપણું મન કેવું પ્રફુલ્લિત રહે છે ? તેનો તમો અનુભવ કરશો તો જરૂર આ રહસ્ય સમજાશે. બ્રહ્મ જો કે સ્વઆનંદી છે પણ પોતાને જીવો સાથે લીલા કરવાની તેમ પોતાનું માહાત્મ્ય જણાવવાની ઇચ્છા થતાં પોતાના ખીલોના રૂપી જીવ જગતને ઉત્પન્ન કરી તેમાં પોતે રમણ કરે છે. પોતાની આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા જગતને પ્રકટ કરે છે અને તિરોભાવશક્તિથી લય કરે છે. સુવર્ણનાં કડાં કુંડળ વગેરે અનેક આભરણ કરવામાં આવે છે છતાં તેને એકરૂપ કરતાં સુવર્ણરૂપ બને છે. ને તેથી કરી સુવર્ણ કારણ કે કુંડળકાર્યમાં કંઇ ન્યૂનતા આવતી નથી તેમ જગત કાર્યરૂપી થયાં છતાં બ્રહ્મને પોતાની સ્વતંત્રતા કે સત્યતામા કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી. જેમ કરોળીઓ પોતે જાળ કાઢી તેની રચના કરે છે અને તેની ઇચ્છા થતાં તે પોતે ગળી જાય છે. તેવીજ રીતે બ્રહ્મ પોતાની રમણ કરવાની ઇચ્છા થતા જીવ, જગતને ઉત્પન્ન કરે છે અને પાછું પોતાનામાં લય પણ કરે છે.

હરિપ્રસાદ—શું ત્યારે આ જગત બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—હા, જગત એ પ્રભુએ બનાવેલું ક્રીડાભાડ છે. પ્રભુને લીલા કરવાનું સ્થાન છે. અને તે પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. જેમ ઘટ બનાવનાર મૃત્તિકાનેજ લે છે, પટ બનાવનાર તંતુઓને ગ્રહણ કરે છે, દહીંની ઇચ્છા રાખનાર દૂધને મેળવે છે, કુંડળ બનાવનાર સુવર્ણ લે છે. એટલે સુવર્ણ મૃત્તિકા વિગેરે કારણમા ગુપ્ત રીતે કાર્ય અવસ્થા પહેલા કાર્ય વિદ્યમાનજ હોય છે, તે કર્તાનો વ્યવહાર થયા બાદ તુર્તજ કાર્યરૂપે સ્પષ્ટ જણાવા લાગે છે. તે પહેલા કારણમાં લીન હોય છે. જેમ લાકડામા અગ્નિ, તલમા તેલ, દુધમા દહી અને તેમા ઘૃત પ્રથમથીજ વિદ્યમાન હોવા છતાં કાર્યના અભાવે તેમાં ગુપ્ત વસ્તુ રહેલી છે. તેવીજ રીતે કારણ બ્રહ્મમાં કાર્યરૂપ જગત અવ્યાકૃત અવસ્થામા તિરોહિત હોય છે. તે બ્રહ્મની ઇચ્છા થતાં આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા કાર્યરૂપે જગત પ્રકટ કરે છે. એટલે આ સર્વ બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. વસ્તુતઃ જગતનો નાશ તથા મિથ્યા કહેવામા આવે છે તે મૂર્ખતા છે. પણ ખરી રીતે જગત એ ભગવત્કાર્ય હોવાથી બ્રહ્મથી અભિન્ન છે અને તે આવિર્ભાવતિરોભાવાત્મક હોવાથી જગત નિત્ય અને સત્ય છે.

ઉપસંહાર—એક બ્રહ્મજ સ્વેચ્છાથી નાના પ્રકારે જગદ્રૂપે થયું. અહીં ઊંચ નીચ થવામા પોતાની ઇચ્છાજ કારણ છે. આમાં ધર્મિરૂપે બ્રહ્મ આનંદમય, ઇચ્છારૂપ નિજ ધર્મથી પરિણામ પામે છે. કાળ એ ભગવાનની ચેષ્ટા છે અને એનાથી સમગ્ર વિશ્વ ચેષ્ટાને પામે છે. એ કાળથી વાયુ વાય છે, સૂર્ય તપે છે, મેઘ વરસે છે. જગત બ્રહ્મમાથી ઉત્પન્ન થયું છે અને જગતનું કારણ બ્રહ્મ છે. આથી જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે ભેદ છે. બ્રહ્મના સત, ચિત, આનંદ એ ધર્મો છે. એમાંથી સત્ ધર્મોનો આવિર્ભાવ થાય તેને જગત કહેવાય છે. બ્રહ્મના આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદૈવિક ત્રણ સ્વરૂપો છે તેમા જગત એ આધિભૌતિક રૂપ છે. આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને આધિદૈવિક સ્વરૂપ પરબ્રહ્મ છે, અક્ષરબ્રહ્મ પોતાનું ધામ છે અને તે અક્ષરબ્રહ્મ અનેક કર, ચરણ, મસ્તક, મુખ, નેત્રવાળું છે. એજ અક્ષરબ્રહ્મ આ જગદ્રૂપતાને પામે છે. તિરોભાવ થતાં જગતરૂપ ક્ષરબ્રહ્મ અક્ષરબ્રહ્મમા અને અક્ષરબ્રહ્મ પરબ્રહ્મ પૂર્ણાનંદ

સ્વરૂપમાં સાયુજ્ય પામે છે. શ્રીભગવાનના ધર્મિરૂપ, ધર્મરૂપ અને કાર્યરૂપ આ પ્રમાણે ત્રણ ઐચ્છિક સ્વરૂપ છે. તેમાં ધર્મિસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન પરબ્રહ્મ છે અને સત, ચિત્ અને આનંદ એ ધર્મરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને સદ્રૂપ આ સઘળું જગત ક્ષરબ્રહ્મ કહેવાય છે.

હરિપ્રસાદ—ભાઇ કૃષ્ણદાસ, આજે તમે મારા જીવનમાં નવો પ્રકાશ નાખ્યો ને આપના વિચાર મારા હૃદયમા દૃઢતા પામ્યાથી મારા હૃદયમાં કંઈ અનેરી આનંદલહેરો ઉઠી રહી છે. જયશ્રીકૃષ્ણ જયશ્રીકૃષ્ણ કહી બન્ને યુવકો છુટા પડે છે.

ટેક રાખો.

("પરણ્યા એટલે પ્યારા લાડી, ચાલો આપણે ઘેર રે." એ રાગ.)

હું રે તમને વિનવું મ્હારા, વ્હાલા શ્રીવ્રજનાથજી;
અપરાધી છઉં શ્રી વલ્લભનો, ભેટાડો શ્રી નાથજી. ૧
વલ્લભકુળના બાલક સઘળા, શ્રીવલ્લભનું રૂપજી;
અપરાધીને શરણે લઇને, આપે અદકી હુંફજી. ૨
આ ભારતમાં ભાવે પ્રગટયા, "વલ્લભ વિઠ્ઠલ". દેવજી;
વલ્લભ વિઠ્ઠલ શ્રીજી અમને, આપજ શરણે લેવજી, ૩
આ ભારતનાં ભાગ્યજ મ્હોટાં, ભેટે છે ભગવાનજી;
ભારત વિણુ કોઇ ભૂ નહીં એવી, જ્યહાં ખેલ્યા એ ન્હાનજી ૪
ધન્ય ધન્ય એ વ્રજની ભૂમિ, જયાં-ક્રીડે ઘનશ્યામજી;
ધન્ય ધન્ય ગોકુળના જન, બોલે રાધે શ્યામજી. ૫
શ્યામ સ્વરૂપે ધેન ચરાવી, જમનાજીને તીરજી;
કદમ વૃક્ષ પર આરૂઢ થઇને, ચોર્યા જેણે ચીરજી. ૬
રાધાજીની સાથે રમીયા, જ્યાં એ નૌતમ રાસજી
બે ગોપીની વચ્ચે પ્રગટી, પુરી મનની આશજી. ૭
જેવી આશા વ્રજવનિતાની, પુરી હે વ્રજનાથજી!
તેવી આશા ભકત જનોની, પુરો મ્હારા નાથજી. ૮
ભકતોને ભણકારા વાગે, આવ્યા શ્રીનંદલાલજી;
એક બીજાને કયારે કહેશે ? વ્હેલો જોવા ચાલજી. ૯
કૃષ્ણ કનૈયે કામણ કીધું, ખોલી દીધા કાનજી;
શરણે લઇને નિજ ભકતોને, આપી નવલી સાનજી. ૧૦
સુંદર વરથી સગપણ સાંધી, સોપી દીધો હાથજી;
જીવ દુષ્ટને પતિતજ દેખી, આપ્યો પ્રભુનો સાથજી. ૧૧
વિઠ્ઠલ વિનવે વારે વારે, વાણી વિરમે છેકજી;
વાણીથી પર શ્રી વનમાળી, 'રાખો અંતે ટેકજી. ૧૨

લેખકઃ—વિઠ્ઠલદાસ લાલદાસ રોહાવાળા.

પ્રકાશકઃ—નગીનદાસ મોતીલાલ ધાણાવાળાના જય શ્રી કૃષ્ણ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખક—રા. રા. રામલાલ ચુનીલાલ મોદી.)

ત્રણસો વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા શતકના છેલ્લા ચરણના આરંભમા એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. ગાધીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યકીય અને ભારતવ્યાપી હતો. જ્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મથુરાની આસપાસના વ્રજમંડળમા જ ફેલાયો હતો વળી એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક—એક જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના સ્વરૂપ હતો, જ્યારે આ રાજ્યકીય સત્યાગ્રહમા લગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતા પણ બંને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી જોવામા આવે છે. બંને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રબળ રાજ્યસત્તાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજ્યસત્તાના અને હાલની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમા ફેર છે હાલની રાજ્યસત્તા ગમે તેવા પણ કાયદાથી નિયંત્રિત છે અને તેને જગતના અનુકૂળ અને ઉત્તેજક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખવી પડે છે અત્યારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારના જેવા વિપુલ સાધનો છે, તેવા પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતા તે વખતે બાદશાહનો શબ્દ તે જ કાયદો ગણાતો અને તેને જગતના અભિપ્રાયની દરકાર નહોતી તેમા પણ એ સત્યાગ્રહ જહાગીર જેવા મમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. છતાં પણ સત્યાગ્રહના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુસાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો ગાધીજી કહે છે કે પ્રબળમા પ્રબળ સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિર્દોષ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે

આ સત્યાગ્રહની હકીકત ટૂંકામા આ પ્રમાણે છે ચિદ્રૂપ નામના સંન્યાસીના ઉપદેશથી જહાગીર બાદશાહે એવો હુકમ કર્યો હતો કે કોઈએ તુલસીની માળા પહેરવી નહિ તુલસીની માલા વૈષ્ણવ સંપ્રદાયોનુ આવશ્યક ચિહ્ન ગણાય છે એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયોને વિઘાતક હતો. પરન્તુ જહાગીરી હુકમની સામે કોણ થઈ શકે ! તે સમયે વ્રજમંડળમા શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના શુદ્ધાદ્વૈત અને શ્રીહિતહરિવંશજીના રાધાવલ્લભી સંપ્રદાયનું પ્રાબલ્ય હતું તેમના ઘણા અનુયાયીઓએ તુલસીમાલાનો ત્યાગ કર્યો, પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુળનાથજી—(સં. ૧૬૦૮–૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ જહાગીરના હુકમનો અમલ કરાવવા ચિદ્રૂપ ઉજ્જૈનથી મથુરામા આવીને રહ્યો હતો અને જહાગીરે તેને એ બાબતમા સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ઘણી ઘણી લાલચો અને ધમકીઓ આપી, પણ તેને વશ થયા નહિ. છેવટે પોતાના હુકમના અનાદર માટે જહાગીરે તેમને કાશ્મીર જેવા દૂર અને વિકટ માર્ગવાળા પ્રદેશમાં ચોમાસાની ઋતુમા બોલાવ્યા અને તેઓ સીત્તેર વર્ષની ઉમ્મર છતા પ્રવાસના અનેક કષ્ટો ભોગવી ત્યાં ગયા ત્યા પણ માળા ઉતારવાને તેમણે સાફ ના પાડી. એ ઉપરથી જહાગીરે તેમને ઘરબાર ત્યજવાનો હુકમ કર્યો તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને સોરમમા જઈ રહ્યા, પણ માળા ત્યજી નહિ પાછળથી જહાગીરને પોતાની ભૂલ સમજાઈ અને તેનું ચિદ્રૂપ પ્રત્યેનું માન ઘટી ગયુ, ત્યારે તેણે પોતાનો હુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમા આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ વ્યારાના રહેવાસી વૈષ્ણવ કવિ ગોપાળદાસે 'માલોદ્ધાર' એ નામના વ્રજમિશ્રિત ગુજરાતી ભાષાના વિસ્તૃત કાવ્યમા વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૯૯ મા રચાયું હતું[1] આ

---

[1] જુઓ "વેણુનાદ" માસિક, વર્ષ ૧, અં. ૧, પૃ. ૧૫૨.

કાવ્ય આખું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો ટુંકો સાર નડીઆદના સ્વ. લલ્લુભાઈ પારેખે સં ૧૯૬૪ મા પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઈક લાંબો સાર મોડાસાના શ્રી. મગનલાલ ગાંધીએ લખેલા શ્રીગોકુલનાથજીના જીવનચરિત્રમા આપેલો છે. મેં પણ એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઈ છે

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત ફારસી ગ્રંથોમા નોંધાયેલી જોવામા આવતી નથી, તેથી ઘણાને તેની ઐતિહાસિકતા વિષે શંકા ઉત્પન્ન થઈ છે. એ શંકાનું નિવારણ કરવું, એ આ લેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર વીશ વર્ષમા જ રચાયુ હતુ, અને શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામા પ્રવેશ પછી બે જ વરસમા રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દર્શને જ ઐતિહાસિક હોવામા શંકા ઉત્પન્ન થાય તેવુ નથી, છતા પણ તેને બારીકાઈથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશુ. આ ગ્રંથમા કેટલીક બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબૂલ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-ધાર્મિક કાવ્ય-છે એ વાત ભૂલવી જોઈએ નહિં છતા પણ એમાની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતા જે મને સત્ય જણાઈ છે, એમા એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે જે ઇતિહાસવિરોધી હોય [1]

કોઈ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામા આ ત્રણ બાબતો સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ મળે છે કે કેમ તે જોવુ જોઈએ —(૧) સ્થળો, (૨) મનુષ્યો અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ

સ્થળોઃ

આ કાવ્યમા શ્રીગોકુળનાથજીના કાશ્મીરના પ્રવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાના સ્થળો કાલ્પનિક નથી. કેટલાક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીના જહાંગીરના પ્રવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુશરૂના બળવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કાશ્મીરના પ્રથમ પ્રવાસે તે જાય છે એ પ્રવાસોમા કરેલા મુકામના જે નામ આપ્યા છે તે શ્રીગોકુળનાથજીના પ્રવાસના સ્થળ સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમા ગોકુળથી કાશ્મીરનું અંતર-શ્રીનગર સુધીનુ-૪૪૪ કોશ જણાવ્યુ છે જહાંગીર આગ્રાથી કાશ્મીરનું અંતર ૩૭૬ કોશ લખે છે. પરન્તુ આમા બે બાબતો વિચારવાની છે જહાંગીરે કાશ્મીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યુ છે, એટલે કાશ્મીરની હદથી શ્રીનગર સુધીનું ચાળીસેક કોશનું અંતર કાવ્યના અંતરમાથી બાદ કરવુ જોઈએ વળી શ્રીગોકુળનાથજી કાશ્મીર જવા નિકળ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામા ત્યાંના હાકેમ લશ્કરખાનને મળવા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૭ કોશનું અંતર પણ તેમાથી બાદ કરવું જોઈએ એ બે અંતર બાદ કરીશુ તો બન્ને આંકડા સરખા જ થશે.

કાશ્મીરના વર્ણનમા ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસબંધી કાવ્યમા આ પ્રમાણે લખ્યું છે —

“ ઉહાં વિદ્યા તો હે બહોત, પૈં નહિ કછુ આચાર,
બ્રાહ્મણ અરુ નામ મ્લેચ્છો તેસોઈ વિહવાર ”
(૬,૪૭૨)

આ સંબંધી જહાંગીર તુઝુકે જહાંગીરીમાં આ પ્રમાણે લખે છે:—

"Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, ks in Sanskrit language and read them."

—રોજર્સ અને બિવરિજકૃત અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૪૯ અને ૧૫૦.[1]

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલા મનુષ્યો પણ ઐતિ-સિક છે, તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના કુટુંબનાં માણસો અને સરદારોનાં નામ ફારસીગ્રંથોમાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા ઉપર હતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસનાં ાં લાગે છે. તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે ાં કે ખુશરૂ, ખુર્રમ નૂરજહાન, આસફખાન—તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય તિહાસનાં પુસ્તકોમાં જોવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉજ્જેનનો હાકેમ મહુમ્મદ તકી.

જહાંગીરે તેને સં. ૧૬૭૨ મા માંડું મોકલ્યો હતો (તુઝુક, ભા. ૧ પૃ. ૨૫૮) માંડું ળવાના સુબાનું મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉજ્જેન તેના તાબામા હતું.

(૨) આગ્રાનો સુબેદાર લશ્કરખાન.

સં. ૧૬૭૬ માં જ્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જવા નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બોલાવી ગ્રાનો હાકેમ નીમ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૮૬.)

(૩) ચિદ્રૂપનું અપમાન કરનાર નૂરજહાંનો બનેવી હાકેમ બેગ.

નૂરજહાંની બેન ખાદીજા બેગમને તે પરણ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુળનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંજાબના કોઇ ગામનો જાગીરદાર અને જહાંગીરનો ખીદમતગાર હતો. (તુ. ૨. પૃ. ૧૮૨).

(૫) શ્રીગોકુળનાથજીને સોરમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું આમંત્રણ આપનાર રાય રતન હાડો.

એ બુંદીના રાજા ભોજ હાડાનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર બુલંદરાયનો ઇલ્કાબ આપ્યો હતો. (તુ., ૧, પૃ. ૧૩૧).

(૬) જહાંગીરની મહેતારી[2] મરીઅમ ઝમાની.

અકબર બાદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજા ભગવાનદાસની બેન (તુ. ૨, પૃ. ૬૪).

(૭) રાયસંગ બુરટીઆની દીકરી અને જહાંગીરની બેગમ માનીબાઈ.

બિકાનેરના રાજા રાય કલ્યાણમલનો પુત્ર રાય રાયસિંહ એ બુરટીઓ કહેવાતો. (તુ. ૧,

---

[1] આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં તુઝુકે જહાંગીરી (સંક્ષિપ્ત તુઝુક)નો નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અનુવાદનું જ સૂચન સમજવું.

[2] રેવ. ડહ્યાભાઈ પારેખે મહેતારીનો અર્થ જનાનખાનાની [illegible] અમલદારણ એવો કર્યો છે (પૃ. ૧૮) એ ભૂલ છે. તેનો અર્થ મા થાય છે.

પૃ. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (તુ. ૧, પૃ. ૧૩૨) આ બેગમનું નામ ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, આ કાવ્ય તે નામ પૂરું પાડે છે.

(૮) જેના માથા ઉપર જહાંગીરે ચિદ્રૂપનો હાથ મુકાવ્યો હતો તે બુલાકી.[1]

જહાંગીરના પાટકુંવર ખુશરુનો પુત્ર, જેને અસફખાને જહાંગીરના મરણ બાદ થોડા દિવસ માટે દાવરબક્ષ નામથી બાદશાહ બનાવ્યો હતો, પણ પાછળથી શાહજહાંના ફરમાન પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ તુઝુકે જહાંગીરીમાં નથી,[2] પણ Peter Mundy ના પ્રવાસવૃત્તાન્તમાં (History of Jahangir by Beni Prased. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમા (પૃ. ૧૬૦) છે. कल्लोलમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાંને તેના કરાવેલા ખૂનની નોંધ તેમા છે. (૭. ૨૦).

પ્રસંગો.

સ્થળ અને મનુષ્યોના નામ કરતા, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિપાદનમાં પ્રસંગોની સત્યતા અને તેમનું કાલાનુસંધાન વધારે મહત્ત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ મા જહાગીર ગુજરાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિદ્રૂપને ઉજ્જેન આગળ એક ગુફામાં મળ્યો હતો હતો.

"એહેવે સંવત સોળ ચ્યાહોતેરે થઇ એક વાત,
જહાગીર નૃપ આગરેથી જાતો હુતો ગુજરાત.
× × × ×
અવંતી જઇ ઊતર્યો નૃપ જોવાને કરી ખાંત,
પૂછ્યું તે વળતુ તેહને 'ક્યાં રહે છે મહાંત?'
ગુફા માંહાં દેખાડીઓ ત્યાંહા ગયો તેણી વાર."

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાવ્યમાં જણાવેલાં વર્ષ અને માસ ઉત્તર હિંદની ગણના અનુસાર છે; એટલે સંવત ચૈત્રમાં બદલાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત્ વદમાં માસારંભ થાય છે. જહાગીર ઇ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેંબરની દશમી તારીખે નીકળી (તુ. ૧. પૃ. ૩૪૦) માંડું તથા ખંભાત થઇ ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદમાં ઇ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પોષ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાવ્યમા આપેલો સંવત બરોબર છે.[3]

---

[1] ૧. સ્વ. લલ્લુભાઈ પારેખ બુલાખ એટલે નાકની વાળી એ ઉપરથી બુલાખી એટલે નાકમાં વાળી પહેરનાર જહાગીરનો કોઇ મંત્રી એવો તર્ક કરે છે. (પૃ. ૧૮), પણ એ ઘટિત નથી, તેમ તેને માટે કોઇ આધાર પણ નથી.

[2] ૨. તુઝુકે જહાગીરના અનુવાદક રોજર્સ અને બિવરિજ તેની સૂચિમાં દાનીઆલની પુત્રીનું નામ બુલાકી હતું એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમા તેમણે એ નામ કાંસમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તર્ક હશે. તે વાત સત્ય હોય તો પણ ખુશરુના પુત્રનું નામ બુલાકી હતું એ ચોક્કસ છે, અને ગાદી વારસ તરીકે જ તેને ચિદ્રૂપ પાસે આશીર્વાદ અપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

[3] ૩. શ્રીગોકુળનાથજીનો ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ શા આધારે તે સમજાતું નથી. સ્વ. લલ્લુભાઇ સં. ૧૬૭૪ નું વર્ષ આપે છે અને મેં જોએલી હાથપ્રતમાં પણ એ જ વર્ષ છે. સંસ્કૃત कल्लोलમાં પણ ભૂલ ન થાય તેવા અક્ષરાનુક્રમમાં સં. ૧૬૭૪ નું જ વર્ષ સ્પષ્ટ રીતે છે.

४ ७ ६ १
कूपारमुनिरसेन्दुप्रमिते वर्षे (१६७४) जहांगिरो यवनानामधिपानां सार्वभौमो निजागमदद् । गुर्जरदेशे......क० ७, त० १).

ઉજ્જેન આગળની ગુફામાં જહાંગીરની ચિદ્રૂપ સાથે મુલાકાત થઇ હતી, એ ઐતિહાસિક બીના છે. તેનું વિસ્તૃત વર્ણન તુઝુક ભા. ૧ માં પૃ. ૩૫૫ થી ૩૫૯ સુધીમાં આપેલું છે. તુઝુકમાં નામ 'જદ્રૂપ' છે, એ ફારસી લિપિને લીધે હશે. માસિરૂલ ઉમરામાં અને ઇકબાલ નામામાં 'અચદ્રૂપ' નામ છે, એટલે મૂળ શુદ્ધ નામ 'ચિદ્રૂપ' હોવામાં શંકાને સ્થાન નથી.

(૨) જહાંગીર ગુજરાતથી ફાગણ માસમાં ફતેહપુર સીકરી થઇ, આગરે સં. ૧૬૭૫ માં પાછો આવ્યો હતો.

" સંવત સોળ પંચોતેર ગુજરાતથી જહાંગીર,
ફાગણે આવ્યો આગરે, ત્યારે મારગમાં મહાધીર.
શ્રીજી અ તે શીકરી લગી દેવાને આશીર્વાદ
પધાર્યો સાહામા ત્યાં, રાખવાને મર્જાદ."

જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૯ ની વસંત ઋતુમાં ગુજરાતથી પાછો આવ્યો હતો, પણ આગરામાં પ્લેગ હોવાથી સીકરીમાં થોડો વખત રહ્યો હતો. આ માટે જુઓ શ્રી, વેણીપ્રસાદના શબ્દો:—

" *Owing to the prevalance of plague at Agra, Jahangir passed* the spring of 1619 at Fatehpur Sikri and entered the metropolis in the middle of April " (p. 300)

ઇ. સ. ૧૬૧૯ ની વસન્ત ઋતુ, એટલે સં. ૧૬૭૫ નો ફાગણ માસ.

(૩) જહાંગીર કાશ્મીર જવાનો છે, એ વાત સાંભળીને ચિદ્રૂપ ઉજ્જેનથી નીકળી સં ૧૬૭૬ ના આસો સુદ દશમે મથુરા આવ્યો હતો.

"લીધું કોઇ એક દિવસ પછી કશ્મેરનું મુહૂર્ત,
તે સંન્યાસીએ સાંભળીને વિચારી મન મત;
'આગળ પેંડે જઇને હું રહું મથુરા માંહે,
દેશાધિપતિ શું નિર્ધાર કરવા ત્યાંહે."

× × × ×

પછે સંવત સોળસેં છોતરે આશ્વિન સુદિ દશમીય
ચિદ્રૂપ આવ્યો એણી ગમે સહુ દેશમા ભમીય."

જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૯ ના દશરાના દિવસે આગરેથી કાશ્મીર જવા નીકળ્યો હતો (તુ. ૨, પૃ. ૧૦૧), તેથી ઉત્તર હિંદની વર્ષગણના પ્રમાણે વિક્રમ સંવત ૧૬૭૬ હતો, એ સ્પષ્ટ છે. તેના ચિદ્રૂપની સાથેના મથુરાના મેળાપ માટે તુઝુક ભા. ૨, પૃ. ૧૦૪ થી ૧૦૭ જોવાં. એમાં એ મેળાપનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન છે.

(૪) મથુરામાં ચિદ્રૂપની સલાહથી જહાંગીરે ખુશરૂને નજરકેદમાંથી મુક્ત કર્યો હતો.

" સુલતાન ખુશરો બંધથે, છાડ્યો તખતિ ઇતકે કહે."

મથુરાથી ઉપડ્યા પછી વૃન્દાવન મુકામે ખુશરૂને છોડવાનો જહાંગીરે હુકમ કર્યો હતો, એ વાત ખરી છે. (તુ. ૨, પૃ. ૧૦૭). જહાંગીર પોતે તો ચિદ્રૂપના ઉપદેશની વાત લખતો નથી, તો પણ બીજા ગ્રંથનાં પ્રમાણો એનું સમર્થન કરે છે. Gladwinના ગ્રંથમાં એ વાત સ્પષ્ટ રૂપે જણાવી છે. ઇકબાલનામામાં લખ્યું છે કે ખુશરૂના સસરા ખાન આઝમના કહેવાથી ચિદ્રૂપે ખુશરૂને છોડાવ્યો હતો.

" The Iqbal-nama, 128, calls him Achadrup and says that Khan Azam *went privately to him and begged him to use his influence* with Jahangir for the release of Khusrau Achadrup spoke accordingly and Khusrau was released "

(Tuz. 11, p. 104, foot-note)

કલ્લોલમા પણ આ વાત નોંધેલી છે

(૫) શ્રીગોકુળનાથજી સં ૧૬૭૭ ના શ્રાવણ (ગુજરાતી આષાઢ) વદ ૯ ના રોજ કુળથી નીકળી કાશ્મીર ભાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા અને આસો વદ ૨ (શુ ાદ્રપદ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન હાગીર કાશ્મીરમા હતો કે નહિ ? તુઝુક ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઇ સ ૧૬૨૦ ના મિહિર હીનાની ૧૩ તારીખે કાશ્મીરમા દશરાનો તહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહીનાની ૨૭ મી ારીખે ત્યાંથી આગ્રા જવા નીકળ્યો હતો ઇ. સ ૧૬૨૦ એટલે ભાદરવા–આસોમા ચૈત્રી ંવત ૧૬૭૭ હતો

(૬) બાદશાહે કાશ્મીરથી પાછા આવતા ગોકુળમા મુકામ કર્યો હતો અને માળાનિષેધનો કમ રદ કર્યો હતો. આથી શ્રીગોકુળનાથજી સ ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (ગુ ફાગણ) વદ ૫ સોરમથી કળી વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા

" ચૈત્ર વદિ પચમી શુક્રવારે સૂર્ય ત્રણ ઘડી ચડતે
વિજય કર્યો સોરમથી મહા સુજશ નગારા ઘડતે

× × × × × ×

સવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી બુધવાર રે,
શ્રીગોકુલેશ ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચડેલ દિન ઘડી ચાર રે.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે ફાગણ સુદમા હુકમ રદ કર્યો હશે

જહાગીરે કાશ્મીરથી આવતા ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો તુઝકમા સ્પષ્ટ નિર્દેશ છે —

" Next day Gokul was the place of encampment '

(Tuz. II, p 196)

સમય માટે નીચેની હકીકત ધ્યાનમા લેવાની છે. કાશ્મીરથી આવ્યા પછી તુરત તેણે ઇ. સ. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજ્યાભિષેકનું સોળમુ વર્ષ ઉજવ્યું હતું તુ ૨, પૃ ૧૯૯) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મહા કે ફાગણમા (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમા તો એ સ્પષ્ટ છે

મૂળ પ્રસગ.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમા જણાવેલા સ્થળો, મનુષ્યો અને પ્રસંગો બધાજ ઐતિહાસિક રે છે, તેથી તે કાવ્ય કાલ્પનિક નથી તો પછી માળાનિષેધનો પ્રસગ ફારસી ગ્રથોમા કેમ નથી ? આના ઉત્તરમા જણાવવાનું કે જહાગીરના સમયના બધાજ ફારસી ઇતિહાસના ગ્રથોના અનુવાદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર તુઝુકે જહાગિરિનો અનુવાદજ પ્રકટ થયો છે તેથી બધાજ ગ્રંથોમા નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય આ પ્રસગ કાલ્પનિક ઉભો કરવાને કશુજ કારણ નથી કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુલનાથજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉભો કર્યો છે, પણ તેની અંદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જો એ બનાવટી હોત તો તેમા દાખલ કરવામા આવતજ નહિ શ્રીગોકુલનાથજી ચિદ્રૂપ પાસે વારવાર જાય, જહાગીરને

એવું લખી આપે કે ચિદ્રૂપ ધર્માનુસાર જે કહેશે તે કબૂલ કરીશું. તેમના મોટા ભાઈની આજ્ઞાનો અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી બીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ગૌરવ વધતું નથી. વળી, જો પ્રસંગ કાલ્પનિકજ ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુલનાથજી મ્લેચ્છ બાદશાહના તેડાવ્યા કાશ્મીર સુધી ગયા એમ શા માટે લખાય? પોતાના ચમત્કારી પ્રભાવથી બાદશાહ પાસે ગોકુળમાંજ હુકમ રદ કરાવ્યો એમ કેમ ન ગોઠવી શકાય? કાશ્મીરમાં જઈને પણ મૂળ હુકમ તદ્દન રદ ન કરાવ્યો અને દેશવટાનું ફરમાન મેળવ્યું એમાં પણ માનહાનિ જેવું નથી શું? આ વિગતો એવી છે કે જો પ્રસંગ મિથ્યાજ કલ્પવો હોત તો આવી વિગતો અંદર દાખલજ કરવામાં ન આવત. મૂળ પ્રસંગના સંબંધમાં એક પણ ચમત્કારિક વાત નથી, એજ તેની ઐતિહાસિકતાનો પુરાવો છે. કાશ્મીર પહોંચવામાં તેમને દોઢ માસ થયો હતો, એને બદલે એમજ લખત કે પોતાના પ્રભાવથી ૮ કલાકમાં પહોંચી ગયા. જો આવું કંઈક લખ્યું હોત તો તેને માટે શંકા લેવાને કારણ મળત.

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો માન્ય છે.

ફારસી ગ્રંથોમાં આ પ્રસંગનો ઉલ્લેખ ન હોય તેથી કરીને તેની ઐતિહાસિકતા ઘટતી નથી. એકપક્ષી પુરાવો પણ જો વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં ગ્રાહ્ય થઈ શકે છે. એનાં ઇતિહાસમાં ઘણાં દૃષ્ટાંતો છે. મહાન્ સિકંદરની હિંદની ચઢાઈ સંબંધી કોઈ પણ હિંદી લેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં પણ ગ્રીક લેખકોના પુરાવા ઉપરથી એ બીના ઐતિહાસિક ઠરી છે. મહમ્મદ ગજનવીની સોમનાથની સ્વારી સંબંધી કોઈ પણ બ્રાહ્મણ કે જૈન ગ્રંથમાં નિર્દેશ નથી, એથી એ બનાવની સત્યતા માટે સ્વ. મણિલાલ નભુભાઈએ એક વખતે શંકા ઉઠાવી હતી, પરંતુ એને કોઈ તરફથી અનુમોદન મળ્યું નથી ફારસી ગ્રંથોના પુરાવા ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમા આદર થયો છે. અલાઉદ્દા ખુનીને કરણનો પ્રધાન માધવ ગુજરાતમાં લાવ્યો હતો એ માટે મુસલમાન લેખકોએ કંઈ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મારણ્ય અને કાન્હડદે પ્રબંધ એ બ્રાહ્મણગ્રંથો ઉપરથી અને વિચારશ્રેણી અને તીર્થકલ્પ એ તાત્કાલીન જૈન ગ્રંથો ઉપરથી એ વાત સિદ્ધ થઈ ચૂકી છે. રજપુતાનાના ઇતિહાસમાં પણ એવી ઘણી બાબતો છે કે જે ફારસી ગ્રંથોમાં ખોટી રીતે નોંધાઈ છે. બધી બાબતો લખવાથી વિસ્તાર થાય તેમ છે, તેથી માત્ર અકબર અને જહાંગીર સંબંધી વાતોનોજ વિચાર કરીશું.

અબુલફઝલે અકબરનામામાં લખ્યું છે કે અકબરે મોકલેલો પોષાક સ્વીકારી પ્રતાપે અકબરની અધીનતા પ્રથમ સ્વીકારી હતી અને કુંવર અમરસિંહને અકબરના દરબારમાં મોકલ્યો હતો; પણ આ વાત પંડિત ગૌરીશંકર ઓઝાએ જૂઠી સાબીત કરી છે. નોરોઝના મીના બઝારની અનીતિ માટે કોઈ પણ ફારસી ગ્રંથમાં ઉલ્લેખ નથી, છતાં પણ બિકાનેરના રાય પૃથ્વીસિંહના રચેલા દુહાઓમાં તે સ્પષ્ટ છે. એથી કવિશ્રી નાનાલાલે એ વાત સાબીત માની છે.[1]

---

[1] 'અકબરનું પોતાનું એક વ્રજ ભાષાનું કવિત્ત મિશ્રબન્ધુવિનોદમાં આપ્યું છે. તેમાં એક રમણીનું ચિત્ર છે. તે રમણીને મીના બઝારમાંથી ભોળવીને ઉપાડી લાવેલી હોય એમ લાગે છે. એ પ્રમાણે તે ગ્રંથના સંપાદકોનું માનવું છે. એ કવિત્ત નીચે આપું છું.—

याहि अकबर बालकी बांह अचिंत गही चलि भीतर भौने।
सुन्दरि द्वारहि दीठि लगायकै भागिबेको श्रम पावत गौने॥
चौंक तहीं चहुँ ओर विलोकत संक सकोच रही मुख मौने।
यों छबि नैन छबीलीके छाजत मानों बिछोह परे मृग छौने॥

(भा. १, पृ. १२

અકબરના જૂદા જૂદા ધર્મો પ્રત્યેના વલણોની વિગતો ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, એ ધર્મોનાં લખાણોમાંથી જ મળી આવે છે. અકબરના વૈષ્ણવધર્મ પ્રત્યેના વલણની હકીકત પણ બાદશાહી ફરમાનોમાંથી મળે છે.[1]

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે તુઝુકમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના યુદ્ધની શરૂઆતમાં જ નમી પડયો હતો અને તેના પુત્ર વાઘસિંહને પોતાના દરબારમાં મોકલ્યો હતો. આ બીના પણ બીજાં પ્રમાણોના આધારે પંડિત ગૌરીશંકરે નાપાયાદાર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે બીજી ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તો મૌન સેવ્યું છે અગર તો તે પાહફેર લખી છે. તુઝુકનો તરજુમો કરનાર બિવરિજ લખે છે કે જહાંગીરે પોતાના બાપ સામેના બળવાની બાબતમા અને શેર અફઘાનના મૃત્યુના સંજોગોની હકીકતમાં ઢાંકપીછોડો કર્યો છે:—

"Jahangir has glossed over his rebelion against his father and the circumstances of Sher Afghan's death"—Preface to Tuzuk.

તેણે નૂરજહાનના પૂર્વપ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અક્ષર પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુશરૂની આખો ફોડાવી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું હતુ એ સંબંધી બીજાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો મળે છે, છતાં પણ જહાંગીરે તો તે બાબતમાં મૌન જ સેવ્યું છે. આપણે આગળ જોયું કે ચિદ્રૂપના કહેવાથી ખુશરૂને છોડયો હતો, છતાં પણ તેણે પોતાનું મહત્ત્વ ઘટે તેથી ચિદ્રૂપની દરમ્યાનગીરીનો સ્વીકાર કર્યો નથી. શ્રી. વેણીપ્રસાદ જહાંગીરના પ્રશંસક હોવા છતા લખે છે કે જે બાબતમા પોતાના ઉપર સહેજ પણ જવાબદારી આવે તેવો પણ પ્રસંગ જહાંગીરે નોંધ્યો નથી:—

---

[1] આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ ઝવેરીએ સંપાદિત કર્યાં છે, પણ હજી પ્રકટ થયા નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોઇ શકયો છું, તેમા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ગોકુળ અને જતીપુરા ગામની જમીન આપ્યાનું, (એ ગામો હાલ પણ તેમના વંશજોના તાબામા છે) તેની હદમાં શિકાર ન કરવાનું અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાનું, તેમને કોઇ પણ પ્રકારે સતામણી ન કરવાનું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને 'માર્ફત–આગા' એટલે ઇશ્વરી જ્ઞાનના જ્ઞાતા જણાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની માતા હમીદા બેગમના નામનું છે, જે મુગલ ઇતિહાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બ. કૃષ્ણલાલભાઇનું ધારવું છે. મધુસૂદનભટ્ટકૃત વશાવલિમાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ મા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી અને અકબરનો મેળાપ થયો હતો અને તેણે હાલનું ગોકુળ જે જગાએ છે એ જમીન આપી હતી. ત્યા કને ગામ વસાવી, શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી મથુરાથી આવી રહ્યા હતા. હાલ પણ એ નવા ગોકુળના નામે જ પ્રસિદ્ધ છે. કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરશાહ નાટકમા 'ગોકુળ ગુસાંઇજીને આપ્યું' એમ લખ્યું છે, પણ પાછળથી 'વ્રજ મજરાયને આપ્યું' એમ શુદ્ધિપત્રકમાં સુધાર્યું છે. તેમને જો આ હકીકતની ખબર હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

[2] આ ફરમાનોમાં જહાગીરનું મેળાપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ નથી, કેમકે જહાંગીરે મોઢાના હુકમો કર્યા હતા, લેખી ફરમાન એ સંબંધી કાઢયું ન હોતું, એમ કાવ્ય વાંચતાં જણાય છે.

"The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible."

(History of Jahangir, p. 336)

આના અપવાદરૂપે અબુલ્ફઝલના ખૂનનો પ્રસંગ ગણવો પડે.

સર ટોમસ રોની મુલાકાત.

પરન્તુ સૌથી વધારે અગત્યની બાબત તો સર ટોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઇગ્લાંડના રાજાના એલચી તરીકે હિંદુસ્તાનમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અજમેર મુકામે ઇ. સ. ૧૬૧૬ના જાનેવારીની ૧૦ મી તારીખે ભર દરબારમાં મળ્યો હતો. એટલું જ નહિ પણ તે અજમેરમાં નવેંબર સુધી રહ્યો હતો અને જહાંગીર ગુજરાત આવવા નીકળ્યો ત્યારે તેની છાવણીમાં છેક માંડુ સુધી સાથે હતો. છતાં પણ જહાંગીરે તુઝુકમાં એ સંબંધી ઇશારો સરખોએ કર્યો નથી. તો શું એ મુલાકાત કપોલકલ્પિત માનીશું! રો અને તેના સાથીદારોએ એ મુલાકાત સંબંધી એટલું તો વિગતવાર લખ્યું છે કે તે ઐતિહાસિક બીના તરીકે ઇતિહાસમાં સ્થાન પામી ચૂકી છે અને તે વિષે સહેજ પણ શંકા દર્શાવવાની કોઇએ હિંમત કરી નથી. આ સંબંધી જહાંગીરનું મૌન હોવા છતા પણ બીજા પક્ષના પુરાવાથી આ વાત ઇતિહાસસિદ્ધ માનવામાં આવે, તો માળાપ્રસગ સંબંધી જહાંગીરનું મૌન હોવા છતાં બીજા પ્રમાણોથી તે ઇતિહાસસિદ્ધ કેમ ન ગણાય, તે સમજણ પડતી નથી.

જહાંગીરના મૌનનો ખુલાસો.

સર ટોમસ રોની મુલાકાતનો જહાંગીરે ઉલ્લેખ ન કર્યો તેનં કારણ એવું છે કે એ મુલાકાત સફળ નહોતી થઇ. તેણે ઇસ્ટ ઇન્ડીઆ કંપની માટે જે વહેપારી લાભોની માગણી કરી હતી તે જહાંગીરે કબૂલ રાખી નહતી. આથી આ નિષ્ફળ મુલાકાતનો ઉલ્લેખ કરવો જહાંગીરે ઉચિત નહિ માન્યો હોય. એ પ્રમાણે માળાનિષેધનો હુકમ તેણે પાછળથી રદ કર્યો તેથી એ નિષ્ફળ હુકમની નોધ લેવાની જરૂર તેણે નહિ જોઇ હોય. પોતાનો હુકમ રદ કર્યો એમ જણાવતા તેને માનહાનિ પણ જણાઇ હોય. વળી, શ્રીગોકુળનાથજી પ્રત્યેનું તેનું વલણ પાછળથી બદલાયું અને ચિદ્રૂપની વાતો પોકળ જણાઇ, એ કારણથી પણ મૂળ વાત દાબી રાખવામાજ તેણે ડહાપણ જોયું હોય. નૂરજહાં અને આસફખાનનું વલણ શ્રીગોકુલનાથજી પ્રત્યે મૂળથી હતું તેથી તેમણે પણ એ પ્રસંગ તુઝુકમાં ન દાખલ કરવાને આગ્રહ કર્યો હોય. તુઝુક કંઇ રોજનિશિ જેવું પુસ્તક નથી, તેમાં પ્રત્યેક દિવસની હકીકત નોંધાઇ નથી. વચમાં દિવસોના દિવસો અને કોઇ વાર તો મહીનાના મહીના કોરા જણાય છે. અને જહાંગીર પોતે કંઇ રોજ ને રોજ લખતો નહિ. મૂળ હકીકતો તેના વાકાનવિશો (વૃત્તાન્તલેખકો) લખી રાખતા અને અવકાશ મળે ત્યારે એ સાંભળીને પછી પોતે લખતો. તે પ્રમાણે લખતાં એ હકીકત લખવી રહી ગઇ હોય અગર તો તેના વાકાનવિશો બલભદ્ર અને ગોવિંદદાસનું વલણ શ્રીગોકુલનાથજી તરફ હતું, તેથી તેમણે પણ હકીકત લખાવતાં એ બીના ગુપ્ત રાખી હોય. ગમે તે કારણ હોય, પણ જહાંગીરે માત્ર તે બીના ન લખી, એટલા જ ઉપરથી તેની અનૈતિહાસિકતા સાબીત થતી નથી.

વિશેષ પ્રમાણો.

હા, જો આ પ્રસંગ માટે બીજાં પ્રમાણો ન હોત તો તે વિષે શંકા લેવાને કારણ ગણાય ખરૂં. પણ બીજાં ઘણાં પ્રમાણો તે સંબંધી મળે છે તેનો વિચાર હવે કરીએ. આ પ્રમાણોના બે વિભાગ કરી શકાય છે—પરોક્ષ અને પ્રત્યક્ષ. પ્રથમ પરોક્ષ પ્રમાણો જોઇને પછી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો વિચારીશું.

પરોક્ષ પ્રમાણો.

આ પ્રસંગ સંબંધી તુઝુકની એક બે આડકતરી બાબતો ઉપરથી કંઈક પ્રકાશ મળે છે. તેમાંની એક એ બાબત છે કે ચિદ્રૂપનાં કેટલાંક કાર્યોથી જહાંગીરનું મન કાશ્મીર ગયા પછી ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું. આ વાતને એ બાબતથી ટેકો મળે છે કે કાશ્મીરથી આવતાં તે ચિદ્રૂપને મળવા જતો નથી. પ્રથમ જ્યારે જ્યારે તેના પ્રવાસમાં ચિદ્રૂપનો મુકામ આવતો ત્યારે ત્યારે તેને મળવા જતો. ગુજરાત આવતાં અને ત્યાંથી પાછા જતાં ઉજ્જેનમાં અને કાશ્મીર જતાં મથુરામાં તેની મુલાકાત લેવા જાય છે અને કાશ્મીરથી આવતાં ગોકુલમાં મુકામ કરે છે છતાં પણ મથુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો ? આ શું તેનું મન ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું, એમ નથી જણાવતું ? બીજું, ઇકબાલનામામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાઢુ હાકિમબેગે નિર્દય માર માર્યો હતોઃ—

"He was Cruelly beaten by Hakim Beg".

(Tuz. II, p. 104—foot-note).

જો ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો અભાવ થયો ન હોત તો હાકિમ બેગ આટલી બધી હિમ્મત કરે ખરો કે ? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કાશ્મીર જતાં મથુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમ બેગે ચિદ્રૂપની ગુફામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો.[1] એટલા નજીવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી ખુશરૂના કહેવાથી તેને સજા કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. ચિદ્રૂપે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતોઃ એ વાતનું વેર લેવાને જ કદાચ હાકિમ બેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે અભાવ થવાથી તેને માર્યો હશે, જો આ પ્રમાણે અભાવ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત ખોટી જણાતાં માલાનિષેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઇ આશ્ચર્ય નથી.

પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઇએઃ 'માલોદ્ધાર' કાવ્ય સંબંધી તો આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવલોકીશું.

૧. કલ્યાણ ભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાથજીના સેવકે श्रीगोकुलेशलीलारत्नाब्धि નામનું બહુ વિસ્તૃત સંસ્કૃત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાથજીનું ચરિત્ર વર્ણવેલું છે. એના कल्लोल નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક कल्लोलમાં तरंग નામના અધ્યાય છે. તેમાં कल्लोल ૭, ૮, ૧, માં માલાપ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ ભટ્ટની કૃપાથી क. ૭, ૮ મેં વાંચ્યા છે. જહાંગીર સાથેનો શ્રીગોકુળનાથજીનો કાશ્મીરની અંદર થએલો સંવાદ ત્રણ તરંગોમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં શાહજહાન ગાદીએ આવ્યાનો નિર્દેશ છે અને દામોદરના "પાખંડપ્રકાશ"માં કલ્યાણ ભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે, તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં થએલી એમ હું માનું છું.

૨. શિક્ષાપત્ર ગ્રંથથી જેઓ સંપ્રદાયમાં પ્રસિદ્ધ છે અને જેઓ શ્રીગોકુળનાથજીના ભત્રીજા હતા, તે આચાર્ય શ્રીહરિરાયજીએ શ્રીગોકુળનાથજીની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ માં શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છેઃ—

तातार्थैकपरः पराशयविदां वर्यः परानन्ददो माला येन सुरक्षिता निजमहायत्नेन कण्ठे सतां ।
धर्मो येन विवर्धितः पितृपदाचारप्रचारैः सदा स श्रीगोकुलनायकः करुणया भूयाद्दृशे सेविनाम् ॥

---

[1] માલોદ્ધારકાવ્યમાં આ બાબતમાં એમ લખ્યું છે કે હાકિમ બેગે દારૂ પીને હાથમાં દારૂનો પ્યાલો લેઇને ગુફામાં પેસવા પ્રયત્ન કર્યો હતો. આ વાત અતિશયોક્તિભરેલી જણાય છે; કલ્લોલની વાત માનવા લાયક છે.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગઇ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુદા જુદા ગામોમા લેવામા આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ તેમજ નિર્ણીત કરેલું પારિતોષિક નીચે મુજબ છે—

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામા આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા ને વિશિષ્ટ)

માર્ક મુજબ નંબર	પરીક્ષ્યનું નામ.	ગામ	ગુણાંક	ઈનામની રકમ.
	વિશિષ્ટ વર્ષ ૧ લું.			
૧	સરૈયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	સુવર્ણ પદક તથા પુસ્તકો મળી રૂ. ૫૦)
	ઉત્તમા પરીક્ષા.			
૧	ચીમનલાલ કીશોરદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૯	૧૦
૨	શાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૧	૮
૩	દેસાઇ નંદલાલ ત્રીકમલાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	વ્યાસ રતિલાલ પુરૂષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામશંકર જયેષ્ઠારામ	,,	૫૧	૫
૬	પંડ્યા દુર્ગાશંકર દામોદર	,,	૫૦	૫
૭	શા. બસીલાલ અમૃતલાલ	,,	૪૬	૫
	મધ્યમા પરીક્ષા.			
૧	રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રી	ઉમરેઠ	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૦	૬
૩	શેઠ હરિલાલ જેઠાલાલ	,,	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	હરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩
	પ્રવેશ.			
૧	પુરુષોત્તમ નાથારામ શાસ્ત્રી	પેટલાદ	૯૧	૧૦
૨	ઘનશ્યામ મણિલાલ શાહ	,,	૮૯	૬
૩	તારા બ્હેન ગિરિધરલાલ	,,	૮૪	૬
૪	લીલાવતી ,,	,,	૮૪	૬
૫	મદનલાલ ,,	,,	૮૩	૬
૬	હીરાલક્ષ્મી ગોરધનદાસ	,,	૮૨	૬
૭	યશોદાબ્હેન ચુનીલાલ	,,	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	,,	૭૭	૩
૯	કડકીયા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાડીલાલ ચુનીલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૬	૩

હાસિક કાવ્ય સં. ૧૭૧૮ મા રચેલું છે. તેમા પણ આ પ્રસંગનો ઉલ્લેખ હોવાનો સંભવ છે. આ કાવ્યની પ્રત મેં મેળવવા પ્રયત્ન કર્યો હતો, પણ મળી શકી નથી, તેથી તેનું પ્રમાણ આમા દાખલ કરી શક્યો નથી.[1]

ઘણાક ઐતિહાસિક પ્રસંગો માત્ર એકેક કાવ્યથી સ્થાપિત થઇ શક્યા છે, તો આટલા બધા પ્રમાણો હોવાથી માળાપ્રસંગ ઐતિહાસિક ગણવાને કોઇ પણ જાતની હરકત આવવી જોઇએ નહિ.

---

[1] આ મધુસૂદન ભટ્ટના પુત્ર રણછોડ ભટ્ટે કાંકરોલીના રાયસાગર ઉપરના નવ ચોકીમા પથ્થરો ઉપર કોતરેલું પચીસ સર્ગનું 'રાજપ્રશસ્તિ' નામનું મહાકાવ્ય રચેલુ છે. તેમા ઉદેપુરના રાજાઓનો ઇતિહાસ છે. એવડું લાંબુ શિલાકાવ્ય આખા જગતમા નથી.

શ્રીગોકુલેશજીનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર ચારસો પાનાંથી પણ વધારે કદનું રા. લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેસાઇએ છપાવેલુ, તેમને ત્યાંથી જ (ઠે૦ ૧૧૦, રીચીરોડ-અમદાવાદ) મળે છે.

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કીંમત ઘટાડીને અઢી આના કર્યા, ટપાલ ખર્ચ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઇ, ધોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજીનું એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૬ પદો, શ્રીદ્વારિકેશજીના એકસો પચીસ દૂહા, આ પ્રાચીન સાહિત્ય ઉપરાંત શ્રીગોકુલનાથજી, શ્રીરઘુનાથજી તેમજ **શ્રીચાચાગોપેશજી** એ ત્રણે મહાનુભાવીઓની સંસ્કૃત ટીકાઓનું **સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ સુંદર ચિત્રો.** આવું સાહિત્ય કદી બહાર પડ્યું નથી, ઉંચા કાગળો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તનોનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી પોઢાડવા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમાએ વર્ષાઋતુ શીતકાલ, ઉષ્ણકાલ, ઉત્સવોની પ્રણાલિકા સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા બારમાસી ઉત્સવના પદો. દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ. ધોળ પદો, નિત્યપાઠો.

બીજાં પુસ્તકોની જરૂરજ નહિ પડે. અક્ષરો મોટા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સંપ્રદાયમા પહેલોજ. અપ્રસિદ્ધ પદોનો તો ભંડાર છે. થોડાજ સમયમાં બહાર પડશે. નોછાવર હવે પછી. નામ નોંધાવો.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.
૧૭૪૮, રાજામહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગઇ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુદા જુદા ગામોમાં લેવામાં આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ તેમજ નિર્ણીત ઠરેલ પારિતોષિક નીચે મુજબ છે—

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામાં આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા ને વિશિષ્ટ)

માર્ક મુજબ નંબર	પરીક્ષ્યનું નામ.	ગામ.	ગુણાંક	ઇનામની રકમ.
	વિશિષ્ટ વર્ષ ૧ લું.			
૧	સરૈયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	સુવર્ણ પદક તથા પુસ્તકો મળી રૂ. ૫૦)
	ઉત્તમા પરીક્ષા.			
૧	ચીમનલાલ કીશોરદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૯	૧૦
૨	શાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૧	૮
૩	દેશાઇ નંદલાલ ત્રીકમલાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	વ્યાસ રતિલાલ પુરૂષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામશંકર જ્યેશરામ	,,	૫૧	૫
૬	પંડ્યા ડુંગરશંકર દામોદર	,,	૫૦	૫
૭	શા. બંસીલાલ અમૃતલાલ	,,	૪૬	૫
	મધ્યમા પરીક્ષા.			
૧	રમણલાલ જ્યેશારામ શાસ્ત્રી	ઉમરેઠ	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૦	૬
૩	શેઠ હરિલાલ જેઠાલાલ	,,	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	હરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩
	પ્રવેશ.			
૧	પુરૂષોત્તમ નાથારામ શાસ્ત્રી	પેટલાદ	૯૧	૧૦
૨	ઘનશ્યામ મણિલાલ શાહ	,,	૯૯	૬
૩	તારા બ્હેન ગિરિધરલાલ	,,	૮૪	૬
૪	લીલાવતી ,,	,,	૮૪	૬
૫	મદનલાલ ,,	,,	૮૩	૬
૬	હીરાલક્ષ્મી ગોરધનદાસ	,,	૮૨	૬
૭	યશોદાબ્હેન ચુનીલાલ	,,	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	,,	૭૭	૩
૯	ઠકીવા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાડીલાલ ચુનીલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૬	૩
૧૧	યશોદાબ્હેન મોતીરામ	,,	૭૩	૩

૧૨	ગાંધી ચંદુલાલ પ્રેમચંદ	ડાકોર	૭૩	૩
૧૩	પ્રભુલાલ મગનલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૧	૩
૧૪	શા. ઓચ્છવલાલ સોમચંદ	ડાકોર	૭૧	૩
૧૫	મહેતા વલ્લભદાસ ગુલાબચંદ	પાંડરવાડા	૭૧	૩
૧૬	સુરા મણીલાલ કોદરલાલ	વીરપુર	૭૧	૩
૧૭	દેસાઈ કાન્તીલાલ બાળકૃષ્ણ	”	૭૧	૩
૧૮	હૃષીકેશ જુગલભાઈ	પેટલાદ	૭૦	૨
૧૯	ગાંધી અમરચંદ ભોગીલાલ	ડાકોર	૬૮	૨
૨૦	ગૌરીનાથ મોતીરામ શુક્લ	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૧	રમણલાલ મોતીરામ પુરોહિત	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૨	યશોદા બેન ભાઈલાલ ગાંધી	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૩	દેશાઈ ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ	માગરોળ	૬૪	૨
૨૪	ગાંધી છબીલદાસ સામગાંમ	ડાકોર	૬૪	૨
૨૫	મોદી લલ્લુદાસ કુબેરદાસ	પાડરવાડા	૬૪	૨
૨૬	કડકીઆ મણીલાલ ચંદુલાલ	વીરપુર	૬૪	૨
૨૭	ગાંધી ચતુરલાલ મગનલાલ	વડોદરા	૬૨	૨
૨૮	કલાવતી બહેન ભાઈલાલ	પેટલાદ	૬૧	૨
૨૯	સરૈયા નગીનદાસ પુરુષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૬૧	૨
૩૦	ગાંધી મણીલાલ દલસુખભાઈ	ડાકોર	૬૧	૨
૩૧	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૬૧	૨
૩૨	શાંતિલાલ મનસુખલાલ દેસાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૩	દેસાઈ શાંતિલાલ મનસુખલાલ બીન ઘેલાદાસ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૪	કડકીઆ શાંતિલાલ લલ્લુભાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૫	સુરા ઓચ્છવલાલ મગનલાલ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૬	ગાંધી શંકરલાલ સાંકળચંદ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૭	શા. ગોવિંદલાલ, વ્રજભુખણદાસ	કાલોલ	૬૧	૨
૩૮	શા. મણીલાલ ચુનીલાલ	પાડરવાડા	૫૯	૨
૩૯	દેશાઈ રમણલાલ મનસુખલાલ	વીરપુર	૫૯	૨
૪૦	દેશાઈ અંબાલાલ રણછોડદાસ	વીરપુર	૫૯	૨
૪૧	કમલાબેન ભોગીલાલ	પેટલાદ	૫૮	૨
૪૨	મૂળશંકર નાગજી રાજગુરુ	માંગરોળ	૫૮	૨
૪૩	મહેતા ચંદુલાલ દલસુખભાઈ	ડાકોર	૫૮	૨
૪૪	શા. ગીરધરલાલ છોટાલાલ	દાહોદ	૫૭	૨
૪૫	શેઠ કંચનલાલ મગનલાલ	કાલોલ	૫૭	૨
૪૬	ચંદ્રકાન્તાબેન ગોવિંદલાલ	પેટલાદ	૫૬	૨
૪૭	શાન્તાબેન ચીમનલાલ શેઠ	કાલોલ	૫૬	૨
૪૮	ચોકસી અમરતલાલ ભોગીલાલ	જંબુસર	૫૫	૨
૪૯	શેઠ હરીલાલ જેઠાલાલ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૦	શાહ વલ્લભદાસ મગનલાલ	[illegible]	૫૫	૨

૫૧	જસોદાબેન મગનલાલ શેઠ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૨	દેસાઈ રમણલાલ લલ્લુભાઈ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૩	સુરા. ઓચ્છવલાલ જેઠાલાલ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૪	ગાંધી રમણલાલ પ્રેમચંદ	કલોલ	૫૫	૨
૫૫	હીંમતલાલ મણીલાલ શાહ	પેટલાદ	૫૨	૨
૫૬	ગાંધી લક્ષ્મીચંદ અમરચંદ	બાકોર	૫૨	૨
૫૭	ગાંધી પુનમચંદ અમરચંદ	બાકોર	૫૨	૨
૫૮	સરસ્વતીબેન છગનલાલ દેસાઈ	દાહોદ	૫૨	૨
૫૯	ગાંધી પુનમચંદ ગુલાબચંદ	બાકોર	૫૧	૨
૬૦	દેસાઈ કાંતિલાલ લલ્લુભાઈ	વીરપુર	૫૧	૨
૬૧	મધુવનદાસ ચુનીલાલ શાહ	હાલોલ	૫૧	૨
૬૨	દેસાઈ શાંતિલાલ લલ્લુભાઈ	વીરપુર	૫૧	૨
૬૩	ચંદનબેન મીઠાલાલ	દાહોદ	૪૮	૧
૬૪	શાહ ડાહ્યાલાલ હીરાલાલ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૫	શાહ રમણલાલ સાંકળચંદ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૬	પરીખ નટવરલાલ ભીખાભાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૭	દેસાઈ ગીરધરદાસ વિઠ્ઠલદાસ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૮	ચંદનબેન છગનલાલ દેસાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૯	શરદકાન્તા મણીલાલ	હાલોલ	૪૭	૧
૭૦	શેઠ સાકરલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૧	દેસાઈ પુરુષોત્તમદાસ શામળદાસ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૨	શાન્તાબેન જેઠાલાલ શાહ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૩	ગાંધી મણીલાલ પુનમચંદ	વીરપુર	૪૫	૧
૭૪	પરીખ શાંતિલાલ મનસુખરામ	હાલોલ	૪૫	૧
૭૫	સુતાર વલ્લભજી ગોવિંદજી	ધોરાજી	૪૫	૧
૭૬	રતીલાલ મગનલાલ	વડોદરા	૪૮	૧
૭૭	દેસાઈ છબીલદાસ ચંદુલાલ	વીરપુર	૪૩	૧
૭૮	શેઠ રતનલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૧	૧
૭૯	શાહ રણછોડદાસ મુળજીભાઈ	હાલોલ	૪૧	૧
૮૦	દરજી હરિદાસ દેવસી	ધોરાજી	૪૩	૧
૮૧	ગાંધી રમણલાલ છોટાલાલ	કલોલ	૪૧	૧
૮૨	લીલાવતી ચુનીલાલ	પેટલાદ	૪૦	૧
૮૩	મહેતા મગનલાલ પાનાચંદ	પાંડરવાડા	૩૯	૧
૮૪	શાહ ગોવિંદલાલ નારણદાસ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૫	શેઠ કૃષ્ણદાસ મણીલાલ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૬	હરજીવનદાસ ડાહ્યાભાઈ	ધારી	૩૮	૧
૮૭	મહેતા છબીલદાસ માણેકલાલ	બાકોર	૨૭	૧

૮૮	કાકડીઆ બાબુભાઇ લલ્લુભાઇ	વીરપુર	૩૭	૧
૮૯	સુરા હીરાલાલ કેશવલાલ	વીરપુર	૩૭	૧
૯૦	મંગલાગૌરી કાલીદાસ	કલોલ	૩૭	૧
૯૧	શાહ વલ્લભદાસ વિઠ્ઠલદાસ	દાહોદ	૩૫	૧
૯૨	શાહ પુરુષોત્તમદાસ રાયચંદ	ગોઝારા	૩૫	૧
૯૩	સરસ્વતીબેન છોટાલાલ	પેટલાદ	૩૪	૧
૯૪	બાલશંકર જશવંતરાય	વડોદરા	૩૪	૧
૯૫	શાહ રસિકલાલ સાકરલાલ	દાહોદ	૩૪	૧
૯૬	સુરા મણિલાલ મનસુખરામ	દાહોદ	૩૩	૧
૯૭	શેઠ ગોરધનદાસ હીંમતલાલ	હાલોલ	૩૩	૧
૯૮	શેઠ કંચનલાલ કેશવલાલ	હાલોલ	૩૩	૧
૯૯	પરિખ રસિકલાલ કુસુમલાલ	ઝાલોદ	૩૩	૧
૧૦૦	હરીલાલ નંદલાલ	ધારી	૩૩	૧
૧૦૧	ગાધી નંદલાલ પ્રેમચંદ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૨	ગાંધી અંબાલાલ મોહનલાલ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૩	ગાધી જમનાલાલ જુઠાલાલ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૪	જુઠાલાલ શામળદાસ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૫.	ગાધી મુળચંદ લલ્લુભાઇ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૬	ગાધી જયંતીલાલ મણીલાલ	પાડરવાડા	૩૩	૧

વિશિષ્ટ પરીક્ષાના પ્રથમ વર્ષમા વિદ્યાર્થી એક બેઠા છે ને તે પાસ થયા છે પરિણામ સો ટકા.

ઉત્તમા પરીક્ષામા ૮ વિદ્યાર્થી બેઠા છે તેમા ૭ પાસ થયા છે. પરિણામ ૮૭–૫ ટકા છે.

મધ્યમા પરીક્ષામા વિદ્યાર્થી ૭ બેઠા છે તેમાં ૬ પાસ થયા છે પરિણામ ૮૫–૫ ટકા છે.

પ્રવેશ પરીક્ષામા એકંદર વિદ્યાર્થી ૧૪૩ બેઠા જેમા ૧૦૬ વિદ્યાર્થી પાસ થયા છે પ્રમાણ ૭૪–૧ ટકા પાસ છે.

બધી પરીક્ષાઓમા વિદ્યાર્થી ૨૪૯ ની અરજીઓ આવેલી પરંતુ, તાવ વિગેરેની બીમારી તેમજ બીજી અડચણોને લીધે માત્ર ૧૫૯ વિદ્યાર્થીઓ પરીક્ષામાં બેસી શક્યા છે જેમા કુલ ૧૨૦ પાસ થયા છે.

ઉપર પ્રમાણે આ વર્ષ પારિતોષિક પરીક્ષાઓમા વૈષ્ણવ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે. હવે પછીના વર્ષોમા વધુ વિદ્યાર્થીઓ લાભ લેશે એવી આશા છે.

પરીક્ષકો—વેદાંતવિશારદ શાસ્ત્રી હરિશંકર ઓંકારજી, શાસ્ત્રી જયેષ્ઠારામજી, રા. રા. વિઠ્ઠલદાસ મોહનલાલ ગાધી બી. એ. એલ. એલ. બી., તથા રા. જયન્તીલાલ પરીખ હતા.

સૂચના:—બે રૂપીઆથી વધારે ઇનામવાળાઓ પોતાની પસંદગીનાં સાંપ્રદાયિક પુસ્તકો જ માંગશે તો પુરા પાડવામા આવશે ઇનામ રોકડ નહિ મળે. સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોના રૂપમાં અપાશે.

મંત્રીઓ પરીક્ષા સમિતિ,
શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા ઠે. ૧૧૦, ગાંધીરોડ–અમદાવાદ.

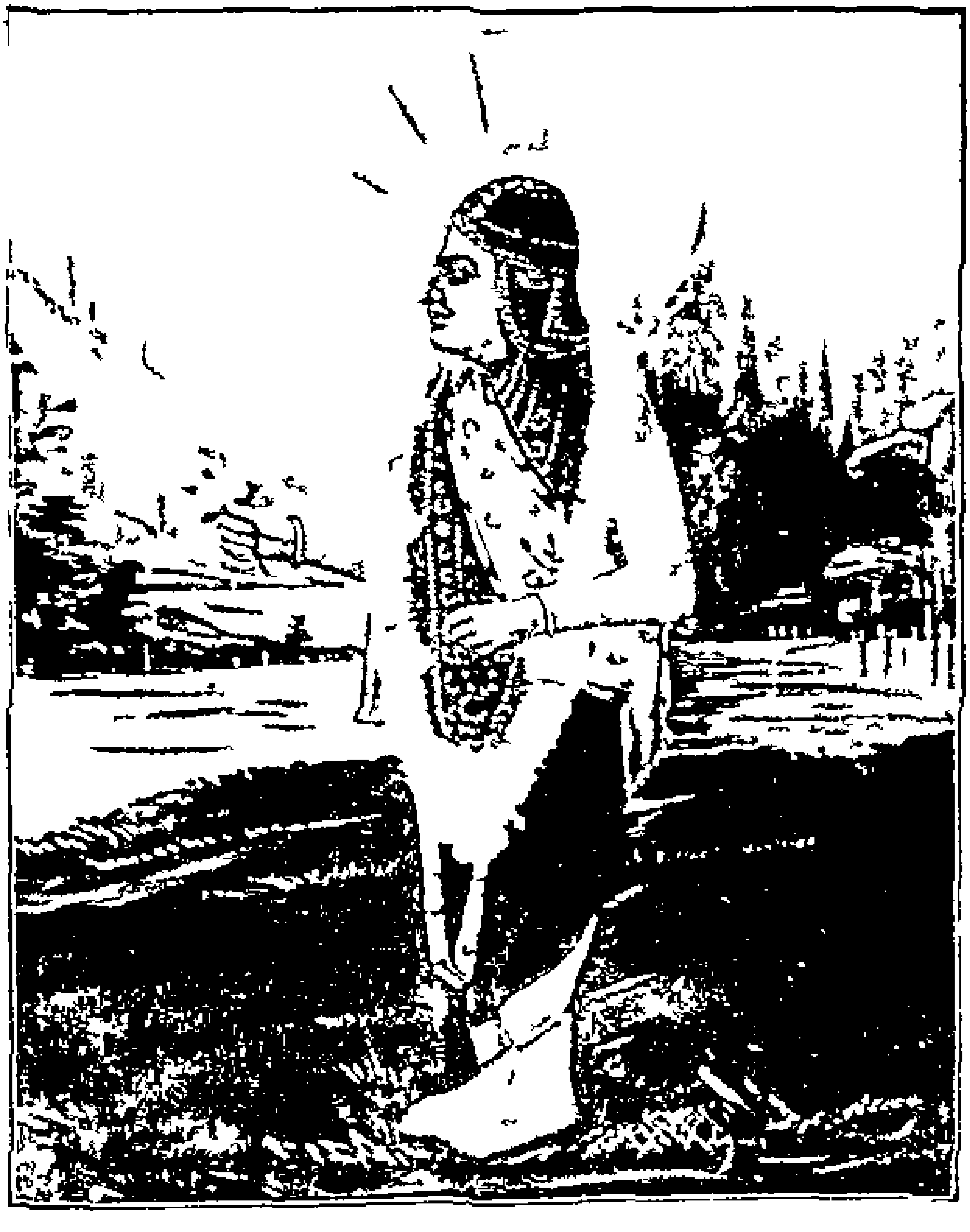

श्रीगोकुलनाथजीनुं प्राचीन चित्र.

(काश्मीरमा, तिलकमालाविजय समयनु)

Sahitya A P, Ahmedabad

ગોસ્વામી શ્રી : શ્રીમદનિરૂદ્ધાચાર્યજી.

(નડીઆદ)

(શુદ્ધાદ્વૈતકેસરી–શુદ્ધાદ્વૈતભૂષણ–શુદ્ધાદ્વૈતસુધાંશુ–શુદ્ધાદ્વૈતવાચસ્પતિ–
વેદાન્તસુધાકર વેદાન્તવિદ્યાલંકાર–પણ્ડિતમણ્ડલેશ્વર પણ્ડિતેન્દ્ર)

Saraiya A P Ahmedabad

॥ विजयते श्रीमदनमोहनाख्यो रसः ॥
॥ विजयते श्रीबालकृष्णप्रभुः ॥

પદવી-સમર્પણ-સમારંભ.

સાક્ષરજન્મભૂમિ નડિયાદમાં એક અદ્વિતીય વિદ્વત્સભા, શ્રીવલ્લભકુલના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વદ્રત્ન આચાર્યશ્રીનું મહાસન્માન, વિદ્વાનોનાં સંસ્કૃત ભાષામાં થયલાં પ્રવચનો; ગ્રેજ્યુએટ વર્ગે આચાર્યશ્રીની વિદ્વત્તાની કરેલી પ્રશંસા, "પણ્ડિતેન્દ્ર" અને 'પણ્ડિતમણ્ડલેશ્વર"ની મહાપદવીઓનું સુવર્ણચંદ્રક સાથે સમર્પણ અને સ્તુતિપત્રનું નિવેદન, આચાર્યશ્રીનો વિદ્વત્તાપૂર્ણ વિનયયુક્ત જવાબ.

સં. ૧૯૮૮ ના કાર્તિક વદ ૭ તા. ૨-૧૨-૩૧ નો દિવસ તો નડીઆદના વિદ્વત્સન્માનના ઇતિહાસમાં સુવર્ણાક્ષરે કોતરાઈ રહેશે, ચિરસ્મરણીય બનશે. હાલ ભૂતળ ઉપર બિરાજતા શ્રીવલ્લભકુલના સર્વ આચાર્યશ્રીઓમાં ગ્રન્થકાર-ભાષ્યકાર તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, નડીઆદ અને જામનગરના અલંકારરૂપ એક સમર્થ મહાન્ પંડિત આચાર્ય ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીને મહાગૌરવપૂર્ણ પદવીઓથી સન્માનવા માટે જે અપૂર્વ વિદ્વત્સભા મળી, જે મહાન્ સમારંભ થયો તે બડભાગી દિવસ કાર્તિક વદ ૭ મીનો જ છે. મહારાજશ્રીને આ કાંઇ નવીન પદવીઓ પ્રાપ્ત થઇ નથી. આનાથી પહેલાં પણ આપશ્રીને વિદ્વાનોએ અનેક ગૌરવપૂર્ણ ઇલ્કાબો અર્પણ કરેલા છે. એ સર્વ પદવીઓને આચાર્યશ્રીએ ઉપનિષદો ઉપર ભાષ્ય લખીને અલૌકિક ઓપ ચડાવ્યો છે, એમાં લેશ પણ અતિશયોક્તિ નથી. આપશ્રીએ વિશ્વધર્મરૂપ પુષ્ટિમાર્ગની આ એક વિજયપતાકા આર્યાવર્તમા ફરકાવી છે. આર્યસંસ્કૃતિના ભવ્ય, દિવ્ય મહામંદિર ઉપર દિવ્ય રત્નજડિત દેદીપ્યમાન કલશ ચડાવ્યો છે! આ યુગ ઘણા વર્ષો પછી જોવાનો વૈષ્ણવ વિદ્વાનોને એ યુગ પ્રત્યક્ષ કરવાનો-સુમંગલ અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. આજથી પચાશ વર્ષ પહેલાં તો આવા સ્મરણીય અવસરો ઘણી વાર પ્રાપ્ત થતા, પણ છેલ્લા પચાશ વર્ષમાં તો આ સુદિન હમણાં જ સાંપડયો છે.

આજે શ્રીવલ્લભકુલ ઉપર આક્ષેપાત્મક લેખો લખવા ઘણા અશિક્ષિત અથવા પાશ્ચાત્ય-શિક્ષાદીક્ષિત હૃદયો તલપાપડ હશે! પણ તે ંત હૃદયો આવા સૂર્યસમા પ્રકાશને પણ નિરખી નહિ શકે તો તેમનાં હતભાગ્યની સીમા જ ગણવી રહી! ઉક્ત આક્ષેપ-આક્રોશો માટે આજથી આઠ વર્ષ પહેલા ગુજરાતના ટાગોર સમા કવિસમ્રાટ શ્રીયુત નાનાલાલભાઇ કવિ એમ. એ. એ એક સચોટ અને પ્રબલ યુક્તિપૂર્ણ પ્રત્યુત્તરરૂપ દિલાસો આપ્યો હતો. આ રહ્યા તે સ્મરણીય શબ્દોઃ—

"વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં ધર્મફિલસુફીના ઊંડાં ઉમદાં વિચારણીય સાહિત્યશાસ્ત્ર નથી એવો ભ્રમ નવયુગના નવસંસ્કારીઓ-મ્હોટે ભાગે સેવતા આવ્યા છે; ને પોતાના અજ્ઞાનની મૂર્તિ

ધરીને એને જ્ઞાનમૂર્તિ માનીને પૂજતા આવ્યા છે. હવે તો ઘણાં પુસ્તકો પ્રસિદ્ધ થયાં છે છતાં પોતાના પ્રમાદને જ્ઞાનની પરિસીમા માનવાની આ નવયુગની ટેવ સુધરી છે? વૈષ્ણવી સાહિત્યના આપણા ટીકાકારો સૂર્ય ભણી આંખડલીયે ઉઘાડવાની ના પાડે છે, ને કહે છે કે સૂર્ય છે જ નહીં.

...એ સર્વ વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવકપરંપરા એક સાક્ષરકુલની સાહિત્યસેવાની જગતમાંની અજોડ જાહોજલાલી છે. પૃથ્વીના પુણ્યોદ્ધારને કાજે ભગીરથપ્રયત્ને ભાગીરથીજ એમણે વહેવડાવીછે.

...અને એ સૌએ એ ભગીરથ સાહિત્યસેવા કિયા યુગમાં કીધી છે! ભારતવર્ષમાં સ્વાસ્થ્ય હતું ત્યારે? સ્વાસ્થ્યમાં સાહિત્ય પાંગરે; ને મુગલવંશના મહારાજવીઓના સુવર્ણ સમયમાં ભારતમાં સ્વાસ્થ્ય હતું. પણ તે પહેલાં ને તે પછી, ઈ. સ. ૧૫૨૬ ની પૂર્વેને ઈ. સ. ૧૭૦૭ પછી ભારત એકચક્રશૂન્ય ને અસ્વસ્થ હતો; ત્હારે યે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા જમનાનાં જલની પેઠે, અવિરત ને અખંડવાહિની હતી. માત્ર ભારત વર્ષમાંજ નહીં, જગતના ઇતિહાસમાં એક સાક્ષરકુલ તરીકે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા અદ્વિતીય છે. યુરોપમાં અમેરિકામાં આફ્રિકામાં એશિયામાં–પૃથ્વીના પડ ઉપર કોઈ સ્થળે એક જ વંશના વંશજોએ વલ્લભકુલે કીધી છે એવી ને એટલીજ સાહિત્યસેવા કીધી હોય તો વિદ્વજ્જનને આનંદદાતા ઇતિહાસની એ નરકથા જાણીને શ્રીવલ્લભકુલ પણ આનંદશે."

ઉપરનું સત્ય ઓજસ્વિની ભાષામાં મૂકીને કવિશ્રીએ સંપ્રદાયને ન્યાય આપવામાં જે ઔદાર્ય બતાવ્યું છે તે ચિરસ્મરણીય જ છે. કવિવર નાનાલાલભાઈ તો પ્રાર્થનાસમાજના સભ્ય છે, સુધારક ગણાય છે, છતાં એમના નિર્મત્સર અને સત્યનાં ઓજસ્થી ભરેલા હૃદયમાં ઉક્ત સત્ય ઇતિહાસના શુદ્ધ પ્રતિબિંબો પડયાં છે અને તેમાંથી ઉપરનો સુંદર કર્ણપ્રિય મધુર ધ્વનિ ઉદ્ભવ્યો છે. આ સત્યનો સાક્ષાદનુભવ નડિયાદની એ યાદગાર સભામાં સાક્ષરોને થયો.

મહાન્ સમારંભ.

કાર્તિક વદ ૭ મીના રોજ નડિયાદની સુપ્રસિદ્ધ શ્રીસાતસ્વરૂપની હવેલીનો મધ્યચોક સુશોભિત રીતે શણગાર્યો હતો. આ પ્રસંગે નવો જ મંડપ બાંધવામાં આવ્યો હતો. બરોબર સાંજના પાચ વાગ્યાનો સભાનો સમય નિયત થયો હતો, પણ શ્રોતા ગણ તો અગાઉથી ઉપસ્થિત થતો હતો. મહારાજશ્રી પધારતાં સર્વ સભ્યોએ ઉભા થઈને વંદન કર્યાં હતાં, અને જયનાદથી સભાસ્થાન ગાજી ઉઠ્યુ હતું. સંસ્કૃત અને ગુજરાતી માનપત્રોમાં હસ્તાક્ષર કરનારા વ્યાકરણાચાર્ય આદિ પદવીધારી વિદ્વાન્ શાસ્ત્રીઓ, ગ્રેજ્યુએટો અને સદ્ગૃહસ્થો હાજર થયા હતા. એમ. એ. બી. એ. તથા એલ્એલ. બી. આદિ પદવીધારી ગ્રેજ્યુએટો તથા સરકારી સેવામાં નિયુક્ત થયલા વિદ્વાનો અને તે ઉપરાંત સુપ્રસિદ્ધ દેશભક્ત શ્રીયુત દાદુભાઈ દેસાઈ, કવિચિત્રકાર અને ભક્તરાજ ફુલચંદભાઇ, કોર્ટના મુનસફ સાહેબ અને સુપ્રસિદ્ધ વયોવૃદ્ધ સરદાર શ્રીયુત નાનાસાહેબ વગેરેની હાજરી ખાસ ધ્યાન ખેંચતી હતી.

પ્રારંભમા ભગવદીય કવિ પુરુષોત્તમદાસે મંગલં મંગલં એ સંસ્કૃત અષ્ટપદી સુંદર સ્વરથી કલ્યાણ રાગમાં ગાઈને મંગલાચરણ કર્યું હતું. તે પછી પુષ્ટિમાર્ગ ઉપર આક્ષેપ કરનાર આધુનિક વિદ્વાનો સાથે બાખડીને તેમને જ હાથે સંપ્રદાયને ઇન્સાફ અપાવવામાં ફતેહમંદ થયલા અને ખાસ તો "હિંદુસ્તાનના ઇતિહાસ" માંથી સંપ્રદાયને ઝાંખપ લગાડનારો ફકરો કમી કરાવીને, તેમના લેખક અને હાલ વિલાયતમાં રહેતા ઈ. માર્સડન સાહેબ પાસે માફી મંગાવનાર એક સાંપ્રદાયિક યોદ્ધાસમા ભગવદીય મોહનલાલ લલ્લુભાઈ શાહે (હાઈસ્કુલના અધ્યાપક) શ્રીમદ્-વૃન્દાવનેન્દુ એ શ્લોકથી મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે:—"વિદ્યાવિલાસી મહારાજશ્રી અને

વિદ્વદ્વર્ગ ! જગત્માં વિદ્યા એ એક અમૂલ્ય વસ્તુ છે. વિદ્યા એ મનુષ્યનું ભૂષણ છે, ખૂબસૂરત સ્વરૂપ છે, ગુપ્ત ધન છે. વિદેશમાં પણ વિદ્યા એક સાથીની ગરજ સારે છે. વિદ્યા એ પરમ દૈવત છે. રાજ્યમાં સન્માન પ્રાપ્ત કરાવનારી પણ વિદ્યા છે. એ વિદ્યા મેળવનાર વિદ્વાન્ જગત્મા પૂજાય છે. એ વિદ્યા સંપાદન કરવાનું કર્તવ્ય મનુષ્યમાત્રનું છે. અમારૂં આ નડિયાદ સમગ્ર ગુજરાતમાં વિદ્યાનું કેંદ્ર ગણાય છે. સદ્ગત સાક્ષર ગોવર્ધનરામભાઇ, કવિ બાલાશંકર આદિ આ જ ભૂમિમાં જન્મ્યા હતા. સંસ્કૃત ભાષાના વિદ્વાનો પણ નડિયાદમાં થોડા નથી. વસ્તુતઃ यत्रचित्ताडिर्यं એ શ્લોકમાં કહ્યા મુજબ ખરૂં પાંડિત્ય, વેદગતિ, વૈદિક ક્રિયા, ભગવન્માર્ગનો પરિચય, શ્રીકૃષ્ણમાં પ્રીતિ આદિ સર્વ ગુણો શ્રીવલ્લભાધીશ્વરમાં છે અને આપણા આજના સભાપતિ મહારાજશ્રીએ એ સર્વ ગુણોનો સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો છે. (તાળીઓ.) આજે એ સદ્ગુણોથી આકર્ષાઇને વિદ્વત્સમાજ અહીં ઉપસ્થિત થયો છે. આજે શ્રીમાન્ મહારાજશ્રીને સન્માનપત્ર તથા પદવીસમર્પણ કરવાનાં છે. આ સભાના ઉદ્દેશ પુરતું ટુંકું વિવેચન કરીને બેસી જવાની રજા લઇશ.”

મુનસફ સાહેબનું સંભાષણ.

ત્યારબાદ નડિયાદની કોર્ટના મુનસફ સાહેબ પરમ ભગવદીય રા. રા. ચુનીલાલ લલ્લુભાઇ માળવીએ ટુંકું પણ મુદ્દાસર નીચે મુજબનું વિવેચન કર્યું:—

“મહારાજશ્રી તથા ભાઇઓ, આજે આપણે મહારાજ શ્રીમદનિરુદ્ધલાલજીને અભિનંદન આપવા ભેગા થયા છીએ. મહારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીમહાપ્રભુજીના વંશમાંના હોઇ આપણે સર્વને ગુરુ તથા આચાર્ય તરીકે વંદનીય છે. મહારાજશ્રી રહેણીમાં સાદા છે. એમનો સ્વભાવ વિનયી વિવેકી, હસમુખો ને મળતાવડો છે; અને ધર્મસંબંધી અનેક કાર્યો પાર પાડવાની શુદ્ધ મનીષા ધરાવે છે. એક મહાપુરુષ વિષે બોલીએ તો મહાપુરુષ રૂપે દૃઢ નિશ્ચયવાળા, પુષ્કળ તર્કશક્તિવાળા, મનહરણ કરે તેવા એ મહારાજશ્રી છે. ધર્મના ગુરુ તરીકે જોઇશું તો, શાન્ત, ધર્મ કાર્યમાં ઉત્સાહી, વિદ્યાચતુર, ધર્મી, ધ્યાની ને મતાગ્રહી છે. દેવદરબારને દેવદરબાર જેવા કરવાનો એમનો ઉત્સાહ સતેજ પ્રકાશે છે. ધર્મવૃદ્ધિ સાથે વિદ્યાવૃદ્ધિનો ઉંચો લોભ રાખે છે. શુદ્ધાદ્વૈત સંપ્રદાયના સર્વ ગ્રંથો પ્રકટ થઇ વૈષ્ણવોમા વંચાય એ એમની મહાઅભિલાષા છે તેઓ શુદ્ધાદ્વૈત સંપ્રદાયનો વિજય, અદ્ભુત પ્રગલ્ભ અને સતેજ કરવાને સદોદિત ઉમંગી જણાય છે. એમનો જય ભક્તિભર્યો પ્રકાશ્યો છે, સર્વની પ્રાર્થના એ જ હોઇ શકે કે:—શુદ્ધ ભક્તિ ધર્મની સંવૃદ્ધિ હજો, શ્રીકૃષ્ણપ્રેમમાં લીન થજો.

મહારાજશ્રીને એક જ વિનતિ કરવાની છે, તે એ કે એઓશ્રીએ ગામના શિક્ષિત વૈષ્ણવો પૈકી ત્રણ ચારને દર અઠવાડીએ આપશ્રીની રૂબરૂ બોલાવવા તથા તેઓ જાતે સેવા કરે એવી તેમના ઉપર છાપ પાડવી. સેવાની રીત સમજાવવી. જરૂર લાગે તો શ્રીઠાકોરજીને એમને માથે પધરાવવા. અવારનવાર તેમની જોડે સંપ્રદાયના રહસ્ય બાબત વાતચીત કરવી. આ પ્રમાણે આ ધર્મની જ્યાં સુધી લગની લગાડવામાં આવશે નહિ ત્યાં સુધી જેટલો જોઇએ તેટલો ધાર્મિક ફેલાવો થશે નહિ. જેમ ૮૪ તથા ૨૫૨ વૈષ્ણવો આશ્રયે સેવાયા હતા તે પ્રમાણે હાલના વૈષ્ણવોમાં ભાવ ભક્તિ તથા પ્રેમ જાગૃત કરવાની જરૂર છે.

ત્યારબાદ કાર્યક્રમ મુજબ બે શબ્દ મારે બોલવાના આવ્યા. હું શું બોલું! જે વારંવાર કહેવાયલું તે જ ફરી કહેવું રહ્યું:—“આજે આપણે મહાગુજરાતના એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીને સન્માનવા એકઠા થયા છીએ. શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રી શ્રીવલ્લભકુલના એક અલંકાર છે. જગદ્ગુરુ

શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના એ મહાન્ વંશમાં કેવા અદ્વિતીય વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીઓ પ્રકટ થયા છે એ વાત હવે છુપી રહી નથી. જગતમાં એવો કોઇ પણ વંશ નહિ જ હોય; કે જે મહાપુરુષનો વંશ સાડાચારસો વર્ષ સુધી અધિકાધિક જાહોજલાલી સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરીને, દેશને ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વજ્ઞાનનું સાહિત્ય–દેવભાષામય સંસ્કૃત સાહિત્ય–અર્પી રહ્યો હોય. શ્રીવલ્લભવંશ તો જગતમાં અજોડ જ છે અને રહેશે. વિદેશી અને વિધર્મીઓના પ્રહારો ઝીલતાં, અત્યન્ત અશાંતિના સમયમાં એ મહાન્ વંશે લાખો શ્લોકનું તત્ત્વજ્ઞાનનું સાહિત્ય ભારતવર્ષને આપ્યું છે. આ ઉપકાર દેશ કદી નહિ જ વિસરે. ઔરંગઝેબના જુલમોના સમયમાં નવ લાખ શ્લોકનું (નવ મહાભારત જેટલું) મહાસાહિત્ય શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજે જ આપ્યું! આવા વિકટ સમયમાં આ કાર્ય કોણ કરી શકે? સો વર્ષમાં શ્રીવલ્લભવંશના ગ્રંથકર્તા આચાર્યશ્રીઓમાં કાશીવાળા નિત્યલીલાસ્થ શ્રીગિરિધરજી મહારાજ અને કોટાવાળા નિ. લી. શ્રીકન્હૈયાલાલજી મહારાજ સ્મૃતિપથ થશે. તે પછી શ્રીવલ્લભવંશમાં ગ્રન્થકર્તા ઉપનિષદ્‌ભાષ્યકાર તરીકેનું મહાગૌરવ પૂર્ણ સ્થાન આપણા આજના સભાપતિશ્રીએ પ્રાપ્ત કર્યું છે. (તાળીઓ) તેમ જ આપશ્રીના શાસ્ત્રીજી શ્રીયુત હરિશંકર શાસ્ત્રીએ પણ તત્ત્વજ્ઞાનના મહાભાષ્યો જેવા ગ્રંથો ઉપર ટિપ્પણ તથા ટીકાઓ લખી તે ગૌરવ સંપાદન કર્યું છે. આચાર્યશ્રી મહાગુજરાતના જ એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી ગણાય. ગુજરાત હવે વિદ્વાનોનું સન્માન કરવા લાગ્યું છે. કવિવર નાનાલાલભાઇને સન્માન્યા, હમણાં જ કવિ ખબરદારનો કનકોત્સવ ઉજવ્યો. તેમાંયે સાક્ષરભૂમિ તરીકે પંકાતી આ નડીયાદનગરીએ આવા એક સમર્થ વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીને સન્માનીને પોતાની વિદ્યાપ્રિયતાનો મજબૂત પુરાવો આપ્યો છે. બાકી આ માનપત્રાદિ તો સૂર્યને દીપક દેખાડવા જેવાં જ ગણાય."

અન્ય વિદ્વાનોનાં વિવેચનો.

વડોદરાવાળા રા. રા. સાકરલાલ શાસ્ત્રીએ સાહિત્યમય સંસ્કૃત ભાષામાં વિવેચન જણાવ્યું કેઃ—"તમે બધા આ દેવવાણીને મૃતભાષા કહો છો, પણ તે મૃત ભાષા નથી. જ્યાં સુધી વિદ્વાનો જે સંસ્કૃતમાં બોલે છે, લખે છે, તે સંસ્કૃત ભાષાને મૃત ભાષા કેમ કહેવાય? મહારાજશ્રી પોતે વિદ્વાન્ છે તેથી જ આટલી મોટી વિદ્વાનોની મંડળી અત્રે આવી છે. મહારાજશ્રીએ વિદ્યાધ્યયન કરેલું છે, વિદ્વાનોના પરિશ્રમને પણ જાણે છે. વળી વિદ્વાનો બીજાને માનતા નથી; તેઓ તો વિદ્વાનોને જ સત્કારે છે. આ કાંઈ મૂર્ખોની સભા નથી; પણ વિદ્વાનોની સભા છે. આજે આ સભા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રીનો સમાદર કરે છે."

ત્યારબાદ વડતાલના શ્રીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના વિદ્વાન્ શ્રીયુત વિઠ્ઠલભાઇએ વિવેચન કર્યું અને કહ્યું કેઃ—"મહારાજશ્રી એક વિદ્વાન્ આચાર્ય તરીકે આ સન્માન પ્રાપ્ત કરે છે. સમય ઘણોજ વિકટ આવેલો છે. હાલમાં ધર્મનો હ્રાસ થતો જાય છે. હાલમાં જ અમારા ગાયકવાડ નરેશે એક હુકમ કાઢીને ઢેઢભંગીના છોકરાંઓને ઉચ્ચ વર્ણના છોકરાંઓની સાથે નિશાળમાં બેસાડવાની જબરદસ્તી કરવા માંડી છે. હાલના સ્વરાજ્યવાદીઓ પણ આવોજ ધર્મ નાશ કરી રહ્યા છે. આવા સમયમાં આવા વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી જો નેતા બને અને જનસમૂહને ધર્મ માર્ગે દોરવે તો અમારા વિદ્વાનો ઉપર ઘણો જ ઉપકાર થાય. (અત્રે મહારાજશ્રીએ સંસ્કૃત ભાષામાં કહ્યું કે ધર્મસહિત જ સ્વરાજ્ય ભગવાન્ શ્રીનંદનંદન ભારતવર્ષને આપશે જ!) (જોરશોર તાળીઓ!) આવા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રી અમારા આ ધાર્મિક આંદોલનના નેતા બને એવી પ્રાર્થના સાથે વિરમું છું.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ सम्मानपत्रम् ॥

श्रीमन्नन्दनन्दनपादारविन्दमुग्धमधुपायमानाः श्रीमत्पुरुषोत्तमवदनवैश्वानरावतारश्रीश्रीवल्लभाचार्यवंशजोडुगणे सुधांशुतां बिभ्राणाः शुद्धाद्वैतकेसरि-शुद्धाद्वैतभूषण-शुद्धाद्वैतसहस्रांशु—शुद्धाद्वैतवाचस्पति-वेदान्तसुधाकर-वेदान्तविद्यालङ्कारेत्यादिविविधविरुदावलिसमलङ्कृताः श्रीमदनिरुद्धाचार्याः !

श्रीमत्सकलश्रुतिसीमन्तिनीवृन्दवन्दनीयपादाम्बुजस्य क्षराक्षरातीतस्य प्रधानपुरुषयोर्नियामकस्य योगिभिरचिन्त्यवैभवस्य कर्मभिर्दुराराध्यस्य माहात्म्यज्ञानपूर्वकसुदृढस्नेहाख्ययाऽव्यभिचारिण्या भक्त्यैकलभ्यस्यानन्दमयस्य भगवतो गोपीजनवल्लभस्य पादारविन्दपरिचरणपरायणैकव्रतानां तात्कालिकसम्राट्समुपलब्धगोस्वामिविरुदानां कविकुलकुमुदकलाधराणां श्रीमद्विट्ठलनाथदीक्षितमहाभागानां प्रथमकुमारविद्वन्मण्डनप्रणयनहेतुभूतश्रीगिरिधराणां कुले जनिमतां तत्कुलप्राप्तपरिपाटीमनुसरतां श्रीमतां निरन्तरं भगवत्सेवापरायणान्तःकरणमालोकमालोकं भृशं सन्तुष्यते चेतः।

श्रीमतां निखिलशास्त्रकलावगाहिनी बुद्धिः, सर्वतन्त्रेष्वादरः, श्रीशङ्कररामानुजमध्वनिम्बार्कशिवभिक्षुभास्करादिपरस्परविभिन्नमतेषु समानः परिशीलनादरः, बौद्धजैनयवनखिस्तादिवेदबाह्यमतखण्डनप्रवृत्तिः, सततं विद्याध्यवसायः, विद्वत्सु श्रद्धातिशयः, तत्त्वविचारणक्षमत्वं चेति गुणगणैराकृष्यन्ते विदुषां मानसानि।

श्रीमतां प्रतिभाशालि पाण्डित्यं विनयं भाग्यानुत्सेकं निरर्थकवाक्कलहपराङ्मुखीमनवरतग्रन्थरचनव्यापृतिं च दृष्ट्वा सञ्जातमनोमहोत्सवैरस्माभिः “पण्डितेन्द्र” पदेन विभूष्यन्तेऽत्रभवन्तः श्रीमन्तः। सम्प्रार्थयामहे च भगवन्तं यदनेन पदाकल्पेन विभूषिताः श्रीमन्तश्चिरं विद्योतिष्यन्ते विद्योतयिष्यन्ते च स्वधर्मभावितान्तरां पण्डितमण्डलीमितिशम्।

श्रीमतां वशंवदाः

नटपत्तनम् कार्तिककृष्ण सप्तम्यां सौम्ये १९८८.

बालशास्त्री वासुदेवशास्त्री तैलङ्गः
विट्ठलराम लल्लुराम शास्त्री
पं. ओङ्कारेश्वरः स्मृतितीर्थः
महाशङ्कर हिम्मतराम शास्त्री
महादेव प्रभाशङ्कर जोशी
हिम्मतराम मूलजीभाई भट्ट
हरिकृष्णात्मजवसन्तरामशास्त्री,
शुद्धाद्वैतसम्पादकः
धरणीनाथ काशीनाथ शास्त्री
मणिशङ्कर प. उपाध्यायः

शास्त्री साकरलालशर्मा यशेश्वरतनुजन्मा
वडोदरा संस्कृतमहाविद्यालयाध्यापकः
गोवर्धनशास्त्री (सत्सङ्गमण्डलम् नडियाद)
याज्ञिककेसरी शास्त्री अमृतरामोपाध्यायः
हरिभाऊ नन्दलाल शास्त्री
शास्त्री हीरालाल शर्मा
नाथालालात्मजो भाईलाल आयुर्वेदविशारदः
मोहनलाल काशीराम शास्त्री
हरिशङ्करः

॥ श्रीबालकृष्णो विजयते ॥

शुद्धाद्वैतकेसरिशुद्धाद्वैतवाचस्पतिशुद्धाद्वैतभूषणशुद्धाद्वैतसहस्रांशुवेदान्तसुधाकर
वेदान्तविद्यालङ्कारादिविरुदावलिविभूषित—
गोस्वामिश्रीमदनिरुद्धाचार्यजी महाराजश्रीने

॥ अभिनंदन ॥

શ્રીમદખણ્ડભૂમણ્ડલાચાર્યભગવદ્વદનવૈશ્વાનરાવતારશ્રીવલ્લભાચાર્યમહાપ્રભુપૂજ્યપાદવંશાવતંસ વિદ્વત્કેસરી ગોસ્વામી શ્રી ૧ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીના પરમપવિત્રપાદપદ્મમાં પ્રણામપૂર્વક વિજ્ઞપ્તિ—

આપશ્રીએ આજસુધી અનેક કષ્ટો સહન કરીને પણ શ્રીમદ્વલ્લભવાક્સુધાગાંભીર્યના અવધારણ માટે તલસ્પર્શી અવગાહન કર્યું છે, એટલું જ નહિ પણ વૈષ્ણવવૃન્દ ઉપર અનુગ્રહ કરી તે સુધાસાગરના નવનીતસારને પ્રૌઢવિચારપૂર્ણ ગ્રન્થરૂપે પ્રકટાવી સમ્પ્રતિ વિરાજમાન ગોસ્વામી આચાર્યોમાં એક પ્રતિભાસમ્પન્ન ગ્રન્થકાર તરીકેનું અનેરું આદ્ય માન મેળવ્યું છે.

આપશ્રીએ વારંવાર પ્રવચનો, શાસ્ત્રાર્થો અને ગ્રન્થોદ્વારા સમ્પ્રદાય ઉપર થતા આક્ષેપોના સચોટ પ્રત્યુત્તરો અત્યન્ત સરલતા અને આચાર્યને યોગ્ય એવી પદ્ધતિપૂર્વક આપીને, વૈષ્ણવસૃષ્ટિને ઉપકૃત બનાવી છે; છતાં આવા અનુકરણીય કાર્યો આચાર્યપદને અનુરૂપજ હોવાથી તે વિષે આપશ્રીના પ્રત્યે માનભરી લાગણી જ દર્શાવી શકાય; કોઈ પણ વૈષ્ણવ આપશ્રીના આ ઉપકારનું સ્મરણ શબ્દદ્વારા તો નજ કરી શકે.

આપશ્રી આચાર્યબિરુદને અનુરૂપ સૌહાર્દ, કાર્યદક્ષતા, ગુણગ્રાહકતા, ચારિત્ર્ય, આત્મબલ, અને પ્રપંચવિસ્મૃતિપૂર્વક ભગવદાસક્તિરૂપ નિરોધ વગેરે ગુણોનું અધિષ્ઠાન સ્વરૂપ જ છો.

અમે નડીઆદવાસી વૈષ્ણવોએ પચાશ વર્ષ પહેલાં જે આશા ધરાવી હતી, તે સમ્પૂર્ણરીતે ફલીભૂત થયેલી દૃષ્ટિગોચર થાય છે.

આપશ્રીએ ગ્રન્થો રચી આધુનિક આચાર્યો અને પણ્ડિતોને આ દિશામા પ્રેરણા કરી કહેવાય. આપશ્રીનો ઔપનિષદસાહિત્યપૂર્તિ કરવાનો શુભ મનોરથ જાણીને આનંદ થાય છે. અમે આપશ્રીના વિદ્યાવ્યસનને અન્વર્થ થાય એવા " पण्डितमण्डलेश्वर " પદથી સુવર્ણપદક ભેટ ધરી આપશ્રીનું આ વિવાહોત્સવ પ્રસંગે પૂજન કરીએ છીએ.

આપ દમ્પતી શ્રીબાલકૃષ્ણપ્રભુની સેવામાં તત્પર રહીને ઘણાં વર્ષો સુધી વૈષ્ણવ પ્રજાને સુખ આપો, એમ તેમના ચરણકમલમાં પ્રાર્થના છે.

નડીઆદ.
કાર્તિક કૃષ્ણપક્ષ
સંવત ૧૯૮૯

અમે છીએ આપશ્રીના સેવકો,
નડીઆદના સમસ્ત વૈષ્ણવો તરફથી

દેસાઇ ગોપાલદાસ બિહારીદાસ પરી. છોટાલાલ ચુનીલાલ
દેસાઇ ગિરધરદાસ મંગલદાસ પરી. બલદેવદાસ મથુરદાસ
પરીખ ત્રિકમલાલ સાંકળચંદ શાહ મગનલાલ ભાઈજીભાઇ
ચુનીલાલ લલ્લુભાઇ માલવી તલાટી હરગોવિંદદાસ પુરૂષોત્તમદાસ
વૈષ્ણવ યુવક મંડળ તરફથી
દવે પુરૂષોત્તમદાસ ત્રિભુવનદાસ

તે પછી વડોદરાના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન્ અને 'ભક્તિસામ્રાજ્ય'ના સંપાદક રા. રા. બદ્રીનાથ શાસ્ત્રીજીએ બોલતાં જણાવ્યું કેઃ—

મહારાજશ્રીનાં પાંડિત્ય અને પ્રાગલ્ભ્ય, વિદ્વત્તા આદિનો પરિચય બીજા કરતાં અમને વિદ્વાનોને વધારે હોય. અમે એઓશ્રીના વધુ સમાગમમાં આવ્યા ન હોઈએ તો પણ થોડા જ સમયના સમાગમથી એઓશ્રી પાસેથી ઘણું મેળવી શકીએ. અમે જૂની શૈલીના વિદ્વાનો છીએ. એક પુસ્તક વાંચીએ, તે પૂર્ણ વાંચીએ. વર્તમાનપત્રોની અમને દરકાર નથી. જ્યારે બીજો જનસમૂહ છાપાંઓ વાંચવા માટે વર્તમાનપત્રો શોધતો ફરે ત્યારે અમે છાપાંઓની સામુંએ ન જોઈએ. કોઈ છાપાંઓ લાવીને અમારૂં ધ્યાન ખેંચે તો જ વાંચીએ. મતલબકે છાપાંઓને ગરજ હોય તો અમને શોધતાં આવે !(હસાહસ !) અને છાપાંઓ પણ વાંચીએ તો માત્ર ઉપરચોટીયાં હેડિંગો જ ન વાંચીએ, પણ પહેલેથી છેલ્લે સુધી વાંચી જઈએ; તેમાંની 'સુંદરી સાથી'ની જાહેર ખબર પણ છોડીએ નહિ ! (વધુ હસાહસ.) આવી પ્રકૃતિના અમે વિદ્વાનો છીએ. અમારો વ્યાસંગ માત્ર વિદ્યાનો જ છે. તેથી જ આજે એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીનાં સન્માનાર્થે ઉપસ્થિત થયા છીએ. મહારાજશ્રીમાં વિદ્વત્તા, બુદ્ધિચાતુર્ય, આશુકવિત્વ આદિ સમધુર ગુણોનો સંયોગ થયલો છે. મધ, દૂધ, સાકર, અને દ્રાક્ષ; એ મધુર પદાર્થોની જેમ મધુર ગુણો આપશ્રીમાં અનુભવાય છે. આ માનપત્ર તો કાગળમાં લખાયલું છે, પણ ખરૂં જોતાં તો તે માનપત્ર અમારાં હૃદયમાં લખાયલું છે.”

તે પછી વક્તાએ સંસ્કૃત માનપત્ર સંસ્કૃતમાં વાચ્યું હતુંઃ-

ત્યારબાદ ગુજરાતની કાશીપુરીસમાન વડોદરાના ગૌરવાવશેષ તૈલંગદેશના મહાન્ પંડિત વયોવૃદ્ધ શાસ્ત્રીજી બાલશાસ્ત્રીજીએ ઉપરનું માનપત્ર અર્પણ કરતાં જણાવ્યું કેઃ—વૃંદાવનવિહારી રાધારમણ શ્રીકૃષ્ણના પ્રતિબિંબરૂપ–ભાગવતપ્રતિબિંબરૂપ–આપ ગોસ્વામી છે. અમે આપશ્રીના ચરણમાં માનપત્ર અર્પણ કરવા મળ્યા છીએ. આ માનપત્ર તો પહેલાં એક વક્તાએ કહ્યું તેમ સૂર્યને દીપક દેખાડવા સમાન છે. દેવાનાંપ્રિયોએ પંડિતોનું ગૌરવ કરવા જેવું છે. સંસ્કૃત સાહિત્યના ઇતિહાસમાં માનપત્ર શબ્દ જ નથી. અહીં તો સ્તુતિપત્ર શબ્દ યોગ્ય ગણાય [તાળીઓ.] વાછડાંઓ, ગોવાળીઆઓ વગેરેને સંતાડનાર બ્રહ્માજીએ જ્યારે પ્રભુનો પ્રતાપ પેખ્યો ત્યારે નૌમીડ્ય એ બ્રહ્મસ્તુતિ કરી. તેવી જ રીતનું આ સ્તુતિપત્ર છે. એ સ્તુતિથી જ ભક્તિ તથા આપશ્રીની કૃપાનો સંબંધ સધાય છે. તેથી આનંદપૂર્વક આ સ્તુતિપત્ર આપના ચરણારવિંદમાં સમર્પણ કરીએ છીએ અને આશીર્વાદ આપીએ છીએ કે આપ ચિરંજીવ રહો ! (તાળીઓ) એ પ્રમાણે સંસ્કૃત માનપત્ર અર્પણ થયા બાદ વ્યાકરણાચાર્ય હીરાલાલ શાસ્ત્રીએ સંસ્કૃતમાં મહારાજશ્રીના ગુણગાનનો આશીર્વાદાત્મક શ્લોક વિવેચન સાથે સંભળાવ્યો. ત્યારબાદ ભગવદીય કવિ પુરુષોત્તમદાસજીએ ગુજરાતી માનપત્ર વાંચ્યુંઃ—

ગુજરાતી માનપત્ર રેશમી શાટીનમાં સુંદર રીતે છપાયું હતુ, તે નડિયાદના સુપ્રસિદ્ધ સદ્ગૃહસ્થ રા. રા. છોટાલાલ પારેખે મહારાજશ્રીને અર્પણ કર્યું. અને “પંડિતમંડલેશ્વર” નો સોનાનો ચાંદ અર્પણ કરવા મશહુર અગ્રેસર સરદાર નાનાસાહેબ શ્રીયુત ગોપાલદાસ વિહારીદાસ દેસાઈ ઉભા થયા. તેમણે કહ્યું કેઃ–પ્રભુએ અમને કર્મેન્દ્રિયો આપેલી છે તેની આજે સાર્થકતા થાય છે. આ હાથથી આચાર્યશ્રીને સુવર્ણપદક અર્પણ કરૂં છું. વાગિન્દ્રિયથી આપશ્રીની સ્તુતિ કરીને સ્તુતિપત્ર અર્પ્યું છે. અમારામાં કાંઈ યોગ્યતા નથી. માત્ર આપશ્રીના શુભ ગુણોની સ્તુતિજ

કરી શકીએ. અમારા હૃદયમાં આપશ્રી માટે જે ભાવ, ભક્તિ, પ્રેમ આદિ છે તેનું આ પ્રતિબિંબરૂપજ સુવર્ણપદક આપશ્રીના ચરણમાં સમર્પું છું.”

તદનંતર નડિયાદના નાગરિક અને શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલયના જાણીતા મંત્રી શેઠ મગનલાલ ભાઈજીભાઈએ ટૂંકું વિવેચન કરીને મહારાજશ્રીને પુષ્પમાળા ધરાવી હતી.

આચાર્યશ્રીનું વિવેચન.

આપશ્રીએ છટાદાર સંસ્કૃત ભાષામાં વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે;—

વિદ્વાનો, વૈષ્ણવો અને શ્રોતાઓ ! “ પંડિતમણ્ડલેશ્વર ” અને “ પંડિતેન્દ્ર ” નામની બે મહાપદવીથી મને તમે અલંકૃત કરો છો, તેમાં કારણ તમારું સૌજન્ય અને વિદ્યાપ્રિયત્વ જ છે. હું તેવો નથી. હું તો શ્રીવાગીશવાગ્વારાનિધિ (શ્રીમહાપ્રભુજીની વાણીરૂપ મહાન્ સમુદ્ર) માં માત્ર અવગાહન કરનારો છું. આજે વિદ્વાનોની મંડળીનાં દર્શનથી મહાન્ આનંદ થયો છે. આટલું સંસ્કૃત ભાષામાં બોલીને હવે ગુજરાતીમાં કહીશ. કેમકે અહીં વિદ્વાનો થોડા છે જ્યારે સંસ્કૃત ભાષા નહિ સમજનાર વર્ગ ઘણો છે. એની વચ્ચે સંસ્કૃતમાં બોલતાં વૈરસ્ય પ્રાપ્ત થાય. તેથી ગુજરાતીમાં બોલવું અનુચિત નહિ જ ગણાય. હું પ્રભુને પ્રાર્થના કરીશ કે આવું વિદ્વત્સંમેલન વારંવાર થાઓ. (ગુજરાતીમાં) આજે વિશેષ હું શું કહી શકું ? પરંતુ એટલું તો નિઃસંશય જ છે કે નડિયાદની જેવી પ્રીતિ પહેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ હું જોઉં છું. આ સમારંભ એ તેનું પ્રત્યક્ષ ચિહ્ન છે. હું કાંઈ તેવો વિદ્વાન્ નથી, તો પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાથી તેઓશ્રીની વાણીનો આનંદ પ્રાપ્ત કરું છું. આપ સર્વનો મારા ઉપર જે પ્રેમ છે તેમાં પણ કારણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાજ છે. વળી જ્યાં સ્વાર્થ હોય ત્યાં પ્રીતિ ન્યૂન તથા અધિક થાય, અહીં તેવો સ્વાર્થ સંબંધ નથી. તેથી જેવી પ્રીતિ પહેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ છે. વળી મારા ઉપર આપ લોકોની પ્રસન્નતા જે દેખાય છે તેનું કારણ પણ આપ લોકોમાં શ્રીમદાચાર્યચરણકમલમાં અને ધર્મશાસ્ત્રમાં સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા છે તે જ છે. આજ કારણથી મારા તરફ આટલો પ્રેમ તમે દર્શાવ્યો છે. કાલ કેવો કરાલ છે તે આપ જાણો છો. આવા સમયમાં ધર્મ તથા ધર્માચરણાદિમાં આપ સર્વની સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા પ્રભુ રાખે એવી પ્રાર્થના છે. સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોનું પઠનપાઠન પ્રચલિત થાઓ. સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતો તરફ અભિરુચિમાં અભિવૃદ્ધિ થાઓ અને વાણીના પતિની (શ્રીમહાપ્રભુજીની) વાણીનું રહસ્ય જાણવા અને સ્વકર્તવ્યપરાયણ થવા બુદ્ધિને પ્રભુ પ્રેરો એ જ અભિલાષા છે.”

તે પછી જાણીતા વૈષ્ણવ વકીલ અને સદ્ગત તેલીવાલાના મિત્ર રા. રા. બહેચરદાસ વકીલ બી. એ. એલએલ. બી. એ મહારાજશ્રીનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત રજુ કરી હતી, અને આપશ્રીની વિદ્વત્તાનો લાભ અહીંના કેળવાયલા વર્ગને મળે તેવી વિનતિ કરી હતી. (આ સમયે મહારાજશ્રી સાથે વિદ્વાનો વાર્તાલાપ કરી રહ્યા હતા તેથી વક્તાએ આ વિનતિપર આપશ્રીનું ફરી ધ્યાન ખેંચ્યું હતું !) મહારાજશ્રીએ આ વિનતિ સ્વીકારી હતી. તે પછી એક યુવક વૈષ્ણવ અભ્યાસી ભાઈ ગિરિધરલાલે યુવક બંધુઓ તથા અન્ય તરફથી આજના મહાન્ સમારંભમાં કાંઈ ત્રુટી થઈ હોય તો તે ક્ષમા કરવાની વિનતિ કરી હતી. હતી તે પછી મહારાજશ્રીના 'જય' ઘોષ વચ્ચે સભા વિસર્જન થઈ હતી.

શ્રી કન્હૈયા પ્રભુના પ્રાકટ્ય મહોત્સવ પ્રસંગે નરોડામાં 'ભગવદીય' શેઠ મોહનલાલ આપાલાલના બંગલામાં લેવાયલું
ગુજરાતના વૈષ્ણવસમાજનું ચિત્ર.

Saraiya Art P. Ahmedabad.

वैद्क-विज्ञान.

(આર્ય સંસ્કૃતિમાંના આયુર્વેદવિજ્ઞાને જગતમાં જે સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે, તે સ્થાન કોઈ પણ સંસ્કૃતિનું તે વિજ્ઞાન પ્રાપ્ત નહિ જ કરી શકે. પણ હાલમાં વિદેશી સત્તા, વિદેશી શિક્ષાના પ્રભાવે દેશનું પ્રાણસમ એ વિજ્ઞાન લુપ્તપ્રાય થવા લાગ્યું છે. પુષ્ટિમાર્ગમા તો એનાં રક્ષણ માટે વૈષ્ણવ જીવનજ એવું વ્યવસ્થિત કર્યું છે કે સહજમાં જ એ વિજ્ઞાન સુરક્ષિત રહે. કોઇ પણ ચુસ્ત વૈષ્ણવ પ્રાણાન્તે પણ વિદેશી દવાઓનો સ્પર્શ પણ નહિજ કરે. આપણા ઘરનાં તો ડોસી-ડગરા પાઈ બે પાઇની દવામાં મોટાં મોટાં દર્દો દૂર કરતાં હતા! પણ હાલમાં તે સ્થિતિ નથી. તેથી આ વિભાગ શરૂ કર્યો છે. જાણીતા ભગવદીય મોતીભાઈ (મોતીકાકા) આ વિષય પર અવારનવાર લખશે. તેઓ વંશપરંપરાના વૈદ્ય છે. તેમની દવાઓ, નુસ્ખાઓ અનેકવાર અનુભવેલા છે. આશા છે, કે 'શુદ્ધાદ્વૈત'ના વાચકોને આ વસ્તુ રુચ્યા વિના નહિ જ રહે **તંત્રી.**]

અશક્તિ—આજકાલ દુનિયા શેની માગણી કરી રહી છે? નિર્બળતા, અશક્તિ, વીર્યદોષ, ક્ષીણતા વગેરે નષ્ટ થઇ શરીરમાં સારામાં સારી શક્તિ માગે છે, માટે નીચે પ્રમાણે નુસ્ખા આપ્યા છે.

૧. માળવી ગોખરૂ, એખરો, જેઠીમધ, ગંગેટી, આહન, મુસળી, કૌચા, સર્વ સમભાગે લઇ તેનું ચૂર્ણ કરી તેના બરાબર ઘીમાં શેકી તેથી આઠ ઘણા દુધમાં માવો કરી, સર્વથી બમણી સાકર નાંખી લાડુ બનાવી ખાવાથી ઉપરની ફરિયાદ બંધ થાય છે.

૨. અકલગરો, સુંઠ, લવીંગ, કેસર, પીપર, જાયફળ, જાવંત્રી, સુખડ દરેક એકેક તોલો લઈ તેનું ચૂર્ણ કરી તેમાં ૪ તોલાભાર ચોખું અફીણ નાંખી તેની પાંચ પાંચ રતીભારની ગોળી વાળી રાખવી. તેમાંથી હંમેશાં ૧ ગોળી રાતે મધ સાથે ખાવાથી વીર્યસ્તંભન થાય છે.

૩. વડના દૂધને પતાસામાં સાત ટીપાં નાખી સાત દિવસ ખાવાથી વૃદ્ધિ થાય છે.

૪. સુંઠ તો. ૧, આહન તો. ૨, વરધારો તો. ૩નું ચૂર્ણ કરી બે આનીભારથી પાવલીભાર સુધી ફાકી મધમા લઈ ઉપર દૂધ પીવાથી ધાતુપુષ્ટિ થાય છે.

નપુંસકત્વ માટે—૧. ધોળી કરેણના મૂળને ગધેડાના મૂત્રમાં ઘસી તેનો લેપ કરવાથી પુરુષત્વ પ્રાપ્ત થાય છે. આ લેપ પ્રથમ ઘી ચોપડી કરવો અને લેપ ધોયા પછી ઘી ચોપડવું.

ધોળી ડુંગરીના રસમાં અજમો પલાળી તે દરરોજ ૧ તોલો, સાકર ૨ તોલા એ પ્રમાણે ૨૧ દીવસ પીવાથી નપુંસકત્વ દૂર થાય છે.

અંગ્રેજી ઉપચારો—મેગ્નેસ્યા સલફાસ ૩ ડ્રામ, ટીંચર જીંજર ૫ ટીપાં, ટીંચર સેનાકો ૧ ડ્રામ, ટીંચર કારડમકો ૫ ટીપાં, સોડા સલ્ફાસ ૩ ડ્રામ, પાણી ૧ ઔંસ. મિક્ષ કરી એકી વખતે પી જવું. ત્યારબાદ સાત દિવસ પછી નીચેનું મિશ્રણ પીવું.

એસીડ નાઇટ્રો હાઇડ્રોક્લોરીક ડીલ્યુટ ૧૫ ટીપાં, ટીંચર નક્સવૉમીકા ૨૦ ટીપાં, ટીંચર કલેબા ૧૫, એક્વા મેન્થા પીપરેટા ૩ ઔંસ મિક્ષ કરી દિવસમાં ત્રણ વખત થઇ પીવું

સાધારણ પ્રકારના નપુંસકત્વપણામાં આહારવિહાર અતિશય કરવાથી થયેલા નપુંસકત્વને દૂર કરે છે. બ્રહ્મચર્ય પાળવું. ખોરાક હલકો ને પોષણકારક લેવો.

યુનાની નુસ્ખા—તુખ્મરીહાન (તકમરીયા) તેની ઝીણી ભુકી કરીને તેમા તેના બરાબર વજને ગોળ મેળવી એકેક પૈસાભારની ગોળી હંમેશાં ખાવાથી બદન મોટું થાય તથા ધાતુ સ્તંભન થઇ શકતી આવે છે.

અફીણ, જાયફળ, જાવંત્રી, કપૂર ચાર સરખે ભાગે લઇ તેને બારીક વાટી નાગરવેલના પાનના રસમાં ઘુંટી ૧ વાલની ગોળી કરવી. રોજ એક ગોળી લઈ દૂધમાં પીવાથી શક્તિ આવે છે.

પ્રમેહ માટે—ગળો, ગોખરૂ, આંમળાંને સરખે ભાગે લઇ પાણી સાથે અગર ઉકાળીને પીવાથી પ્રમેહ મટે છે.

કપાલના કીડા—કુકડવેલાના પાનના રસનું નસ્ય (સુંઘવાથી) આપવાથી પીડા દૂર થાય છે.

ગર્ભધારણ પ્રયોગ—ગાભણી ભેંસના દૂધમાં બકરીનું મૂત્ર નાંખી પીવાથી ગર્ભ રહે છે. રજસ્વલા થયેલી નારી વડની વડવાઇને ગાયના ઘીમાં પીએ તો ગર્ભધારણ થાય છે.

વંધ્યત્વના ઉપાય—આંબાહળદર, સૈંધવ, તથા ખાંડનું બુરૂ આ ત્રણે તોલો તોલો લઇ ખાંડી વસ્ત્રગાળ કરી સ્ત્રી રજસ્વલા થાય એટલે પહેલા દિવસથી ત્રીજા દિવસ સુધી સવારમાંજ પાણી સાથે તા. ૦ાા ફાકી જવી. (દર ટંક ૦ાા તોલો એટલે ૭ ટંકમાં ત્રણ તોલા ફાકી ત્રણ દિવસમાં લેવી. ચોથા દિવસે સ્નાન શુદ્ધિ કરી નીચેનું ઔષધ લેવું. સાચાં મોતી દાણા ૭, શિવલિંગી દાણા ૭, શંખાવળી (શંખપુષ્પી) માસા ૭, મીશ્રી (સાકર) માસા ૭, સફેદ જીરૂ માસા ૭, ધોળી રીંગણીનાં બીજ માસા ૭. શિવલિંગી તથા મોતી સિવાયની ચીજોને ખાંડી વસ્ત્રગાળ કરી ૭ પડીકાં કરવાં અને મોતીને લીંબુમાં પલાળી ગુલાબ જળથી વાટી પિષ્ટ લુગડે વારંવાર ચાળી રાખવાં. પછી પતિપરાયણ અને સંતતિ માટે આતુર એવી સ્ત્રીએ પતિની આજ્ઞા લઇ પ્રથમ સુર્ય સામે મુખ રાખી પ્રથમ શિવલિંગીનાં દાણા ૭ ગળી જઇ ઉપર મોતીનો પિષ્ટ તથા તૈયાર કરી રાખેલી સાત પડીકીમાંથી એક લઇ ગાયના ઠંડા દૂધ સાથે પીવું. પથ્ય—તેલ, મરચું, ખટાશ બંધ. દૂધ સાકર ઘીવાળો સાત્વિક ખોરાક ખાવો. આ પ્રમાણે ત્રણ માસ સુધી કરવું એટલે દરેક માસે ઋતુના ત્રણ દિવસ આંબાંહળદરવાળી ભુકી અને ચોથા દિવસથી નં. ૨ બીજાવાળી દવા લેવી. વધુ ખુલાસા માટે નીચેને ઠેકાણે લખો.

હરસ યાને મસા, હીસ્ટીરીઆ, સંગ્રહણી, ધાતુક્ષય તથા સ્ત્રીઓના ગર્ભાશય સંબંધી તમામ દરદો માટે અકસીર દવાની શોધમાં નિરાશ થયેલાને જણાવવાનું કે તેવાં દરદો મધ્યમ તથા ગરીબ વર્ગના માણસો માટે ફીમાં ઘણીજ રહેમીયત રાખી મટાડવામાં આવે છે અને શીઆળાની અજબ માત્રાઓ અમારે ત્યાં મળે છે. શીઆળામાં શોખીનો માટે અંબર કસ્તુરી-વાળી અમીરી માત્રાઓ અમારે ત્યાંથી લઈ એક વખત વાપરી ખાત્રી કરો. ચાલુ ઋતુમાં નીચે પ્રમાણે નિયમો પાળવાથી તનદુરસ્તી મેળવી શકાશે. કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ એ બે માસને હેમંત ઋતુ કહે છે, આ ઋતુ માણસના શરીરમાં બળની વૃદ્ધિ કરે છે. આ ઋતુમાં મધુર એટલે ગળપણવાળા તથા ખાટા અને ખારા પદાર્થો ખાવા. મધુર રસ કફને વધારે છે અને કફ વધે તોજ પ્રબળ થયેલ જઠરાગ્નિનું બરાબર પોષણ થાય. મધુર રસની રુચિ ઉત્પન્ન કરવા માટે ખાટા અને ખારા રસવાળા પદાર્થો ખાવાની જરૂર છે. વળી બીજી રીત એમ પણ છે કે હેમંત ઋતુના ૬૦ દિવસોમાના પ્રથમ ૨૦ દિવસોમાં મધુર રસવાળા પદાર્થો વધારે પ્રમાણમાં ખાવા. તે પછીના ૨૦ દિવસોમાં ખાટા રસવાળા અને છેવટના ૨૦ દિવસોમાં ખારા રસવાળા પદાર્થો વિશેષ ખાવા. હમેશા ત્રણેય રસવાળા પદાર્થોનો ઉપયોગ કરનારે ભોજનમાં પ્રથમ મધુર પછી ખાટા અને પછી ખારા રસવાળા પદાર્થો લેવા. એટલે કે પ્રથમ મિષ્ટાન્નનો કોળીઓ પછી લીંબુ, કોકમ કે રાઇ ચડાવેલ દાળ, શાક, રાયતું કે ખાટું અથાણું હોય તેનો એક હાથ લેવો અને ચટણી પાપડ વગેરે પદાર્થો છેલ્લે ખાવા. જો આ ક્રમનો ત્યાગ કરી વિપરીત ક્રમમાં ખાનારને નુકશાન થાય છે સામાન્ય રીતે તીખા અને તુરા પદાર્થોનું સેવન, ખુલ્લી જગ્યામાં સૂવું, ઠંડા પાણીએ ન્હાવું, ભૂખે મરવું, અને જુલાબ એ આ ઋતુમાં નુકશાનકારક છે માટે તેનો ત્યાગ કરવો.

૨. સારી રીતે પોષણ કરે એવો પુષ્ટિકારક ખોરાક, પૌષ્ટિક ઔષધો, પૌષ્ટિક પાકો, ગરમ કપડાં અને સખ્ત ટાઢ વખતે સગડી, સ્ત્રીસેવન, તેલાભ્યંગ, કસરત એ આ ઋતુમાં ફાયદાકારક છે.

ઉપર બતાવેલ પૌષ્ટિક ઔષધોમાં અંબર કસ્તૂરીવાળી રાજવંશી માત્રાઓ અમારી પાસેથી કીફાયતે મળી શકશે, કેમકે એવી માત્રાઓ વંશપરંપરાથી અમારા ઘરમાં બનતી આવે છે અને તે માટે અમોને મોટી જાગીર મળેલી છે માટે નીચેને ઠેકાણે મળો અથવા લખો. અમને મળેલ અનેક સર્ટીફીકેટો પૈકી ખંડવાના પ્રખ્યાત શેઠ મોહનલાલ પ્રાગજી લખે છે કે "અમારા ઘરમાથી નામે અ. સૌ. જેકુંવરને લોહીવા તથા ધાતુક્ષયની બીમારી લાગેલી હતી જેને માટે ખંડવા, ઇંદોર, મીરજ વગેરે સ્થળે પ્રખ્યાત દાક્તરો તથા વૈદ્યોની દવા કરાવવા છતાં આરામ ન થયેલો પછી અમદાવાદવાળા વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર પાસે દવા કરાવવાથી સદરહુ બાઇને તદ્દન આરામ થઇ ગયો અને પ્રભુકૃપાથી પુત્રની પ્રાપ્તિ થઇ છે."

ઠે. સારંગપુર, કોકડીઆની પોળ સામે, અમદાવાદ. } વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર L. W. T.
(સંગ્રહણીના ખાસ વૈદ્ય-રોજકાવાળા)

મહાન પરોપકાર—એકજ વખત રૂ. ૫) ભરવાથી હીસ્ટીરીઆ જેવા ભયંકર દરદ માટે મફત દવા આપવામાં આવે છે.

डूमनी साकर.

મોરસ ખાંડથી આપણે અભડાઇએ છીએ. આચારવિચારોમાં આપણે ઉત્તમ સ્થાન મેળવ્યું છે અને અત્યારે પણ તે સ્થાન શોભાવી રહેલા છીએ. આર્યસંસ્કૃતિમાંની ઉત્તમોત્તમ સ્વદેશી ભાવનાનાં દરેક અંગનો વિકાસ કરવાનો દાવો અત્યારે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવો જ કરી શકે. તે વખતે "સોનાની થાળીમાં લોઢાની મેખ" ની માફક આપણે ત્યાં જે મહાન્ ભ્રષ્ટાચાર ચાલી રહેલો છે, તે તરફ શા માટે આંખમીચામણા થાય છે ? ચીન દેશમાં, ગોમાંસભક્ષક ચીના લોકોને હાથે બનેલી ડૂમની સાકર આપણે શા માટે વાપરીએ ? આપણા મંદિરોમાં શા માટે તે ઘર કરી રહી છે ? જે મોરસ ખાડ છોડવા માટે બરાડા પાડનારા આપણે એજ મોરસમાંથી બનેલી ડૂમની સાકર શા માટે વાપરીએ ? જો ડૂમની સાકર આપણા બધા મંદિરોમાં વપરાય તો પછી મોરસ ખાંડ શા માટે ન વાપરવી ? આશા છે કે શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર આદિ શ્રીગોસ્વામિબાળકો આ વિકટ સમસ્યા વિષે વિચાર કરશે અને આપણાં બધાં મંદિરોમાં પેઠેલા આ પ્રત્યક્ષ ભ્રષ્ટાચારને બંધ કરવા આજ્ઞા ફરમાવશે.

આ વિષે ઉજ્જૈનવાળા સુપ્રસિદ્ધ હાઇકોર્ટ વકીલ શ્રીયુત જમનાદાસજી ઝાલાની એમ. એ. એલ્.એલ્. બી. લખે છે કેઃ—

एक आवस्यक बातकी तरफ आपका ध्यान आकर्षण करनेकी परवानगी लेता हूं.

गये सालमें बम्बई गया, तो मेरे एक सगे रामानुज सम्प्रदायके यहां रहते है, उन्होंने मुझसे कहा कि आपके सम्प्रदायमें जहां आचार–विचार आदर्शरूपमें है, इतनी बडी पोल है कि परदेशी मिश्री मंदिरोमें अंगीकार होती है । इसको आपने बन्द करना चाहिये, मैंने इस बातको सचा नहीं माना तो वे बोले कि आपके मालवेकी तरफ न आती होगी, परन्तु यहां आप तलाश करना। डोमकी मिश्री नामकी मिश्री सेकड़ो हजारों मन आपके साम्प्रदायिक मंदिरोमें जाती है. मैंने श्रीमद् गोस्वामीश्री १०८ श्रीगोकुलनाथजी महाराजसे रूबरूमें विनति की तो आपश्रीने स्वीकार किया कि यह मिश्री तो बहोत वर्षोंसे आती है. और चीन देशमें पेड़ रससे बनती है

सो सुना है. मैने विनंति की कि इसको बन्द करना आवश्यक है. वहां बम्बई में तो किसी वैष्णव मंदिरमें सामग्री पहुचाना हो तो अमुक सेर मिश्री भेजनेका रिवाज है. आपश्रीने आज्ञा की कि हमारे यहां से अधिकी तो श्रीनाथद्वारमें अंगीकार होती है. हमारा बन्द कर देना तो कुंजरस्नानवत निष्फल है। मैने विनति की कि श्रीनाथद्वारमें भी बन्द कराना चाहिये; क्योंकि आलू मूमफली जैसे कंद भी भारतवर्षमें आ जानेके सेकडों वर्ष बाद बडी छानबीन तपास होकर अब थोडे वर्षसे अंगीकार होने लगे है, वहां प्रत्यक्ष विदेशी शकरकी बनी हुई मिश्री कैसे ली जा सकती है? फिर भी आपश्रीने बराबर ध्यान नहीं दिया. सुरत उतरा, तो वहां श्री १०८ श्रीव्रजरत्नलालजी महाराजने स्वीकार तो किया, परन्तु आगे क्या व्यवस्था की गई इसका पता नहीं है. श्रीजीद्वार तो अब तक नहीं जा सका, परन्तु बम्बई फिर भी विनतिपत्र लिखा तो श्रीगोकुलनाथजी महाराजका आज्ञापत्र आया कि यह मिश्री अशुद्ध है, इसका प्रमाण क्या है सो लिखो.

प्रमाण तो मुझे नहीं मिला परन्तु यह मिश्री चीनसे बनकर आती है; यह सब व्यापारी जानते हैं. मैने केतकरके मराठी विश्वकोषमें देखा था, और आंखसे देखकर आये हुवे कुछ लोग भी विश्वासपूर्वक कहते हैं कि जावा शकर शुद्ध होती है. पहले किसी जमानेमें जो अशुद्ध वस्तुओंद्वारा शुद्ध की जाती थी. वैसा अब नहीं होता अब दूसरी विधिसे शुद्ध होता है, जिसमें कोई अशुद्ध पदार्थ नहीं लिया जाता, परन्तु इस कारणसे भी जावा शकर हमारे यहां स्वीकार नहीं की जा सकती, फिर परदेशी मिश्री कैसे ली जानी चाहिये.

मंदिरोंमें अन्य सामग्री सिद्ध होनेके लिये शकर गलाकर चासनी करनी पडती है वैसे मिश्री क्यों नहीं सिद्ध की जाती है? यहां कुछ मंदिरोंमें तथा प्रामाणिक वैष्णवोंके घरमें यही होता है. कुछ ठिकाने बनारस शकरकी मिश्री बनानेवालेके यहांसे विश्वासकी मिश्री मंगाई जाती है, जैसे मथुरा, लखनउ, काशी पुष्करमें मैने देखा है. सामग्री पहुंचानेवाले यहां शकर पहुंचाते हैं, मिश्री नहीं पहुंचाते.

तात्पर्य यह कि परदेशी मिश्री एकदम बन्दकर देनेसे कोई कार्य रुक नहीं सकेगा.

आशा है आप स्वतः तथा अपने मासिकद्वारा इसके बन्द करानेका प्रयत्न करेंगे. क्योंकि अन्यमार्गीय लोग निन्दा करते हैं और बडा भारी अनाचार फैलता है.

प्रासङ्गिक नोंध.

શ્રીકન્હૈયાપ્રભુપ્રાકટ્યોત્સવ.

નિત્યલીલાસ્થ રસિકશિરોમણિ શ્રીગોકુલેશસ્વરૂપ ગો. શ્રીકન્હૈયાલાલજી મહારાજશ્રીએ પંચમહાલમાના વૈષ્ણવો પર જે રસચર્યા કરી છે તેનાં ફલનો અનુભવ આપશ્રીના પ્રાકટ્યોત્સવના રોજ અમદાવાદમાં થયો. ગોલોકવાસી શેઠ અચાભાઇએ આવોજ આનંદ અહીંના વૈષ્ણવોને કેટલાક વર્ષો પહેલા આપેલો, પણ ધનાઢ્ય વૈષ્ણવોથી ભરેલા આ શહેરમાં આવા ભજનાનન્દનો રસાસ્વાદ લેવા કોણ તલપાપડ છે ? ભજકલદારાનંદ પાસે ભજનાનંદને કોણ સંભારે ? છતાં પરમ ભગવદીય શેઠ મોહનલાલ બાપાલાલ તથા અહીંના શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરના મુખ્યાજી શ્રીયુત લાલાજી; એ બન્નેની વિત્તજા-તનુજા સેવાના અસાધારણ સંયોગથી અણધાર્યો અદ્ભુત આનંદ જન્મ્યો. શ્રીકન્હૈયાપ્રભુનું પ્રાકટ્ય તો જન્માષ્ટમીને મહામંગલમય દિનેજ છે, પણ ૩ માસની નાની વયમાંજ આપશ્રી શ્રીગોકુલેશજીના ઘરમાં ગોદ બિરાજ્યા. તેનો પ્રાગટ્ય મહામહોત્સવ કાર્તિક વદ ૧૧ નો મનાય છે. શ્રીગોકુલેશજીની અનન્ય સન્મુખ સૃષ્ટિમા આજે ઘેરઘેર આનંદ પ્રસરી રહે છે. આ ઉત્સવ ઉપર મુખ્યાજી લાલાજીએ ગામેગામથી વૈષ્ણવોને કુંકુમપત્રિકા લખીને તેડાવ્યા હતા. હાલોલ, ગોધરા, દેવગઢબારીઆ, દાહોદ, ઝાલોદ, નડીઆદ આદિ અનેક સ્થળેથી વૈષ્ણવો મોટી સંખ્યામાં અહીં આવ્યા હતા. લગભગ આ ઉત્સવ માટે એક માસથી તૈયારીઓ ચાલી રહી હતી. ઉત્સવના ચાર દિન પહેલેથીજ વૈષ્ણવો અહીં આવવા લાગ્યા હતા. તેમને ઉતરવા વગેરેની વ્યવસ્થા ઉત્તમ હતી, અને આવા સમાજસમયે કેવો સત્કાર કરવો એ શીખવા જેવુ હતું. પ્રતિદિન રાત્રિના બે-ત્રણ વાગ્યા સુધી ભજનાનન્દના મહારસસાગરમા ભરતી આવતી હતી. અહીં બિરાજતા શ્રીગોસ્વામી બાલકો પણ પધાર્યા હતા. પ્રભુ પાસે મહાદેવલીલા, દાણલીલા આદિ લીલાઓ થતી હતી. ઉત્સવના રોજ નંદમહોત્સવનો આનંદ તો અવર્ણનીય હતો. નંદમહોત્સવના મહારસની જમાવટ કરનાર ગો. શ્રીમધુસૂદનલાલજી મહારાજશ્રી પણ પધાર્યા હતા. આજ દિવસે દાણલીલા તથા મહાદેવલીલા પણ થઇ હતી. રાત્રે કીર્તનસમાજ મંદિરમાં તથા ભગવદીય મોહનલાલભાઈને ત્યાં થયો હતો. એ રીતે ઉત્સવના દિવસો ચિરસ્મરણીય બન્યા હતા. કાર્તિક વદ ૧૨ ના રોજ નરોડાની શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની બેઠકમા પલનાનો મનોરથ થયો હતો. આજે બધાએ અહીંજ મહાપ્રસાદ લીધો અને સમાજ થયો. સાંજે શેઠ મોહનલાલભાઇના બંગલામાં સર્વ ભગવદીયોના ફોટા પડાવ્યા. જે આ અંકમાં છાપ્યા છે. એ રીતે આ મહોત્સવ-સમારંભના સુમધુર સ્મરણો હૃદયમાંથી કદી વિસરાશે નહીં. ભગવદીય મોહનભાઈ તથા મુખ્યાજી લાલાજી આવોજ આનંદ વૈષ્ણવોને આપે એ અભિલાષા સાથે વિરમીશ.

કરનાર દેશભક્ત વલ્લભભાઇ પટેલને મરજાદીના વૈષ્ણવોના છોકરા ઠેરવી અને તેમની અહિંસાની નીતિ સાથે શ્રીમહાપ્રભુજીના સિદ્ધાંતોનો સંબંધ ઠોકી બેસાડીને તેમણે પોતાની પાટીદારશાહીની સીમા બતાવી નાંખી! અલબત્ત, તેઓ ગમે તેવા મહાન્ દેશનેતાઓ હશે, પણ ધર્મની દૃષ્ટિએ તો તેઓ હીંદુ નજ ગણાય. વળી શ્રીમહાપ્રભુજીએ જૈન તથા બૌદ્ધ જેવી અહિંસા માની પણ નથી. રણે ચડતા ક્ષત્રિય રાજાઓને પ્રસાદી ઉપરણા ઓઢાડીને શત્રુદલનો સંહાર કરવા વિદાય કરનારા આચાર્યશ્રીના સંપ્રદાયમાં હાલની અહિંસા જેવું તત્ત્વ હોય જ નહિ. અત્યારની અહિંસા તે ધર્મના અંગરૂપ નથી, પણ કુટ રાજનીતિરૂપ છે. આવા સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોનું ખૂન કરનારા લેખો માટે પણ દીનકિંકરને મેં ઠપકો આપ્યો. પણ એઓ તો સર્વજ્ઞ (!) બની ગયા છે! તેમના ગળામાં એ વાત ઉતરી નહિ. હું શ્રીનંદમહોત્સવ કાંકરોલીમાં કરીને ૭ માસે અમદાવાદમાં આવ્યો. તે પછી કાર્યાલયની ગેરવ્યવસ્થા ઉપર ટપકે જોઈ, ઘણોજ ખેદ થયો, તે માટે તેમને સખ્ત ઠપકો આપ્યો. તે પછી હું સીમલા ગયો, એટલે પાછળથી તેઓ કાર્યાલયમાંથી નહાસી ગયા તે હજુ સુધી મને મ્હોં બતાવતા નથી! મેં તેમનાં હાથનો લખેલો ૭ માસનો ચોપડો જોયો. વી. પી. તથા મનીઓર્ડરોની કાપલીઓ, નોંધ અને ગ્રાહકોના કાગળો વગેરે મેળવ્યાં. દિવસો સુધી ઉજાગરા કર્યા અને તબીયત ખરાબ કરી! આખરે લવાજમો તથા જાહેર ખબરોનાં નાણાં, તે પણ પાંચ દશ રૂપીઆ જ નહિ પણ લગભગ સો બસો રૂપીઆ ઉચાપત કરેલા જોયા. વળી ચોપડામાં એમ લખેલું કે "રૂા ૫૧) લવાજમના જમા" પણ તે કોના? તેનો ખુલાસો લખવાની ફુરસદ તેમને ક્યાંથી હોય? છતાં મહદ્ પ્રયાસે તે મેળવ્યાં. પછી લવાજમ નહિ ભરનાર છસો ગ્રાહકોને મેં પોસ્ટ કાર્ડ મોકલ્યાં. તેમાંથી કેટલાકના જવાબો મળ્યા કે, અમે દીનકિંકરને પૈસા આપ્યા છે. આ ઉપરાંત કાર્યાલયમાંથી પુસ્તકો તથા ચિત્રો વગેરેનો પણ હીસાબ મળ્યો નથી. આ પ્રમાણે પોતાની બેસવાની ડાળ ઉપર કુહાડા મારવાની તેમની વર્તણુંકથી હું હેબતાઈ ગયો, મને સહજ ગુસ્સો આવ્યો અને તેમને પોલીસ કોર્ટમાં ઘસડીને સજા કરાવવાનો નિશ્ચય કર્યો, પણ મિત્રોએ હજુ રોક્યો છે. હજુ તો નવાનવા ગોટાળા નીકળતાજ જાય છે. ગયા કાર્તિક વદ ૯ ના તેઓ અમદાવાદમાં આવ્યા અને જેમને ત્યાં ઉતર્યા, તે ભગવદીય મૂળજીભાઇ પ્રાંતીજવાળા મારી પાસે આવી ગયા. તેમણે તથા નડીઆદના બીજા બંધુઓએ દીનકિંકરના ચોપડા અને ગોટાળા જોઇને તાજુબીજ બતાવી છે. ભાઈ મૂળજીભાઇએ દીનકિંકરને ઘણું કહ્યું, પણ તેઓ મ્હોં બતાવે જ શાના? હવે તો નહાસતાજ ફરે છે! મહામુસીબતે પાંચ વર્ષના સતત પ્રયાસ પછી પ્રભુકૃપાએ આ કાર્યાલય કાંઈક ઠેકાણે આવ્યું, ત્યાં આ હાલત થઇ છે. દીપોત્સવાંકને પણ શી રીતે શણગારી શકું? રંગીન ચિત્રોનું ખર્ચ ક્યાંથી કરૂં? આ મારી કરૂણ કહાણી છે. દીનકિંકરને પરમભગવદીય માનનારાઓ મારા પર નારાજ થયા છે. તેમને વિનતિ છે કે, તેઓ કૃપા કરીને કાર્યાલયમાં પધારે, જો ઇચ્છા હશે તો હું ગાડીભાડું પણ તેમને આપીશ. બોલતા કાગળો ઉપરથી દીનકિંકરના આ ગોટાળા જુએ. હજુએ દીનકિંકરના મિત્રો તથા પ્રશંસકોએ વચ્ચે પડીને દીનકિંકરને સમજાવવાની જરૂર છે. મારો દોષ મને ન જણાય. છતાં જો મારો દોષ લાગે તો મને પણ શિક્ષા કરવાનો તેમનો અધિકાર છે એમ જાહેરમાં કબૂલું છું. હજુ દીનકિંકરનો હીસાબ પૂરો થયો નથી. પૂરો થએથી કેટલાં નાણાં ઓળવ્યાં તે જાહેરમાં મૂકેજ છુટકો છે.

વડોદરાની ઔરંગઝેબશાહી—વડોદરા રાજ્યની કાળી નોકરશાહીએ ઇતિહાસમાંની વિદેશી વિધર્મી ઔરંગઝેબશાહીને હવે પ્રજાને નજરોનજર દેખાડવાના અખતરા કરવા માંડ્યા છે. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રજા અત્યારે ભયમાં છે. સાવલીવાળા ધર્મપરાયણ સદ્ગૃહસ્થ ભગવદીય દેસાઇ જસભાઈ છોટુભાઇના પત્ર ઉપરથી મેં વડોદરાના જ્યારે છાપાંઓ વાંચ્યા ત્યારે ઉક્ત વસ્તુસ્થિતિ પ્રત્યક્ષ થઇ. એક તરફથી દેશની પ્રતિનિધિ ગણાતી મહાસભા ધર્મવિષયમાં તટસ્થતા જાળવવાના પવિત્ર દાવને ઠોકરે મારી ઢેડભંગીઓને મંદિરોમાં જબરદસ્તીથી ઘુસાડવાની ચળવળ કરીને, સત્તા હાથમાં આવે તો અત્યારની ગોરી નોકરશાહી કરતાંએ કેવા ભયાનક અત્યાચારો તે કરે તેનો પ્રત્યક્ષ પુરાવો આપી રહી છે, તો વડોદરા જેવા દેશી રાજ્યની નોકરશાહીનો શા માટે કીડો ચળવળે નહિ? તેમની આ ઘેલછા તથા વિદેશીઓ અને વિધર્મીઓની જાળમાં ફસાઇને કરવા માંડેલું અંધ અનુકરણ ખચિતજ અધોગતિના ખાડામાંજ દેશને ધકેલશે એમાં લેશ પણ સંશય નથી. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રજાએ નોકરશાહીના દોરની લેશ પણ પરવા ન કરતાં જેવું મક્કમપણું બતાવ્યું છે તેવુંજ બતાવતું રહી. ઢેડ ભંગીઓના બાળકોને જબરદસ્તીથી નિશાળોમાં ઘાલવાના હુકમોનો

પ્રાસંગિક નોંધ.

ધાર્મિક પ્રજા છડે ચોક બંડ કરશે અને નોકરશાહીની વિરૂદ્ધ અને વિધર્મી રીતભાતને એક જબ્બર ફટકો લગાવશે એવો વિશ્વાસ છે. અત્યારે ઠેરઠેર નવી નિશાળો સ્થપાઇ છે. સરકારી નીશાળોનો ત્યાગ થઈ ચુક્યો છે. વિરોધસભાઓ ભરાય છે. પાદરામાં તે ચળવળને અંગે મુંબાઇથી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રી પણ પધાર્યાનું સાંભળ્યું છે. આ બધાં શુભચિન્હ છે. 'નવ ગુજરાત' તા. ૧૪-૧૨-૩૧ ના અંકનો એક વધારો એક ભાઇએ મોકલ્યો છે. એના લેખક પોતાની જાતને અને પોતાના કુલને બટ્ટો લાગવાના ડરથી તે લેખની નીચે પોતાનું નામ ઠામ પણ છાપ્યું નથી. તેમાંની બધી દલીલોના જવાબો સેંકડોવાર અપાઇ ચુકેલા છે. ક્રિશ્ચીયન પાદરીઓની દલીલોને શબ્દાડંબર અને દંભ પાખંડનો ઓપ ચડાવીને પોતેજ જાણે શાસ્ત્ર જાણતો હોય તેવો ડોળ કરીને આર્યસંસ્કૃતિનું ખૂન કરનાર તે લેખકના આવાં ચીથરાઓની સામું જોવાનું નથી. આમેજામ પ્રચંડ હીલચાલ ઉપાડી લેવાની છે.

તેરસી ઠગાઇની 'કું.' ની કૂદાકૂદ—શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીદામોદરલાલજી બાવાસાહબ મુંબઇથી શ્રીનાથદ્વારા એરોપ્લેનમાં પધાર્યા તે બદલ ગમે તેવા ગપગોળા છાપાંઓમાં ફેંકનાર, સત્ય ખુલાસો જાહેરમાં થયો છતાં પોતાનાં અસત્ય લખાણો લખવાના પાપ માટે પ્રાયશ્ચિત્તનો એક શબ્દ પણ ન લખનાર બેઇમાન લેખકો સાથે ચર્ચામા ઉતરવું એ એક વ્યર્થ ચેષ્ટા અથવા ગુનાહ છે. આવી ચર્ચામાં જે વૈષ્ણવ ભાટીઆ ભાઇએ ભાગ લીધો તે લેવાની જરૂર જ ન હતી. નિંદા–વિષ્ટાના કીડાઓને તે ખોરાક વિના મજાહ જ પડતી નથી! એટલામાં વળી ભાઇ ટેરસી કૂદી પડયા! શ્રીયુત રોહાવાળાને તેમણે જવાબ આપતા જે ભાષા વાપરી છે તે પરથી એમ કાં ન કહેવું કે એવી ભાષા લખનાર કોઈ સભ્ય ખાનદાન તો ન જ હોય! તેમની દલીલ તે જુગજૂની દલીલ, જેનો હજારો વાર જવાબ અપાઇ ગયેલો છે અને પ્રાચીન તથા નવીન પદવીધર વિદ્વાનોએ તેના કુરચે કુરચા ઉડાડી નાખ્યા છે! હું તો મી. તેરસીને કહી શકું કે પુષ્ટિમાર્ગમાં તમને જે 'નાલાયક તત્ત્વો'ની તથા "વેશ્યા તથા પિશાચ"પણાંની ગંધ આવે છે તેના કાંઇ પુરાવા છે? પોલપત્રને મદદ કરીને, પ્રવાસી પાગલ ઉપરના તમામ કેસોમાં હજારો રૂપીઆની મદદ કરી કરાવીને તમે શું પરિણામ કાઢ્યું? કયા કેસમા તમે જીત્યા? પાગલને કયા કેસમાં સજા ન થઇ? મુંબઇના મોટા મંદિરવાળા ઉત્તમ ચારિત્ર્ય ધરાવનારા એક મહાન્ વિદ્યાવિલાસી આચાર્યશ્રીના બદનક્ષીના કેસ વખતે તો તમે હીમતભેર બોલતા હતા કે આ કેસમાં તો એ મહારાજશ્રીને જરૂર કલંક લગાડીશું, એમ સાંભળ્યું હતું. પણ તેમાં તો પાગલને સત્તાવીસ માસની સજા થઈ! મી. તેરસી! તમે તો કોઈ ધર્મમા માનતા નથી, તો આ ધર્મની ચર્ચામા શા માટે કૂદી પડો છો! તમારો જાત અનુભવ થોડો પણ ન છતાં કોઇ વ્યક્તિના કહેવાતાં કલ્પેલાં ખરાબ આચરણોનો ટોપલો સંપ્રદાયને માથે ઓઢાડવો એ ક્યાંનો ન્યાય? જો તમારો ન્યાય વ્યાજબી હોય તો કાનજી માસ્તર જેવા સેતાનોને લઇને, મુંબઇની સ્કૂલ કમીટી, કોરપોરેશન અને કોંગ્રેસ જેવી સંસ્થાઓને શા માટે 'વેશ્યા'ઓ તથા પિશાચો સાથે તમે સરખાવતા નથી? પ્રભુ તમને સદ્બુદ્ધિ આપો અને મહારાજ' લાયબલ કેસમા થયલા ન્યાય માટે હાલના કેળવાયલા પુષ્ટિમાર્ગના વિદ્વાન એમ. એ. આદિ પદવીધરો અને કવિ ટાગોરના શાંતિનિકેતનવાળા શ્રીયુત વિધુશેખર ભટ્ટાચાર્ય જેવા બીજા સંપ્રદાયનાઓએ શા અભિપ્રાયો આપ્યા છે તે તમે જુઓ. બીજી વાત તો જવા દો, પણ હાલના તમારી કોમના જ વિદ્વાન ગ્રેજ્યુએટો આ સંપ્રદાયની કેવી સુંદર સાહિત્યસેવા કરી રહ્યા છે? તેઓ આ સંપ્રદાયના હોવા માટે કેવી મગરૂરી ધરાવે છે? તમારાં ધર્મપત્ની અખંડસૌભાગ્યવંતા પૂજ્ય બહેનનો સંપ્રદાયમાં કેવો પ્રેમ છે? તમારા જેવા અસ્થિર મગજના એવાઓને તો અરણ્યરુદન કરતા ભાગ્યે જ વધારે વજનદાર ગણાશે!

ઉપકાર—આ વર્ષના દીપોત્સવાંકથી મને સુદ્ધાં સંતોષ થયો નથી. દીનકિંકરે નુકશાનીના ચાલા કર્યાથી તેમજ ગ્રાહકો એકદમ ઘટી જવાના સબબે ચાલુ વર્ષમા જે નુકશાન આવશે તે ખમી શકાશે કે કેમ! એ સવાલના ઉચાટમાં ગતાંક કેવી રીતે આકર્ષક પ્રકટ થઈ શકે? છતાં કદરદાન ગ્રાહકોએ મારી તુચ્છ સેવાને ઉચ્ચ માની લીધી અને સુંદર અભિપ્રાયો લખી મોકલ્યા તેમાં તેમની મોટાઇ છે. તેને માટે તેમનો હું ઉપકાર માનું છું. દેવદીવાળી' અંકનું કદ તથા વજન વધી જવાથી કેટલાંક છાપેલાં પાના સીલીકમાં રાખવાં પડયાં, તેમાંના ૮ પૃષ્ઠ આ અંકમાં શામીલ કર્યાં છે. તે જયપુરના રાજાના આશ્રિત સંન્યાસીના ૬૪ પ્રશ્નોના જવાબમાં શ્રીજદુનાથજી મહારાજશ્રીએ લખેલા એક સચોટ પ્રત્યુત્તરની પુનરાવૃત્તિ છે.

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

સાહિત્ય—'પીયૂષપત્રિકા'નો દ્વિતીયાંક પ્રગટ થઇ ગયો શ્રીસુબોધિનીજીનો અનુવાદ ધમધોકાર છપાય છે શ્રીગુસાંઈજીના ઉત્સવ સુધીમાં કે તે પછી પહેલો ભાગ બહાર પડી જશે. એક ઉત્તમ સાહિત્ય છપાઇ પ્રકટ થયું, તે શ્રીસુબોધિનીજી દ્વિતીય સ્કંધનો પ્રકાશ છે પ્રથમ, દ્વિતીય અને તૃતીય સ્કંધના શ્રીસુબોધિનીજી પ્રગટ થઇ ગયા છે. પણ એકલા શ્રીસુબોધિનીજીથી સંતોષ થતો નથી દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ કૃત પ્રકાશથી શ્રીસુબોધિનીજીનો રસાસ્વાદ કાંઇક ઓરજ આવે છે. દ્વિતીય સ્કંધનો પ્રકાશ પ્રકટ થયો ન હતો, તે શ્રીયુત ચીમનલાલ શાસ્ત્રીજીએ અનેક પ્રતો પરથી શોધીને બહાર પાડ્યો છે એવા સમાચાર મળ્યા છે એને માટે શાસ્ત્રીજીને ધન્યવાદ ઘટે છે શુદ્ધાદ્વૈતકાર્યાલય તરફથી 'ચિત્રરત્નાવલી' પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે પહેલું આલ્બમ આવતા માસમાં પ્રકટ થશે. તેમાં પ્રથમ ગૃહના તિલકાયિતોના ચિત્રો છે કુલ બાર ચિત્રો છે શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી, શ્રીગિરિધરજી, શ્રીરણછોડલાલજી (કોટાવાળા) શ્રીગિરિધરજી (હાલની તિલકાયિત) શ્રીનટવરલાલ (અમદાવાદમાં બિરાજતું સ્વરૂપ) શ્રીદાઉજી મહારાજ, શ્રીવ્રજરાયજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના બે લાલજી, શ્રીમધુસૂદનલાલજી મહારાજ અને શ્રીબાવાસાહેબ, એ પ્રમાણે બાર સુંદર ચિત્રો છે આજ પ્રમાણે સાત ગૃહોના જુદા જુદા સુંદર આલ્બમો, વંશાવળી, ટુંક પરિચય સાથે બહાર પાડવાની યોજના કરી છે

મોટી મારડથી વૈષ્ણવ વિઠ્ઠલજીભાઇ લખે છે કે, અત્રે પોરબંદરવાળા આયુષ્માન્ ગોસ્વામી શ્રીદ્વારકેશલાલ બાવા કાર્તિક વદ ૦))ના રોજ ધોરાજીથી પધાર્યા હતા અહીં હવેલીમાં મુકામ કર્યો હતો રાત્રે તેમના શાસ્ત્રીજી ઉદ્ધવજીભાઇએ કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ, એ વિષય ઉપર બસોથી ત્રણસો શ્રોતાઓ સમક્ષ વિવેચન કર્યું હતું વ્યાખ્યાનની ઘણીજ સારી અસર થઇ હતી અહીંનું વૈષ્ણવ મંડળ પણજ ભાવુક હોઇ સિદ્ધાંતોના જ્ઞાનમાં ઘણોજ રસ લે છે શ્રીમાન્ બાવાસાહબ માર્ગશીર્ષ સુદ ૨ના રોજ અહીંથી બીજે ગામ પધાર્યા હતા.

શુદ્ધિપત્રક—ગત શ્રીપુરુષોત્તમાંકમાં દીનકિંકરે પૃથ્વીરાજજીનું હીંદી ભાષાનું ચરિત્ર છાપ્યું તેમાં ઘણી અશુદ્ધિઓ રહેલી છે, તે તેના લેખક શ્રીયુત પંડિત કાશીનાથજી લખે છે—

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१६१	१०	सोचे	साचे	,,	१५	करादियी	करादिये
,,	१२	अग्नि	दाग्नि	१६३	११	जाय	जासु
,,	२९	सेवाको	सेवाकी	,,	१७	बताया	बताए है
१६२	२	फन्दे	फंदे	,,	१७	सुरमुखधूम	मुखसु धूमगति
,,	२	इष्टदेव	इष्टदेवमें	,,	१८	एक आख	अख
,,	८	उनका	उनको	,,	,,	क्रम	कमु
,,	१२	भेपका	भेपकी	,,	१९	पृथ्वीराजपृथ्वी	पृथ्वीसुत

ઉમરગામનો આનંદ—પરમભગવદીય શેઠ હરિભાઇના ઉમરગામના દર્શન કરવાનો અવસર શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વરની કૃપાથી એક વાર ફરી આવ્યો શેઠ હરિભાઈના દર્શન ન થાય એટલે ખોટ તો જણાય, પણ શેઠ બાપુભાઇ તથા શેઠ ત્રિભુવનદાસભાઇ તથા તેમનું કેળવાયલું કુટુંબ હજુ સદ્ગત શેઠના સ્નેહમય જીવનની ઝાંખી કરાવે છે નવસારીથી શ્રીયુત બાવાભાઇ સરકાર તથા પારેખ આદિ વૈષ્ણવ ગૃહસ્થો પણ આવ્યા હતા ચીખલીથી શેઠ ભગવાનદાસભાઇ તથા ભગવદીય ઇશ્વરલાલભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા મુંબાઇથી શેઠ કાકુભાઇ સીમલાવાળા અને ભગવદીય છગનભાઇ આવવાથી ઘણોજ રંગ જામ્યો ત્રણે દિન આનન્દમાં ગયા ભજનાનન્દનો તો સમુદ્ર ઉમડયો બોરડીવાળા ભગવદીય ગોકીસનદાસભાઇ પણ પોતાને ત્યાં અન્ય વૈષ્ણવ સમાજ સાથે શ્રીમાન્‌ને પધરાવવા આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાન્ બોરડી પણ પધાર્યા હતા ઉમરગામના સ્નેહસંસ્મરણો કદી હૃદયમાંથી ખસે તેમ નથી

॥ श्रीविभुवदनानलाचार्यचरणा विजयन्तेतमाम् ॥

વિશ્વના તારણહાર શ્રીમહાપ્રભુજીના વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો
પ્રચાર કરતું સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

પુસ્તક ૬ ઠું] માઘ-ફાલ્ગુન, સં. ૧૯૮૮. [અંક ૧૧-૧૨

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

શ્રીમાન્ માન્ય પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોના હૃદયસમ્રાટ્ અને આર્ય સંસ્કૃતિના ક્ષાત્ર તેજના આદર્શ નરેશ શ્રી મેવાડ મહારાણાના ગુરુદેવ અને ભારતવર્ષના ધર્માચાર્યોમાં અદ્વિતીય અનુપમ સ્થાનને અલંકૃત કરતા પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ય શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર વિદ્યાવિલાસી શ્રીકાંકરોલીનરેશ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીવ્રજભૂષણલાલજી મહારાજશ્રીએ પોતાના જન્મદિનના શુભ પ્રસંગે પાટોત્સવમાં ગત માઘ વદ [illegible] રોજ અમોને 'શુદ્ધાદ્વૈતભૂષણ'ની પદવી તથા સન્માનોપાધિપત્ર અને સુવર્ણપદક અર્પણ કર્યા છે. આ સન્માન તંત્રીનું અંગત નથી, પણ 'શુદ્ધાદ્વૈત' અને તેના ગ્રાહકો, શુભેચ્છકો, પ્રશંસકો તથા [illegible] છે. તંત્રી તો એ પદવીને યોગ્ય થઈ અંગે શોભાવે અને એ પદવીની જવાબદારી ભૂલે નહિ તેવા આશીર્વાદ સર્વેએ આપવા રહ્યા.

નં. ૨૮૮૮, રાજામહેતાની પોળ
અમદાવાદ.

તંત્રી અને પ્રકાશક
[illegible] હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

વાર્ષિક લવાજમ બે રૂપિયા. (ટપાલ ખર્ચ જુદું.)

વાંચો ## વહેલો તે પ્હેલો વાંચો

જલદીથી મંગાવી લ્યો—માત્ર રૂ. ૧૨) માંજ તમારી લાયબ્રેરી ભરપુર થઇ જશે.

સદ્ગત દેસાઈ છગનલાલ જેઠાભાઇના સ્મારકમાં.

નીચેનાં પુસ્તકો મૂળ કીંમતથી અરધી કીંમતે માત્ર ૧૦૦ નકલોજ આપવાની છે.

આ લાભ કોને મળશે!!!

૧. જ્યાં નિયમિત રીતે ભગવદ્‌વાર્તા થતી હોય તેમને; ૨. શાળા પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને; ૩. જાહેર લાયબ્રેરીઓને; ૪. વિદ્યાર્થીઓને ઈનામમાં આપવા ઇચ્છા ધરાવતા હોય તેમને; ૫. સારા નરમા પ્રસંગે લ્હાણી કરતા હોય તેમને, તે સિવાય બીજાને આપવામાં નહિ આવે. પુસ્તકોના ૭ લોટ પાડવામાં આવ્યા છે. દરેક લૉટ પુરેપુરો મળશે. તેમાંના અમુક પુસ્તકો છુટક નહિ આપી શકાય. દરેક લોટની લેવાની કીંમત પોસ્ટેજ સાથે બતાવી છે તે વાચી વાકેફ થવું.

ગ્રાહકોને વિનંતિ:—દરેક પુસ્તકની માત્ર ૧૦૦ જ નકલો છે અને માગણી કરનાર વધુ નીકળે છે તેથી મોડી માગણી આવશે તો નકલો પુરી થયા પછી નહિ મળે અને પાછળથી પસ્તાવું પડશે માટે આ જાહેરાત વાચતાંજ તમારો ઓર્ડર લખી મોકલો નહિ તો રહી જશો.

કેટલાક ગ્રાહકો ઠેઠ સુધી ઘટાડેલી કીંમતે માગણી કરે છે તે વ્યાજબી નથી.

લોટ નંબર ૧.

૨-૦-૦	રસેશશ્રીકૃષ્ણ યાને શ્રીકૃષ્ણ ચરિત્ર ૧.
૦-૮-૦	શ્રીકાકાવલ્લભજી મહારાજનાં ૫૨ વચનામૃત ૧
૦-૮-૦	શ્રીગિરિરાજ ભૂષણ ૧.
૦-૪-૦	બ્રહ્મસંબંધ કાવ્ય ૧.
૦-૪-૦	નિત્ય નિયમના પાઠ તથા ધોળ ૧.
૦-૪-૦	શ્રીગુસાંઇજી કૃત વિજ્ઞપ્તિ ગુજરાતી ટીકા ૧.
૦-૪-૦	શ્રીનાથજીનો ઇતિહાસ ૧.
૪-૦-૦	પુસ્તક નંગ ૭.

લોટ નંબર ૨.

૨-૦-૦	૨૫૨ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
૧-૦-૦	શ્રીદ્વારકાનાથજીની પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧.
૦-૪-૦	શ્રીગોકુલનાથજીનાં ૨૪ વચનામૃત ૧.
૦-૪-૦	શ્રીમટ્ટુજી મહારાજનાં વચનામૃત ૧.
૦-૮-૦	પંચામૃત ૧
૪-૦-૦	પુસ્તક નંગ ૫

લોટ નંબર ૩.

૨-૦-૦	વસંતધમાર કીર્તન ૧.
૧-૦-૦	વિવિધ ધોળ તથા પદસંગ્રહ ભા. ૧, ૧.
૦-૪-૦	શ્રીકૃષ્ણચરિત્ર બાળવીવા ૧.
૦-૪-૦	શ્રીકૃષ્ણ કીર્તનમાળા ૧.
૦-૪-૦	પદ્મનાભદાસજીનાં પદ ૧.
૦-૩-૦	શરદપૂનમ ૧.
૦-૧-૦	વલ્લભાખ્યાન ૧.
૪-૦-૦	પુસ્તક નંગ ૭.

લોટ નંબર ૪.

૧-૪-૦	૮૪ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
૧-૦-૦	શ્રીસૂરદાસજીનું જીવનચરિત્ર ૧.
૧-૦-૦	વિવિધ ધોળ તથા પદ સંગ્રહ ભા. ૨ જો
૦-૫-૦	શ્રીગોવર્ધનનાથજીની પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧
૦-૨-૦	શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર ટીકા ૧.
૦-૨-૦	શ્રીયમુનાજીનાં ૪૦ પદ ૧.
૦-૨-૦	દીનતા આશ્રયનાં પદસંગ્રહ ૧.
૦-૩-૦	રાસપંચાધ્યાયી ૧.
૪-૧-૦	પુસ્તક નંગ ૮.

લોટ નંબર ૫.

૧-૦-૦	શ્રીપુરૂષોત્તમસહસ્રનામસ્તોત્રની ટીકા ગુજરારીમાં ૧.
૧-૦-૦	ષોડશ ગ્રન્થની ગુજરાતીમાં ટીકા ૧.
૧-૦-૦	શ્રીગોકુલેશજીનાં ધોળપદ ૧.
૦-૬-૦	નિત્યનિયમના પાઠ મૂળમાત્ર ૨૮ ગ્રન્થ
૦-૨-૦	આટલું વાંચજો ૧.
૦-૨-૦	કન્યાશિક્ષણ ૧
૦-૨-૦	પુષ્ટિપ્રવેશ ૧.
૦-૨-૦	ભક્તિપોષણ ૧.
૦-૨-૦	શ્રીહરિરાયવચનામૃત ૧.
૪-૦-૦	પુસ્તક નંગ ૯.

લોટ નંબર ૬.

૧–૦–૦ શ્રીહરિરાયજી કૃત શિક્ષાપત્ર ૧.
૧–૪–૦ શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતા મૂળ શ્લોક, અન્વયાર્થ, શબ્દાર્થ તથા વિસ્તૃત વિવેચન સાથે ૧.
૦-૧૦-૦ નિત્યનિયમના ૩૫ પાઠ મૂળ શ્લોક માત્ર
૦–૬–૦ શ્રીઅષ્ટાક્ષર મંત્રની ટીકા ૧.
૦–૬–૦ શ્રીવલ્લભાષ્ટક ગુજરાતી ટીકા ૧.
૦–૪–૦ શ્રીગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર ૧
૦–૨–૦ વૈષ્ણવબાળશિક્ષા ભા. ૨, ૧.
૪–૦–૦ પુસ્તક નંગ ૭

સુચના:—વધારે પુસ્તકો મંગાવનારાઓએ રેલવે પારસલથી મંગાવવાં જેથી ખર્ચ ઓછું આવશે. દરેક લોટ ચાર રૂપીઆનો છે, છતા બે રૂપીઆમાં ૫૦ ટકા ઘટાડામા મળશે ટપાલ ખર્ચ ૧૨ થી ૧૪ આના સુધી જુદું આવશે.

લખો:—લલ્લુભાઇ છગનલાલ દેસાઇ.
રીચીરોડ નં. ૧૧૦; મેડા ઉપર—અમદાવાદ.

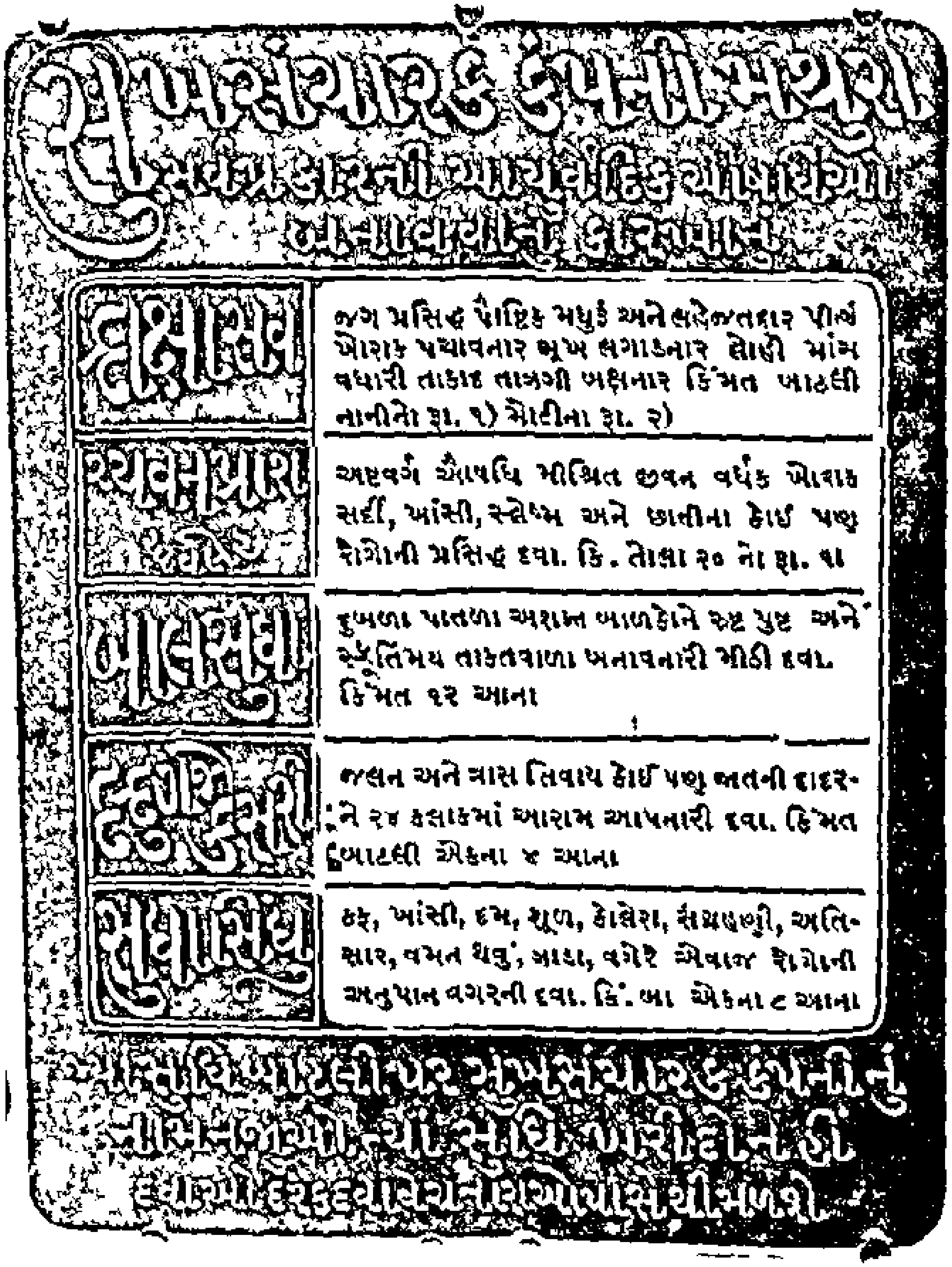

શ્રી [illegible] સંચારક કંપનીની [illegible]
[illegible] આયુર્વેદિક ઔષધીઓ
[illegible]

દ્રાક્ષાસવ	જગ પ્રસિદ્ધ પૌષ્ટિક મધુર અને લહેજતદાર પીણું ખોરાક પચાવનાર ભૂખ લગાડનાર લોહી માંસ વધારી તાકાદ તાજગી બક્ષનાર કિંમત બાટલી નાનીનો રૂ. ૧) મોટીના રૂ. ૨)
ચ્યવનપ્રાશ	અષ્ટવર્ગ ઔષધિ મીશ્રિત જીવન વર્ધક ખોરાક સર્દી, ખાંસી, શ્લેષ્મ અને છાતીના કોઇ પણ રોગોની પ્રસિદ્ધ દવા. કિ. તોલા ૨૦ નો રૂ. ૧
બાલસુધા	દુબળા પાતળા અશક્ત બાળકોને હૃષ્ટ પુષ્ટ અને સ્ફૂર્તિમય તાકતવાળા બનાવનારી મીઠી દવા. કિંમત ૧૨ આના
[illegible]	જલન અને ત્રાસ સિવાય કોઈ પણ જાતની દાદરને ૨૪ કલાકમાં આરામ આપનારી દવા. કિંમત બાટલી એકના ૪ આના
સુધાસિંધુ	કફ, ખાંસી, દમ, શૂળ, કોલેરા, સંગ્રહણી, અતિસાર, વમન થવું, ઝાડા, વગેરે એવાજ રોગોની અનુપાન વગરની દવા. કિં. બા. એકના ૮ આના

[illegible] સંચારક કંપનીનું
[illegible]
[illegible] દવા વેચનારાઓ પાસેથી મળશે.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધોળપદસાગર-ભાગ-૧. નિત્યપાઠના ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રન્થો, શ્રીવલ્લભાખ્યાન, શ્રીયમુનાજીના ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદદાસજીકૃત રાસપંચાધ્યાયી, ભ્રમરગીત, મુળપુરુષ, નિત્ય ૫૬ (જગાવવાથી પોઢાડવાના) જન્માષ્ટમી વધાઇઓ, દીનતા આશ્રયનાં પદો, શ્રીભાગવતનાં ૧૬ ધોળ, ભક્તિપોષણ, શ્રીનાથજીનાં ધોળ, શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી, સાતબાળક શ્રીવલ્લભકુલ આદિનાં ૪૦૦ ધોળ આવો સાતસો પાનાનો સસ્તામાં સસ્તો ગ્રન્થ સંપ્રદાયમાં પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર છપાઇ, આકર્ષક બંધાઇ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ. ટ. ખ. સાત આના.

૧. **શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર**—અઢીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળ અને શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીરઘુનાથજી તથા શ્રીગોપેશજીની સંસ્કૃત ટીકાઓનો સવિસ્તર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અઢી આના, ટ. ખ. દોઢ આનો.

૨. **શ્રીગોકુલેશજીનો માલાપ્રસંગ**—શ્રીગુસાંઇજીના ચોથા લાલજીએ જહાંગીરના જુલ્મો સામે જે અહિંસક ધર્મયુદ્ધ વર્ષો સુધી ચલાવ્યું તેનું જલહલતી ભાષામાં વર્ણન યુક્તિઓથી સમજાવેલું તિલકનું રહસ્ય, સચિત્ર છતાં નોછાવર માત્ર દોઢ આનો.

૩. **શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર**—નવ લાખ શ્લોક લખનારા મહાન્ વિદ્વાન ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર તથા શિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ વિષે કવિ શ્રીદયારામભાઇનો ગ્રંથ છે. વિષ્ણુદ્રોહીઓને તમાચો મારનાર આ ગ્રંથની નોછાવર માત્ર ચાર આના.

૪. **જયવસંત મહાત્યાગ**—પંચમપીઠાધીશ્વર શ્રીગોવિન્દપ્રભુએ જયપુર નરેશના જુલ્મોસામે ચલાવેલી લડતનો ઇતિહાસ વાંચી રડવું આવશે, ખુશી થશો, હસશો, સચિત્ર છતાં નોછાવર ચાર આના. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૫. **વૈષ્ણવ નરેશો**—હિન્દમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રાજામહારાજાઓનાં અદ્ભુત વૃત્તાંતો, સચિત્ર મૂલ્ય ત્રણ આના. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૬. **આટલું તો કરજોજ**—ટુંકામા ટુંકો નિત્ય નિયમ ૩૦ ત્રીસ હજાર નકલો વેચાઇ ગઇ છે. નોછાવર એક આનો. ટ. ખ. ૦॥

૭. **ન્યાયમૂર્તિનો ચુકાદો**—મુંબઇના ન્યાયમૂર્તિ રાંગણેકરે ભગવદીય શેઠ પ્રાગજી સુરજીએ માંડેલા કેસમાં આપેલો અગત્યનો ચુકાદો વાંચીને સુધારકોની પોલ પારખી શકશો અને પુષ્ટિમાર્ગની જાહોજલાલી જોઇ શકશો. મૂલ્ય બે આના. ટ. ખ. એક આનો.

૮. **પંચાવન પાઠનો ગુટકો-પૂઠ રંપેડ**—નિત્ય નિયમના પંચાવન પાઠોનો આ ગુટકો (જે પહેલા ૪૨ પાઠનો હતો તે) મોટા અક્ષરમાં હમણાં ફરી છપાવ્યો છે. મૂલ્ય માત્ર ત્રણ આના. ટ. ખ. એક આનો.

૯ **શ્રીનટવરલાલનાં ધોળ**—રાજનગરવાળા ચિ. ગો. શ્રીરણછોડલાલ બાવા-ગાદશનાનિત્યલીલાસ્થ અ. સૌ. વહુજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય બે આના. ટ. ખ. અધો આનો.

હિસ્ટેરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

શ્લોક, ૩૦ હીસ્ટિરિયા, મૂર્છા, ચકરી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અગોરકન ઐક્ષી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીંમત ૧-૪-૦ પો. જુદું, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના ૦।. શાળા માટે નવું મંજુર કીં. ૦।~ પો. ૦)~.

હીસ્ટિરિયા રોગનીજ રામબાણ,

પેટંટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં ફાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રંગુન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીંમત રૂ. ૫) પો. જુદું.

છગનલાલ લલ્લુભાઇ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડૉકટરોની દવા ખાઇ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), મુખાઇના ઝાડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દિને આશીર્વાદરૂપ થઇ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણ દવા માટે રૂબરૂ મળો યા સવાલપત્ર મંગાવો.

પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર કે. જે. પટેલ એન્ડ સન્સ, સ્મુ સ્પેસીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

☞ મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર હાંડીગરાની પોળમાં તંબુગરાની ખડકી ઘર નં. ૭૫૬.

અમારૂં બાલાનંદ બચ્ચાઓને હૃષ્ટ પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કીં. ૦-૧૨-૦ પો. જુદું.

અલ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ દેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના
ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાંચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ હાથ લાગશે. શરીરની પાયમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પાયમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો સુઝશે.

કિંમત કે પોસ્ટ કાર્ડ પણ નહિ, માત્ર તમારૂં પુરૂં સરનામું મોકલી મંગાવો.

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔષધાલય—જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

॥ श्रीकृष्ण ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
मत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્યમન્દિર”

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને સુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અમ્હારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—વ્રજ, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલાં (મુદ્રિત થયેલા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતા સુન્દર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીગુસાંઈજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ પા ગો. બાલકોના રંગબેરંગી સુન્દર ફોટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગબેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેડો તથા પોકેટડાયરી, ગીતાડાયરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોછાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છબીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફ્રેમો મઢાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી બાઈન્ડીંગ (જીલ્દ) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“श्रीभक्तिमार्गीय–पुस्तकालय.”

(વાચન—વિભાગ)

મુંબઈ તથા આજુબાજુના પરાંઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરબેઠાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફ્રી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ ત્હેનાં ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસાર કોઈ પણ ધર્મજીજ્ઞાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એડ્રેસે લખો યા મળોઃ—

મળવાનો સમય—
સવારના ૭ થી ૧૨ (સ્ટા. ટા.)
સાંજના ૪ થી ૮ „

ગિરિધરલાલ જ. શાહ, બુકસેલર.
વ્યવસ્થાપક—
‘ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’,
ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મન્દિર, ભુલેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.

તા. ક:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી/વખતે પોતાનું નામ તથા એડ્રેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપીયાની અંદરની કીંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાંપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુત્તર માટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટસ્ટાંપ બીડવા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરના ઠેકાણે ભરી શકાશે

ોંધી લો !　　　　　　　　　　　　　　　　ઉત્સાહી બનો

સાહિત્યવિલાસી વૈષ્ણવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠ્યા જ પુસ્તકો મળતાં હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા ગ્રંથો પ્રકટ થઇ ગયા છે કે એક જીન્દગીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, વ્રજ, હીંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા ગ્રંથો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોછાવર લઇને મોકલી આપે છે. નહિ મળતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખશો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી. સૂચીપત્ર મંગાવી લો.

ઠે. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,
મુ. નડિયાદ, (જી. ખેડા),

અનેક રોગની એકજ દવા !!

જીવન ધારા !!

ઝાડા, ઉલ્ટી, ચુંક, શરદી, સુળ, અજીર્ણ હાથ-પગ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, દાંત-દાઢની પીડા, સંધીવા, તાવ, પાણીનીકાર, ઝેરી ડંખ, પ્રમેહ, પ્રદર, અશક્તી, ખાંસી, દમ, શ્વાસ, ગડગુમડ, ઘા, લોહી નીકળવું, હરસ, મોઢાની તથા ખાળકુવાની દુરગંધ, ચાંચડ-માકડની પીડા ઇત્યાદિ અનેક રોગોની ખાત્રીપુર્વક દવા.

કી. મોટી બા. રૂ. ૧॥ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૦॥.

જેનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દુર કરનાર અનુભવસીદ્ધ ઉપાય છે. રજસ્વલાની તકલીફ, સુવારોગનો ત્રાસ, શ્વેત યા રક્ત પ્રદર, કસુવાવડ, પેટ તથા પેડુ-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણજ્વર, બદન ફીકું, બેચેની, દુખાવો, ઇત્યાદિ અનેક અડચણો દુર કરી બદન તાકાદથી ભરપુર અને ગર્ભ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂા. ૨) બે.

દરેક દવાનુ ટપાલ ખર્ચ જુદું. રજીસ્ટર ટ્રેડમાર્ક "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો દરેક ઠેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

તન–મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી ભરપુર

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

મૃદ્વિકારિષ્ટ–શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

☞ તાકીદે તાકત–તાઝગી મેળવવા

ગ્લાની મટાડનાર
થાક ઉતારનાર
ઉંઘ લાવનાર
દસ્ત સાફ લાવનાર
ભુખ લગાડનાર
તાકત આપનાર
તાઝગી બક્ષનાર

ક્ષય, ખાંસી, મૂછો અને સાધારણ નબળાઇમાં તાકીદે આરામ આપનાર

લિજ્જતદાર દવા

'ઝંડુ' દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્ક્સ લી૦—મુંબઇ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજંટ–ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ અધીના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઇ ગયો !　　　　　　　　　　અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીજીવનેશાચાર્યજી મહારાજે આ સરલમાં સરલ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના "ઉપદેશવિષયકશંકાનિરાસવાદ" ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમાં છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમાં રજુ કરીને તેનું અપૂર્વ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિષે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમાં છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહોતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન રા. રા. હરિકૃષ્ણ વીરજીશાસ્ત્રીએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાંજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

આ ઉપરાંત વૈષ્ણવ દ્વિજો માટે (યજ્ઞોપવીત ધારણ કરનારા માટે) સવારથી સાંજ સુધીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા બે પુસ્તકો વૈષ્ણવ દ્વિજાહ્નિક હીંદીમાં તથા ગુજરાતીમાં તૈયાર છે.

હીંદી મૂલ્ય—એક રૂપીઓ.　　　　ગુજરાતી મૂલ્ય—આઠ આના.

ઠેકાણું:—**શ્રીલાલબાવનું મંદિર.**
ભૂલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશો ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, બીન, દીલરૂબા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીંત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાથી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઇ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોટેશનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોછાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના

ઠે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.
મુ. ધંધુકા. (જી. અમદાવાદ.)

'શુદ્ધાદ્વૈત' જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા, નો. રૂ. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીંમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો શીલીકમા હશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાંધેલા રૂ. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા. બે રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાર્યાલયમાં..

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. **રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રન્થ**—'શુદ્ધાદ્વૈત'માં પ્રકટ થઇ ગયેલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોછાવર માત્ર ત્રણ આના, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૨. **ભાવભાવના**—(ભા. ૧લો) શ્રીદ્વારિકેશ્વરજીકૃત આ ગ્રંથ એક અહર્નિશ વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોછાવર પછીથી જણાવાશે.

૩. **પંદરમો અધ્યાય**—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક શ્લોક પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૪. **આટલું તો કરજો જ**—નિત્યનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોછાવર માત્ર ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો.

૫. **'ભક્તિપોષણ'**—કવિશ્રી દયારામભાઇનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કીં. ૧ આનો, ટ. ખ. ૦॥ આનો

૬. **ભક્તવાણી**—ડાકોરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. ઇચ્છારામ ભટ્ટજીએ સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૭. **શ્રીગોકુલેશવચનામૃત**—શ્રીગોકુલનાથજીનાં વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોછાવર પછીથી.

૮. **ચોરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો**—છપાય છે. વાંચવાલાયક ગ્રંથ. નોછાવર પછીથી.

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી ઘણી હોવાથી આ સાહસ ખેડ્યું છે. મૂલ્ય ત્રણ આના, ટપાલ ખર્ચ એક આનો.

ઠે. ૧૭૪૮, રાજામહેતા પોળ—અમદાવાદ

છપાય છે — નામ નોંધાવો !!

શ્રીસુબોધિનીજીનો સંપૂર્ણ અનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રસિકવર શ્રીકૃષ્ણની ભાવાત્મક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમદ્ભાગવતનું મહત્ત્વ જાણવું હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેજ નામ નોંધાવો. સમ્પૂર્ણ શ્રીસુબોધિનીજીનું સરસ ભાષાન્તર અને વિષમ પદાર્થોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ એકજ અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે. અલ્પજ્ઞ વિદ્વાન્ એ ઉભયને સમાન રીતે આ ભાષાન્તર અને ઉપકારક છે.

ગ્રાહકોને નામ નોંધાવવાના સ્થળો:—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય—નડિઆદ ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ પીતાંબરદાસ વડવાકુવા—નડિઆદ. ૩ જોષી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—જામનગર. ૪. શુદ્ધાદ્વૈત કાર્યાલય, રાજામહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

श्रीकृष्णाय नमः।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम्। (छान्दोग्यश्रुतिः)
विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषच्छ्रुतिः)

विज्ञापनम्।

लुप्तप्राय प्राचीन संस्कृत साहित्य, एवं राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं श्रीहरिरायजी—आदिके ग्रन्थों का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामक मासिक पत्रिका विद्वत्केसरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज एवं विद्वद्रत्न गोस्वामी श्री ६ श्रीव्रजरत्नलालजी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायता संस्कृत पाठशाला—नडियाद; हरिशङ्कर शास्त्री, बडामंदिर—नडियाद; शुद्धाद्वैत कार्यालय—अमदावाद.

हरिशङ्कर शास्त्री.
मीमांसाशास्त्री, वेदान्त विशारद M. R. A. S. व्यवस्थापक.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૧.] માઘ, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩. [અંક ૧૨.

प्राचीन कीर्तन.

पतंग उडायवेको पद ॥ राग अडानो ॥ कान्ह अटा चढ चंग उडावत मैं अँगनहूतें हेर्यो ॥ लोचन चार भये नंदनंदन कामकटाच्छ कियो भटु मेरो ॥१॥ किधौं समझाय सखीरी, अटक न मानत यह मन मेरो ॥ नंददास प्रभु कबधौं मिलेगो खींचत किधौं मन मेरो ॥२॥

सीत विदाके पद—नईरी ऋतुको आगम भयो सजनी जबतें विदा भयो हेम विरहनिके भागिनतें सजनी आवत चल्यो हे वसंत ॥१॥ तन सोहाय त्रीय चले भर भाव ताहीको कंथ ॥ चत्रभुज प्रभु पिय तारी वजावत या जाडेको आयो अंत ॥२॥ पद ॥ ससक रही अपने भवनमें चार मासको कीयो विहार ॥ नंद सुवन व्रजराज सांवरो मोह्यो चतुर भजनार १॥ कब आवेंगे मेरे घरमें विधनासों मांगुं अचरा पसार ॥ कुंभनदासप्रभु गोव घर जाडो चल्यो दोड कर झार ॥२॥ पद ॥ मदन मतवारो नागर नवल प्रेमरस बस व्हे नंद दुलारो ॥१॥ गये हो तुम भवन पराये हमसों नित करत तुम टारो ॥ सोय रही गृह अकेली सीत दहत तनवारो ॥२॥ आज कीयो कर जोर मीलन हित पायो हे प्रीतम प्यारो परमानंदप्रभु या जाटेको दीजीये देशनिकारो ॥३॥ पद ॥ मदन मनकी तू री मतवारो ॥ नींद निरांक करन सब भर जोबन अति भारो ॥१॥ तेसिव सीत परत सखी हमपर कांप तन सारो ॥ सोवा सेज दबकके साजसें अलसत अंग उघारो ॥२॥ कब आवें मेरे गृह वह प्रान हमारो ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको कीजे मुंह सब कारो ॥३॥ पद ॥ वसंत आगमं नंदनंदन जो पाउं ॥ कुंवर कपट बनाय जतसों नीके गिरधरलाल लडाउं ॥१॥ अति प्रफु मन हरखत आनंद अपने पियसों उरज मिलाउं ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको देश निकास क ॥२॥ पद ॥ कान तीहारे राज वसत हो सब सुख चैन दीखाई देत नही कर या छिन ॥ समीप मंगल मित अंत न होव जु जान वीतत वरज निसादिन ॥१॥ भूर भाग्य निज जन व्रजवासी कहावत नारीन धन्य ॥ परमानंद या सुखके कारन सदा वसंत रहत वृंदावन ॥ पद मोह्यो कहूं प्रानपिया मेरो प्यारो हों तलपतहूं उन विन सजनी आयो न नंदकुमारो ॥१॥ सि कियो तन सारो सखीरी मग जोवत भयो भवन उजारो ॥ रहे थकत जाय कहुं आजहू सोत रस सारो ॥२॥ हमको जोग विधाता दीयो उनकों भोग दियो सारो ॥ सूरदासप्रभु या जाडे

दीजे देस निकारो ॥३॥ पद ॥ मदन मन मतवारो ही कीनो ॥ मधुव्रत होय गिरिधरन जबही जब वदन कमल रस भीनो ॥१॥ जाके कारन सुनरी सजनी जब आरज पथ छीनो ॥ मया करी सोई तुमने कीनी ज्यों कुंदनमें मीनो ॥२॥ वेसी प्रीत हती मेरे उनसों प्रान प्रकटकर दीनो ॥ वेर वेर हमने रस जान्यो उन सोतन रस चीन्यो ॥ कहा बिरहिनी सीत लग्यो अति मो मन जात न दीनो ॥ द्वारकेशप्रभु या जाडेको देसनिकारो दीनो ॥४॥ पद ॥ नवल कुंवर व्रजराज लाडिलो कहे जाडो मोहे अधिक सोहाय पहेरे कबाय ओढ लई फरगुल तोहू सीत सतावन आई ॥१॥ अचरज भये सुनतही लछमननंदन कनक अंगीठी धरी मगाई ॥ पुनि जिय सोच मंगाय ओढाई भज गई सीत हँसे जदुराई ॥२॥ एसे परम कृपाल दयानिधि बीसरत नांही सुधि करत सदाई ॥ श्रीपुरी गिरिधारीकी वातें कहीं जाने कोउ देहों बताई ॥३॥

श्रीदेवदीपोत्सवाङ्क.

श्रीनन्दनन्दनकरुणान्वितेषु वेदशास्त्रसंपन्नशास्त्रिमहोदयेषु वसन्तरामशर्मसु—सप्रणामं श्री........स्मरणानि, शमत्र । परञ्च सप्रेमाश्चर्यमवलोक्य श्रीदेवदीपोत्सवाङ्कं प्रसन्नतरचेतसावेद्यत इद मुत्कण्ठापरवशेनेति तत्रभवतां प्रकृतिप्रवृत्तीर्विभाव्यालोच्य च वार्षिकायव्ययमाधान्त सहसैव स्फुरति हृदये यद्भवाद्भिः कथंकार प्रकाश्यन्ते प्रतिवर्षमेतादृशा विशेषाङ्का इति । निश्चयस्तु कश्चि-तस्तत्र यदलौकिकोयं भगवतो वैश्वानरस्यानुग्रहविशेष इति । अन्यच्च ध्येयमनुसंधातव्यं तर्हि नत्र परिश्रमादिकं विचारणीयमिति ब्राह्मणदेहभाजां सहजस्वभावाद्ब्राह्मणजन्मालंकुर्वद्भिस्तत्रभवद्भि-रिदं साहसमारब्धं स्यादिति भासते । करुणापारावरस्तत्र प्रयच्छति करुणाकटाक्षमित्यनुभाव्यते वैष्णवमहोदयास्तु कुर्वन्ति करिष्यन्त्यपि च श्रीमतां निःस्वार्थपरिश्रमेऽस्मिन्समस्तवैष्णवसमाजस्यैक एव मासिकपत्रे सोत्साहं सहायमिति प्रार्थयतो प्रभुपादारविन्दं भवदीयनरोत्तमस्य सप्रणामं श्रीस्मरणानि ॥

સરળ હૃદયની વાત.

(ઢાળઃ—આસો માસો શરદ પુનમની રાત જો !)

સુણો વ્હાલા ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડલી ઘેલી બની છે ત્હારા તાનમાં,
મહિડા મીઠા મ્હારા ચાખો આપ જો ! વ્હાલજીની છેડો વેગે વાંસળી.

એ વાંસળીએ જાદુ કર્યો અદ્ભુત જો ! એ માટે સુણો સરલ હૃદયની વિનતિ,
સુણવા ઉભી પાસે પેલી ગાય જો ! આજે આતુર આભો પેલો ચાંદલો.

દોડી આવી અહીંઆ વેગે વ્રજનાર જો ! કુમકુમ લાવી પૂજવા પ્રીતથી,
પ્રાણી જગનાં આતુર સુણવા સૂરજો ! શાને શ્યામ ! કરો છો વિલંબ રે !

સુણો વ્હાલા ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડલી ઘેલી બની છે ત્હારા તાનમાં.

મૂળજીભાઈ પીતામ્બરદાસ શાહ.

प्रश्नोत्तर विचारग्रन्थ.

[ભક્ત કવિ શ્રીદયારામભાઈકૃત આ ' પ્રશ્નોત્તરવિચારગ્રંથ ' ગોલોકવાસી જોષી છોટાલાલ ઉર્ફે નાથજીભાઇ ગિરિજાશંકરના સંગ્રહમાંથી ઉતાર્યો છે.]

પ્રશ્ન:—આ કલિકાળને વિષે જે મનુષ્ય છે. તેમને સંસારરૂપ સમુદ્રના પૂરમાં તણાતા વા ડુબતા જનોને તરવારૂપ મુખ્ય શ્રેષ્ઠ સરલ ઉપાયનું સાધન શું છે?

ઉત્તર:—વેદ, ગીતા, વ્યાસસૂત્રને શ્રીમદ્ભાગવતાદિ—સત્શાસ્ત્ર પુરાણ, ઇતિહાસ, મહાભારતાદિ સર્વનો સત્ય નિચોડ સિદ્ધાંત સર્વ સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તથા શ્રીશુકાચાર્યે, શ્રીમદ્વેદવ્યાસાદિક જ્ઞાની ભક્તરાજ મુનીન્દ્રોએ એજ નિર્ણય કરેલો છે કે—મુમુક્ષુ જનોએ સર્વના મૂલાચાર્ય પરબ્રહ્મ પરાત્પર ત્રિગુણાતીત, અક્ષરાતીત, કાલાતીત, સર્વાતીત, પરથી પર એવા તો એક શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ, જે અગ્રણિત પૂર્ણ પરમાનંદ સદા સત્ય નિત્ય સ્વયં બ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માનેજ કહેલા છે, ને તેમની સદાસર્વદાની અક્ષયપ્રાપ્તિમાજ એક પરમાવધિ (અતિશય) સુખાનંદ છે, એમ જાણી તેમની પ્રિયતારૂપ પ્રસન્નતા મેળવવા માટે મુખ્ય સારરૂપ એકજ ઉપાય શ્રેષ્ઠ છે કે, શ્રીસદ્ગુરુદ્વારાએ અનન્યભાવે શરણે જઇ સર્વાત્મનિવેદન કરવું અને તેમનું ભજન (સેવન) સ્મરણાદિ ભક્તિએ પ્રાપ્તિવંત થઇને પ્રવર્તવું, એજ મુખ્ય ઉપાય છે. સર્વ સાધનોના ફળરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની સ્વધર્મસહિત જ્ઞાનવૈરાગ્યયુક્ત ભક્તિ કરવી. એજ કલિમા સારી રીતે જલદીથી તરી શકાય એવો ઉપાય કહેલો છે. જ્યાં સુધી અન્ય પદાર્થ ઉપર આસક્તિ હોય છે, ત્યા સુધી તેને પ્રભુ ઉપર પૂર્ણ પ્રેમ-રૂપરંગ લાગતો નથી અને સત્સંગ કર્યા વિના અનિત્ય પદાર્થ ઉપરનો અજ્ઞાને કરીને થયલો મોહ ટળતો નથી. માટે સત્સંગરૂપી પગથીએ ચડવાથી મોક્ષની શ્રેણીએ સરળતાથી ચડાય છે.

પ્રશ્ન:—સર્વ સાધનોમા અગ્રગણ્ય મુખ્ય સાધન કયું કે જે દ્વારાએ સર્વફળની પ્રાપ્તિ થઇ શકે?

ઉત્તર:—સર્વ સાધનોનું પ્રથમ પગથીયું મૂળ પાયારૂપ તો સત્સંગજ છે ને તે સત્પુરુષના સમાગમથી સત્ચિદાનંદની પ્રાપ્તિના સર્વ ઉપાયો સહજમા જાણવામાં આવે છે. વેદાદિકથી આરંભીને સર્વ શ્રુતિ ઉપનિષદ્ સંહિતા સ્મૃતિપુરાણ, ધર્મશાસ્ત્ર અને શિષ્ટપુરુષોએ સ્થાપન કરેલા સર્વ સિદ્ધાંતોના સારરૂપ મુખ્ય ૩ સાધનો છે—૧ કર્મ, ૨ જ્ઞાન, ૩ ભક્તિ. આ ત્રણે ઉપાયો અન્યોઅન્ય સહાયકારી છે, ને એથીજ વૈરાગ્યાદિ શુભ સર્વ લક્ષણો સાથે, બ્રહ્મને ઉદ્દેશીને નિષ્કામ બુદ્ધિથી શ્રીકૃષ્ણાર્પણ મતિએ પરાભક્તિ વિરહાત્મકભક્તિ સારી રીતે માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સર્વથી અધિક સ્નેહાત્મક પરબ્રહ્મને વિષે થાય છે, માટે સદાસર્વદા સત્સંગ કરવો ને દુઃસંગનો ત્યાગ કરવો. જેવી રીતે આગ્રહપૂર્વક સત્સંગ કરવાની આવશ્યકતા કહી તેટલાજ ભાવથી આગ્રહપૂર્વક દુઃસંગનો ત્યાગ કરવાની પણ ફરજ સમજવાની છે. જુઓને ૬૦૦૦૦ સાઠહજાર વર્ષપર્યંત શ્રીયમુનાજળમાં રહીને તીવ્ર તપાચરણ સૌભરી ઋષિએ કર્યું હતું, તેમને એક સહજવાર મત્સ્યનો રમણપ્રસંગ દૃષ્ટિએ પડવામાત્રથી તે સર્વ વટાવીને, સુરૂપ ધારણ કરીને, માન્ધાતા રાજાની ૫૦ કન્યાઓને પરણી, મહદ્બ્રહ્મચર્યયુક્ત તપનું પુણ્ય ખર્ચી નાખ્યું. હરિવંશપુરાણમા કથા છે કે, વસિષ્ઠ વિશ્વામિત્રનો ત્યાં સંવાદ છે કે, અનેક વર્ષનું તપશ્ચર્યાનું વિશ્વામિત્રે અર્પણ કરેલું ફળ તથા લવ સત્સંગતિ જેટલું વિશ્વામિત્રને વસિષ્ઠજીએ આપેલું ફળ વધી પડયાનો ન્યાય શ્રીશેષજીએ તુલા કરીને ભૂમિભારન્યાયે જેટલા વખતમા ન લાગવાને કરી બતાવ્યો ત્યારે આપોઆપ અન્યોન્ય સત્સંગનો પ્રભાવ બહુજ બલિષ્ઠ છે, એમ સમજ્યા.

પ્રશ્ન:—આપ કહો છો તેવા સત્સંગ કરવા લાયક ઉત્તમ સન્ત પુરુષોને કેમ ઓળખી શકાય? તે સમજવા સારૂ તે મહત્પુરુષોનાં લક્ષણ કહો.

ઉત્તરઃ—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની કથાને વિષે નિરંતર આસક્ત રહેતા હોય, ને વેદવેદાંગ શાસ્ત્રોક્ત સ્વધર્મને વિષે નિષ્ઠ હોય, ને પંચ વિષયને વિષે આસક્તિરહિત હોય, સચરાચર બ્રહ્મદૃષ્ટિ રાખી બ્રહ્મથી વ્યતિરિક્ત કોઇ પદાર્થ ઉપર અહંતામમતા ન રાખે, ને કોઈની નિંદા કે સ્તુતિ ન કરે, જેના દર્શન થતાં માત્રથી પ્રપંચનું ભાન ભૂલી જવાય, ને ભગવંતનું સ્મરણ થાય, સમગ્ર જગતનું ભલું થાય–હિત થાય એમ ઇચ્છી તેમ કરવાને પ્રવર્તે, અભિમાનથી રહિત હોય, ભગવદ્ગુણાનુવાદ કથન કરતાં રોમરોમ પુલકિત ગાત્ર થઇ નેત્રે પ્રેમાશ્રુ વહે, ગદગદ્‌કંઠિત હૃદય રૂંધાઈ જાય, કોઇનો દ્રોહ કે ઈર્ષ્યા ન કરતાં શક્તિ પ્રમાણે મદદ કરી બીજાનું દુઃખ ભાગે, મનઈંદ્રિયને જીતે, માયિક પદાર્થમા મોહ ન પામે, ભગવાનની લીલામાં મન અખંડ સંલગ્ન રહે, પરોપકાર કરવામા અતિઆતુરવંત થાય, અત્યંત કરુણાદૃષ્ટિ સર્વપર રાખે, સ્વભાવ શાંત હોય, સહેજે સમગ્ર જગતને વ્હાલા લાગે, સંતોષવૃત્તિ હોય, અનન્યભાવે શ્રીકૃષ્ણને ભજે, વિત્ત-ગૃહાદિ વિષે અનાસક્ત હોય, પ્રભુ ઉપર દૃઢ વિશ્વાસથી પ્રીતિ રાખી કપટરહિત સેવા સ્મરણ સત્સંગ કરે, એ ઇત્યાદિક લક્ષણોથી યુક્ત હોય, જેનો સમાગમ, દર્શન, સ્પર્શ, ભાષણ આદિ થવાથી પ્રપંચની વિસ્મૃતિ થઈ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન ઉપર પ્રીતિમાં વધારો કરે ને તે શ્રીકૃષ્ણનું કીર્તન પોતે કરતા હોય, ને બીજાને કરાવતા હોય, તેવા હરિભક્તોનો સતસંગ નિત્યમેવ કરતા રહેવો. એ પ્રમાણે સત્પુરુષને ઓળખીને સમાગમ કરવો, સત્પુરુષોનો સમાગમ કરવો એ મોક્ષનું દ્વાર છે. એમ કહી "તાદશી જન તેને જાણીયે જેહમા એહવા ગુણ હોય" એ પદ ગાઈ બતાવ્યું હતું.

પ્રશ્નઃ—અસત્ પુરુષને ઓળખવાનાં ચિન્હ શાં છે?

ઉત્તરઃ—દુષ્ટ સંગત ઓળખવાને તો અનેક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ હોય છે. તથાપિ વધારે સમજવું હોય તો જેનો સમાગમ કરવાથી શ્રીભગવાનને વિસ્મૃત કરાય, ને પ્રપંચાસક્તિ કમતી ન થાય તો તે જરૂર જાણવો કે આ સત્પુરુષનો સમાગમ નથી. બગલાની માફક ઉપરથી ઉજળા, પણ અંતરમા કાળાશ, ઘર, સ્ત્રી ધન, પુત્રાદિકની આસક્તિવાળા હોય ને કામ–ક્રોધાદિક અધર્મનો જે સર્ગ તેણે વ્યાપ્ત એવા જે હોય તે અસત્પુરુષ (અસંત) જાણવા, ને તેમના પ્રસંગથી અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને પ્રાપ્ત થવાય છે.

પ્રશ્નઃ—અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને ભેદે એવા કાંઈ ઉપાય છે?

ઉત્તરઃ—અવિદ્યા (માયા) તે પણ એક બ્રહ્મની શક્તિ છે ને તે દુર્જેય જીતી ન શકાય, એવી છે. તથાપિ તે માયાના કર્તા સર્વ અનંતશક્તિવાળા એવા પરબ્રહ્મ છે. તેને તે નિરંતર આધીન (વશ) રહે છે, માટે તે પરાત્પર પુરુષોત્તમને શરણે અનન્યપણે રહેનારને માયાનું બંધન રહેતું નથી. भगवद्गीतायां मम माया दुरत्यया मामेव ये प्रपद्यंते मायामेतां तरंति ते ॥ વળી માયાથી રહિત એવા ભગવનિષ્ઠ સત્પુરુષજનો તેમનો જે પ્રસંગ તે પણ અવિદ્યાના બંધનને ભેદી નાખે એવી શક્તિવાળો હોય છે.

પ્રશ્નઃ—બંધનનો હેતુ કોણ છે?

ઉત્તરઃ—અસત્પુરુષનો જે પ્રસંગ તે બંધનનો હેતુ છે.

પ્રશ્નઃ—કેવા કેવા પુરુષની સાથે સહજ સ્વાભાવિક પણ સમાગમ ન રાખવો?

(સંગ્રહકર્તા:—મરીઆવાળા ગોકળદાસ જમનાદાસ શાહ.

रासरमण.

[શ્રીવૈષ્ણવ યુવક મંડળના નવમા વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે ગો. શ્રીદ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજશ્રીના વિદ્વત્તાભર્યા પ્રવચનનો સાર છે. આ શુભ પ્રસંગે પોતાનું 'આત્મનિવેદન' નું પ્રવચન નિર્ણીત થયેલું હતું, પરંતુ "વિચિત્ર બ્રહ્મ" નામના સંવાદમાં "રાસરમણ" વિષયપર વધુ પ્રકાશની આવશ્યકતા જણાયાથી "રાસરમણ" પર પ્રવચન કર્યું હતું.]

શરૂઆતમાં તેઓ શ્રીમાને આત્મનિવેદનનું પ્રવચન પ્રથમ પણ થયેલું અને ફરીથી તેજ રાખવામાં આવેલું તેનું રહસ્ય સમજાવતા જણાવેલું કે જે પ્રિય બાબત હોય તેનું વારંવાર પાન થવા છતાં તે રસવર્ધનજ છે. ત્યારબાદ "રાસરમણ" પ્રવચન શરૂ કરતાં જણાવ્યું હતુ કે શ્રદ્ધાળુ જનતા તેમજ કલિકાલના દુષ્ટ વાતાવરણથી કલુષિત જનતાને-બંનેને સંતોષ થાય તે માટે શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની આ લીલા લૌકિક અને અલૌકિક બન્ને રીતે સર્વથા નિર્દોષ છે તે પ્રતિપાદન કર્યું હતું. જો કે પોતે સ્વીકાર્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણને ઘડીભર પણ લૌકિક મનુષ્ય-માનવા તે એક જાતનો મહાન્ અપરાધ છે. પરંતુ ઉપસ્થિત પ્રશ્નને શંકા, કુશંકાથી તદ્દન નિર્મૂલ કરવા પોતે લૌકિક રીતે આ લીલા નિર્દોષ છે, એમ સિદ્ધ કર્યું હતું. તેમા પ્રથમ પ્રમાણ તો શ્રીકૃષ્ણની એકાદશ વર્ષની વય કે જે હાલના કલિકાલમા પણ કામવિકારની કલુષિતતાથી સર્વથા મુક્ત હોય છે. તો તે સમયમાં તો હોય તેમાં નવાઈજ નથી. વળી કામ પણ સમાન વયમા સંભવે છે. समानशील-व्यसनेषु मैत्री ॥ જ્યારે આ પ્રસંગમાં તો પ્રભુ એકાદશ વર્ષના હતા અને ભગવદ્રસલુબ્ધા અપરિમિત શ્રીગોપીજનો પૈકી કેટલાક વયોવૃદ્ધ પણ હતા. આ બન્ને રીતે 'રાસરમણ' તે કામક્રીડા નથી તેમ લૌકિકરીત્યા પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યુ હતું.

ત્યારબાદ અલૌકિક રીતથી પ્રતિપાદન કરતાં પ્રથમ તો જણાવ્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણ કેવલ શ્રીગોપીજનના પ્રિય નથી પરંતુ તે તો અખંડ વિશ્વના નાયક છે. અને પોતે શક્તિમાન છે જ્યારે શ્રીગોપીજનો પોતાની શક્તિ છે. એટલે શક્તિ શક્તિમાનથી જુદી હોય નહિ. તેમ પોતાના સ્વરૂપમાં વિલસી રહેલું આ બ્રહ્માંડ સર્વથા પોતારૂપ (સ્વરૂપ) હોવાથી રાસરમણ એ બ્રહ્મનું બ્રહ્મ સાથેજ રમણ છે. અર્થાત્ અંશીનું અંશ સાથેનું રમણ છે.

વળી જ્યારે શ્રીગોપીજનોને ભગવાને વેણુનાદ કરી પોતાની પાસે તેડયાં ત્યારે શરૂઆતમાંજ ભગવાન તેમને પાછા ફરવાનું કહેતા શ્રીગોપીજનો પ્રત્યુત્તરમાં જણાવે છે કે હે ભગવાન ઇન્દ્રિય-જન્ય કામ અને તેની વાસનાઓ પર તો અમો પૂળો મુકીને આવ્યાં છીએ. सर्वविषयान्संत्यज्य ॥ સમ્યક્ પ્રકારે દગ્ધ કરીને આવ્યાં છીએ. એટલે અમો તદ્દન નિષ્કામ બનીનેજ આવ્યાં છીએ. યદિ વસ્તુતઃ કામજ પ્રાધાન્યે હોત તો આવાં પાછાં ફરવાના તેમજ શ્રીગોપીજનનાં પ્રત્યુત્તરનાં વચનો સંભવનજ નહિ. અર્થાતજ લૌકિક કામને તો અમો બરાબર ભુંજી નાખીને આવેલા છીએ એટલે તે ફરીથી પણ ઉત્પન્ન થવાનો નથી. એટલે કે અમો ભગવદ્રસ પ્રાપ્તિને માટે અત્રે ઉપસ્થિત થયાં છીએ.

વળી જો એમ કહેવામાં આવે કે ભગવદ્રસના અધિકારી તો ફક્ત શ્રીલક્ષ્મીજીજ છે. તો પ્રથમથીજ દરેક ગોપીજનમાં લક્ષ્મીત્વ સ્થાપન કર્યા બાદ એટલે કે ભગવદ્રસભોગ્યત્વનાં અધિકારી બનાવ્યા પછીજ ભગવદ્રસનું દાન કરેલું છે. આ વેણુનાદે માત્ર સજીવ અર્થાત્ માનવ જાતિનેજ મુગ્ધ કરેલી નથી પરંતુ ઇતરજડચેતનાદિક વૃક્ષો, નદીઓ પહાડો, ગાયો, ઇત્યાદિકની નૈસર્ગિક પ્રકૃતિઓનો સ્વભાવ ભૂલાવી દેતા અંતર્ગત આનંદને પ્રકટ કર્યો છે.

અત્રે આપશ્રીએ ગોપાલોત્તરતાપિની ઉપનિષદ્‌માં આવેલી આખ્યાયિકાનો ઉલ્લેખ કરતા જણાવેલું કે, જ્યારે ગોપીજનોએ ગૃહસ્થના ધર્મ પ્રમાણે અતિથિ સત્કાર માટે શ્રીકૃષ્ણને પૂછ્યું ત્યારે દુર્વાસા મુનિનું નામ 'આપ્યું હતુ. તેમના આશ્રમે જતાં વચમાં શ્રીયમુનાજીને સામેપાર જવાનું હતુ તેમ કરવામા પોતાની અશક્તિ જણાવતાં શ્રીકૃષ્ણચંદ્રે આજ્ઞા કરી કે તમો શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે, તેમ કહી શ્રીયમુનાજીને વિનતિ કરશો તો માર્ગ મળશે તે પ્રમાણે કરવાથી ગોપીજનો દુર્વાસા મુનિના આશ્રમે જઇ ભોજનાદિક કરાવી પાછા ફરવા માટે પૂછતાં મુનિએ જણાવ્યું કે "દુર્વાસા સદા ઉપવાસી છે." તેમ કહેતાં શ્રીયમુનાજી માર્ગ આપશે. આ ઉપરથી એક ગાન્ધર્વા નામની ગોપી આગળ આવી પ્રશ્ન કરે છે કે અમોએ આપને હમણાંજ ભોજન કરાવ્યું છે માટે આનું રહસ્ય અમો સમજી શકતાં નથી. ત્યારે મુનિએ જણાવ્યું કે જેમ શ્રીકૃષ્ણનું રમણસ્વીય રમણ છે. અર્થાત્ બ્રહ્મનો બ્રહ્મસાથેનો વિલાસજ છે, એટલે શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે. તેમજ આ ભોજન પાચભૌતિક શરીરે કર્યું છે તદન્તર્ગત આત્માએ કર્યું નથી. આત્મા તો સદા ઉપવાસી છે. એટલે ભોજન કર્યા છતા હુ સદા ઉપવાસી છું. આ પ્રસંગથી શ્રીકૃષ્ણે પોતાનું નામ મહાત્મ્ય તથા ભક્તમાહાત્મ્ય દર્શાવ્યું અને સાથે સાથે રાસક્રીડા એ 'કામક્રીડા નથી એવું પણ 'સૂચન કર્યું આવી રીતે ખાત્રી થતાં શ્રીગોપીજનો સ્વસ્થાને આવી પહોચ્યાં. આ ઉપરથી પણ આ રાસરમણ લૌકિક કામોપભોગ નથી પરંતુ ભગવદ્‌ભક્તોમા આધાન છે.

છેવટમા આપશ્રીએ સમયના અભાવે ટુંકાવતાં જણાવ્યું કે લૌકિક કામનું ફળ તો સંસારોત્પત્તિજ હોઇ શકે. પરંતુ અહિંઆં તેવું કાઇ છેજ નંહિ. પ્રત્યુત લૌકિક કામનાઓ તો વેણુનાદદ્વારા આહ્વાન પૂર્વજ સમ્યક્ પ્રકારે દગ્ધ થયેલી હતી. જ્યારે રાસરમણમા તો કેવળ ભગવદ્‌રસનીજ લ્હાણી થઇ રહી હતી.

श्रीमत्प्रभुचरण.

(શ્રીબાલકૃષ્ણ શુદ્ધાદ્વૈત મહાસભાના વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે આયુષ્માન ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીગોવિન્દરાયજી મહોદયે કરેલું રસપૂર્ણ વ્યાખ્યાન.]

શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય તથા પિતૃચરણ તેમજ શ્રીમદ્‌વલ્લભચરણસરોરુહાશ્રિત ઉપસ્થિત વૈષ્ણવ વૃંદ.

આજે આપણા સર્વના ભાગ્યના ઉદયરૂપ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિઠ્ઠલેશ પ્રભુના પ્રાકટ્ય મહોત્સવનો દ્વિતીય દિવસ છે. આપણા સંપ્રદાયમાં આ દ્વિતીય દિવસ પણ ઉત્સવ દિન ગણાય છે. એ ઉત્સવપ્રસંગે આપ સર્વને એકત્ર થએલા જોઇને મને ઘણો આનંદ થાય છે, એટલુંજ નહિ, પણ એ આપણા સૌભાગ્યના હેતુભૂત શ્રીમદ્વિઠ્ઠલાધીશના કંઇક ગુણાનુવાદ આપ સર્વની સમક્ષ કરવા માટે પૈરાઉં છું.

ભાગ્યવાન્ વૈષ્ણવો, શ્રીમદ્વિઠ્ઠલનાથ એ નામજં આપણા ભાગ્યોદયનું સૂચન કરે છે. આપ સર્વને એ સુવિદિત છે કે આપણે સર્વ કલિકાલમાં જન્મ્યા છીએ, કાલનો પ્રભાવ એવો છે કે તેણે વેદોક્ત સર્વ સાધનોના આધારભૂત ષટ્‌સાધન સંપત્તિને દુષ્ટ બનાવી દીધી છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિમાર્ગ એ ત્રણે શ્રેયસના સાધનભૂત માર્ગોમાંથી એકેય માર્ગનું અવલંબન અશક્ય પ્રાય થઇ પડ્યું છે. "कलौ भक्त्यादिमार्गा हि दुःसाध्या इति मे मतिः" એ શ્રીમદાચાર્યચરણની ઉક્તિ અત્ર પ્રમાણ છે. આવી પરિસ્થીતિમાં આધુનિક જીવોપર અત્યંત કૃપા વિચારી

પ્રિય પુત્રને વિષે નિરંતર મનનું સ્થાપન કરવું, અને એમની સમાન બીજા છે એવી મતિ કોઇ પણ દિવસ કરવી નહીં.

વૈષ્ણવ સજ્જનો ! શ્રીમહાપ્રભુજીના લાલજી બે છે, શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી; પરંતુ જેમ શ્રીવેણુગીતના પ્રસંગમાં કૃષ્ણ-બલદેવ શ્રીવ્રજેશના બે સુત હોવા છતાં એકજ મુખનું નિરૂપણ કરેલું છે. તેમ અહીં પણ પ્રિય પુત્ર એ શબ્દથી શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીમાં શ્રીગોપીનાથજીનો સમાવેશ આપણે કરી શકીએ છીએ. આમ કરવાનું કારણ બીજું એકે નથી, પરંતુ એટલુંજ છે કે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પુષ્ટિમાર્ગનું પ્રાકટ્ય કર્યો પછી તે માર્ગનો પ્રકાશ ખાસ કરીને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીએજ કરેલો છે. અને અહીં જે મનના સ્થાપનનો પ્રકાર શ્રીહરિરાયજીએ ઉપદેશેલો છે, તે સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતપરત્વેજ છે એમ સ્પષ્ટ માલમ પડે છે શ્રીવલ્લભાધીશ તથા શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ સમાન કોઇ બીજો નથી એવો મનમાં નિશ્ચય કરવાની જે આજ્ઞા આ શ્લોકમાં છે તે એટલા માટેજ કે જ્યાં સુધી સિદ્ધાંતનો નિશ્ચય થાય નહિ, ત્યાં સુધી માર્ગ સૂઝતો નથી અને વ્યવસ્થિત આચરણ થઇ શકતું નથી, માટે સૌથી પહેલી આજ્ઞા ભાવુક ભક્ત પ્રત્યે શ્રીહરિરાયજી તરફથી એજ મળે છે કે પહેલો નિર્ધાર એજ કરવો ઘટે છે કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજી જે સિદ્ધાંત સાર પ્રતિપાદન કરે છે તેજ એક સુનિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે, બીજા આચાર્યોમાં ભલે પાંડિત્ય હોય, નિગમને વિષે ગતિ હોય, નિગમોક્તક્રિયાનું પાલન હોય, હરિમાર્ગનો પરિચય હોય, તેમજ એ વગેરે બીજા ગુણો ભલે હોય, તો પણ શ્રીવલ્લભાધીશની સાથે કોઇની તુલના કરી શકાય એમ નથી. શ્રીવલ્લભાધીશ અને શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ વસ્તુતઃ એકજ છે, અને એકજ કાર્ય કરવા માટે બે સ્વરૂપે પ્રાકટ્ય છે. તેથીજ બ્રહ્મસૂત્રના છેલ્લા દોઢ અધ્યાયનું ભાષ્ય પણ શ્રીગુસાંઇજીએ રચેલું હોવાથી આચાર્યત્વ પણ શ્રીમહાપ્રભુજી સાથે સમાનપણાથી છે.

હવે આ પ્રમાણે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજી વિષે મનના સ્થાપનની આજ્ઞાપર આટલો ભાર દેવાની જરૂર શ્રીહરિરાયજીએ શા કારણથી જોઇ હશે તે સમજવા જરા પ્રયાસ કરીએ. આપ સર્વ જાણો છો કે ધર્મની ગતિ અતિસૂક્ષ્મ છે. ધર્મના સિદ્ધાંતો સામાન્ય બુદ્ધિથી અગ્રાહ્ય છે. અને તેનો પ્રકાશ હૃદયમાં ત્યારેજ થાય છે કે જ્યારે ગુરુભક્તિ પ્રેમપૂર્વક કરવામાં આવે છે. ગુરુ વિના જ્ઞાન નહિ, એ સામાન્ય કહેવત સાર્વજનિક છે. શ્રુતિ પણ એ આજ્ઞા કરે છે કેઃ–

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

વેદાદિશાસ્ત્રપ્રતિપાદિત સિદ્ધાંતનો પ્રકાશ તો તેનાજ હૃદયમાં થાય કે જેને જેવી દેવને વિષે પરાભક્તિ છે તેવીજ ગુરુને વિષે પણ છે. આ કારણથી ગુરુનો નિશ્ચય થયા વિના ધર્મમાં કોઇ પણ પ્રકારની પ્રગતિ થવી મુશ્કેલ છે. વેદાદિ શાસ્ત્રના અર્થનો પ્રકાશ જે પોતાના હૃદયમાં થએલો જોવા ઇચ્છતો હોય, તેણે તો યોગ્ય ગુરુનું શરણ સ્વીકારી તેની પ્રેમપૂર્વક સેવા કરવી જોઇએ. આટલું થયા પછી તો તેને ફક્ત ગુરુની આજ્ઞાનું પાલન કરવાનુંજ બાકી રહે છે, અને જેમ જેમ આજ્ઞાનું પાલન થતું જાય છે તેમ તેમ તે પુરુષ આગળ ને આગળ વધતો જાય છે. પ્રથમ સૌથી અઘરામાં અઘરી બાબત છે તે એજ કે યોગ્ય ગુરુની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે કરવી ? મતલબ કે તેમને કેવી રીતે શોધી કાઢવા ? આ અઘરામાં અઘરૂં કાર્ય હોવાથી શ્રીહરિરાયજી પોતેજ એ બાબતમાં જે નિશ્ચય કરી શક્યા છે તે જણાવે છે અને આજ્ઞા કરે છે કે જો તમે તમારૂં ભલું ઇચ્છતા હોત તો શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજીને વિષે પ્રથમ ભાવ સ્થાપન કરવો કે એજ અમારા ગુરુ છે, અને એમનીજ આજ્ઞા અમને શિરસાવંદ્ય છે. બીજા કોઇ ગમે તે પ્રકારે કહેતા

હોય તેની સાથે અમારે નીસબત નથી. આ બાબતમાં ઘણું કહી શકાય એવું છે, પણ એ બધું કહેવા જેટલો સમય પણ નથી. તેમ છતાં આપ તો પુષ્ટિમાર્ગાનુયાયી છો, એટલે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજીની શક્તિ, પાંડિત્ય વગેરે બાબતમાં કંઇને કંઇ આપના સાંભળવામાં, વાંચવામાં, તેમજ જાણવામાં આવ્યું હશેજ એમ હું આશા રાખું છું. હું તો આજે એટલુંજ કહી વિરમીશ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજીના પ્રાકટ્યોત્સવ પ્રસંગે જે થોડી ઘણી બાબતનું મેં વિવેચન કર્યું તેટલું પણ આપના દીલમાં ઠસ્યું હશે તો શ્રીહરિરાયજીના આ વચનામૃત આપને ગળે તરતજ ઉતરી જશે અને આપની ખાત્રી થયા વિના રહેશે નહિ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઇજીએ જે સંપ્રદાય ચલાવ્યો છે તે એક વાડા જેવો નથી, પરંતુ એક સરલ રાજમાર્ગ છે. વિચાર કરશો તો એટલું પણ માલુમ પડશે કે દેશકાલની પરિસ્થિતિનો પણ એ બંને આચાર્યશ્રીઓએ સંપૂર્ણ ખ્યાલ કરેલો છે, અને ત્યાર પછીજ ગૃહસ્થાશ્રમને પણ અનુકૂળ થાય એવો ટુંકામાં ટુંકો, સરળમાં સરળ અને ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસ્તો શોધી કાઢી તેનો જનકલ્યાણને અર્થે ઉપદેશ કરેલો છે. માટે શ્રીમદ્હરિરાયચરણની આજ્ઞા હરહંમેશ યાદ રાખશો અને એ બંનેની આજ્ઞાઓનું યથાશક્તિ પાલન કરવા દૃઢ નિશ્ચય કરશો એવી હું આશા રાખું છું 'श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृशो भावी न भूतोस्त्यापि' એ વચન આપને પરિચિતજ હોવું હોવું જોઇએ. "ન કોઇ હુઓ ન હોય એ રૂપ સમ તેના સકલ નિજનિગમ સાખી" એ ભગવદીય ગોપાલદાસજીના કથનમાં ઉપરના વચનનોજ અનુવાદ છે. વિશેષતા એટલીજ છે કે ઉપલી પંક્તિમા શ્રીમહાપ્રભુજીનું અદ્વિતીયત્વ પ્રતિપાદન કરેલું છે, અને ભગવદીય ગોપાલદાસજીએ તેવીજ રીતે શ્રીગુસાંઇજીનું પણ અદ્વિતીયત્વ અનુભવસિદ્ધ તરીકે બહાર પાડ્યું છે.' માટે આવા સર્વ અલૌકિક સામર્થ્ય ધારણ કરનાર શ્રીમદ્વિઠ્ઠલેશ્વરનું શરણ સ્વીકારી બને તેટલું તેમની આજ્ઞાનું પાલન કરવામાંજ આપણું કર્તવ્ય સમાપ્ત થાય છે એમ હું ધારૂં છું.

શ્રીગોકુલનાથજી.

મારૂં સર્વસ્વ ધન શ્રી ગોકુલનાથજી અન્ય સાધન તણું નહિ કામજી   મારૂં.
બિન રખવાળે રહે સલામત, ચોર ચોરે નહિ લગારજી;
પ્રેમભક્તિથી ચોરવા ધારે, ચોરે તે તત્કાળજી.   મારૂં.
અષ્ટસિદ્ધિ નવનિધિ ચરણમાં, દેવદેવી તણો વાસજી;
અનન્ય પ્રેમથી પ્રભુજીને ભજતાં, ન રહે કાંઇ કચાસજી.   મારૂં.
સમય સમયે ભક્તોની રક્ષા, કરો શ્રીઘનશ્યામજી;
ભક્તો તમારા તમો ભક્તોના, પ્રિય છો રાધે શ્યામજી   મારૂં.
નવધા ભક્તિ સિદ્ધ કરી પ્રભુ, દશમી ભક્તિથી દાન કરજોજી;
હું ભાવ પુંભાવ દૂર કરીને, પ્રેમ લક્ષણા ઉર ભરજોજી.   મારૂં.
જીવ અતિ દોષોનો ભરેલો, સાધન નથી ગિરિધારીજી;
દિન ચંદ દાસીની આકાંક્ષા પૂર્ણ કરો શ્રીમુરારિજી.   મારૂં.

(લેખક રા. રા. ફુલચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, પાદરા)

વેદાન્તતાત્પર્યનિરૂપણ.

(અનુવાદક—શ્રીયુત હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી મીમાંસક વેદાન્ત
વિશારદ M. R. A. S.)

अभवदतिरसालं जिह्वाविद्युज्जटालं प्रलयजलदजालं यत्कृपालङ्कृतेषु ।
शिशिरसुखमयूखैर्भक्तसन्तापहालं सविभुरखिलकालं मद्दृशां गोचरोऽस्तु ॥
श्रुतिशिरसि यस्य महिमा निरुपधिरीशोऽपि यस्य खलु महिमा ।
तं कृष्णमादिमूर्तिं नमामि निरवद्यसद्गुणं ब्रह्म ॥

ઉપક્રમ—શ્રીમદ્ભગવદ્વદનવૈશ્વાનરાવતાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યપૂજ્યપાદપ્રણીત તત્ત્વાર્થદીપનિબંધમા સચ્ચિદાનંદ પરબ્રહ્મ આદિમૂર્તિત્વે [1]શ્રીકૃષ્ણને ઓળખાવ્યા છે. વ્યાસ ભગવાને બ્રહ્મસૂત્રોમા અને શ્રીમદ્ભાગવતમા પણ આજ સ્વરૂપને મૂલ પુરુષત્વે સ્વીકાર્યું છે. કેટલાક લોકો " [2]શ્રીકૃષ્ણથી પર (શ્રેષ્ઠ) કોઈ પણ વસ્તુ હું જાણતો નથી " કહે છે; છતાં પણ દુરાગ્રહાવિષ્ટચેતસ્ત્વે, " તે, [3]આ રીતે અવિદ્યાત્મક ઉપાધિ પરિચ્છેદાપેક્ષજ ઈશ્વરનું ઈશ્વરત્વ, સર્વજ્ઞત્વ અને સર્વશક્તિત્વ છે; પણ પરમાર્થતઃ નથી. " એમ પણ કહેવાની ધૃષ્ટતા કરે છે. વિદ્વાન્ અને વિચારશીલ વૈષ્ણવો સમજી શકે છે, કે આ આસ્નિકતા છે, કે બૌદ્ધમતપ્રવેશ? ઈશ્વરવાદ છે કે અનીશ્વરવાદ? અરે સત્યવાદિતા છે, કે અસત્યવાદિતા? વળી કેટલાક તુરગાસ્યોપાસકો પણ વલ્ગાવિહીન થઈને [4]તુરગતુંડે હ્રેષા કરીને શ્રીકૃષ્ણની સાથે સંબંધ બાંધવાને [5]ગૌણ સંબંધ સિદ્ધ કરવા પ્રયતે છે. પણ્ડિતપુરંદર શ્રીમત્પુરુષોત્તમપ્રભુચરણ આજ્ઞા કરે છે કે શ્રીકૃષ્ણ નિરુપધિ છે. શ્રીકૃષ્ણ સાથેનો જીવનો સંબંધ ગૌણ નથી, પ્રધાન છે. ઈશ્વરને અવિદ્યાની ઉપાધિથી યુક્ત કહેવા જેમ શ્રુતિસૂત્રથી વિરુદ્ધ છે; તેમજ જીવનો ઈશ્વર (શ્રીકૃષ્ણ) સાથે થતો સંબંધ ગૌણ માનવો એ પણ પૂર્વતંત્રના તૃતીયાધ્યાયસ્થ ગુણપ્રધાનના વિવેકનું અજ્ઞાન જ દાખવે છે.

ઈશ્વર કારણરૂપ, આન્તર, ભોક્તા અને અન્તર્યામી પણ છે; અને તેથી જ તે અનેકવિધમહિમાયુક્ત પણ છે. [6]બ્રહ્મ એક જ રૂપે થાય છે, તે અનેક રૂપે શી રીતે થાય છે, તે પણ તત્તત્સ્થલોમા પ્રતિપાદન કર્યું છે જ. યાવદ્ વેદાન્તવાક્યો અનંતરૂપ બ્રહ્મની મહિમાનું નિરૂપણ છે. અને તેથીજ સર્વ વાક્યો બ્રહ્મપર છે; આ વાર્તા તો નિર્વિવાદ છે જ.

શ્રીકૃષ્ણ જગતનું કારણ છે:—હવે સૌથી પ્રથમ એ વિચારવાનું છે, કે ભગવાન્ જગત્નું કારણ કારણ થઈ શકે કે નહિ? વ્યાસભગવાન્ વેદાન્તસૂત્રોમા બ્રહ્મવિચારનો પ્રારંભ કરી સૌથી પ્રથમ જગત્નું કારણ નિરુપધિ શ્રીકૃષ્ણ–પરબ્રહ્મ–છે એમ કહે છે. " [7]જેથી જન્મ આદિ થાય છે, તે બ્રહ્મ છે; કારણ કે તેને શાસ્ત્રમા કારણ કહ્યું છે. " અત્ર " જેથી [8]આ ભૂતો ઉત્પન્ન થાય છે, " ઇત્યાદિ તૈત્તિરીય શ્રુતિ ઉપર વિચાર પ્રસ્તુત થયો છે, પ્રશ્ન થાય છે કે, બ્રહ્મમાં કર્તૃત્વ છે કે અકર્તૃત્વ? કેમ " સત્ય[9] જ્ઞાનરૂપ અને અનન્ત બ્રહ્મ છે. " આ બ્રહ્મસ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યમા બ્રહ્મને જગત્નું કારણ કહેવામા આવ્યું નથી અને જ્યા

---

[1] आदिमूर्तिः कृष्ण एव सेव्यः सायुज्यकाम्यया । [2] कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने । [3] तदेवमविद्यात्मकोपाधिपरिच्छेदापेक्षमेवेश्वरस्येश्वरत्वं सर्वज्ञत्वं सर्वशक्तित्वं च, न परमार्थतः । જુઓ ૨।૧।૧૪ નું શાંકર ભાષ્ય. [4] देवो भूत्वा देवं यजेत् એ ન્યાયે. [5] જુઓ સિ. ર. વિ. નું ભાષાન્તર પૃષ્ઠ ૪૭. [6] एकोऽहं बहु स्याम् इतिश्रुतेः [7] जन्माद्यस्य यतः शास्त्रयोनित्वात् । [8] यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते । [9] सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ।

આગળ શ્રુતિમાં કર્તૃત્વ કહેવામાં આવ્યું છે, ત્યાં અન્યગત કર્તૃત્વનો આરોપ કરાયો છે, એમ માનવાથી પૂર્વ પર વાક્યોની સંગતિ લાગી જાય છે, તેથી સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યના ઉપજીવક કાર્યપ્રતિપાદક વાક્યમાં પણ આરોપજ માનવો ઉચિત છે, માટે બ્રહ્મ કારણ નથી એમજ કેમ ન માનવું જોઇએ ?

ઉપર જણાવેલી કારણત્વપ્રતિપાદક તૈત્તિરીય શ્રુતિમાં 'આ' એ દર્શક સર્વનામ વડે જગત્‌ને બતાવીને તેનું જન્માદિ કહ્યું છે. વળી આ શ્રુતિનું વિવરણ કરતી કે ક્રમસૃષ્ટિનું પ્રતિપાદન કરતી "તે [૧]પરમાત્માથી આકાશથી ઉત્પન્ન થયું" શ્રુતિમાં આદ્ય આકાશની ઉત્પત્તિ જણાવી છે, આ ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે શાસ્ત્રમાં-પૂર્વકાંડ તથા ઉત્તરકાંડ-સૃષ્ટિપ્રતિપાદક વાક્યો કારણત્વે પરબ્રહ્મનેજ સ્વીકારે છે. કાર્યપ્રતિપાદ વાક્યો સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યોના આધારે હોવાથી સ્વરૂપપ્રતિપાદકવાક્યશેષમાં "બ્રહ્મ કારણ નથી" એમ નિષેધ વાક્ય જોવામાં આવતું નથી, પ્રત્યુત કારણ છે એમજ કહ્યું છે. તેથી "તે [૨]અસ્થૂલ અનણુ" ઇત્યાદિ ધર્મનિષેધક વાક્યમાં ધર્મનો નિષેધ હોવા છતાં પણ બ્રહ્મ અલૌકિક હોવાથી અને નિષેધમાં લૌકિક ધર્મોનો સમાવેશ થયેલો હોવાથી લૌકિકરીતિકકર્તૃત્વનો નિષેધ પ્રાપ્ત થતાં અલૌકિક કર્તૃત્વ તો સિદ્ધજ છે. અન્યથા કર્તૃત્વપ્રતિપાદક શ્રુતિ અને ધર્મનિષેધક શ્રુતિમાં વિરોધ ઉપસ્થિત થતાં અમુક શ્રુતિ બલવતી અને અમુક નિર્બળ એમ કરીને પરસ્પર વિરોધ બાધ પ્રસક્ત થાય પણ અત્ર તેનો બાધ લાગુ પડી શકે તેમ નથી, બાધ કે બલાબલનું આ પ્રકરણ ન હોવાથી કોઇ પણ આસ્તિક તેવી કલ્પના ન રી શકે. વળી માયાવાદની પદ્ધતિને અનુસરીને લક્ષણા કરીને બ્રહ્મપર કર્તૃત્વનો આરોપ કરવો જઘન્ય હોવાથી શ્રુતિસિદ્ધ કર્તૃત્વનો ત્યાગ કરવો અનુચિત છે. આથી સિદ્ધ થાય છે કે સર્વનું આદિ કારણ પરબ્રહ્મ સચ્ચિદાનંદ સ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ જ છે. [૧] મન્વયધિકરણમાં નિરુપધિક બ્રહ્મનું ઉપાદાનકારણત્વ જણાવ્યું છે અને [૨] ઇક્ષત્યધિકરણમાં સચ્ચિદ્રૂપે કારણત્વ વિચાર્યું છે તેમજ [૩]આનંદમયાધિકરણમાં આનન્દરૂપે કારણ કહ્યું છે. અને ત્યાંજ અ મયાદિની અપેક્ષાયે આન્તરત્વ પણ જણાવ્યું છે. અન્નમય, પ્રાણમય, મનોમય અને વિજ્ઞાનમય કહીને "[૪]આનન્દમય આત્મા આથી અન્ય અને આન્તર છે" ઇત્યાદિવાક્યોમાં આન્તરત્વ કહ્યું છે.

ધોળ.

પોષ મહાબડ ભાગી રે આજે સોહેલો, તેમાં સુદી પંચમી સુહાગી આજે સોહેલો.
વાર ભલો રવિવાર રે આજે સોહેલો, નિસ ઘટિકા છપન પલ અનુરાગી રે આજે સોહેલો.
સંવત ઓગણીસેં પીસતાલીસ રે આજે સોહેલો, પ્રાદુર્ભાવ ભયો પુષ્ટ પુષ્ટ રે આજે સોહેલો.
દૈવી જીવ લખે પ્રભુ સ્પષ્ટ રે આજે સોહેલો, મીટયો વિરહાનલકો કષ્ટ રે આજે સોહેલો.
ધન્ય શ્રીગોવિંદરાય રે આજે સોહેલો, સુત પાયે શ્રીગોપેશ્વરલાલ રે આજે સોહેલો.
શ્રીગોવિંદરાયજીના લાલ કહીએ રે આજે સોહેલો, સેવ્યા વિઠ્ઠલેશરાય રે આજે સોહેલો.
સુંદર અનુપમ સોહાએ રે આજે સોહેલો, વ્રજજન નીરખી હરખ મનમોહીએ રે આજે સોહેલો.
નાચત ઉમંગ ભરી સુકુમારી રે આંજે સોહેલો, સંગ ઝાંઝ પખાવજ થાલી રે આજે સોહેલો.
દેત આશિષ વ્રજબાલ રે આંજે સોહેલો, જીવો શ્રીગોવિંદરાયજી તિહારો લાલ રે આજે સોહેલો.
ઉત્સવ ઘરઘર પ્રતિ કરહી રે આજે સોહેલો, શ્રીગોપેશ્વર પતિપદ અનુસરહી રે આજે સોહેલો.

---

[१] तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश.सम्भूतः । [२] अस्थूलमनणु इत्यादिश्रुतेः

KRISHNA AND HIS FLUTE.

Be still, my heart, and listen,
For sweet and yet accute;
I hear the wistful music,
Of Krishna and his flute.

Across the cool, blue evenings,
Throughout the burning days.
Persuasive and beguiling,
He plays and plays and plays.
Ah, none may hear such music,
Resistant to its charms,
The household work grows weary,
And cold the husband's arms.
I must arise and follow,
To seek in vain pursuit,
The blueness and the distance,
The sweetness of that flute.
In linked and liquid sequence,
The plaintive notes dissolve;
Divinely tender secrets,
That none but he can solve.

Oh, Krishna, I am coming,
I can no more delay;
My heart has flown to join thee,
How shall my footsteps stay ?
Beloved, such thoughts have peril,
The wish is in my mind;
That I had fired the jungle,
And left no leaf behind,
Burnt all bamboos to ashes,
And made their music mute;
To save thee from the magic
Of Krishna and his flute.

(By Laurance Hope.)

श्रीगोकुलनाथजी.

૧

રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણહારા વૈષ્ણવ જનના;
જહાંગીરી આદેશ ન માન્યો, પરાસ્ત વળી ચિદ્રૂપને કીધો;
ઉડવી વિશ્વે વિજયપતાકા, કીધી માલા તિલકની રક્ષા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણહારા વૈષ્ણવ જનના.

૨

સંસ્કૃત ગ્રન્થો પ્રચુર વિલેખ્યા, ભાવાત્મક ગંભીર અનેરા;
એ ભૂષણ પંડિત મંડલના, ગોસ્વામિ-કુલ-દીપક-વ્હાલા;
રક્ષક. એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણહારા વૈષ્ણવ જનના.

૩

શ્રીમદ્ ગોકુલનાથ તણો છે, ઉત્સવ આજે ઉજવો પ્રેમે;
કામ-ક્રોધ ત્યાગી સઘળા, દ્વેષ કદાગ્રહ છોડી વ્હાલા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણહારા વૈષ્ણવ જનના.

" सिद्धान्तमुक्तावली. "

(લેખકઃ—વિદ્યાર્થી ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ દેસાઇ)

नत्वा हरिं प्रवक्ष्यामि स्वसिद्धांतविनिश्चयम् । कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता ॥

અર્થઃ—હરિભગવાનને નમીને પોતાના સિદ્ધાંતનો સારી રીતે નિશ્ચય કહીશ. હંમેશાં કૃષ્ણની સેવા કરવી. માનસી સેવા તે ઉત્તમ મનાએલી છે.

પ્રથમ તો આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગ્રન્થમાં શ્રીમહાપ્રભુજીએ દરેક શાસ્ત્રોનું તત્ત્વ શું છે? તે પોતાના નિર્ગુણ ભક્તો માટે બતાવેલ છે. એ ષોડશ ગ્રંથમાં શ્રીમહાપ્રભુજીએ સ્વમત દર્શાવ્યું છે અને તેજ નિર્ગુણ અને મુખ્ય છે પૂર્ણવેત્તા શ્રીગોપેશ્વરજી કહે છે કે બ્રહ્મસૂત્ર ભાષ્યમાં આચાર્યશ્રીએ આધિભૌતિક મતનું નિરૂપણ કર્યું છે. નિબન્ધમાં આધ્યાત્મિક મતનું અને સુબોધિનીજીમાં આધિદૈવિક મતનું, જ્યારે ષોડશ ગ્રંથોમાં નિર્ગુણ મતનું પ્રતિપાદન કર્યું છે. તેમજ આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગોપ્ય છે. આ ગ્રન્થનું રક્ષણ ભક્તો તેમા કહેલા ઉપદેશો પ્રમાણે વર્તે તો જ થઇ શકે.

આ ગ્રન્થમાં પણ શ્રીમહાપ્રભુજી હરિને જ નમન કરે છે. એટલે શ્રીમહાપ્રભુજી જેવા પણ દીનતા રાખી પ્રથમ દરેક કાર્યની અંદર ભક્તોનાં દુઃખને હરણ કરનાર એવા શ્રીહરિભગવાનને નમન કરે છે. તેવી રીતે આપણે પણ પ્રભુને આગલ રાખી કાર્ય કરીશુ તોજ તેમાં ફતેહમંદ થઇશું. આમાં કહ્યું છે કે " कृष्णसेवा सदा कार्या " કૃષ્ણની સેવા હંમેશ કરવી. આમાં શંકા થાય કે શ્રીકૃષ્ણનીજ સેવા શા માટે? બીજા બીજાની કેમ નહી? તેને માટે કહે છે કે શ્રીકૃષ્ણ શ્રીપુરુષોત્તમ પૂર્ણવિનાર છે. ક્ષર અને અક્ષરથી જે ઉત્તમ પુરુષોત્તમ તેજ શ્રીકૃષ્ણ એમ ગીતા પણ સાક્ષી પૂરે છે. જેમ ગંગાજીના ત્રણ સ્વરૂપો, આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદૈવિક એ ત્રણ છે. તેમ પ્રભુના પણ ત્રણ સ્વરૂપો છે. ગંગાજીનું જે જલ તે આધિભૌતિક સ્વરૂપ, માણસ જે તીર્થરૂપે પૂજે છે તે આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અને જે ગંગાજીનું દેવતારૂપી સ્વરૂપ તે આધિદૈવિક, સ્વયંગંગાજી. તેજ પ્રમાણે ભગવાનનું આધિભૌતિક સ્વરૂપ આ જગત્, આધ્યાત્મિક અક્ષર બ્રહ્મ અને આધિદૈવિક સ્વરૂપ તે પોતેજ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર છે. સેવા અને તેમાં વળી માનસી સેવા છે તે પર છે, એટલે તે માનસી સેવા ફલરૂપ છે એમ બીજા શ્લોકથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાય છે કે चैतस्तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्धै तनुवित्तजा । ततः संसारदुःखस्य निवृत्तिर्ब्रह्मबोधनम् ॥२॥ માનસી સેવાનું લક્ષણ એ કે પ્રભુની અંદર મનને પરોવવું અને તે માનસી સેવાની સિદ્ધિ માટે તનુવિત્તજા સેવા કરવી. તનુવિત્તજા એટલે તનથી અને વિત્તથી બન્ને સેવા કરવી કે જેથી માનસી સેવા સિદ્ધ થાય. એકલી તનુજા એટલે શરીરને કષ્ટ આપીને સેવા કરવાથી કે એકલી વિત્તજા એટલે પૈસાની સેવા એમ એક એક જુદી જુદી કરવાથી માનસી સેવા સિદ્ધ થાય નહિ પણ બન્ને એકી સાથે કરવાથી ગોપીજનોની પેઠે માનસી સિદ્ધ થશે અને સંસારનું દુઃખ નિવૃત્ત થશે. સંસારનું દુઃખ એ શું? સંસારનું દુઃખ એક અહંતા અને બીજું મમતા. અહંતાની સ્થિતિ દેહ સાથે ને અને મમતાની વિત્તાદિમાં છે એટલે શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાથી દેહાધ્યાસ છૂટી જશે અને બધી ઇંદ્રિયો પ્રભુમાં જોડાઈ જશે. નહિતર ઇન્દ્રિયો આડે માર્ગે જશે અને આપણું પતન કરી નાખશે. કારણકે ઇન્દ્રિયો એ તોફાની ઘોડા છે. પશુ

श्रीगोकुलनाथजी अने धार्मिक सत्याग्रह.

(ગુજરાતી સાહિત્યના હાસ્યરસના સુપ્રસિદ્ધ લેખક રા રા. છોટાલાલ ડાહ્યાભાઇ જાગીરદારે) ઉત્સવાગે મળેલી સભામાં કરલું વિવેચન.)

આજથી લગભગ ત્રણ સૈકા પૂર્વે એટલે આજના મહોત્સવના નાયક શ્રીમદ્‌ગોકુલનાથજીના સમયમાં ખેલાયલો સત્યાગ્રહનો અને સવિનય ભંગનો સંગ્રામ વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા ચિરસ્મરણીય છે અને રહેશે. આજના અને તે સમયના સત્યાગ્રહનાં સાધ્યમાં ઘણો ભેદ માલમ પડશે. પણ ઉભય સત્યાગ્રહમા વપરાયલાં સાધનો અને બનેલા પ્રસગોમાં એકંદરે ઘણું સામ્ય છે. આ વખતનો સત્યાગ્રહ જેમ અહિંસા અને સત્ય પર રચાયેલો છે તેમ તે સમયના સંગ્રામની ઇમારત પણ એ બે અમોઘ સાધનોથી ચણાયેલી હતી. એનું વિસ્તૃત વિવરણ કરવું રહેવા દઇ હવે હું આપની સમક્ષ તે સમયના સત્યાગ્રહ માટે ઉપસ્થિત થયેલાં કારણોની ચર્ચા કરીશ.

શ્રીગોકુલનાથજી ભૂતલ ઉપર બિરાજતા હતા ત્યારે મોગલ બાદશાહ જહાગીર સમ્રાટ્પદે હતો. હવે આ તો સર્વસ્વીકૃત બીના છે કે સમસ્ત આર્યાવર્તમાં મુસ્લીમ સંસ્કૃતિ અને ધર્મના ધસી આવતા પ્રચંડ પૂરને ખાળી તેમા તણાઇ જતાં હિન્દુ સંસ્કૃતિ અને ધર્મને બચાવવાનો ભગીરથ પ્રયત્ન કરનાર વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના આચાર્યોજ હતા. એટલે હાલમાં જેમ ખ્રીસ્તી પાદરીઓને, તેમ તે સમયમાં મુસ્લીમ ધર્મના ઉપદેશકોને એ સમ્પ્રદાય આખમા કણાની માફક માફક ખૂંચે એમા નવાઇ નહિ. ખ્રીસ્તી પાદરીઓને પોતાના ધર્મપ્રચારના કાર્યમાં જેમ કુહાડામાં હાથા રૂપ આપણાજ ભાઇઓ મળી જાય છે, તેમ તે સમયમા ચિદ્રૂપ નામનો એક સંન્યાસી જહાગીર બાદશાહને મળી ગયો. આ ચિદ્રૂપ વાચાળ અને ધારી અસર પહોંચાડી શકે એવો કાવત્રાખોર હતો. વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયની વિરુદ્ધ અનેક ઝેર બાદશાહના કાનમા રેડી ત્હેણે વૈષ્ણવોના પ્રિયમા પ્રિય તિલક અને તુલસીની માળા પર કુઠારાઘાત કરે એવો હુકમ બાદશાહ પાસે બહાર પડાવ્યો. આ હુકમની રૂઇએ કોઇથી તુલસીની માળા અને તિલક ધારણ કરી શકાય નહિ એમ હતું. ગંતુરના મનસ્વી કલેક્ટરે ખાદીની ગાંધી ટોપી વિરુદ્ધ જે સ્વચ્છંદી હુકમ બહાર પાડયો હતો. તે વખતે મચી રહેલો ખળભળાટ જેના સ્મરણમાં હશે તેને માળા તિલક વિરુદ્ધ બહાર પાડેલા જહાંગીરી હુકમથી તે સમયમા વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા કેવો જબરદસ્ત કોલાહલ મચી રહ્યો હશે તેની કલ્પના આવી રહેશે. તે સમયમા વૈષ્ણવોમાં પુષ્ટિસમ્પ્રદાય અને રાધાવલ્લભી સમ્પ્રદાયનો ફેલાવો મહાન હતો. તેમાં શ્રીરાધાવલ્લભી સમ્પ્રદાયના ઘણા અનુયાયીઓએ આ હુકમને માન આપી તુલસીમાળા અને તિલકનો ત્યાગ કર્યો. પણ પુષ્ટિસમ્પ્રદાય ભૂષણ શ્રીગુસાંઇજીના ચતુર્થ કુમાર શ્રીમદ્‌ગોકુલનાથજી પ્રભુચરણે આ જહાંગીરી હુકમનો સવિનય અનાદર કર્યો. પેલો ચિદ્રૂપ સંન્યાસી બાદશાહ જહાગીર તરફથી આ હુકમની અમલ બજાવણી બરાબર થાય છે કે નહિ તે જોવાના કામ ઉપર સર્વ સત્તા સાથે નીમાયો હતો. ત્હેણે આજની વાઇસરોયની ધમકીઓ માફક પોતાના નિશ્ચયમાં અડગ અને અભેદ ' એવા શ્રીગોકુલનાથજીને દમદાટી અને બની શકયું ત્યાં લાલચોથી ચલાયમાન 'કરવાના અનેક પ્રયત્નો કર્યા પણ જેને એક શ્રીકૃષ્ણનારાયણ સિવાય બીજા કોઇની જરા પણ પરવાહ નહિ હતી તેને એ ફૂટેલ સંન્યાસી પોતાના નિશ્ચયથી ડગવી શક્યો નહિ. એટલે એ બાબતની વાટાઘાટ કરવા જહાંગીર બાદશાહે પોતે આજના ગીમલા જેવા સાતસોમે મજલે આવેલા કાશ્મીરમા રહેતો હતો ત્યાં શ્રીગોકુલેશજીને બોલાવ્યા. 'વૃદ્ધાવસ્થા અને વાટની વિષમ 'સ્થિતિ છતાં' આપશ્રી

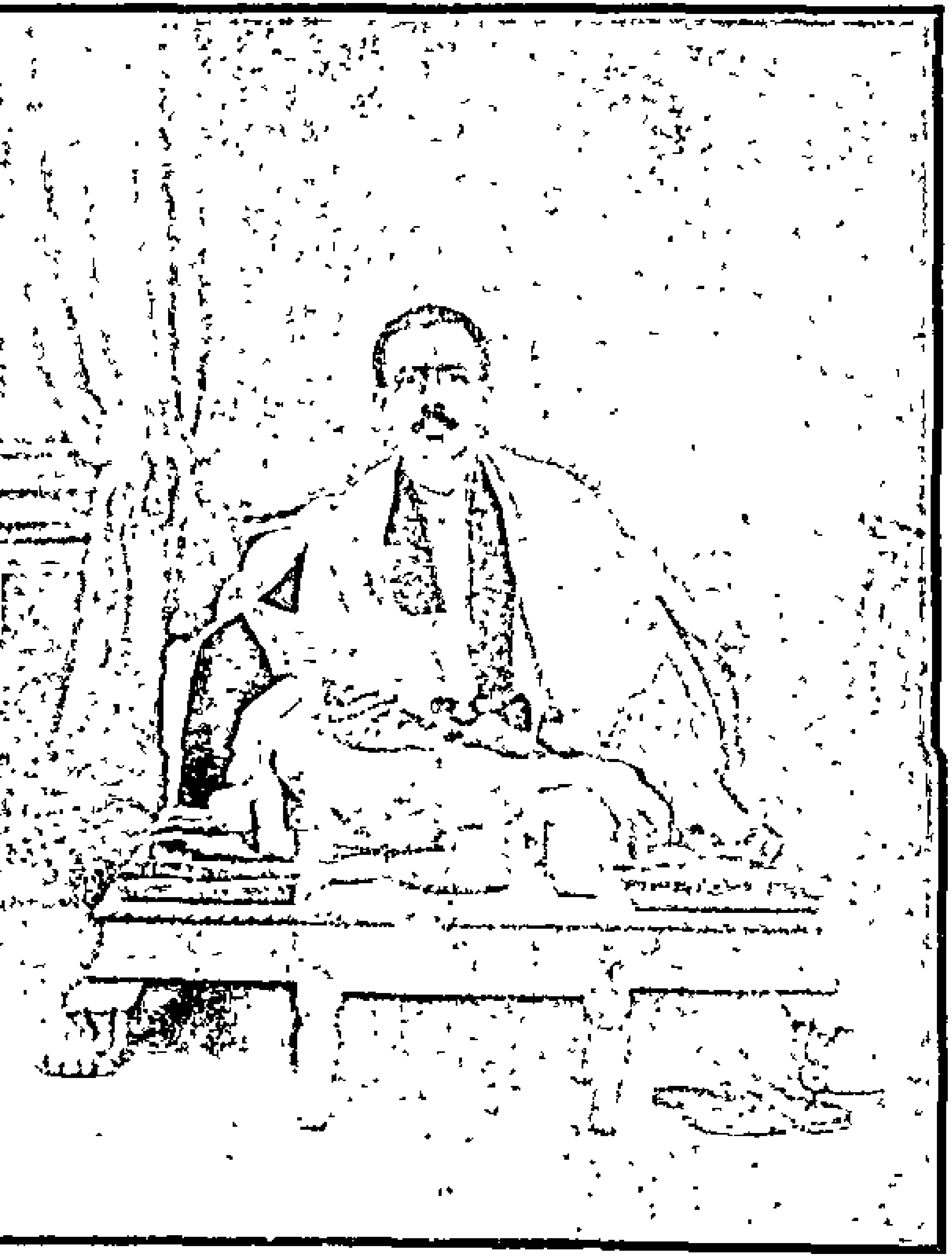

(ગો. શ્રીવ્રજરત્નલાલજીમહારાજ નિજ આત્મજ ચિ. શ્રીગોવિન્દરાયજી તથા

સુરત
શ્રીબાલકૃષ્ણ શુદ્ધાદ્વૈત
મહાસભાનો
વાર્ષિક મહોત્સવ

ઉચ્ચ આસનપર્ વાવ ના વામ ભાગથી અનુક્રમે–૧ તિ ગો શ્રી ગોપીનાથજી (મુંબાઈ), ૨ ગો શ્રી દીક્ષિતભગવાન ૩ ગો શ્રી ૬ શ્રી વ્રજરત્નલાલજી મહારાજ,
૪ સભાપતિ તૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજ, ૫ ચતુર્થપંચમ પીઠાધીશ્વર ગો શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મહારાજ

(Pho o By V N Maheta Surat)

હિમતભેર ત્યાં પધાર્યા જ્યાં બાદશાહે પોતાના વગુરુમના અનાગના મધ્યમાં આપશ્રીને જ્યારે પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે આપશ્રીએ સાફ સાફ સુણાવી દીધું કે 'બાદશાહ ' એ તિલક ને માળા તો શિર સાટે છે ચાહે તે કરી લો, પણ એ ઉતરશે ત્યારે પૂર્વનો સૂર્ય પશ્ચિમમાં ઉગ્યો હશે '

હિન્દી ભાષાના કેટલાક કવિઓએ આ પ્રસંગ સંબંધી અનેક પદો રચ્યાં છે તેમાં શ્રીવિહારીવલ્લભ અને શ્રીપતિનાં કાવ્યો આપની આગળ હું ઉદ્ધૃત કરીશ

શ્રીવિહારીવલ્લભ કહે છે

टेककी, टेककी, टेककी रे, गिरि टेक टरे तो, टरे ध्रुव तारो ॥
श्रीगोकुलनाथजी माला तजे तो शेष सीस न धरे भूभारो ॥
पोन थके तो थके तो थके, व्रजको पन कौन करे महिमें रतन्यारो ?
श्रीवल्लभवंश 'विहारी' कहे कवि गावत है जगमें जश थारो ॥

શ્રીપતિ ગાય છે—

शाह कही सो न करी, करी सो वेद पुरानन भाखी ।
माल तिलक जनेऊके कारन, अडेन पेंडन नाखी ॥
श्रीपत कहे जहांगीरके खान, जे उमराव ते सब साखी ।
श्रीविठ्ठलनाथजुके श्रीगोकुलनाथजी सब हिंदनकी पत राखी ॥

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

સુરતમાં આનંદ—પૂજ્યપાદ વિદ્વદ્રત્ન આચાર્યવર્ય ગોસ્વામી શ્રી ૧ શ્રીમદ્વ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીના જ્યેષ્ઠ કુમાર આયુષ્માન્ ગો. શ્રી ૧ શ્રીગોવિન્દરાયજી બાવાસાહેબનાં અખંડસૌભાગ્યવંતા શ્રીમતી વહુજીનાં સીમંતોન્નયન પ્રસંગે સુરતમાં આનંદનો ઓઘ પ્રસરી રહ્યો હતો. બહારગામથી શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર અને એઓશ્રીના આત્મજ અનુજ તથા શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર અને મુંબાઇથી ગો. શ્રીદીક્ષિત ભગવાન્ તથા ચિ. શ્રીગોપીનાથજી પધાર્યાં હતા. આ પ્રસંગે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણનો મહામહોત્સવ પણ પ્રાપ્ત થતાં સુવર્ણસુગંધનો મહાન્ સુખદ સંયોગ થયો હતો. માર્ગશીર્ષ વદ ૮-૯-૧૦ એ ત્રણ દિન સભા રાખવામાં આવી હતી. આ સભાએ એક 'પરિષદ્' ના મહાધિવેશનની ઝાંખી કરાવી હતી. ત્રણે દિવસના સાંજના ત્રણ-ચાર કલાક આકર્ષક, ઉદ્બોધક અને ચેતનાપ્રસારક તરીકે યાદગાર બન્યા હતા. આજ શુભ પ્રસંગે મહારાજશ્રીએ સ્થાપેલી મહાસભાનો વાર્ષિક મહોત્સવ પણ ઉજવાયો હતો. સંપ્રદાયમાં ૭ વર્ષ જેટલા ટુંક સમયમાં આ મહાસંસ્થાએ સંગીન માર્ગદર્શક પ્રગતિ કરી છે. વૈષ્ણવપરિષદ્ જ્યારે એકદેશી કાર્યક્ષેત્રમાંજ કૃતાર્થતા માનતી ત્યારે આ સંસ્થાએ વિશાળતમ કાર્યક્ષેત્રમાં ઝંપલાવીને સફલતા પ્રાપ્ત કરી છે. પુરાતત્ત્વશોધનનું કાર્ય, પ્રાચીન સાહિત્યનું મુદ્રણ, ભાષાંતરો, પાઠશાલાસ્થાપનાદિ, માસિકાદિદ્વારા પ્રચારકાર્ય અને ખાસ કરીને તો બાલકો-બાલ્યાવસ્થાથીજ સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના અભ્યાસી બને તેને માટે જે પરીક્ષા તથા ઇનામોની જે યોજના કરી તેને માટે તો આ મહાસંસ્થા ચિરસ્મરણીય બની છે. માર્ગશીર્ષ વદ ૮ ના રોજ પ્રથમ અધિવેશન થયું. શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૧ શ્રીમદ્વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજશ્રીને પ્રમુખસ્થાન અર્પવાની દરખાસ્ત શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રી ૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ મૂકી અને પોતે શ્રીદ્વારકાધીશ્વરના તિલકાયિત હોવાથી, દ્વારકાલીલામાં મર્યાદાનું પાલન હોવાથી આ સભામાં સુવ્યવસ્થાનું પાલન એઓશ્રી કરશે, એવી મતલબનું ટુંકું પણ માર્મિક વિવેચન કર્યું. તે પછી સુરતના સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવ ઑનરરી મેજીસ્ટ્રેટ સરદાર ધીરજલાલ છબીલદાસ ન્ટોર બી.એ. એ સંસ્થાનો હેવાલ વાંચ્યો. આ સમયનું સભાનું ચિત્ર આજ અંકમાં છે. હેવાલમાં વર્ષ દરમ્યાન સ્થાનિક (સુરત) ની મહાસભાએ સુરતમાં શી શી પ્રવૃત્તિ કરી તેનું સૂચન હતું. તેમાં મહારાજશ્રીએ પોતે ષોડશ ગ્રંથો ઉપર સવિસ્તૃત પ્રવચન કરી સુરતના વૈષ્ણવોને અલભ્ય લાભ આપ્યો હતો. વર્ષો પછી આવું હૃદયાકર્ષક પ્રવચન સાંભળવાનો લાભ સુરતના વૈષ્ણવોને પ્રાપ્ત થયો હતો. આ ઉપરાંત મહાસભાએ પ્રગતિમાં આગળ પગલાં માંડયાં હતાં. મહારાજશ્રી ૧૬ વર્ષથી 'શ્રીબાલકૃષ્ણગીર્વાણવિદ્યાલય' નામની સંસ્થા ચલાવતા હતા અને અનેક દ્વિજબાલકો સંસ્કૃત ભાષા સાહિત્યનું અધ્યયન તેમાં કરતા હતા. તેમજ સંસ્થાને અંગે એક છાત્રાલય (બોર્ડિંગ) પણ હતું. આ સંસ્થાઓનો વિનામૂલ્ય લાભ વિદ્યાર્થીઓને અપાતો હતો. ઉપરાંત આ પાઠશાળાનો લાભ સ્કુલ તથા કૉલેજના વિદ્યાર્થીઓ પણ લેતા હતા. આ જામેલી સંસ્થાનો વહીવટ મહાસભાએ પોતાના હાથમાં ગયા આષાઢ માસમાં લીધો. આ સંસ્થાને સરકારી કેળવણી ખાતાએ મંજૂર કરીને ગ્રાંટ પણ આપવા માંડી અને સંસ્થાના પ્રેક્ષકો તથા પરીક્ષકોએ ઉત્તમ અભિપ્રાયો આપ્યા. પાઠશાળાનો લાભ ૩૯ વિદ્યાર્થીઓ લે છે અને ૧૩ વિદ્યાર્થીઓ છાત્રાલયમાંજ રહે છે. સ્કુલ તથા કૉલેજના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા જુદી છે. આ ખરચાળ સંસ્થા ચલાવવા માટે રોકડ, અનાજ, વસ્ત્ર, મકાન આદિ સર્વની આવશ્યકતા છે. આશા છે કે વૈષ્ણવો જેમ અન્ય જાહેર સંસ્થાઓ નભાવવા માટે હજારો રૂપીઆનો વ્યય કરે છે, તેમ આ પોતાની ધાર્મિક સંસ્થાને પોષવા માટે પાછી પાની નહિંજ કરે. આ પ્રમાણે હેવાલ વંચાયા પછી ગો. શ્રીદીક્ષિત ભગવાને પ્રવચન કર્યું. આપનું પ્રવચન કવિપ્રખ્યરત્નાકરની શૈલીને અપનાવતું હતું. સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના નિચોડરૂપ આ અસરકારક વ્યાખ્યાને વૈષ્ણવોનાં હૃદયમાં અનેરો પ્રકાશ અર્પ્યો. એક લાભ આ પ્રવચનથી ન મળ્યો. આ પ્રવચન આપશ્રીએ પોતેજ લખેલું હતું અને સભામાં પોતેજ વાંચતા હતા. જો પોતે સ્વતઃ વાંચ્યા વિનાજ વ્યાખ્યાન કરત, (જેમ અન્ય સ્થળે કરે છે) તો કૃપાદૃષ્ટિદ્વારા વૈષ્ણવોના નેત્રોમાં ઓરજ આનંદ છવાઇ રહેત. વક્તા અને શ્રોતાની દૃષ્ટિ એક થયા વિના આનંદમાં ઉણપ રહે છે. અન્ય વિવેચનો થયાં. મને પણ થોડું બોલવાની આજ્ઞા થતાં શ્રીગુસાંઇજી અને 'પતિતોનો ઉદ્ધાર' એ વિષે થોડું વિવેચન કર્યું. હાલમાં સળગી રહેલા

શ્રીકૃષ્ણાય નમઃ

શ્રીકૃષ્ણ પંચાંગ. "કાયમી"

Perpetual Calender.

૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮
શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ, એ છે ગોવિંદના અંતઃકરણની ધુન ભક્તાધીન, શ્રીકૃષ્ણ શરણથી અમને શ્રીકૃષ્ણ
૫ ૧ ૧ ૪ ૬ ૨ ૪ ૭ ૩ ૫
૧૧ ૧૨
પ્રાપ્તિ છે. અચ્યુત.
૧ ૩

સમજ.

૧. ઉપરના બાર શબ્દો એટલે અનુક્રમે બાર અંગ્રેજી મહીનાના નામ છે.

૨. આ કેલેન્ડરમાં સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં જાનેવારી તથા ફેબ્રુઆરીમાં પ્રથમવાર સોમવાર લેવો અને બાકીના માસમાં એટલે માર્ચથી ડીસેમ્બર સુધીમાં પ્રથમ વાર મંગળવાર લેવો. કારણ કે ૧૯૩૨ નું "Leap Year" લીપ વર્ષ છે.

૩. આ શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી ગણતાં છેલ્લે અક્ષરે, જે વાર આવે તે વારે પહેલી તારીખ આવે. જેમકે પ્રથમ જાનેવારી માસ લો, તેમાં પ્રથમ શબ્દ "શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ" છે. તેમાં પાંચ અક્ષર છે, એટલે પેરા બીજામાં જણાવ્યા મુજબ પ્રથમવાર સોમવારથી ગણતાં પાંચમા અક્ષરે પાંચમો વાર શુક્રવાર આવે છે. એટલે જાનેવારી માસની પહેલી તારીખે શુક્રવાર આવે. બીજો દાખલો ત્રીજો માર્ચ માસ લો, તેમાં "છે" એક અક્ષર છે. માટે બીજા પેરામાં જણાવ્યા મુજબ પ્રથમ વાર મંગળવાર છે. એટલે માર્ચ માસમાં પહેલી તારીખે મંગળવાર આવે. ત્રીજો દાખલો આઠમો ઑગસ્ટ માસ લ્યો, તેમાં "શ્રીકૃષ્ણશરણથી" સાત અક્ષર છે. એટલે મંગળવારથી ગણતાં સાતમાં અક્ષરે સાતમો સોમવાર આવે છે, માટે ઑગસ્ટ માસમાં પહેલી તારીખે સોમવાર આવે.

ટુંક સમજ:—ઉપરના બાર શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે. તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી તે માસની પહેલી તારીખ આવે.

૪. સને ૧૯૩૨ ની સાલ પછીથી દરેક સાલ માટે પ્રથમ વાર તરીકે અનુક્રમે વાર લેવા અને Leap Year માં લીપ વર્ષમાં પાંચ મહીનાથી તે પછીનો વાર પ્રથમવાર તરીકે ગણવો.

જેમકે સને ૧૯૩૩ ની સાલમાં પ્રથમવાર બુધવાર, ૧૯૩૪ માં પ્રથમવાર ગુરુવાર, ૧૯૩૫ માં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૬ મા જાનેવારી તથા ફેબ્રુઆરી માટે પ્રથમવાર શનિવાર અને માર્ચથી રવિવાર સને ૧૯૩૭ માં પ્રથમવાર સોમવાર અને તે મુજબ ગણવું.

લી. શ્રીકૃષ્ણદાસ ગોવિંદલાલ કેશવલાલ.
ઠે. માંડવીની પોળમાં શેઠનીપોળ શ્રીકૃષ્ણદ્વાર—**અમદાવાદ.**

* * *

વાપોડીઆ પ્રકરણ—સુપ્રસિદ્ધ આગેવાન શ્રીયુત મણિલાલ કાશીવાળા વિષે ગતાંકમાં જે ઈસારો કર્યો હતો, તે પરથી તેમનો પત્ર અમને મળ્યો છે. એ વાંચતાં તેમને વિષે જે ખબર મળી હતી તે ખોટી ઠરી છે અને ચાલુ અંત્યજ હીલચાલમાં ધર્મનું ઉલ્લંઘન થાય તેવું કોઈ પણ વર્તન તેમના તરફથી થયું નથી જાણી આનંદ થયો છે. તેમને થયેલા અન્યાય માટે અમે દીલગીર છીએ. વળી વાપોડીઆમાં સમાધાન થઈ ગયું છે. ખાનગી શાળા બંધ થઈ છે અને અંત્યજ બાળકોને છેટા બેસાડવાની શરતે સરકારી શાળાનો લાભ બધા પટેલોની માફક લેવા લાગ્યા છે.

जयति ॥

(विद्ययाऽमृतमश्नुते)

संख्या ३

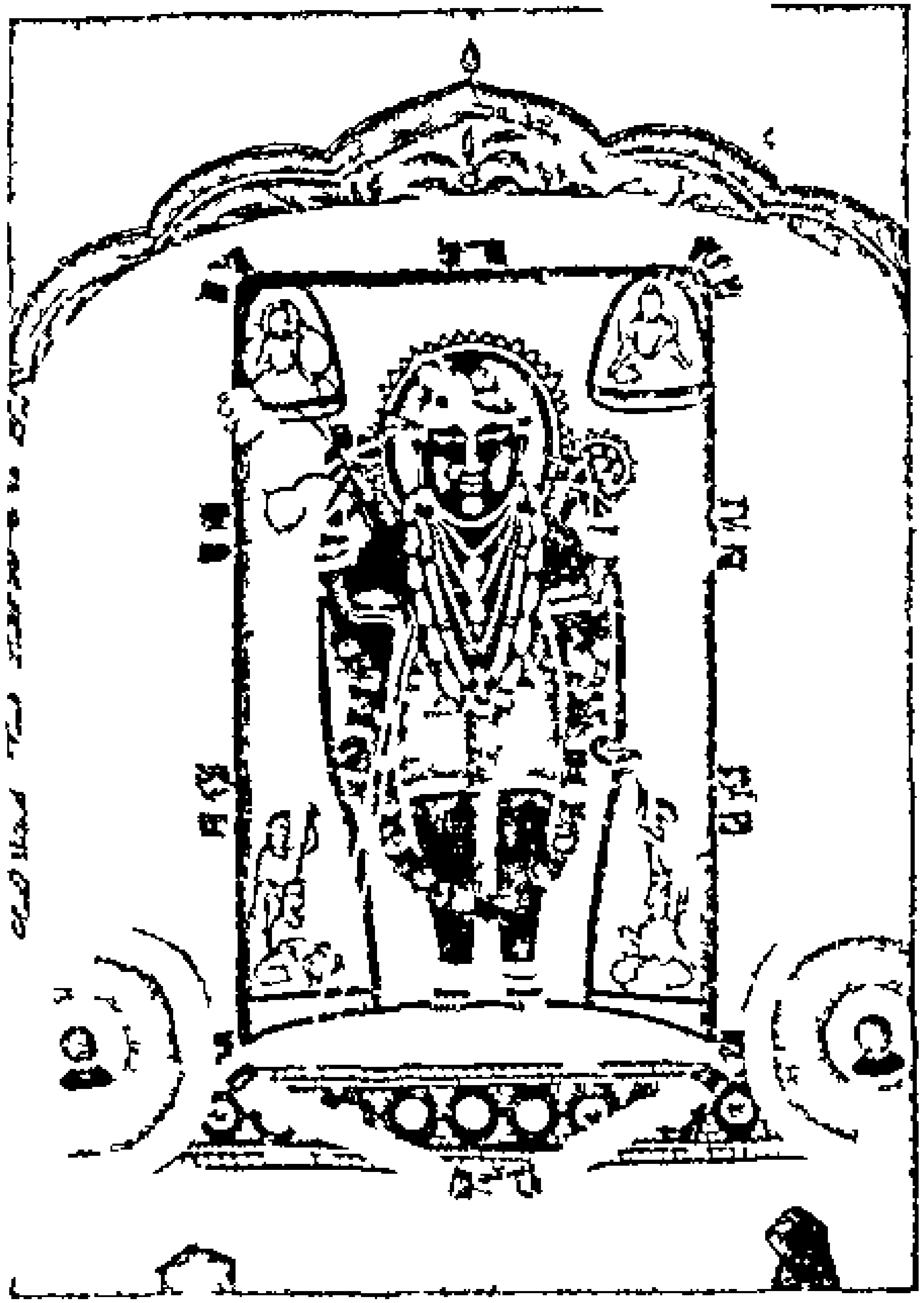

महोर छाप

“श्रीविद्याविभाग कांकरोली.”

सन्मानोपाधिपत्रम्

श्रीमन्निखिलभूमण्डलाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षम-भक्तिमार्गाब्जमार्तण्ड-भगवद्वदनानलावतार-
श्रीमद्वल्लभाधीश्वर-देशिकेन्द्र-प्रादुर्भावित-शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय-श्रीतृतीयपीठाधीश्वरा गोस्वामिकुलकमलदिवाकरा',
श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजीमहाराजा, कांकरोलीनरेशा, श्रीविद्याविभागाध्यक्षा, साम्प्रदायिकप्रचारविषयक
वैदुष्यसन्तुष्टस्वान्ता अहमदाबादनगरवास्तव्य शास्त्रिवसतरामशर्माणं, “शुद्धाद्वैतभूषण” इतिसन्मानोपाधिना
सोत्साह सप्रसादं समलंकुर्वन्ति। कांकरोली, फाल्गुन कृ २ सम्वत् १९८८।

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૬.] ફાલ્ગુન, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩. [અંક ૧૨

श्रीमद्वल्लभवंशविभूषणश्रीव्रजभूषणमहोदयानां यज्ञोपवीतोत्सवसमुचितं

शुभाशंसनम्.

१.

सद्भक्तैकशिरोमणेः कविगुरोः सूरस्य संस्वता निश्रद्, वल्लभदेशिकेन्द्रदयितो, गोपाङ्गनाजीवनम् ॥
देवः श्याममनोहरो निजजनप्रेमानुविद्धः सदा यस्यां राजति सा विभाति सुभगा चापासनी पावनी ॥

२.

श्रीमद्वल्लभदेशिकेश्वरकुले लब्धावतारा क्रमात् तस्या पीठमतिष्ठिपन् विजयिनो गोस्वामिनो देशिका. ॥
येषां प्रौढतमैः प्रभावविभवैर्विश्वत्र विस्तारिभिर्व्याकृष्टा गृहसेवकत्वमदधुस्ते ते धरित्रीभुजः ॥

३.

स्थाने तत्र कुले च ता विलसन्, सर्वात्मना पूर्वजैः क्षुण्णे वर्त्मनि संचलन्ननुपमं तेजोविशेषं वहन् ॥
बुद्ध्या सद्बुधवृन्दविस्मयकृता माहात्म्यमुद्भावयन् गोस्वामी व्रजभूषणो विजयते बाल्ये प्यवालोदय. ॥

४.

प्रोद्यद्वैदिकमन्त्रसद्गुणरवः, साह्लादवैतालिकप्रोद्गीताभ्युदयः, कवीन्द्ररचना प्रागल्भ्यजागर्तिकृत् ॥
श्रद्धासत्कृतवर्यविप्रनिवहाशीर्वादसंभावितो गायत्रीग्रहणोत्सवः प्रतिनवस्तस्याद्य विद्योतते ॥

५.

ब्रह्मचारशिखस्य, कामविरतिं संबिभ्रत पावनीं, लोकैर्बद्धकरैः स्तुतस्य, महसां वीतावधीनां निधेः ॥
साधुस्नेहपुरस्कृतस्य निभृतं, सावित्रदीक्षाजुषो बालस्यास्य विभानसोऽत्र फलितस्तुत्यः प्रभावो जनैः ॥

६.

सौजन्यं समुदेतु साधु भवतो विद्याप्रकर्षाश्रितं, नित्यं मन्दिरमिन्दिराविलसनैर्विभ्राजतां विस्तृतैः ॥
दिश्याद्यानिशमेकतानमनसा संसेव्यमानः प्रभुर्देवः श्याममनोहरो नवनवाः श्रेयोमयीः सम्पदः ॥

७.

इति चापासनीसमाश्रितभट्टकुलवासमनाः प्रणयी । 'कविकिङ्करः' इति स्वामुपहरते गिरिधरो मुदितः ॥

विनीतः, भावुकः, निराश्रितः भट्टगिरिधरशर्मा, बागरोदी कविकिङ्करः अलवरस्थः

गोकुलमृगनयनीनामतिशयमन्मथैरपाङ्गसंकेतैः । नृत्यन्मधुरवपुर्वरमुपनिषदां वन्दते हृदयम् ॥१॥
आक्रान्ताया यवनैरवनेरुद्धर्ता लीनविभवस्य । विद्यानगरनृपतेः सदसि जयी देशिको जयति ॥२॥

तस्यान्वये भुवनविश्रुतकीर्त्तिराशावासीत्सुधोदधिसमे सदृशः सुधांशोः ।
गाम्भीर्यधैर्यविनयादिगुणैकसिन्धुर्बन्धुः-स सद्गुणवतां रघुनाथलालः ॥३॥
तस्यात्मजन्मनः श्रीमद्व्रजभूषणशर्मणः । उपनायनवेलायामिदमस्त्वभिनन्दनम् ॥४॥
आत्तस्वभक्तबलिराश्रितकामपूरः पद्माश्रयप्रणयपूजितपादपद्मः ।
तन्वा लघुर्गुणगणैर्गुरुरार्यहृद्यो राजत्युपेन्द्रसदृशो व्रजभूषणोऽसौ ॥५॥
चित्रं यदुद्दण्डकरोऽप्यदण्डकरो जनैनैष वटुर्विमृष्टः ॥
विनीतचर्यो यदयं च सत्यं न मे खलो भाति समेखलोऽपि ॥६॥

श्याममनोहरदययाऽऽचार्यकृतिं सफलयन् भूयात् । भारतभूतलभूषणमाचार्यश्चर्यया चारुः ॥७॥
इति किञ्चिदकिञ्चिज्ज्ञोऽप्यार्यैः प्रेम्णा पुरस्कृतः । पुरुषोत्तमशर्माख्यश्चतुर्वेदः समभ्यधात् ॥८॥

पण्डित पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदः "साहित्याचार्यः"

गोस्वामिवंशाम्बुजभास्करस्य महोदयश्रीरघुनाथमूर्त्तेः ॥
सुतस्य दृष्ट्वा मुदमाप लोको "यज्ञोपवीत परमं पवित्रम्" ॥१॥
वेदाननः किल कमण्डलुमण्डितोऽपि वेदाननो न, वटुकोऽयमहो व्रतस्थः ॥
आपादभूषिततनुर्न च वत्सरोऽसौ नो वा मनो हरति वामनतामुपेतः ॥२॥
यः श्रीवल्लभवल्लभस्य वदनश्रीवल्लभार्य–प्रभोः वंशे विश्वविशुद्धवादविदिते, विद्याविशेषप्रभः ॥
सोऽयं श्रीव्रजभूषणो विजयते, नूत्ने वटुत्वे वृतो वेदार्थव्रतबन्धबन्धनविधौ भिक्षाप्रतीक्षापरः ॥३॥
यत्स्वान्ते पुरवासिनामभिनवं कौतूहलं जायते। येन स्वीयनरेषु भक्तिसहितो मोदः समुद्भासते ॥४॥
यच्चात्मीयजनेषु मङ्गलमयः प्रोज्जृम्भते चोद्भवः। तन्मूलं व्रजभूषणस्य परमो यज्ञोपवीतोत्सवः॥४॥

पो. कण्ठमणिशास्त्री विशारदः, कांकरोली.

नानादेशनिवासिसज्जनचयैः संसेवितोऽहर्निशं शुद्धाद्वैतमतप्रचारकरणाल्लोकोपकारी महान् ।
मायावादनिरासकारणमसौ सद्धर्मसंस्थापको जीयाल्लक्ष्मणभट्टसूनुरमलः श्रीवल्लभार्यः प्रभुः ॥१॥
अखण्डभूमण्डलधर्मदेष्टा, द्रष्टा श्रुतिप्रोक्तसुधर्मकस्य ।
स्रष्टा च सद्धर्मपथस्य साक्षात्, क्रष्टा च पाखण्डमतस्य नित्यम् ॥२॥
तदन्वयेऽभूत्किल कृष्णजीवनः श्रीश्यामनाथाङ्घ्रिसरोजसेवकः ।
श्रीतत्त्वसिंहार्चितपादपीठकस्तदात्मजोऽभून्मुरलीधराभिधः ॥३॥
तदङ्गजः श्रीरघुनाथनामा, गोस्वामिवर्यो मतिमत्सु मुख्यः ।
तदात्मजः श्रीपुरुषोत्तमाख्यो, यो जीर्णदुर्गं समलंकरोति ॥४॥
तस्यानुजः श्रीव्रजभूषणाख्यश्चोपासनीपीठपदाधिकारी ।
द्विजत्वमाप्याऽद्य महानयं सन्मार्गोपदेष्टा भवितेति मन्ये ॥५॥

यज्ञोपवीतोत्सवके महान्तः समागता धर्मधुराधरा ये ।
दिशन्तु ते चाशिषमीश्वर एष धर्मोपदेष्टा भवतान्न आरात् ॥६॥
दाधीचो रामकर्णाख्य आसोपाकुलसंभवः । आशास्ते ह्ययमाचार्यः स्यात्सुधर्मधुरावहः ॥७॥

पंडित श्रीरामकर्णजी आसोपा, जोधपुर.

सुकृतं फलितं हि मादृशानामधुना मेऽपचिताः सुराश्च तुष्टाः ।
व्रजभूषणमद्य लोकयामि यदुत प्रोक्तविधेः यथोपनीतम् ॥१॥
दधदेष गोकुलपदे निजां रतिं दयितोद्भवः सकलमोदकारणम् ।
प्रियधेनुवत्स-सुखदायि-सेवनो व्रजभूषणो जयतु कीर्तिमांश्चिरम् ॥२॥
श्रीकृष्ण-पादयुग-सेवनदत्तचित्तः संपूज्यमातृपदपूजनकर्मलग्नः ।
सद्ब्रह्मसूत्रमुपसेव्य समाहितोऽथ वेदार्थसत्पथचरिष्णुरितः परं स्तात् ॥३॥

विद्याभूषणः श्रीभगवतीलालशर्मा.

श्रीमद्योधपुरेन्द्रमानितमहागोस्वामिवंशोद्भवः पूज्यश्याममनोहराङ्घ्रिकमलस्पर्शव्रती सन्मतिः ।
श्रीमद्गोकुलनाथवैष्णवगुरोर्वात्सल्यपात्रं चिरं जीव्याच्छ्रीव्रजभूषणोऽयमधुनाऽऽदर्शोपनीतिं श्रितः ॥
श्रीयुत योधपुरेश्वर का बहुमान्य कुलोद्भव बुद्धि-अनूना,
श्रीयुत श्याममनोहरके पद का जिसको प्रिय है नित छूना ।
श्रीयुत गोकुलनाथ महोदय का अति-प्रेम-कृपाश्रय दूना,
सो व्रजभूषण हो सुचिरायु, धरा जिसने उपनीति-नमूना ॥
यावद्यज्ञोपवीतप्रतिनियतदिनज्ञप्तिरासीत् पुरेऽत्र तावद्गोविन्दचन्द्राधिकृतजनतया कर्म कर्तुं प्रयेते ।
दूष्याणामुच्चभूषा विकृतविमलनं चित्रणं मण्डपश्रीर्मन्ये रामस्य चेयं ह्युपनयनवसन्तोत्सवैर्नव्यशोभम् ॥
जब से यज्ञोपवीत-उत्सव की बात चीत पुरमें हुई प्रतीत, तब से तैयारी है ।
प्रसन्न-मुखचन्द औ उज्ज्वल-सुकीर्तिचन्द्र वैद्य गोविन्दचन्द्र प्रबन्ध-अधिकारी है ॥
दूषित का उतारना, भूषित का उजारना, मण्डप का सँवारना चारु चित्रकारी है ।
क्या वसन्त-उत्सवको, ब्रह्मसूत्र-उत्सव को देख दाउ-मन्दिर ने नई छवि धारी है ॥
पूज्यश्रीव्रजभूषणस्य विततं सद्ब्रह्मसूत्रोत्सवपाथोधिं तरितुं रविर्नभ इवामुं कथंचिन् क्षमः ।
श्लाघे तत् सुषमा-प्रवर्तकमिदं गोस्वामिनां किं कुलं तं वा गोकुलमाकुलं ज्ञातिकुलं वा सत्कुलं धोकुलम् ॥
हीन-सर्व-दूषण के ज्ञान-रस-चूषण के पूज्य व्रजभूषण के ब्रह्मसूत्र-बल को ।
देख देख नित्य कवि सोच सोच कैसे छवि पार पावे, ज्यों कि रवि व्योम के वैपुल को ॥
उत्सव अपार देख उसमें संचार देख सागर में नागर ज्यों पाय कौन पुल को ।
स्वामि-कुलको सराहे, सराहे या गोकुल को कर्मिकुलको सराहे, या वैद्य धोकुल को ॥

पंडितः श्रीनित्यानन्दशास्त्री आशुकविः राजपूत स्कूल.

सन्ज्ञानगम्भीरतरां सुमूर्तिं दृष्ट्वा न के बोधचणा भवन्ति ।
स्मृत्वाऽनिशञ्चेतसि चित्स्वरूपम्, भक्ता भवत्पादयुगे लुठन्ति ॥१॥
सेवाप्रदत्ताखिलपूतभावो, देयात् प्रभुः श्याममनोहरस्ते ।
सूक्ष्माणि तत्त्वानि निरीक्षितुं ज्ञाम्, यतस्त्रिलोक्यां विजयं लभस्व ॥२॥
श्रीवल्लभे वल्लभतां लभन्ताम्, निरर्थधीराधरतान्धरन्ताम् ।
सदार्तिदीने दयतान्दयन्ताम्, पीडां हरन्तो भवताम्भवन्ताम् ॥३॥
गोपालपादपाथोज–परागे भ्रमरायताम् । तद्भक्तिमधुपेभ्योऽपि तनुतात्सुमनो मधु ॥४॥
चिरायुषस्सन्तु सदोपनीता व्रजभूषणाः । विष्णुप्रसादाद् भवतो लक्ष्मीर्नित्यमिहावतु ॥५॥

पण्डित वहुरा श्रीविष्णुशर्मा, जोधपुरीयदरबार-संस्कृत पाठशाला-प्रधानाध्यापकः.

उपनयनमुपागतो यशस्वी हरिचरणाब्जरतः कृती मनस्वी ॥
व्रजभूषणलाल एष बालो भुवि शरदामिह जीवताच्छतानि ॥
श्रौतस्मार्तमतानुसारधृतसद्यज्ञोपवीतव्रतः श्रीमद्गोकुलनाथनामसुमहागोस्वामिभिर्लालितः ॥
श्रीमच्छ्याममनोहराङ्घ्रिकमलप्रेमद्विरेफायितस्वान्तः श्रीव्रजभूषणो विजयते गोस्वाम्यसौ संततम् ॥२॥
उपनीतिसंस्कृतिमुपागतो द्विजो निजनीतिसंगतमनोरुचिर्भृशम् ।
चिरमेष जीवतु सतां सुखावहो व्रजभूषणः शमितसर्वदूषणः ॥३॥

पंडितश्रीदेवीदत्तशर्मा, हेड पण्डित दरबार हाई स्कूल.

श्रीसुबोधिनीजी.

(લેખક:—શ્રીયુત હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી.)

(ગતાંકથી ચાલુ.)

શ્રીમદ્ભાગવતનું શ્રીકૃષ્ણરૂપત્વ.

શ્રીમદ્ભાગવત સ્વરૂપાત્મક છે, એમ તો પુષ્ટિમાર્ગીય પ્રત્યેક વૈષ્ણવ સમજે છે જ. અને તદનુસાર મોટા મોટા મંદિરોમાં પ્રભુની સાથે નિજમન્દિરમાં શ્રીસુબોધિનીજી કે શ્રીમદ્ભાગવત શ્રીમહાપ્રભુજી આદિના હસ્તાક્ષરે લખાયલાં હોવાથી નિયમિત સેવા પણ થાય છે. કેટલાક વૈષ્ણવો તો સ્વરૂપના અભાવે શ્રીમદ્ભાગવતની સેવા કરી ભોગ ધરી પ્રસાદ લે છે. અર્થાત્ જ શ્રીમદ્ભાગવત અને ભગવત્સ્વરૂપ અભિન્ન છે એવી ભાવના સેંકડો વર્ષથી પોષાયલી છે. આ પ્રકારની ભાવનાનું મૂલ શ્રીમહાપ્રભુના વાક્યોમાં મળી આવે છે.

શ્રીભાગવતાર્થપ્રકરણના પ્રારંભમાં જ શ્રીમહાપ્રભુજી મંગલાચરણ કરીને શ્રીમદ્ભાગવતને ભગવત્સ્વરૂપથી અભિન્ન જણાવે છે–श्रीकृष्णं सच्चिदानन्दं दशलीलायुतं सदा । सर्वभक्तसमुद्धारे विस्फुरन्तं परं नमः આ સ્થલે શ્રીકૃષ્ણને દશલીલાયુક્ત કહે છે. શ્રીકૃષ્ણની દશવિધલીલાનો ઉલ્લેખ કરવાનું કારણ ફલરૂપ પરમાનન્દનું સાધન શ્રીભાગવતશ્રવણ જ છે, તેથી દશલીલાયુક્તત્વે શ્રીભાગવતશ્રવણરૂપતા પણ છે જ. પ્રભુ દશવિધલીલાયુક્ત છે અને ભાગવત પણ દશવિધલીલાનું પ્રતિપાદન કરે છે; તેથી પણ દશવિધલીલાયુક્ત જ છે. શ્રીમહાપ્રભુજી કહે છે કે દશવિધલીલારૂપવ્યાપાર કરતું સ્વરૂપ જ

શ્રવણ વિષયત્વે પ્રાપ્ત છે. ભગવદવતાર અને શ્રીમદ્ભાગવત એ ઉભયનું પ્રયોજન સર્વભક્તસમુદ્ધાર છે. સર્વભક્ત એટલે હીન-મધ્યમ અને ઉત્તમ અધિકાર વિશિષ્ટ ભક્તો. જેમ અવતારદશામાં સાક્ષાત્ ઉદ્ધાર કર્યો, તેમ અનવતારદશામા શ્રીભાગવતાદિ ઉદ્ધારક છે, તેનું દેદીપ્યમાન પ્રમાણ પરીક્ષિતનો જ ઉદ્ધાર છે. પાણ્ડવોનો ઉદ્ધાર સ્વસ્વરૂપ વડે થયો, ત્યારે પરીક્ષિતાદિનો ઉદ્ધાર શ્રીમદ્ભાગવત વડે થયો. આથી વિશેષ ભાગવતની ભગવત્સ્વરૂપતાના વિષયમા કશું કહેવા જેવું અવશિષ્ટ જ રહેતું નથી. તથાપિ, જો પ્રમાણોનો જ સંગ્રહ કરવો હોય તો ઘણાયે પ્રમાણો મળી શકે છે. શ્રીમદ્ભાગવતની વાસ્તવિક મહત્તા તો તેમા પ્રતિપાદન કરેલા તત્ત્વો ઉપરથી જ જાણી શકાય તેમ છે. ઇતર પ્રમાણો માહાત્મ્યનું જ ખ્યાપન કરે છે.

ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય.

શ્રીમદ્ભાગવતનું ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય સ્થાપન કર્યું છે [1]इदं द्वादशस्कन्धं पुराणं हरिरेव स ઇત્યાદિ વાક્યો દ્વાદશસ્કન્ધયુક્ત પુરાણ એટલે શ્રીમદ્ભાગવતને શબ્દતઃ અને અર્થતઃ સાક્ષાત્ ભગવદ્રૂપ જ સ્વસ્વરૂપે ભેદ હોવા છતા પણ-પરસ્પરાકાંક્ષાથી રહિત હોવા છતા પણ-ભગવદ્રૂપ હોવાથી ઉભય (પ્રભુનું નિજસ્વરૂપ અને શ્રીમદ્ભાગવત) એક જ છે. શ્રીમદ્ભાગવતના બાર સ્કન્ધ પ્રભુના દ્વાદશ અંગ જ છે તે નીચેના કોષ્ટક Table ઉપરથી સમજી શકાશે.

અંગનામ.	સ્કન્ધ.	લીલા	સર્ગાદિ લીલાની વ્યાખ્યા.
૧ દક્ષિણચરણારવિન્દ	પ્રથમ સ્કન્ધ	અધિકાર	૦
૨ વામચરણારવિન્દ	દ્વિતીય સ્કન્ધ	જ્ઞાન	૦
૩ દક્ષિણ બાહુ	તૃતીય સ્કન્ધ	સર્ગ ૧	બ્રહ્મની પાસેથી સત્ત્વાદિ ગુણના વૈષમ્ય વડે પંચમહાભૂત, તન્માત્રા, ઇન્દ્રિયો અને અન્તઃકરણની ઉત્પત્તિનો પ્રકાર સર્ગ શબ્દવાચ્ય છે
૪ વામ બાહુ	ચતુર્થ સ્કન્ધ	વિસર્ગ ૨	બ્રહ્માની પાસેથી ચરાચરની ઉત્પત્તિ વિસર્ગ છે
૫ દક્ષિણ સક્થિ	પંચમ સ્કન્ધ	સ્થાન ૩	ભગવાનનો વિજય-સર્જેલા પદાર્થોનું મર્યાદાપૂર્વક પાલન જ ઉત્કર્ષ છે આ સ્થાનલીલા છે
૬ વામ સક્થિ	ષષ્ઠ સ્કન્ધ	પોષણ ૪	નિજ ભક્તો ઉપર પ્રભુનો અનુગ્રહ પોષણ-પુષ્ટિશબ્દવાચ્ય છે
૭ દક્ષિણ શ્રીહસ્ત	સપ્તમ સ્કન્ધ	ઊતિ ૫	કર્મ વડે વૃદ્ધિ પામે તે ઊતિ-કર્મ વાસના ઊતિલીલા છે.
૮ દક્ષિણ સ્તન	અષ્ટમ સ્કન્ધ	મન્વન્તર ૬	ભગવદનુગ્રહીત મન્વન્તરાધિપતિઓનો ધર્મ તે મન્વન્તરલીલા

૯ વામ સ્તન	નવમ સ્કન્ધ	ઈશાનુકથા ૭	અવતારોનું ચરિત્ર અને ભગવાનને અનુસરનારા રાજાઓનું ચરિત્ર ઈશાનુકથા કહેવાય.
૧૦ હૃદય	દશમ સ્કન્ધ	નિરોધ ૮	પ્રપંચવિસ્મૃતિપૂર્વક ભગવદાસક્તિ નિરોધ છે.
૧૧ શ્રીમસ્તક	એકાદશ સ્કન્ધ	મુક્તિ ૯	અન્યથા રૂપનો ત્યાગ કરી સ્વરૂપમાં અવસ્થિતિ એ મુક્તિ.
૧૨ વામ શ્રીહસ્ત †	દ્વાદશ સ્કન્ધ	આશ્રય ૧૦	જગતનો આવિર્ભાવ, નિરોધ અને પ્રલય જેનાથી જાણી શકાય તે આશ્રય.

આ રીતે શ્રીનાથજીના દ્વાદશ અંગો સાથે શ્રીમદ્ભાગવતની સરખામણી થાય છે. અને તેથી જ इदं द्वादशस्कन्ध पुराणं हरिरेव सः ઇત્યાદિ વાક્યો સંગત થાય છે.

શ્રીમદ્ભાગવતની મહત્તા શાથી છે?

પુરાણ પંચલક્ષણ છે, એ ઉપર કહેવામાં આવ્યુ છે. શ્રીમદ્ભાગવત દશલક્ષણયુક્ત છે. तस्मा इदं भागवतं पुराणं दशलक्षणम्। प्रोक्तं भगवता प्राह प्रीतः पुत्राय भूतकृत (२-९-४२) તે (પૂછનાર) પુત્ર નારદને પ્રસન્ન થયેલા બ્રહ્માજીએ દશલક્ષણયુક્ત ભાગવત કે જે (તેમણે પણ) ભગવાનની પાસેથી સાંભળ્યું હતું–કહ્યું. એ દશલક્ષણ ઉપર જણાવેલી દશ પ્રકારની લીલા એજ છે. અન્ય પુરાણો પંચલક્ષણ છે અને ભાગવત દશવિધલીલાવિશિષ્ટ હોવાથી અન્યની અપેક્ષાએ વિશિષ્ટ છે, આજ તેની મહત્તા છે.

ટિપ્પણી ક્યાંથી લેશો?

સાંપ્રદાયિક વ્રતોત્સવની ટિપ્પણી તથા પંચાંગો મેળવવા માટે આ સ્થળે જાઓ, અથવા પત્રવ્યવહાર કરો. મૂલ્ય માત્ર ૧ આનો. ઠેકાણું:—**ગિરધરલાલ જ. શાહ**, શ્રીલાલબાવાનું મંદિર, કબૂતરખાનાં, ભૂલેશ્વર, **મુંબાઈ નં. ૨.**

---

† શ્રીનાથજી વામશ્રીહસ્ત ઉંચો કરીને ભક્તોને બોલાવે છે. જુઓ શ્રીસુબોધિનીજીમાં અમારું વિવેચન અને ઉપોદ્ઘાત.

* નિરોધની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા દશમસ્કન્ધનો પરિચય કરાવતી વખતે આપીશું. અને તેથીયે વિસ્તાર શ્રીસુબોધિનીજીના જન્મપ્રકરણના ભાષાન્તરમાં સ્વતન્ત્ર વિવેચન અને ફુટનોટમાં લખ્યો છે. જિજ્ઞાસુએ ત્રણ રૂપીઆ મોકલાવીને ગ્રાહક થવું. લખો આ પત્રના કાર્યાલયમાં અથવા હરિશંકર શાસ્ત્રી મોટું મંદિર, નડિઆદ.

આ એક અને અદ્વિતીય બ્રહ્મ 'સત્'જ હતું તેણે અનેક થવાની ઇચ્છા કરી, તેણે તેજ સર્જ્યું" ઇત્યાદિ શ્રુતિમાં 'સત્'શબ્દવાચ્ય નિમિત્ત અને ઉપાદાન કારણ છે એમ પ્રસિદ્ધજ છે. આ શ્રુતિમાં સત્‌ને ઉપાદાન કહીને એક અને અદ્વિતીય કહેવાથી તેનું બીજું કોઈ અધિષ્ઠાન નથી એમ અધિષ્ઠાનાન્તરનો નિષેધ કરી તેણે ઇચ્છા કરી એમ કહેવાથી તે એકજ છે એમ પ્રતિપાદન કર્યું છે; તેથી જગતના જન્મ સ્થિતિ અને પ્રલયોનુ ઉપાદાન અને નિમિત્ત કારણ પોતે એકજ બ્રહ્મ છે એમ લક્ષિત થાય છે. અને તે ઉપરથીજ સર્વજ્ઞત્વ, સત્યસંકલ્પત્વ, સર્વશક્તિમત્ત્વાદિ આકાર બૃહત્વથી પ્રાપ્ત થતું બ્રહ્મ છે એ સિદ્ધ થાય છે. તેથી આકારાન્તરની કલ્પના થઈ શકે નહિ. જગતનું જન્માદિ વિશેષણ હોવા છતાં પણ કોઈ જાતનો દોષ પ્રાપ્ત થતો નથી. તેમ વૈષમ્ય પણ નથી અને અન્યોન્યાશ્રય પણ નથી. એમ કહ્યું છે.

મધ્વભાષ્યમાં—[1]સૃષ્ટિ, સ્થિતિ. સંહાર, નિયમન, જ્ઞાન, અજ્ઞાન, બંધ, મોક્ષ જેથી થાય છે તે બ્રહ્મ છે. તેમજ ઉપર જણાવેલી શ્રુતિમાયે બ્રહ્મને કારણ કહ્યું છે જ એમ કહે છે.

ભટ્ટ ભાસ્કર ભાષ્યમાં—આ ઉપાદાન કારણ છે એમ કહે છે.

ભિક્ષુભાષ્યમાં—બ્રહ્મનું આ જન્માદ્યધિકરણમાં અધિષ્ઠાન કારણ સ્વીકાર્યું છે: અને તે (અધિષ્ઠાન કારણ) સમવાયી અસમવાયી નિમિત્ત આ ત્રણેથી જુદું ચતુર્થ કારણ છે. તે પ્રકૃતિ પુરુષાદિ અનેક શક્તિઓનો આધાર અને ચિન્માત્ર સ્વરૂપ છે એમ સ્વીકારે છે.

શંકરાચાર્યના—મતમાં સ્વીકારેલું નિર્વિશેષત્વનું ઉપર જણાવેલા બધાએ સ્વસ્વ પ્રસ્થાનની રીતિથી ખણ્ડન કરે છે.

યદ્યપિ આ સ્થળે **નીલકંઠ શિવાચાર્ય**ના ભાષ્યનું મત લખ્યું નથી, તથાપિ તે વિશિષ્ટાદ્વૈતમતાનુસારી હોવાથી તેની ગતાર્થતા થઇ જાય છે.

આ રીતે અહીં વ્યુત્પત્તિ માટે સ્હેજ ઉદાહરણ રૂપે મતો દેખાડ્યા છે,

प्रश्नोत्तरविचारग्रन्थ.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૭૨ થી ચાલુ.)

ઉત્તર ૭—સત્શાસ્ત્રોક્ત એવો જે ધર્મ તે થકી અવળો એવો જે પાખંડી ધર્મ તેના આચરણના કરનારા તથા જીવહિંસા આદિક જે પાપકર્મ તેના કરનારા, તથા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન અને ભગવાનના અવતાર, તેમના દ્રોહના કરનારા તથા સત્પુરુષોને તથા સદ્ધર્મને દૂષણ દેનારા તથા પીડનારા એવા જે ખળ પુરુષ, તેમની સાથે તો સહજ સ્વાભાવિક પણ સમાગમ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૮—સદ્ગુરુ કેવા હોય તે કહેવા ?

ઉત્તર ૮—જેહને બ્રહ્મનો પ્રત્યક્ષ (સાક્ષાત્કાર) અનુભવરૂપ સંગ હોય, જે સદા સત્માર્ગે જ વર્તતા હોય, સદાચારસંપન્ન હોય, જે પરંપરાથી (કુલપરંપરાથી) ભગવદ્ધર્માચરણજ [illegible] આવ્યા હોય, વૈષ્ણવદીક્ષાવાળા હોય, નિરંતર જેની બ્રહ્મનેજ વિષે અનન્ય નિષ્ઠા હોય, ષ્યના જન્મમરણાદિ (સંસારપ્રવાહ) તેના હર્તા, અને શિષ્યને સ્વધર્મનેજ વિષે મતિના દેનાર હોય, અસત્ કર્મને વિષે ક્યારે પણ ન પ્રેરના હોય, ને મત્સરથી (જે કોઇ એકનું સારું દેખીને તેનો ઉત્કર્ષ ખમી શકતા ન હોય એવા દુર્ગુણેથી) રહિત હોય, અને નિરંતર ધર્મનેજ

---

[1] उत्पत्तिस्थितिसंहारा नियतिज्ञानमावृतिः बन्धमोक्षौच पुरुषायस्मात्स हरिरेकराट् इति स्कान्दात् ।

ઉત્તર—લોભ ૧ કામ ૨ સ્વાદ ૩ માન ૪ અને મોહ ૫ એ પાંચ જે સ્વાર્થ કામના હેતુરૂપ માનેલા હોય તેનો જે નાશ થાય તે ક્રોધનું કારણ છે.

પ્રશ્ન ૧૮—ક્રોધાવેગમાં ચિહ્ન શાં છે ?

ઉત્તર—પોતાને અને પારકાને પીડાનો કરનારો ને કહેવા યોગ્ય અને ન કહેવા યોગ્ય એવાં જે વચન તેનો વિવેક ન રહે. એવો વિવેક નાશ કરનારો ને પોતાના સ્વરૂપને વિરૂપનો કરનારો તેને ક્રોધી જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૯—સત્‌માર્ગ ને કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—ચાર વર્ણના અને માહાત્મ્યજ્ઞાન ધર્મ વૈરાગ્યાદિ લક્ષણે યુક્ત એવી જે શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની ભક્તિ તે જે માર્ગને વિષે પ્રાધાન્યપણે થતી હોય ને જેમાં મુખ્યાગ્રહપૂર્વક ભગવદ્‌ધર્મજ પળાતો હોય તેજ સત્‌માર્ગ જાણવો. એટલે કલ્યાણકારી માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૦—અસત્‌ માર્ગ તે કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—વેદશાસ્ત્ર પુરાણ તંત્રાદિ અને મહાભારતાદિ ઇતિહાસમાં નિરૂપણ કરેલા વર્ણાશ્રમના ધર્મે સહિત એવી જે ભક્તિ તેથી રહિત એવાં કર્મજ્ઞાનાદિ તથા ૩ પ્રકારની સુરા અને ૧૧ પ્રકારનું જે મધ તેનું પાન જે વામમાર્ગી આદિકમાં થતું હોય એવો જે માર્ગ તે અસત્‌માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧—મનુષ્ય, તેમણે સર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરવા યોગ્ય એવી જે હિંસાવાળી કૃતિ તે સત્પુરુષોએ કયી કહી છે.

ઉત્તર—લિખ જૂ આદિક જેવાં સૂક્ષ્મ ચૈતન્ય પ્રાણીઓથી આરંભીને તે મનુષ્યાદિ સર્વ પ્રાણી માત્ર કોઇને પણ મને વચને કે ક્રિયાએ કરીને પીડા થાય એવું જાણી બુદ્ધે અધર્મને માર્ગે કરવું તે હિંસા બરોબર પાપરૂપ ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૨૨—ક્ષયને (પતનને) પમાડે એવો મુખ્ય દોષ કિયો છે ?

ઉત્તર—દેવતા, બ્રાહ્મણ. વિષ્ણુ, ગાય, સત્પુરુષ આચાર્યની ભક્તિ અને સત્પુરુષ તથા વિષ્ણુનું પ્રતિપાદન કરનાર એવું જે વૈદિક સત્‌શાસ્ત્ર તેની જે નિંદા કરે છે તેથી તે જરૂર ક્ષય (પતન) ને પમાડે એવો મહાન દોષ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૩—પુણ્યનો નાશ કરનારા અને અપકીર્તિના કરનારા એવા તે કિયા દોષ છે ?

ઉત્તર—૧ પરસ્ત્રીનું ગમન અને પરધન, પર સત્તાની વસ્તુમાત્રને છાનુંમાનું ચોરી લેવું હરી લેવું. ૨ વિશ્વાસઘાત. ૩ કૃતઘ્નપણું. ૪ પૂજવા યોગ્ય પદાર્થ (દેવગુરુ આચાર્ય વડીલ સત્પુરુષ આગળ માન કરવું.) ૫ કોઇના પર મિથ્યાવાદ મૂકવો. આ દોષો પુણ્યનો નાશ કરનાર છે અને અપકીર્તિ કરાવે છે.

પ્રશ્ન ૨૪—શ્રવણ કર્યા માત્રથી સમગ્ર પાપને હરી લે એવી કઈ કથા વાર્તા છે ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ નારાયણની જે કથા અને વાર્તા તે સમગ્ર પાપ માત્રને હરી લે એવી છે.

પ્રશ્ન ૨૫—વિદ્યા (સુવિદ્યા તે કયી છે.)

ઉત્તર—પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને વિષે મતિની આપનારી એવી જે બ્રહ્મવિદ્યા તેનેજ વિદ્યા જાણવી.

પ્રશ્ન ૨૬—અવિદ્યા તે કઇ જાણવી ?

ઉત્તર—અસત્યને વિષે જે સત્યપણાની બુદ્ધિ છે અને અનિત્યને વિષે જે નિત્યપણાની બુદ્ધિ છે તેજ અવિદ્યા (માયા) છે.

એવી રીતે છે કે–देवानां (का.   ) એ સ્થળે જે ભક્તિ સિદ્ધ કરવામાં આવી છે, તેવી ભક્તિવાળા જીવોનેજ કોઈ પણ જાતના આવરણ કે વિઘ્ન વિના તેવા આનન્દ રૂપનું દર્શન થાય છે. જુવો–“ पश्यन्ति ते मे रुचिरावतंसप्रसन्नवक्त्रारुणलोचनानि (का.   ) તેઓ જેમાં સુન્દર કર્ણભૂષણ, પ્રસન્ન મુખ અને લાલ લોચનો છે, તેવાં મારાં સ્વરૂપોનાં દર્શન કરે છે.” આ વાક્યમાં તે પદથી પૂર્વોક્ત ભક્તોનું સૂચન છે. “ भक्त्याहमेकया ग्राह्यः હું એક ભક્તિથી ગ્રહણ કરાઊં તેવો છું.” “ भक्त्यैवतुष्टिमभ्येति विष्णुः ભક્તિથીજ વિષ્ણુ ભગવાન સન્તોષ પામે છે.” એ વગેરે વાક્યોથી જાણી શકાશે કે–પ્રસન્ન થયેલા પ્રભુ પોતાનું ગુપ્તમાં ગુપ્ત રૂપ પણ ભક્તોને બતાવે છે. આવા ભક્તો સિવાયના બીજાઓને તો આવરણવાળું દર્શન થાય છે. તેવાઓને તો સત્ત્વગુણાત્મક શ્યામરૂપ, જે સ્વરૂપે રહેલા આનન્દરૂપમાં પ્રતિફલિત થયું હોય છે, તે બતાવે છે. આમ સત્ત્વમાં રહેલા રૂપનો પ્રતિફલન–પ્રકાર સાર્થકજ છે, તેવું કોઈ પણ જાતના દોષ વિના સ્ફુટ થાય છે.

આ પ્રમાણે બરોબર વિચાર કરવામાં આવે તો શ્રીમદાચાર્યચરણ તેમજ શ્રીપ્રભુચરણોના લેખમાં ક્યાંય પણ સિદ્ધાન્તવિરોધ કે વિરોધાદિરૂપ દોષ દેખાતોજ નથી. એમ વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ (નિશ્ચિન્તતાથી) જાણવું.

श्रीकृष्णनी सेवा.

(લેખક:—વિદ્યાર્થી ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ દેસાઈ,).

ભક્તિમાર્ગમાં સેવા એ જ ખરો ધર્મ છે માટે દરેક વૈષ્ણવે શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનું સ્વરૂપ અથવા ચિત્રજી પધરાવી સેવા કરવી જોઇએ કારણ કે શ્રીકૃષ્ણ એ જ પૂર્ણપુરુષોત્તમ છે તે ગીતાના પ્રમાણથી સિદ્ધ થાય છે. ગીતાના પંદરમા અધ્યાયમા द्वाविमौ पुरुषौ लोके ॥ એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે શ્રીકૃષ્ણ પૂર્ણપુરુષોત્તમ છે. તેમજ સિદ્ધાંતમુક્તાવલીમા પણ શ્રીમહાપ્રભુજીએ કહ્યું છે કે શ્રીકૃષ્ણ તો પરબ્રહ્મ છે. તેમજ શ્રીભાગવતના વાક્યથી પણ સિદ્ધ થાય છે. તેમજ શ્રીકૃષ્ણાશ્રયમાં पूर्णानन्दो हरिः હરિ પૂર્ણાનન્દ છે. એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે, શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મ, પૂર્ણપુરુષોત્તમ, પૂર્ણાનન્દ છે. અર્જુનને ભગવાને કહ્યું છે કે “હે ધનંજય' મારાથી પર કાંઇ પણ નથી.” તેમજ “अहं सर्वस्य प्रभवः” એ શ્લોકથી તેમજ कृषिर्भूवाचकः આ શ્રુતિથી પણ સદાનન્દરૂપ શ્રીકૃષ્ણ છે એમ ચોખ્ખું દેખાય છે માટે સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણ જ સેવવા યોગ્ય છે. જુઓ! આપણે ત્યાં એક સામાન્ય પરોણો (મહેમાન) આવે છે ત્યારે આપણે તેની સેવા કરીને તેના મનને સંતોષ પમાડીએ છીએ. તેમજ આપણા શેઠ હોય કે જેને ત્યાં આપણે નોકરી કરતા હોઇએ એટલે જેના હાથ તળે હોઇએ તે શેઠની આપણે કેટલી સેવા કરીએ છીએ ? અર્ધી રાતે એ આપણને ગમે તે જગ્યાએ મોકલે, ત્યા જઇએ છીએ અને તેનું મન હંમેશાં કેમ ખુશી રહે તે પ્રમાણે કરીએ છીએ. તથા તેની આજ્ઞામા જ રહીએ છીએ ? ત્યારે તે શેઠ અથવા મહેમાનથી આપણા શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર કે જેનાથી આ જગતની ઉત્પત્તિ. સ્થિતિ અને લય, એટલે સચ્ચિદાનન્દ પ્રભુમાંથી આ જગત ઉત્પન્ન થયું છે, सत् માથી દરેક જડ વસ્તુ, चिद् માથી જીવ (ચેતન) અને आनन्द માથી અંતર્યામી થએલ છે અને જેનાથી આખા જગતનું ભરણપોષણ થઇ રહ્યું છે અને જે આપણું રક્ષણ રાત દિવસ કરી રહેલ છે, અને આપણે જેના થકી જીવીએ છીએ, એવા મોટા ધણીને મૂકીને આપણે લૌકિક ધણી (શેઠ)ની સેવા કરીએ છીએ, તેના કરતાં શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રની જ સેવા ઉચિત છે. કારણ કે ગીતાજીમા કહ્યું છે કે; ममैवांशो जीवलोके । એ શ્લોકથી જીવ મારો

અંશ છે એમ કહેલું છે. તેથી આપણે અંશ છીએ, પ્રભુ અંશી છે. તેથી અંશનો ધર્મ અંશીની સેવા કરવાનો જ છે. માટે બીજા બધા લૌકિક શેઠ વગેરે તથા દેવદેવીઓની સેવા મૂકી તેની સેવા કરવી કે જેથી આપણું શ્રેય થાય.

ભક્તકવિ દયારામભાઈ પણ ભક્તિપોષણમાં કહે છે કે:—

જગત વૃક્ષ ત્હેનું મૂળ હરિ, મૂળ પોષે વૃક્ષ પોષાય;
    પ્રતિ શાખા જળ સીંચીએ, તેથી તરુ તૃપ્તિ ના થાય.
તૃપ્તિ ના થાય વૃથા શ્રમ પ્હોંચે, સમજણ આવે ત્યાર પછી શોચે;
    મુખદ્વારા સહુ ઇંદ્રિય સંતોષે, ભોજન અંગ લેપ્યું કોઇને ન પોષે..
                                        —સેવો શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ૦

નહીં કોઇ ત્હેના સમોવડી, કોઇ ઇશ નહીં જ્હેને શીશ;
    સર્વ વસ્તુ જે થકી થઇ, જે કોઇ કહાવે સર્વના અધીશ.
સર્વાધીશ વદે સહુ જ્હેને, નિગમ નેતિ નેતિ કહે છે ત્હેને;
    શેષ મહેશ વિધિ થી અગમ્ય, તેને કહીએ પૂર્ણ પુરષોત્તમ.
                                        —સેવો શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ૦

અર્થ:—આ જગતરૂપી વૃક્ષનું મૂળ હરિ (કૃષ્ણ) છે. એ જગતરૂપી વૃક્ષના મૂળને પાણી પાશું (કૃષ્ણની સેવા કરશું) એટલે મૂળને પાણી પાશું તો વૃક્ષ પોષાશે. પણ જો તેની શાખાઓમાંથી પાણી રેડશું (એટલે બીજા લૌકિક ઘણા દેવદેવીઓની સેવા કરશું) તેથી વૃક્ષ તૃપ્ત નહીં થાય, કૃષ્ણને તે સેવા નહીં પહોંચે. વૃક્ષને તૃપ્તિ નહીં થાય પણ ઉલટો શ્રમ પહોંચશે. (બીજાની સેવા કરવાથી કાંઈ નહીં વળે મહેનત કરવી એટલું જ) પણ જ્યારે માણસને સમજણ આવે છે ત્યારે બિચારો પસ્તાય છે. (જીવ જ્યારે જાણે છે શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મની સેવા મૂકી આપણે આ લોકની નકામી સેવા કરી ત્યારે પસ્તાય છે.) જો આપણે આપણા મુખમાં અન્નને મૂકશું અને ખાશું તો બધી ઇન્દ્રિયો સંતોષ પામશે. પણ હાથ, પગ, મોંઢું વગેરે અંગો ઉપર ભોજનનો લેપ કરવાથી ઇન્દ્રિયો સંતોષ પામતી નથી, (કૃષ્ણની સેવા કરીએ તો જ ઇન્દ્રિયરૂપી બીજાં દેવદેવીઓને સંતોષ થાય છે, પણ તેઓની સેવા કરવાથી કૃષ્ણને સંતોષ થતો નથી) માટે શ્રીકૃષ્ણને જ સેવો. તેમજ બીજી કડી પણ સમજાય એમ છે તેથી તેનો અર્થ કર્યો નથી, તે કડીમાં પણ પૂર્ણ પુરષોત્તમને જ સેવવાનુ શ્રીદયારામભાઈ કહે છે.

હવે કોઈ પ્રશ્ન કરે કે શ્રીકૃષ્ણની સેવા ક્યારે કરવી? તેને માટે શ્રીમહાપ્રભુજીએ શ્રીકૃષ્ણની હમેશા સેવા કરવી એમ સિદ્ધાંતમુક્તાવલીમાં આજ્ઞા કરી છે. આમાં એક શંકા ઉપસ્થિત થયા વિના નહીં રહે, કે સંસારની અંદર રહીને આખો દિવસ હંમેશાં કેમ સેવા થઈ શકે? તેનો જવાબ એટલોજ છે કે "સદા" નો કહેવાનો ભાવાર્થ એ જે કે સેવાના વખતે પ્રભુના સ્વરૂપની સેવા કરવી અને અનોસરમાં પ્રભુ માટે સામગ્રી તૈયાર કરવી. મંદિરમાથી વાસીંદાં વાળવાં વગેરે જે કાર્ય કરીએ છીએ તે પણ પ્રભુની સેવા છે. તે ઉપરાન કહેવાનો ભાવાર્થ એટલો જ છે કે હંમેશાં જ્યારે કાંઇ પણ કાર્ય કરતાં હોઇએ ત્યારે અને વાતચીત કરતાં હોઇએ ત્યારે પણ આપણા મનને પ્રભુમાં જ રાખવું, તેનું સ્મરણ જ કરવું અને મન પ્રભુમાં અને બીજું કામ કરવું એ જ સાધનરૂપી માનસી સેવા છે. એ પ્રમાણે મન પ્રભુમાં હંમેશાં રાખવું તેનું નામ જ "સદા કાર્યા" તેમજ આપણા પુષ્ટિમાર્ગમાં સેવાના ત્રણ પ્રકાર કહેલા છે. (૧) તનુજા, (૨) વિત્તજા અને (૩) માનસી. તેમાં તનુજા અને વિત્તજા એ સાધનરૂપ છે અને તેનું ફલ માનસી છે. તનુજા

શ્રીહરિરાયજીને પ્રભુએ કહ્યું ફલાણા મજૂરને ત્યાં સવારના પધારજો અને તેની પાસેથી રૂા. ૨) બે ભેટના લઈ લેજો. એ પ્રમાણે પ્રભુની આજ્ઞાને માથે ચઢાવી સવારે તેને ઘેર પધાર્યા; તેથી તેનો હર્ષ તો ક્યાંય ન માય. જ્યારે તેઓ ત્યાથી એટલે તે મજૂરના ઘેરથી વિદાય થયા ત્યારે રૂા. ૨) માગી લીધા. આ જોઈ તે બહુજ આશ્ચર્ય પામ્યો. શ્રીહરિરાયજીએ આ બે રૂપિયાની સામગ્રી નોખી મંગાવી પ્રભુને તેનો નોખો ભોગ ધર્યો, અને પ્રસાદ રાત્રે ભગવદ્મંડળીમાં વાટયો. અને જે જે વૈષ્ણવોએ તે પ્રસાદની કણિકા લીધી તેને રાત્રે પ્રભુએ સાક્ષાત્ દર્શન આપ્યાં. જુઓ ખરી વિત્તજાનું ફલ ? હવે ત્રીજી સેવાનો પ્રકાર માનસી છે. આ માનસીના બે પ્રકાર છે. એક સાધનરૂપ બીજી ફલરૂપ “ चेतस्तत्प्रवणं सेवा ” પ્રભુની અંદર મનને પરોવવુ તેનું નામ માનસી સેવા અને તેના સાધનરૂપ તનુવિત્તજા છે. જો કે તનુવિત્તજા પણ ફલરૂપ છે, છતા તેને સાધન રૂપે કહેલ છે. આ સેવા પણ પ્રભુની કૃપા વિના થવી દુર્લભજ છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં ‘સાધન અને ફલ એકજ છે.’ તનુવિત્તજા સેવા કરીએ છીએ તેમાં પણ આપણું મન કાંઈક અંશે પ્રભુમા પરોવાએલુ હોય છે, અને તે આપણે પ્રભુ અર્થેજ કરીએ છીએ. તેથી તે સાધનરૂપ માનસી છે અને ફલરૂપ માનસી તો તેનું નામ કે ગોપીજનોની માફક પ્રભુ સાથે મન સનત ચોંટી રહેવું. બહારની કાંઈપણ ઉપાધિ નહોય. ગોપીજનો પ્રભુ સાથે હસતાં, રમતા, ખેલતાં, ફરતાં, સૂતાં, ભોજન કરતાં. એ અલૌકિક સામર્થ્ય રૂપી જે ફલ પ્રભુની લીલાનો અનુભવ કરવાનું તેનું નામજ માનસી, અને તે માનસી સિદ્ધ કરવા દરેક વૈષ્ણવો તનુ–વિત્તજા કરશે. પ્રભુમાં મનને જોડશે, એજ અભિલાષા.

આજ કાલતો આપણી માનસી **ચાહ**માંજ લાગેલી હોય છે. ઊઠીએ ત્યારે **ચાહ**, બેસીએ કે **ચાહ**, સુઈએ ત્યારે પણ **ચાહ**, પણ તે ચાહની પેઠે પ્રભુની અંદર મન હોય તો કેવું સારૂં ભલા!

वैदक—विज्ञान.

(લે: શ્રીયુત વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર.)

વસંત ઋતુ—ફાગણ તથા ચૈત્ર વસંત ઋતુના ગણાય છે. શિયાળામાં ઘણું કરીને પુષ્ટિકારક અને ચિકણો ખોરાક ખાધો, જેથી બદનમા કફનો સંગ્રહ થાય અને ઠંડી કફનો સંગ્રહ કરે છે પણ વસંત બેમના ફાગણના તાપથી કફ ઓગળવા મંડે છે. મગજ, છાતી અને સાંધાઓ કફના સ્થાન છે. માથાનો કફ પીગળી ગળામાં ઉતરે જેથી સળેખમ, કફ અને ખાંસીના દર્દ થાય છે અને છાતીનો કફ પીગળી હોજરીમાં જાય છે જેથી મંદ અગ્નિ થાય છે, અને મરડો થાય છે. માટે એ કફ દર્દ ઉત્પન્ન કરે તે પહેલાંજ કાં તો કફની શાન્તિ કરાવવી અને કાં તો કઢાવી નાખવો. આહાર વિહારના ફેરફારથી શાન્તિ થાય છે અને કાઢવા માટે ઉલટી તથા જુલાબ છે. ખાસ કરીને બાળક તથા વૃધ્ધે અને અશક્તે ઉલટી જુલાબ લેવા નહિ. જે શક્તિમાન હોય તેણેજ ઉલટી જુલાબ લેવા.

કફની શાંતિના નિયમો:—

૧. ભારે તથા ટાઢું અનાજ, દિવસની ઉંઘ, ચીકણા ખાટા અને મીઠા પદાર્થો તથા નવું ધાન્ય એટલી વસ્તુનો ત્યાગ કરવો અથવા એકદમ ઘટાડી દેવી.

૨. જુના ધાન્ય, મધ, કસરત તૈલાભ્યંગ ચંપી વિગેરે ઉપાયો કફની શાંતિ કરે છે. મધ કફને તોડે છે અને કસરત, તૈલમર્દન તથા ચંપી કફને જુદો પાડે છે.

गोस्वामीश्री ६ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, चोपासनी.
(यज्ञोपवीतधारणसमय ब्रह्मचर्योचित वेशमें)
प्राकट्य-पौषकृष्ण १२ सं. १९७८

नित्यलीलास्थ कृपापीयूषपारावार गोस्वामीश्री ६
श्रीरघुनाथलालजी महाराज, जूनागढ.
प्राकट्योत्सव-आश्विनशुक्ल १३ सं. १९५१

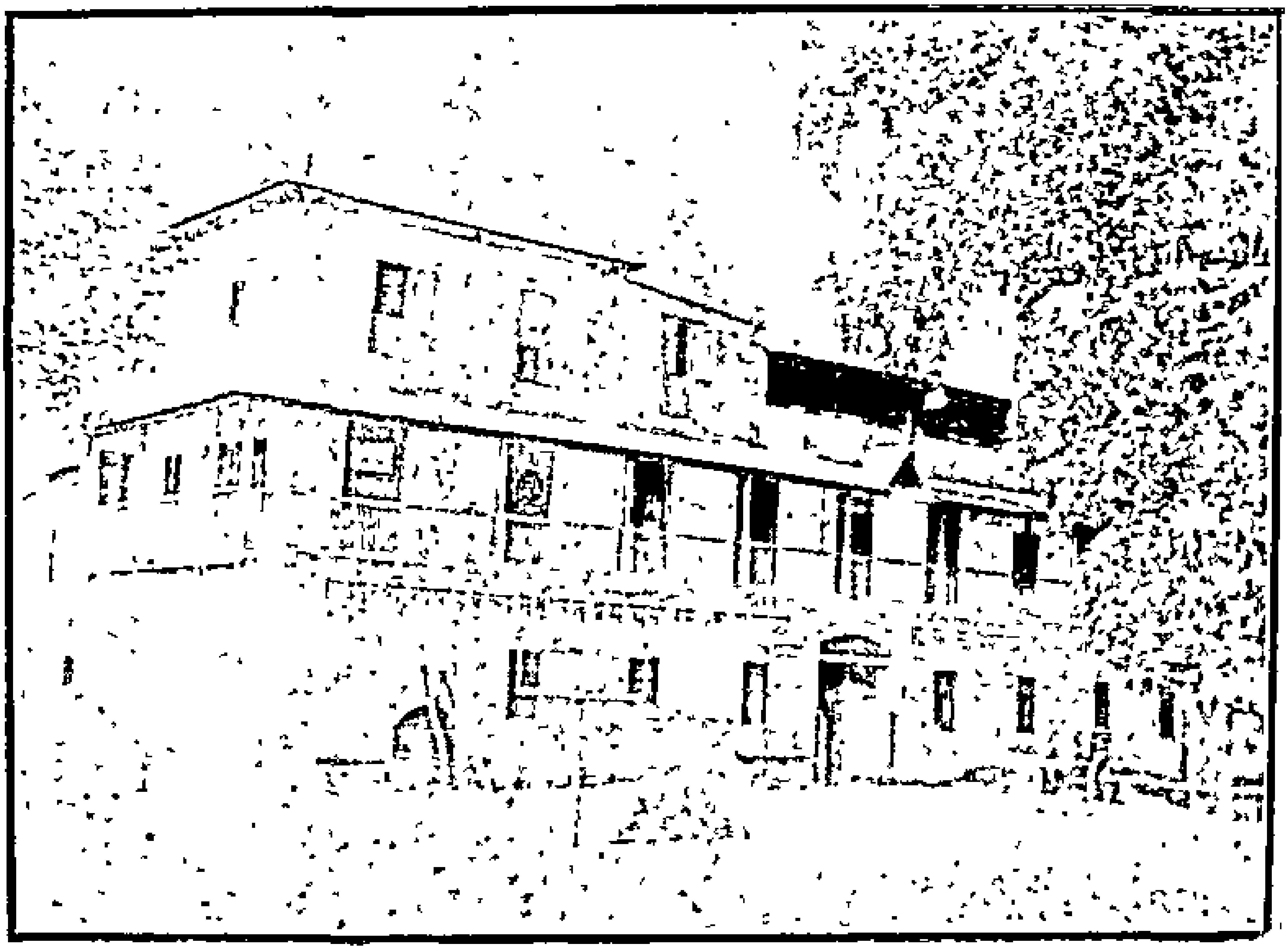

बहारनुं सम्पूर्ण दृश्य.

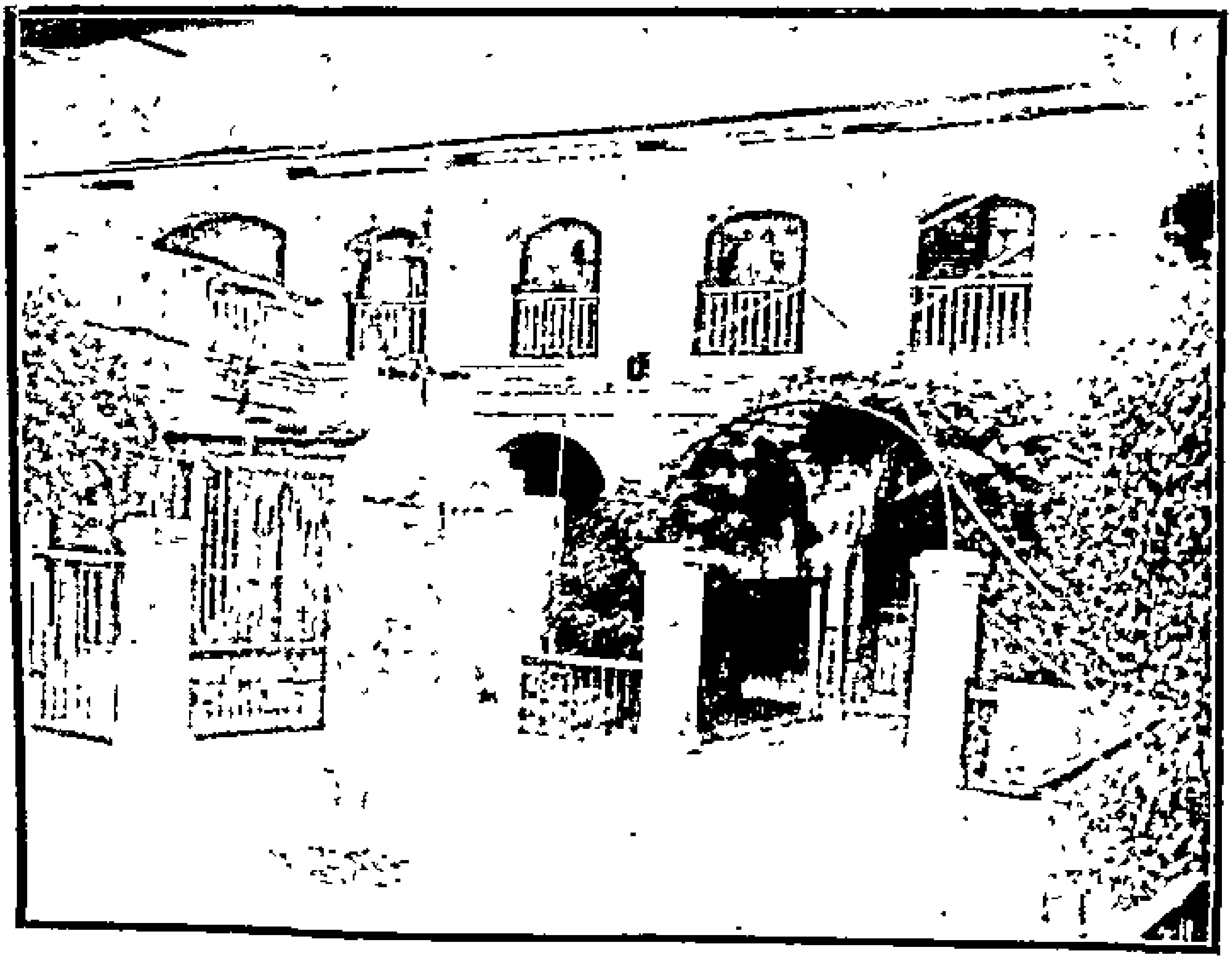

अन्दरनुं एक दृश्य.

મહેનત મજુરી અને સુકો રોટલો ખાઇ ગુજરાન કરનાર ગરીબ વર્ગના લોકોને આ ઋતુમાં કંઈ ઉપદ્રવ થતો નથી પણ બેસાડુને કફ હેરાન કરે છે. માટે સાવચેત રહેવું. ફાગણ માસના પહેલા પખવાડીયામાં હોળીના તહેવારની રમત ગમત ધાણી દાળીયા તથા તેનો સાથવો કરી અને ઘેરઘેર અને પોળે પોળે ફરી તાપવું એ ઘણુંજ અગત્યનું છે.

તામ્ર ભસ્મની વિધિ—રાણી છાપના પૈસા લઈ તેને શુદ્ધ કરી ગળજીભીના પાન વાટી તેની લુગદી બનાવી તેમાં પૈસો મુકી કપડ મટી કરી ગજપુટનો અગ્નિ આપવો. સ્વાંગ શીતળ થયે કાઢી ઉપર જે પોપડી વળેલી હોય તેને સાચવી ઉખેડી લઇ, કચાશવાળા ભાગને ફરીથી ગળજીભીના લુગદામાં ગજપુટ દેવો. એ પ્રમાણે પોપડીયો ઉખાડી ઉખાડી ફરીથી લુગદીમાં મુકી પુટ આપે જવું એમ દશ વખત કરવાથી ભસ્મ થાય છે. છેવટે તૈયાર થયેલી બધી પોપડીઓને ભેગી ઘુંટી ગજપુટ આપવાથી સારી ભસ્મ તૈયાર થાય છે. આ ભસ્મ એક ચોખા પુર લઇ મધ તો. ૧ તથા આદુનો રસ તો. ૧ ખાવાથી ગમે તેવો કફ તથા દમ મટે છે.

દમ-ઉધરસની દવા—કુષ્માંડ (કોળું)ની જડ કે જેના ઉપર ફળફુલ આવી ગયા હોય તેની જડ લાવી વાટી વસ્ત્રગાળ કરી શીશીમાં રાખી મુકવી, તેમાંથી બે માસા (બેઆની ભાર) થોડા ગરમ પાણી સાથે સવાર સાંજ આપવું. જરૂર હોય તો ત્રણવાર આપવું એથી વધારે વાર આપવું નહિ. કફના વધારામા જ્યારે શીત દેખાય ત્યારે મધ સાથે આપવું. અપથ્ય—તેલ, મરચું અને ખટાશ આપવા નહિ. ઘણો ગરમ તથા ઘણો ઠંડો પદાર્થ આપવો નહિ. જ્યારે બીજી અંગ્રેજી યુનાની દવાઓ શ્વાસ ઉપર નિષ્ફળ નીવડે છે ત્યારે આ દવા ફત્તેહમંદ નીવડી શ્વાસને બેસારી સારો કરે છે. આ દવા ઘણા દરદીઓ ઉપર અજમાશ કરેલ છે અને લોકહિતાર્થે જાહેરમાં મુકેલી છે.

દમ—ગોળ શેર ૦ા તમાકુ શેર ૦॥ બેને વાટી સંપુટ કરવો તેની વચમાં કોડીયા લોબાન શેર ૦ા નો એક ટુકડો મુકવો પછી કપડમટી કરી બહેર અડાયા છાણાનો તાપ આપવો. ટાઢું પડે ત્યારે લોબાન કાઢી લેવો. તેમાંથી એક રતિથી એક વાલ ઘીમાં આપવું. ઉપર તરત સુરમાનો લાકુ ખવરાવવો. જેથી દમ અમુંઝણ બેસી જાય છે

૨—આખરસીંગાની ભસ્મ, ફુલાવેલો ટંકણ ખાર, મોરપીછની ભસ્મ, અઘેડાનો ક્ષાર બોરીંગણી એ સર્વને બારીક વાટી દિવસમાં ત્રણવાર મધમાં આપવાથી કફ છુટો પડી દમ મટે છે.

શુભ પ્રસ્તાવનું મંગળ ગીત.

(રાગઃ—સુભદ્રાજીની કંકોત્રીનો.)

શ્રીબાલકૃષ્ણ પ્રભુજીનાં મંદિર—શ્રીશ્રીજીવનલાલ ઘેર આજ. આવ્યોરે રૂડો સોહીલો—ટેક.
સુરતમાં મંદિર મોટા જાણીયે, વ્રજનંદભુવન નીરખાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજીવન.
જ્યાં શ્રીવલ્લભવંશ બીરાજતા, પવિત્ર સરલ પરિવાર. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજીવન.
મંગલ રૂપે શ્રીશ્રીજીવન નિરખીયે, શ્રીવહુજી કૃષ્ણપ્રીયાપનોતા શોભાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
શ્રી દંપતિ અતિ ભાગ્યવંત છો, શ્રીબાળકૃષ્ણ કૃપાના સુખધામ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
એમના મોટા કુંવર (શ્રી) ગોવિંદલાલજી કુંજબીહારીલાલ કેવાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

લાલના લગ્ન હુવા મુંબા નગરીમાં, શ્રીરાણી વહુજી નામ શોભાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
લાડકોડે વળી નામ ધારીઆ, દિવ્યપ્રભા અધિક શોભાવ્યા. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

અષ્ટ માસો પ્રસ્તાવ કરવા તણો, આવ્યો સમય મુરત જોવાડ્યા. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
શ્રી માતતાત જાણી મન હરખીયા, પુત્રવધુને મુરત સુદીન. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

સંવત શત ઓગણીસ અઠ્યાસીમાં, માગસર વદ સાતેમ્ ગુરૂવાર. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
શુભ કારજ મોટા આરંભીયા, શ્રીમહારાજને હર્ષ અપાર. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

કુંમકુમ પત્રિકા લખી સ્વકુટુંબમા, લખ્યાં મુરત વહુજીને મહીએર. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
લખી વૈષ્ણવોને ઘણા વ્હાલથી, માનસહીત સહુ ગામેગામ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

હરખે આવ્યા વેહેવાઇ બલભદ્રજી, પરીવારે મોસાળીયા શોભાયા. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
સાથે દીક્ષિતજીને ગોપીનાથજી, શ્રીગોકુળનાથજી મહારાજના લાલ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીમહારાજના સંબંધી સહુ આવીયા, શ્રીલક્ષ્મી બેટી આવ્યા ઉમંગે. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
કાંકરોલીથી ગણુબા પધારીયા, બેઉ લાલજી છે વહુજી સહીત આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીવ્રજભુષણને વીઠ્ઠલનાથજી, સાથે વહુજીને લાલ છોટાબાળ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
કીસનગઢથી ચંચુબા આવીયા, શુભ અવસરે શોભ્યા મોસાળ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીમધુસૂદનલાલ બહુ પ્રેમથી, રાજનગરથી વડીલ મહારાજ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
એમના લાલ શ્રીરણછોડલાલ સાથ છે, ઉમંગ ભર્યા શોભાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
શ્રી કામવનથી શ્રીવલ્લભલાલજી, શોભે રાજ રસાલા સાથ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

મદ્રાસથી શ્રીવહુજીના પીહેરીયા, આવ્યા કુટુંબ સહીત પરીવાર. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
મહારાજશ્રીના મોસાળીયા, મામા મામી આવ્યા હરખાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

સંબંધી લાલજીઓ આવીયા, યોગ્ય પૂજ્ય રીતે દીધા માન. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
સહુને સુખનીવાસ સારા આપીયા, માનભર્યા કર્યા વીવેક, આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

વૈષ્ણવજનનો સમાજ બહુ આવતો, આનંદ સહુને મન વાધે. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
શહેરવાસી વૈષ્ણવ હરખે ભર્યા, પ્રસ્તાવ આનંદમાં મહાતે. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

સીમંતની શોભા ભારે દીશતી, મહેલ મેડીયે જોતી પ્રકાશ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
ચોક રંગમંડપે શોભા ઘણી, શાંતિહવન વેદવીધી થાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

યુગલ સ્વરૂપ જ્યાં ચોકે બીરાજતા, મંગળ ગીત સૌહાગણો ગાય. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
વેદમંત્ર ઘોષ ઘણા ગર્જતા, દરસણ કરતા વૈષ્ણવ અગણીત. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીવલ્લભ કુળ સહુ બીરાજે શોભા ભર્યાં, દીસે અલૌકીક દરસન. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
ભીડ ભારે થાય દરસણ સમે, રાખે સેવકો સારી સંભાળ. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

એવા આનંદ સદા મોટા મંદીરે, શ્રીવલ્લભવંશ સુરત શોભાવે. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.
પ્રસ્તાવ શોભા થોડે વરણવી, ગાય દાસ ત્રીકમ રચી ગીત. આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીબેટીજીના પ્રાગટ્યનું માંગલિક ગીત.

(રાગ—શ્રીકૃષ્ણ કમળ મુખ નિરખવા ચાલો શ્રીનંદજીને ઘેરરે.)

સખી આજ વધામણી આજની, વાધ્યો છે હર્ષ સહુને મન ઘેરરે
શ્રીમાનકૃષ્ણજીના મંદિરે, શ્રીશ્રીજીરતનલાલને ઘેરરે ૧
શ્રીરાજેન્દ્રની જ્યાં પ્રગટીયા, શ્રીવલ્લભવંશ દિપ પ્રકાશરે
દિપપ્રભા જાણો શ્રીકૃષ્ણરે જન્મ્યા કુંવરી સુંદર સુખકારરે ૨

ઘેરે વધામણી સુણી સુણી, વૈષ્ણવ જન વેગ લા જાયરે
મંદિરદ્વારે વધામણા, ધોળ મંગળ મળી ગીતો ગાયરે ૩
શ્રીરાધા રત્ન નિજ પ્રગટીયા, આનંદ તેના હૈડે હરખાવેરે
દ્વાર ઝાલર વાજા વાગતા, ધ્વજા તોરણદ્વારે શોભા છેરે ૪

વૈષ્ણવ વનિતા સોહાગણો, લાવે વધાવો મંગળ સાજરે
શ્રીતરભનને ભીડ શ્રીલાડલીજીને નીરખવા કાજરે ૫
શ્રીમુખ કુંવરીજીના જોઈ જોઈ, લેતા ઓવારણા કરી કરી વ્હાલરે
વૃદ્ધ પુજ્ય આશીશ દીએ, ચિરંજીવી રાજો ચિરકાલરે ૬

શ્રીશ્રીજીરાજ આનંદભર્યાં, નીરખીરે પ્રસન્ન વદનરે
જોતા વૈષ્ણવોને સ્નેહથી, સંતોષે કુટુંબ સહિત સ્વજનરે ૭
છઠ્ઠી પુજન દિન શોભીયો, રચિયે અલૌકિક દર્શનરે
શ્રીમહારાજ બીરાજે સાનંદમગ, શોભા જોતા હરખ્યા મનરે ૮

ચોકમા જોડે બીરાજ્યા, રાજાજી આપશ્રી ગોવિંદલાલરે
જુગલ સ્વરૂપ નીહાળીરે, દીસે છે શોભા સુંદર રસાળરે ૯
શ્રીકુળદેવ પૂજા મનાવતા, વેદ વિધિ સરવે શુભ રીતરે
વધાઈ કીર્તન જ્યા ગવાય છે, એન્હાતી ગાય છે મંગળ ગીતરે ૧૦

સગા સહોદર શ્રીમહારાજના, માન સહિત પ્રેમ મન આવ્યારે
વસ્ત્ર આભરણ હીરા મોતીના શ્રીલાડકડીને પહેરવા લાવ્યારે ૧૧
વિવિધ શણગાર ઠામો શોભતી, જોઈ જોઈ નયણા શીતળ થાયરે
નિકટ સમધાને મોસાળના, પ્રેમ અધિક આધક ભાયરે ૧૨

છઠ્ઠી પૂજન પ્રસ્તાવના, મંગળ થયા છે સુશોભિતરે
શોભા એવી શ્રીવલ્લભકુળ, આનંદ સદા નવા નવા નીતરે ૧૩
સંવત શત ઓગણીસ છે, ઉપર અઠયાસી સુખકારરે
પ્રાગટ મહા સુદ અષ્ટમી, વાર છે સીતળ સોમવારરે, ૧૪
નિજદાસ કવિ ગાતિ હરખથી, સુંદર ધોળ રચી શોભા પુરે
શ્રીશ્રીજીરાજ પ્રસન્ન થવા વર્ણ્યુ ગીત ત્રીકમ મન ભાવ પુરે ૧૫

(રચના—વૈષ્ણવકવિ, ત્રીકમદાસ શિવદાસ નવાપુરવાળા, સુખનિવાસ, મોગરા મન્દિર—સુરત.)

साहित्य सत्कार.

દ્વિતીય સ્કંધ પ્રકાશ—સંશોધકઃ રા. રા. ચીમનલાલ શાસ્ત્રી શુદ્ધાદ્વૈતરત્ન, મોટા મંદિર, સુરત. મૂલ્ય દોઢ રૂપીઓ. શ્રીસુબોધિનીજી એ શ્રીમદ્ભાગવતની માત્ર ટીકા જ નથી, પણ સૂત્રાત્મક વાણીમાં ગુંથાયલું મહાભાષ્ય છે. દ્વિતીય સ્કંધ મૂળે કઠિન, અને તેનાં શ્રીસુબોધિની સરળ ક્યાંથી હોય ? શ્રીસુબોધિનીજી સમજવા માટે દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજીનો વિદ્વત્તાપૂર્ણ પ્રકાશ અત્યંત સહાયક છે, તેથી તેને પ્રકટ કરીને શાસ્ત્રીજી ચીમનલાલજીએ શ્રીસુબોધિનીજીના અભ્યાસીઓ ઉપર મહાન્ ઉપકાર કર્યો છે. પ્રકાશની ચાર પ્રતો સંશોધકે મેળવી હતી અને ઘણા જ પ્રયાસે શોધન કરીને આ ગ્રંથ પ્રકટ કર્યો છે. રા. ઈશ્વરલાલ શાહ, રા. પ્રભુદાસભાઇ, રા. રતિલાલજી એ વિદ્યાવિલાસીઓએ પણ શાસ્ત્રીજીના શોધન કાર્યમાં નિઃસ્વાર્થ સહાયતા આપી છે. ગ્રંથ શુદ્ધ રીતે છપાયો છે. આ ગ્રંથમાં આર્થિક સાહાય્ય વિદ્વદ્રત્ન ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીએ અર્પણ કર્યું છે અને તે પણ નિજ દ્વિતીયકુમાર શ્રીમધુસૂદનજી બાવાસાહેબના યજ્ઞોપવીત પ્રસંગને યાદગાર બનાવીને. આ અનુકરણ અન્યત્ર થાય એવી ઇચ્છા સાથે મહારાજશ્રી તથા શાસ્ત્રીજીનો ઉપકાર સ્મરીને વિરમીએ છીએ.

શ્રીપીયૂષ પત્રિકા—આ સચિત્ર વિશેષાંક પ્રકટ કરીને, સંસ્કૃતવાઙ્મયની સાર્વદેશિક સેવામાં સ્ત્રીજી હરિશંકરજીએ મહાન્ ફાળો આપ્યો છે. આ અંક પ્રાચીન સંગ્રહ કરવા યોગ્ય પ્રદાયિક તથા ઇતર સાહિત્યથી પરિપૂર્ણ છે. આવાં માસિકને ટકાવી રાખવાનો ભાર સંપ્રદાય થા સંસ્કૃતસાહિત્યવિલાસીઓ ઉપર છે.

ભારત વીરોની સત્ય ઘટના—પ્રકાશક-શિવપ્રસાદ લીલાધર પંડિત, ઠે. ગાંધીરોડ, . વહેલાલ (ડી. અમદાવાદ) મૂલ્ય સવા આનો. દેશભક્તિની વેદીપર પ્રાણાહુતિ અર્પનાર બે તરુણ ભક્તોની કરુણ કથા આ નાનાશા પુસ્તકમાં છે. વાંચીને હૃદય રડે છે. દેશના ઉદ્ધાર માટે કેવાં લિદાન આપવાં પડે છે તેનો અસરકારક ચિતાર હાલના જ સમયમાં પ્રત્યક્ષ બનેલા આવાં ટાંતો જ આપી શકે છે. ભાષા સરળ અને સચોટ અસર ઉપજાવનારી છે, નવ યુવકો માટે રણાત્મક છે.

સંસારગીતા—લેખકઃ પ્રકાશક-અંબાલાલ ફૂલાભાઈ પટેલ મુ. ઓડ (ડી. ખેડા) વાયા ાણંદ. મૂલ્ય અઢી આના. જગત્માં જન્મીને પ્રભુપ્રાપ્તિનું અંતિમ ધ્યેય સિદ્ધ કરવા ઇચ્છનાર ાટે આ નાનું પુસ્તક ઉત્તમ અનુભવાત્મક વિચારોની દિશા બતાવે છે. મોક્ષપથના પ્રવાસીઓ ાટે ભિન્ન ભિન્ન અનેક ઉન્નત વિચારોનો સરળ ભાષામાં સંગ્રહ કરીને લેખકે આ જમાનામાં ંસાર તાપથી તપી રહેલા માનવીઓ માટે સારો યત્ન કર્યો છે.

વીસમીસદી—(ઇદ અંક) મૂલ્ય ચાર આના. ઠે. ૭૬ ટેમરીન્ડલેન દીવાળી અંક પછી ુસલ્માન ભાઇઓના તહેવાર ઉપર આ આકર્ષક અંક કાઢીને તંત્રીજીએ ગુજરાતી સમાજને નવી દિશાનું ભાન કરાવ્યું છે. હિન્દુ ધર્મ સંકુચિત નથી, તેમ અસહનશીલ પણ નથી. સમગ્ર દુનીયાની ઉત્તમ સંસ્કૃતિને સન્માનવામા જ આદર્શ હિન્દુપણું છે. આ ઉત્તમ અને ઉદારતાપૂર્ણ આદર્શ સમાજને આપવા માટે વીસમીસદીનો આ ઇદ અંક ફત્તેહમંદ થયો છે. અંકમાંના ચિત્રો અત્યાકર્ષક છે. મુદ્રણકળામાં તો વીસમીસદી હિન્દુસ્થાનમાં એક અજોડ સાપ્તાહિક તરીકે અનુપમ સ્થાનને શોભાવે છે. આ અંકનું સાહિત્ય પણ સર્વદેશી છે. શીરીન બહેનનો હાસ્યરસનો લેખ વાંચતાં તો હાસ્યરસના ફુવારા, અરે ધોધજ ઉડવા માંડે છે! ઇતિહાસ, શિલ્પસાહિત્ય, વાર્તાઓ વગેરે વાંચવા લાયક છે.

प्रासंगिक नोंध.

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

‘શુદ્ધાદ્વૈત’ દ્વારા સંપ્રદાયની યત્કિંચિત્ સેવા બદલ ‘શુદ્ધાદ્વૈત’ના તંત્રીને ત્રીજી વાર સુવર્ણપદક મળે છે. અમદાવાદની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાએ એક માનપત્ર તથા સુવર્ણપદક તંત્રીને અર્પ્યાં હતાં. તે પછી અમરેલીના વૈષ્ણવોએ શ્રીપ્રથમપીઠાધીશ્વરના શ્રીહસ્તથી એક સુવર્ણપદક તંત્રીને મળ્યું હતું. આ બન્ને સન્માન કરતાં એ વિશેષ ગૌરવાસ્પદ પદવી તથા સુવર્ણપદક માઘ વદ બીજના સુમંગલ દિને પાટણમાં મળ્યાં. શ્રીકાંકરોલીનરેશ શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ય વિદ્યાવિલાસી ગોસ્વામીશ્રી ૧ શ્રીવ્રજભૂષણલાલજી મહારાજશ્રીએ પોતાના જન્મદિનના મહાન્ સુમંગલ અવસરના ઉપલક્ષ્યમાં તંત્રીને “શુદ્ધાદ્વૈતભૂષણ” ની ગૌરવાન્વિત પદવી, પ્રમાણપત્ર તથા સુવર્ણપદક પ્રદાન કર્યાં હતાં. સંપ્રદાયમાં આવી પદવી પીઠાધીશ્વરો તરફથી માત્ર બેજ વિદ્વાનો ધરાવે છે. એક તો વિદ્વદ્વર્ય ભટ્ટ શ્રીબલભદ્ર શર્મા અને દેવર્ષિ ભટ્ટ શ્રીરમાનાથ શાસ્ત્રીજી. સૂર્યવંશના શુદ્ધ ક્ષત્રિય નરેશ અને આર્ય સંસ્કૃતિના મહાન્ આદર્શરૂપ મહારાણા મેવાડનૃપતિ છે. એ મહારાજ્યનું ગૌરવ ભારતવર્ષમાં અદ્વિતીય છે. એ મહાન્ નરેશના ગુરૂ તરીકે શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વરનું સ્થાન ભારતવર્ષના ધર્માચાર્યોમાં એક અને અદ્વિતીય છે. એઓશ્રીના તરફથી મળેલી આ પદવી ખચિતજ અમૂલ્ય અને અધિક માનાર્હ છે. એ પદવી માટેની યોગ્યતા તંત્રીમાં નથી, પણ એ પદવીથી તંત્રીની જોખમદારી વધી છે. એ જોખમદારી સમજીને વર્તવાનું મનોબલ તો એ પદવીના પ્રદાતા આચાર્યશ્રીની કૃપાનેજ આધીન છે. તંત્રી ઉપરાંત અન્ય વિદ્વાનોને પણ ગૌરવાન્વિત પદવી એઓશ્રીએ અર્પણ કરેલી છે. એ ભાગ્યશાલી વિદ્વાનોમાં પ્રથમ સ્થાને વ્રજ ભાષાના અદ્વિતીય કવિરત્ન શ્રીનવનીતજી ચતુર્વેદી છે. તેમને ‘કવિતાકલાધર’ ની પદવી આપીને એક યોગ્ય કવિની યોગ્ય કદર કરવામાં આવી છે. કવિ શ્રીનવનીતજી અત્યારે અતિવૃદ્ધ છે. એમણે પોતાની કવિત્વ શક્તિનો વિકાસ નિત્યલીલાસ્થ શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો. શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજશ્રીના આશ્રયમાં રહીને કર્યો હતો. આજે એઓશ્રીનાજ આત્મજ એ મહાકવિની કદર કરે તે અત્યંત ઉચિતજ છે. તે ઉપરાંત પં. કંઠમણિ શાસ્ત્રીજીને કાવ્યાલંકારની પદવી મળી છે. શાસ્ત્રીજી કંઠમણિજી હીંદી ભાષા તથા સંસ્કૃત ભાષા ઉપર સારો કાબુ ધરાવે છે. હીંદી ભાષામાં એક ઉત્તમ ધાર્મિક વક્તા પણ છે. તેમણે થોડાંક વર્ષોમાં સંસ્કૃત તથા હીંદી ભાષામાં સુન્દર કવિતાઓ રચી છે. તેમની હીંદી ભાષાની કવિતાઓ તો મધુર અને હૃદયગ્રાહી હોય છે. ભવિષ્યમાં તેઓ એક અનુપમ સ્થાનને શોભાવશે એવી આશા રહે છે. તેમને ‘કાવ્યાલંકાર’ ની પદવી અર્પવામાં આચાર્યશ્રીએ ઉચિત કદર કરી છે. શાસ્ત્રીજી જટાશંકરજીના વ્યાખ્યાનોથી તો વૈષ્ણવો સુપરિચિતજ છે, તેથી તેમને ‘વ્યાખ્યાનાલંકાર’ પદવીથી તેમની કદર આપશ્રીએ કરી છે. તે ઉપરાંત અમારા પરિચિતોમાં પં. ગોપાલરાવ શાસ્ત્રીને ‘પુરાણવિશારદ’ પદવી, શ્રીયુત જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રીને ‘સત્સિદ્ધાંતવિશારદ’ ઉપાધિ ઉચિતજ ગણાશે. શાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠારામજી તો શં. માધવ તીર્થના પ્રહારો ઝીલનારા એક મહાન્ સાંપ્રદાયિક યોદ્ધા છે અને તેમણે ઉત્તમ સંપ્રદાય સેવા કરી છે. શાસ્ત્રીજી ગોપાલરાવજી પણ સારા કથાકાર છે. વ્યાખ્યાનવિષયમાં પં. જયેન્દ્રનાથ શાસ્ત્રી તથા શાસ્ત્રી રમણલાલજીને વ્યાખ્યાનભૂષણ તથા વ્યાખ્યાનવિશારદોના રજતપદકો અર્પણ કરીને એ બન્ને વક્તાઓના ઉત્સાહમાં અભિવૃદ્ધિ કરવામાં આવી છે. અમે બન્નેનાં વ્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે અને બન્ને આથીએ વધુ છટાદાર વ્યાખ્યાનકર્તાઓ થવાની દરેક આશા રાખી શકાય છે. પં. ગોપાલજી ચતુર્વેદીને ‘જ્યોતિર્ભૂષણ’ની ઉપાધિપ્રદાન કરવામાં એ ચમત્કારિક જ્યોતિષીજીને ગૌરવ અર્પ્યું છે. સહુથી વિશેષ તો પં. ઉપેન્દ્રનાથજી રાંદીકરને ‘મંત્રવિશારદ’ની ઉપાધિ ઉચિત લાગે છે. મંત્રશાસ્ત્રમાં એમણે ખૂબ માથું માર્યું છે અને હાલની તેમની જે સ્થિતિ ટકી રહેલી છે તે તેનેજ આધારે હોય તેમ લાગે છે. પં. નારાયણલાલ વર્મા તથા પં. છન્નુલાલ વર્મા એ બન્ને હીંદી સાહિત્યરસજ્ઞોને અનુક્રમે કાવ્યકોવિદ તથા કલાકોવિદની પદવી ઉચિત સ્થાને છે. અન્ય વિદ્વાનોને અમને પરિચય નથી. આ ઉત્સાહપ્રેરક કાર્ય

તરફથી પ્રાગટ્યનું જોઈને અમને આનંદ થાય છે અને એ સ્થાનના અધીશ્વર આવા યશસ્વિ અને પ્રોત્સાહક અનેક કાર્યો કરતા રહે અને દીર્ઘાયુ થાય એવી આંતર અભિલાષા સાથે વિરમીશું

કલકત્તા અધિવેશન.

તેત્રીસ કરોડ હીન્દુઓને નામે ગમે તેવા છબરડા વાળીને હીન્દુ ધર્મની ઘોર ખોદનારા દેશનેતાઓ સામે વ્યવસ્થિત જંગ મચાવવા માટે વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની સ્થાપના થઈ છે એ સંઘના જલગાંવના અધિવેશનનો સવિસ્તૃત હેવાલ અમારા ગ્રાહકોએ વાંચ્યો હતો તેથી કલકત્તા—અધિવેશનનો હેવાલ જાણવાની ગરજ ઈચ્છા ગ્રાહકોને થાયજ એ હેવાલ કેમ ન આપ્યા એવા પ્રશ્નો પણ પત્રદ્વારા થયા છે ઘણા સમય પછી તે વિષેનું મૌન તોડીએ છીએ એક તો 'શુદ્ધાદ્વૈત'નું ખાસ લક્ષ્ય સાંપ્રદાયિક હોઈને વિશાલતમ છે કેવલ વર્ણાશ્રમધર્મ જેવા એકદેશી પ્રશ્નોનીજ ચર્ચા એ તેનું ધ્યેય નથી પણ જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદ અને વિશ્વધર્મ પુષ્ટિમાર્ગ જેવા મહાન્ પ્રશ્નો એ લક્ષ્ય છે બીજું, મહોદારચરિત્ર વિદ્વદ્રત્ન ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલાલજી બાવાસાહબનું યશસ્વિ ઔદાર્યપૂર્ણ ચારિત્ર્ય સમગ્ર જનતાને અદ્ભુત રીતે આકર્ષે છે તેથી એઓશ્રી જ્યાં પધારે છે ત્યાં કાંઈ ઓરજ અલૌકિક રંગ જામે છે જલગાંવમાં શું હતું? આપશ્રીના ત્યાં પધારવાથી મરુભૂમિમાં અમૃતમહાસાગર ઉલટ્યો હતો અને તે યાદગાર અધિવેશન બન્યું હતું વળી મતભેદ સહન કરીને પણ કાર્યકર્તાઓને પોતાની શીતળ છાયામાંથી દૂર ફેંકી ન દેતાં આશ્રય આપવાની ઉદારતા એઓશ્રી વિના અમને તો કોઈ સ્થળે દેખાઈ નથી તેથીજ એઓશ્રીના અગ્રેસરત્વ નીચે થતાં દરેક કાર્યોમાં એક મહાન્ વિશ્વગુરુત્વના આદર્શો પ્રકાશે છે અને તેની નોંધ 'શુદ્ધાદ્વૈત' ઘણાજ આનન્દથી લે છે ત્રીજું કારણ કલકત્તા જવાનું બની શક્યું ન હતું તે પણ છે નથી કોઈ આચાર્યશ્રીનો આશ્રય કે જેમના પ્રતિનિધિ તરીકે ત્યાં જઈ શકાય કે નથી કોઈ સંસ્થાનું અગ્રેસરત્વ કે તે સંસ્થાને ખર્ચે ગાડીઓ દોડાવાય તેમ કાંઈ ઘરમાં ટંકશાળ નથી કે કલકત્તા જેટલે દૂર જવા માટે સો રૂપીઆના ખર્ચની જોગવાઈ તત્કાળમાં કરી લેવાય કલકત્તા—અધિવેશનના સભાપતિશ્રીએ જ્યારે અમારા તંત્રીને પ્રશ્ન કર્યો કે, કલકત્તામાં કેમ ન આવ્યા? શો જવાબ આપું? મોટાઓ પાસે મૌનજ સેવવું રહ્યું મનમાં તો ઘણી ગડમથલ થઈ કે, આંતર સ્થિતિનું નગ્ન ચિત્ર શબ્દદ્વારા આલેખું, પણ ચુપકી સાધી દીધી! ઘરમાં કાંઈ રૂપીઆનું ઝાડ નથી કે આવા વખતે એકાદ થેલી રૂપીઆ ખંખેરી લેવાય! તેમાંએ મહામુશ્કેલીએ ટેકાવી રાખેલા કાર્યાલયને હજાર ઉપરાંતની ખોટથી મરણતોલ ફટકો લાગેલો! એ બધા તાણીનેજ કરતાં આ સ્થિતિ જેનાથી શો લાભ છે? સંપ્રદાયમાં કોણ સમજે છે? 'કલ્યાણ' જેવું માસિક કેમ કાઢતા નથી? એ સવાલ બધા કરે છે! પણ 'કલ્યાણ' પાસે લાખોનું ફંડ છે અને તેના આધારે તે પ્રગતિ કરી રહ્યું છે એ કોઈ જોતું નથી કલકત્તાના અધિવેશનના હેવાલો અમે વાંચ્યા, પ્રમુખશ્રીનું ભાષણ વાંચ્યું અમને એમાંથી કાંઈ નોંધવાલાયક સંગીન કાર્ય દેખાયું નહિ જલગાંવથી ઉત્તમ નહિ તો તેની સમાન પણ કાર્ય થયું હોત, તો તેની નોંધ લેવાત પણ આ તો ઉત્તરોત્તર આગળ વધવાને બદલે બહાદુરીથી પાછા હટવાની વાત થઈ! આની નોંધ કેવી? પ્રમુખશ્રીનાં ભાષણની ગુજરાતી નકલ અમને મળી હતી તેનો કોઈ પ્રકાશક ન મળ્યો, તે શ્રીવલ્લભાધીશ્વર માટે મહાન્ ઘોર અપશબ્દ છાપનાર સંપ્રદાયદ્રોહી સંઘવી મળી આવ્યો એક ગોસ્વામી આચાર્યશ્રીના ભાષણનો પ્રકાશક આવો સંપ્રદાયદ્વેષી હોય તેમાં વખાણ અને સંપ્રદાયનું તોહીનજ ગણાય વળી ભાષણમાં ન છાજે તેવા શબ્દ પ્રયોગો અને વિચારોથી અમારૂં લોહી ઉકળી આવ્યું! પણ હજુ સુધી ખામોશી પકડી છે શાસ્ત્રીજી જટાશંકરજીદ્વારા સાંભળ્યું કે, પ્રમુખશ્રીએ કલકત્તામાં સંઘવીને સખ્ત ઠપકો આપ્યો કે મારાં ભાષણમાં આવા ફેરફારો કરી તમે તે કેમ છાપી માર્યું? આથી કાંઈક શાંતિ થઈ નહિતર પ્રમુખશ્રીનાં એ કહેવાતાં છાપેલા ભાષણની સખ્ત સમાલોચના કરવી હતી પ્રમુખશ્રી ઉપર વૈષ્ણવોચિત શ્રદ્ધા તો હોયજ કલકત્તાના અધિવેશનમાં થતા 'ભગવન્ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીકી જય' ના અન્ય સંપ્રદાયના બંગાલી વિદ્વાનોના જયધ્વનિથી પ્રમુખશ્રીની છાતી ગજ ગજ ઉછળતી હતી, આનંદ સમાતો ન હતો, એમ એઓશ્રીએ કહ્યું એટલે એટલા પુરતી એ અધિવેશનની મહત્તા લાગી અને તે જાહેર કરીને સંતોષ પામીશું બાકી એ સંબંધે ન [illegible] પ્રાન્તમાં નિષ્ફળમાં નિષ્ફળ નિરર્થક અધિવેશન હતું [illegible] 'અક્ષર' [illegible] ૧૯૮

છે. તે પછી દૈહિક કાર્યમાં બધા લાગી જાય છે. બ્રહ્મચર્યાશ્રમ ગામથી દૂર પણ નથી, તેમ ગામની અંદર પણ નથી. શ્રીસરસ્વતીજી નજીકમાં જ છે. કપિલ દેવમુનિજીના કુંડ-તીર્થો, શ્રીમહાપ્રભુજીની બેઠક શ્રીદ્વારકાધીશનું મંદિર, સ્ટેશન આદિ તદ્દન સમીપ છે. સંસ્થામાં ગૌશાળા પણ છે. વ્યાયામશાળા પણ છે. બ્રહ્મચારી બટુકો દેવવાણીનું અધ્યયન કરવામાં મશગુલ બની જાય છે. અધ્યયનપદ્ધતિ ઉત્તમ છે. સંસ્કૃત વિદ્યા સાથે વ્યાવહારિક શિક્ષણ પણ અપાય છે. બ્રહ્મચારીઓ જ્યારે વેદ ધ્વનિથી સંધ્યાહોમાદિ કરે છે ત્યારે તો પ્રાચીન ઋષિકુળોનું દૃશ્ય આબેહૂબ ખડું થાય છે. આશ્રમમાં પ્રભુનું મંદિર છે. ત્યાં શ્રીઠાકુરજી બિરાજે છે. આ સેવા પણ વિદ્યાર્થીઓદ્વારા થાય છે. આર્ય જીવન અને ભક્ત જીવનના સંસ્કારોનો અદ્ભુત સંયોગ તો આ આશ્રમમાં જ જોયો. આવી ઉત્તમ વ્યવસ્થા માટે આશ્રમસ્થાપક સદ્ગત શર્માજીને ગુજરાત યાદ કરશે અને શર્માજીના પરલોકવાસ પછી આશ્રમની કાર્યવાહી ઉત્તમોત્તમ સ્વરૂપમાં ચાલુ રાખવા માટે શાસ્ત્રીજી ઉમાશંકરજીને પણ ધન્યવાદ અર્પશે. શિક્ષણ આપનારા અન્ય શાસ્ત્રીજી પણ સ્નેહથી વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષણ આપે છે. આશ્રમવાસીઓનાં ચારિત્ર્ય અને નીતિ ઉપર ઘણુંજ ધ્યાન અપાય છે. વિદ્યાર્થીઓ અને અધ્યાપક વચ્ચેનો સંબંધમાં આધુનિક નિશાળોની માસ્તરશાહીની ગંધ નથી. વિદ્યાર્થીઓ વિનયશીલ છે. અતિથિસત્કારનો આદર્શ પણ, આ આશ્રમમાં અપૂર્વ છે. દરેક વિભાગમાં સ્વચ્છતા છે. આવો એક આદર્શ આશ્રમ ગુજરાતનું ભૂષણ છે. તેને કાયમની આવક કાંઈ નથી. તેના વ્યવસ્થાપકો નાટકી ઢબે જલસાઓ કરીને, દંભ અને આડંબરથી જનસમૂહમાં આશ્રમનાં ગાણાં ફૂંકતાં નથી. તો આવા એક સંગીન કાર્ય કરનાર, દિવ્ય જીવનવાળા બ્રહ્મચારીઓ દેશને અર્પનાર આશ્રમને ગુજરાતના ધનાઢ્ય ધાર્મિકો કોઈપણ ભોગે નભાવી રાખવો રહ્યો.

આ અંકનો વધારો.

સ્વદેશી ચીજોની યાદી

અગરબત્તી

(૧) કસ્તુરી અગરબત્તી
મુંબઇ સ્વદેશી કો-ઓપરેટીવ સ્ટોર્સ
મુંબઇ
(૨) ખરશેદભાઇ બ્રધર્સ બીલીમોરા
(૩) ભાગવત એન્ડ કંપની કોલ્હાપુર

અસ્ત્રા

(૧) ભાસ રેઝર વર્કસ મીઘગાંવણે
વાયા જૈતાપુર (જીલ્લો રત્નાગીરી)
(૨) સ્વદેશી વસ્તુ કાર્યાલય હાથરસ

કાગળ તથા બ્લોટીંગ પેપર

(૧) અપર ઇન્ડીઆ કાઉપર પેપર મીલ્સ
લીમીટેડ લખનૌ
(૨) મીનાક્ષી પેપર મીલ્સ કંપની લીમીટેડ
પુનાલુર (ત્રાવણકોર)
(૩) ડેક્કન પેપર મીલ્સ લીમીટેડ.
મુંડવા (પુના)
(૪) કર્ણાટક પેપર મીલ્સ લીમીટેડ.
રાજમહેન્દ્રી
(૫) ઇન્ડીઆ પેપર પલ્પ કંપની લીમીટેડ.
કલકત્તા
(૬) ગિરગામ પેપર મીલ્સ
૭૭-૭૯ એપોલો સ્ટ્રીટ મુંબઇ
(૭) મહમદભાઇ કમાલુદ્દીન પેપર મીલ્સ.
સુરત ગેટ સુરત

કાચનો સામાન

(૧) ઓગલે ગ્લાસ વર્કસ
ઓગલેવાડી (ઔંધ સ્ટેટ, જીલ્લે સતારા)
(૨) ધી નેશનલ ગ્લાસ વર્કસ.
ટ્રામ ટર્મીનસ, મઝગામ-મુંબઇ
(૩) પૈસા ફંડ ગ્લાસ વર્કસ
તળેગામ દાભાડે (પુના ડીસ્ટ્રીક્ટ)

કેમેરા

(૧) વેસીન્ગ કેમેરા વર્કસ. બેલગામ
(૨) શેવડે કેમેરા વર્કસ. બેલગામ

ખડીઆ

(૧) ગ્વાલીઅર પોટરી વર્કસ. ગ્વાલીઅર
(૨) પરશુરામ પોટરી વર્કસ
મોરબી (કાઠીઆવાડ)
(૩) પૈસા ફંડ ગ્લાસ વર્કસ
તલેગામ (પુના ડીસ્ટ્રીક્ટ)

ચાક

(૧) ઇન્ડીઅન ક્રેયોન વર્કસ નગર
(૨) નેશનલ ક્રેયોન વર્કસ. કુંભકોણમ
(૩) ગુરુનાથન ચોક વર્કસ. કુંભકોણમ
(૪) ભારત ચોક-પેન્સીલ ફેક્ટરી.
ગુજરાનવાલા (પંજાબ)
(૫) ઇન્ડીઅન ક્રેયોન વર્કસ. અહમદનગર
(૬) ધી ઇન્ડીઅન એજન્સી
ધરમપોર અને લાહોર
(૭) બનારસ હિંદુ યુનિવર્સીટી બનારસ

છરી, ચપ્પુ, કાતર, સુડી.

(૧) ઇન્ડીઅન કટલરી વર્કસ.
ગુજરાનવાલા (પંજાબ)
(૨) ડાયમન્ડ નીઅર્સ કંપની. મીરત

[illegible], રા [illegible] વિઠ્ઠલદાસ, (પંડ્યા [illegible]
[illegible], (૧ ૧૩૧) રા [illegible] રા [illegible]
વર્ષના ૬ ૪) [illegible], ગ નરોત્તમદાસ વલ્લભદાસ, [illegible]

(૩) કૃષ્ણ કટલરી વર્કસ. ગુજરાનવાલા
(૪) રાજા ઇન્ડસ્ટ્રીઅલ વર્કસ. વઝીરાબાદ
(૫) કે એન અજાની મુંબઇ નં. ૩
(૬) સ્વદેશી વસ્તુ કાર્યાલય-હાથરસ

ટાંક

(૧) નીઝ મેન્યુફેકચરીંગ કંપની લીમીટેડ
આલવણ
(૨) ડી આર. પુની એન્ડ સન્સ
ગુજરાત (પંજાબ)
(૩) કુલકર્ણી બ્રધર્સ
પનાલાલ ટેરેસીઝ મુંબઇ-૭
(૪) નંબર બ્રધર્સ લશ્કર (ગ્વાલીઅર)
(૫) એફ એન ગુપ્તા એન્ડ કંપની
૧૨, બેનુર ઘાટરોડ-કલકત્તા
(૬) બાબુ હરિદાસ મુકરજી
૭, કાશીચટ્ટી સ્ટ્રીટ જી. ટી. મદ્રાસ
(૭) મોડર્ન ઇન્ડસ્ટ્રીઝ દયાળબાગ, આગ્રા
(૮) પ્રશરશીંગ બી. એસ. સી.
રોબર્ટસ રોડ-લાહોર
(૯) નીમ મેન્યુફેકચરીંગ કંપની
ટોપીવાલા મેન્શન્સ, સેન્ડહર્સ્ટ રોડ-મુંબઇ

તાળાં

(૧) બી. એફ. યાજ્ઞિક અને કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)
(૨) સીંઘલ એન્ડ કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)
(૩) કે. એન. અજાની.
દાના બંદર મુંબઈ-૩
(૪) ધી મોડેલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ કંપની.
દયાળબાગ આગ્રા
(૫) તખટ બ્રધર્સ. લશ્કર (ગ્વાલીઅર)

(૬) ડી. આર. પુની એન્ડ સન્સ.
ગુજરાત (પંજાબ)
(૭) કુલકર્ણી બ્રધર્સ પનાલાલ-ટેરેસીઝ
મુંબઇ-૭

દંતમંજન

(૧) સરૈશાહ બ્રધર્સ બીલીમોરા
(૨) બંગાલ કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ.
કલકત્તા
(૩) ભાગવત એન્ડ કંપની. કોલ્હાપુર

દાંતીઆ

(૧) જેસોર કોમ્બર્સ એન્ડ સેલ્યુલોઇડ ફેકટરી.
જેસોર
(૨) બેગોલ સ્ટોર્સ, સુતાર ચાલ-મુંબઈ
(૩) ડી એન. ભટ્ટાચાર્ય એન્ડ સન્સ.
૩૩. કેનીંગ સ્ટ્રીટ, મુંબઇ
(૪) ગુપ્તા એન્ડ બ્રધર્સ. જુમા મસીદ પાસે
અબ્દુલ રહેમાન સ્ટ્રીટ દિલ્હી

દાંતનું બ્રશ તથા હજામતની પીંછી

(૧) આપર્ન બ્રશ કંપની દાદર, મુંબઇ
(૨) ઓરીજીનલ બ્રશ વર્કીંગ.
૬૬, કાવસજી પટેલ સ્ટ્રીટ ફોર્ટ-મુંબઇ
(૩) શાહ બ્રશ ફેકટરી અમદાવાદ
(૪) કલાઇમેકસ બ્રશ વર્કસ
૯, મરાઠા ડીચ લેન, કલકત્તા
(૫) બ્રશ વેર્સ લીમીટેડ
૧૨૩-૧, હેસ્ટી રોડ કાનપુર
(૬) આગ્રા બ્રશ કંપની
જૈનીકી મંડી બેલાનગંજ, આગ્રા
(૭) ગંગા એન્ડ કંપની
કલોક ટાવર-મીરત સીટી
(૮) ઇન્ડીઅન બ્રશ ફેકટરી બાસ મંડ-કાનપુર

કયા છે તે લઈ જાઓ, જો તેમ ન કરી શકો તો મને હુકમ કરો તો મારે પોતાને ખર્ચે દાહોદ આપવા
લઈને આવુ અને આપની અરજો કલાકમાંજ ખાતરી કરી આપું

(૯) સત્યનારાયન એન્ડ કંપની આગ્રા

દોરા

(૧) કેલીકો મીલ્સ અમદાવાદ

(૨) સેન્ટ્રલ ઇન્ડીઆ સ્પીનીંગ, વીવીંગ એન્ડ
મેન્યુ કંપની લીમીટેડ. નાગપુર

પેન્સિલો અને હોલ્ડરો

(૧) ભારત એન્ડ સન્સ પુના

(૨) ડી ગામરેક એન્ડ સન્સ દિલ્હી

(૩) ઇન્ડીઅન ઇન્ડસ્ટ્રીઝ ધરમપુરા—લાહોર

(૪) મદ્રાસ પેન્સિલ ફેક્ટરી
પો. બો. ૮૬ મદ્રાસ

(૫) નેશનલ ક્રેયોન વર્કસ અમદાવાદ

(૬) ઇન્ડીઆ ક્રેયોન કંપની
ગવર્નર પેઠ—બેઝવાડા

(૭) ભારતી પેન્સિલ ફેક્ટરી. કુંભકુર

(૮) એફ એન. ગુપ્તાની કંપની. કલકત્તા

(૯) ભગત એન્ડ સન્સ. કલકત્તા

બામ

(૧) કર્મવીર બામ. (૩) પાટણવાળા બામ.
(૨) અમૃતાંજન બામ (૪) નોરમા પેન બામ.
બોમ્બે કો-ઓપરેટીવ
સ્વદેશી સ્ટોર્સ-મુંબઇ

બંગડી

(૧) ક્ષત્રિય રઘુનાથ વેલજી દીવ-કાઠીઆવાડ.

(૨) ભાગવત એન્ડ કંપની. પાંડુરંગ નિવાસ.
કોલ્હાપુર નં. ૩

(૩) શેઠ જીવરાજ જિવોવન દુકાન નં ૩૯
કેપેલ્સ સ્ટ્રીટ, ભુલેશ્વર-મુંબઇ

(૪) સિદ્ધાપ્પા કુમારાપ્પા અન્નુમ.
પોસ્ટ ઘોડગેરી વાયા ગોકાક
જીલ્લે બેલગામ

(૫) કાંદીવલી બેન્ગલ્સ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની.
કાંદીવલી
બી બી. એન્ડ સી. આઇ રેલ્વે

(૬) ન્યુએલ ગ્લાસ વર્કસ
સીહોર સ્ટેશન-જબલપુર

(૭) એન જી. વર્કસ
ચિકાની (જીલ્લે થાણા)

બુતાન

(૧) વર્ધમાન એન્ડ સન્સ પાયધુની-મુંબઇ

(૨) ડી. એન ચંદ્ર એન્ડ કંપની
નાનાપેઠ-મુંબઇ

(૩) ભારતલક્ષ્મી કંપની લીમીટેડ.
૧૩, કાજી તોલા, ઢાકા

(૪) ઇસ્ટર્ન સ્મોલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ
લક્ષ્મી બજાર ઢાકા

(૫) હોર્ન મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની.
ઇરમાઇન બીલ્ડીંગ સુતાર ચાલ-મુંબઇ

(૬) ડેક્કન બટન ફેક્ટરી. હૈદ્રાબાદ ડેક્કન

(૭) ચિતળીઆ બધર્સ. મુંબઇ નં. ૨

(૮) ભગાય કમરશીઅલ એજન્સી.
ઇરમાઇલ બીલ્ડીંગ, જુમામસીદ ગલી,
સુતાર ચાલ મુંબઇ ૨

(૯) દુર્લભદાસ મુળજી ઝવેરી.
ભુલેશ્વર ખખાખાના સામે, ૨૧ ફોફળવાડી
મુંબઇ ૨

(૧૦) લીઅર્ડ ફોટો કંપની વીલે પાર્લે મુંબઇ

મુદ્રક [illegible] "સ્વરાજ" રા. [illegible] રા. બેચરદાસ [illegible], રા. [illegible] વિઠ્ઠલદાસ, (પ-૬ [illegible]
[illegible] પુસ્તક, (રૂ. ૧૩૧) રા. [illegible] [illegible], રા. [illegible] [illegible] મહેતા, ગ
[illegible] ૩ ૪) ભટ [illegible] [illegible], રા. [illegible] ધનદાસ વલ્લભદાસ, ગ [illegible]

(૧૧) આર. આર. વાડગે એન્ડ બ્રધર્સ
મુંબઈ-૨

મીણબત્તીઓ

(૧) સરદેશાઈ બ્રધર્સ બીલીમોરા

(૨) રોશન કેન્ડલ ફેક્ટરી.
ભાયખલા મુંબઈ-૮

(૩) દાઉદભાઈ અલીદીના
ધી લાઈટ હાઉસ કેન્ડલ ફેક્ટરી મુંબઈ

(૪) બનારસ હિંદુ યુનીવર્સીટી બનારસ

(૫) કેસરી કેન્ડલ વર્કસ. ગોગાઈ-સાલેમ

(૬) નારાયનદાસ એન્ડ કંપની મદ્રાસ

(૭) સોપ કેન્ડલ મેન્યુ. કંપની
મઝગામ, મુંબઈ. ૧૦

શાહી

(૧) કાલે ઇન્ક મેન્યુ. કંપની કુર્લા મુંબઈ

(૨) જી. એસ. રાનડે
ઇન્ક મેન્યુફેક્ચરર્સ મુંબઈ

(૩) લોકમાન્ય એજન્સી
ઇન્ક એન્ડ સ્ટેશનરી મેન્યુફેક્ચરર્સ મુંબઈ

(૪) એચ. ડી. નરીમાન બ્રધર્સ
લુહાર ચાલ, ધોબીતળાવ, મુંબઈ

(૫) ડી. એન્ડ ડી. બ્રધર્સ
૬૬૭ એ, દાદર મુંબઈ

(૬) ગિરધરલાલ વી. સંઘવી
સંઘવી બિલ્ડીંગ સેન્ડહર્સ્ટ રોડ, મુંબઈ

(૭) વગાવળકર બ્રધર્સ
મેજેસ્ટીક સીનેમા પાસે મુંબઈ

(૮) ભારત ઇન્ક્સ
૫૮, ટેમેરીન્ડ લેન, કોટ મુંબઈ

(૯) સ્ટાર ટેકનોલોજીકલ વર્કસ
માતર (જીલ્લે ખેડા)

(૧૦) બંગાળ મીસલેની લી.
૧૦૪, માણેકતોલા, મેનરોડ કલકત્તા

(૧૧) ભાગવત એન્ડ કંપની કોલ્હાપુર

સાબુ

(૧) ગોદરેજ સોપ કું. મુંબઈ

(૨) સૌરાષ્ટ્ર ઉદય સોપ ફેક્ટરી
ગાયવાડી મુંબઈ

(૩) તાતા ઓઇલ મીલ્સ લીમીટેડ
બોમ્બે હાઉસ, કોટ મુંબઈ

(૪) વિક્ટોરીઆ આલ્કલી વર્કસ
ન્યુ ભંડારી લેન, માંડવી મુંબઈ

(૫) ફાદભાવાળા એન્ડ સન્સ,
જોરાવરનગર (કાઠિયાવાડ)

ધોમરસની છાપખાનું : ભાવનગર